# यहेजकेल

## जीवन पर एक भक्तिपूण्भविज़्यद्वक्ता यहजकेल के सन्देष्ठा और जीवन पर एक भक्तिपूर्ण दृज़्टि

फ वॉयॅयन मेकेकेक लियोडेडेड

Light To My Path Book Distribution
Sydney Mines, NS B1V1Y5

**Ezekiel (Hindi)**

Copyright @ F. Wayne Mac Leod

All Rights Reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in retrieval system, or transmitted any form or by any means, electronic,mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission the publisher.

# विषय-सूची


प्राक्कथन 7

1. परमेश्वर का दर्शन 9
   *यहेजकेल 1*

2. यहेजकेल की बुलाहट 13
   *यहेजकेल 2:1-3:15*

3. पहरुआ 19
   *यहेजकेल 3:16-27*

4. सिकी हुई रोटी तथा गोबर 23
   *यहेजकेल 4*

5. एक दण्डित प्रजा 29
   *यहेजकेल 5*

6. तब तुम जानोगे 33
   *यहेजकेल 6*

7. अन्त आ गया है 39
   *यहेजकेल 7*

8. मन्दिर का दर्शन 45
   *यहेजकेल 8*

9. नगर में संहार 51
   *यहेजकेल 9*

10. तेज जाता रहा 55
    *यहेजकेल 10*

11. देग 61
    *यहेजकेल 11*

12. एक झूठी इस्राएली कहावत 67
    *यहेजकेल 12*

13. सफ़ेदी फिरी दीवारें 73
*यहेजकेल 13*
14. धर्मी पिता, बिगड़े बच्चे 79
*यहेजकेल 14*
15. बेकार दाखलता 85
*यहेजकेल 15*
16. अविश्वासयोग्य यरूशलेम 89
*यहेजकेल 16*
17. उकाब तथा दाखलता 97
*यहेजकेल 17*
18. पितरों के पाप 103
*यहेजकेल 18*
19. सिंह तथा दाखलता 109
*यहेजकेल 19*
20. विद्रोह तोड़ा गया 113
*यहेजकेल 20*
21. एक तलवार चमकाई व तेज़ की गई 119
*यहेजकेल 21*
22. दरार में खड़े होना 125
*यहेजकेल 22*
23. ओहोला तथा ओहोलीबा 131
*यहेजकेल 23*
24. हाण्डी का दृष्टांत 137
*यहेजकेल 24:1-14*
25. यहेजकेल की पत्नी की मृत्यु 141
*यहेजकेल 24:15-27*
26. अपने शत्रुओं से प्रेम करो 147
*यहेजकेल 25*

27. भौतिकवादी सोर 153
*यहेजकेल 26*
28. महान सोर 157
*यहेजकेल 27*
29. सोर के राजा पर हाय 161
*यहेजकेल 28*
30. एक महान जाति का पतन 167
*यहेजकेल 29*
31. मिस्र के लिये तलवार 173
*यहेजकेल 30*
32. अश्शूर का उदाहरण 179
*यहेजकेल 31*
33. मिस्र तथा उसके मित्र 183
*यहेजकेल 32*
34. पहरुए की सुनें 187
*यहेजकेल 33*
35. चरवाहे व भेड़ें 193
*यहेजकेल 34*
36. पुराने मनमुटाव 199
*यहेजकेल 35*
37. आने वाली जागृति 203
*यहेजकेल 36*
38. सूखी हड्डियों का ढेर 207
*यहेजकेल 37*
39. गोग का नाश 213
*यहेजकेल 38*
40. परमेश्वर परीक्षाएं क्यों भेजता है? 217
*यहेजकेल 39*
41. यहेजकेल का मन्दिर 221
*यहेजकेल 40:1-43:12*

42. उसके लिये अलग किये गए 227
*यहेजकेल 43:13–44:31*
43. इस्राएल का प्रधान 233
*यहेजकेल 45–46*
44. जीवन की नदी तथा नया यरूशलेम 240
*यहेजकेल 47–48*

**अन्तिम टिप्पणी**

# प्राक्कथन

मैं इस पुस्तक को भक्तिपूर्ण टीका क्यों कहता हूं? यद्यपि यह यहेजकेल की पुस्तक पर एक टीका है, इसका मुख्य उद्देश्य विद्वान या ज्ञानी होना नहीं है। इसका उद्देश्य है पाठक को पुस्तक के व्यावहारिक प्रयोग को देखने में सहायता देना, उसके परमेश्वर के साथ अपनी व्यक्तिगत चाल में। इस टिप्पणी को लिखने में मैंने अपना भरसक प्रयत्न किया है उस स्तर पर, जिसे कोई भी पाठक समझ सके। इस पुस्तक का उद्देश्य बाइबल का स्थान लेना नहीं है। प्रभु के साथ अपने खामोशी के समय में इस टीका का प्रयोग करें। टीका के साथ बाइबल उद्धरण पढ़ें। प्रत्येक अध्याय के अन्त में दिये गये प्रश्नों पर ध्यान करने के लिये कुछ क्षण रुकें। जो बातें सीखीं हैं उनके लिये प्रार्थना करके समाप्त करें। मैंने प्रत्येक अध्याय के अन्त में प्रार्थना निवेदनों के भी कुछ सुझाव दिये हैं। इन निवेदनों पर प्रार्थना करने के लिये कुछ समय लगायें। यद्यपि सैंकड़ों वर्ष पूर्व लिखी गई यहेजकेल की भविष्यवाणी हमारे समाज पर एक आधुनिक टीका है। मेरी यह प्रार्थना है कि यह वाणी फिर इस पुस्तक द्वारा सुनाई देगी। काश परमेश्वर आप को आशीष दे जब आप वह सुनने में समय लगाते हैं जो परमेश्वर आपको सिखाना चाहता है, अपने भविष्यवक्ता यहेजकेल के द्वारा।

एफ. वायन मैक लियोड

# 1

# परमेश्वर का एक दर्शन

*पढ़ें यहेजकेल 1*

अन्तिम स्थान जहां हम प्रभु से मिलने की आशा करते हैं वह है परीक्षा के मध्य। लगता है ऐसे क्षणों में प्रभु अति दूर होता है। हमें विस्मय होता है क्या सचमुच हमारी परिस्थिति उसके नियंत्रण में है। भविष्यवक्ता यहेजकेल ने अपनी सेवकाई उस समय आरम्भ की जब परमेश्वर के लोग सबसे कठिन परीक्षा में थे। वे निष्कासन में थे। परन्तु यहां यहेजकेल की मुलाकात प्रभु परमेश्वर से हुई। यह सब बाबुल में कबार नदी पर आरम्भ हुआ। यहां इस नदी के तट पर प्रभु का आत्मा याजक यहेजकेल पर उतरा। उसने एक दर्शन देखा। दर्शन में एक बवण्डर उत्तर दिशा से आया। ऐसा लगता था कि बड़ा हिंसक बवण्डर है। एक बड़ा बादल दिखा। यह बादल गरजती आग से घिरा था। बादल में एक तेज था। सारा दृश्य प्रकाशमान था, उस चमकदार प्रकाश से जो बादल व आग से निकल रहा था। आग के मध्य, यहेजकेल ने चार प्राणी देखे। उनकी आकृति मनुष्य समान थी। परन्तु प्रत्येक के चार मुख थे। उनके चेहरे एक मनुष्य, एक बैल, एक सिंह व एक उकाब के समान थे (पद 10)। वे परमेश्वर की महानतम् सृष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं। मनुष्य सृष्टि का राजा था तथा अपनी बुद्धि के लिये जाना जाता था। बैल पालतू पशुओं का राजा था और अपने कार्य व शक्ति

के लिये जाना जाता था। अन्ततः, उकाब पक्षियों का राजा था तथा अपनी शक्ति व गति के लिये जाना जाता था। सिंह वन पशुओं का राजा जो अपनी शक्ति तथा वेग के लिये जाना जाता था। इनमें से प्रत्येक प्राणी के पैर बछड़े के समान सीधे थे। वे पीतल के समान चमकदार थे। प्रत्येक प्राणी के चार पर थे। दो से वे अपनी देह को ढंके थे और दो ऊपर की ओर उठे थे, जो पास वाले प्राणियों के परों को छूते थे(पद 5)। ऐसा करने के लिये, प्राणियों को या तो सन्दूक या वृत बनाना होता था। एक दूसरे के परों को छूते हुए ये प्राणी हमें वाचा के सन्दूक के करूबों की याद दिलाते हैं जिनके पर सन्दूक के ऊपर छाया करते थे। इन करूबों के परों के मध्य से, परमेश्वर अपने लोगों को आज्ञाएं देता था। (निर्गमन 2:22)

यहेजकेल की भविष्यवाणी में, उन प्राणियों के मध्य आग घूम रही थी। उनमें बिजली कौंध रही थी। वे अद्‌भुत व शक्तिशाली प्राणी थे। यहां यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि जब यह आग इन चार प्राणियों के मध्य घूम व चमक रही थी, वह उनमें से नहीं निकल रही थी। जब वे इस तेज में थे, लगता था कि आग का स्रोत कुछ और था। हमारे सामने जो दृश्य हैं वे हमें प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना के दर्शन की याद दिलाते है। तथापि प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना ने देखा कि प्रत्येक प्राणी का एक चेहरा था। क्या यूहन्ना ने उन्हीं प्राणियों को देखा, जिनको यहेजकेल ने देखा था। जब यहेजकेल अपने सामने के दृश्य पर विचार कर रहा था, उसने प्रत्येक प्राणी के साथ एक महिमा को देखा। बाइबल बताती है कि यहेजकेल इन पहियों द्वारा बड़ा विस्मित हुआ। प्रत्येक पहिया इस तरह से बना था कि किसी भी दिशा में घूम सके। (पद 6) वह इस प्रकार बने थे कि वे किसी भी दिशा में घूम सकते थे (उत्तर, दक्षिण, पूरब या पश्चिम)। पहियों के घेरे (रीम) आंखो से भरे थे (पद 8)। प्रकाशितवाक्य 6 के प्राणी भी आंखो से भरे थे। ये पहिये जिधर वे प्राणी चाहते थे उन्हें उधर ले जाते थे (पद 9-12)। कुछ टीकाकार यहां एक प्रकार का रथ देखते हैं। यहेजकेल 2 हमें बताता है कि 'इन प्राणियों की आत्माएं उन पहियों में थी।' क्योंकि प्रत्येक प्राणी के चार मुख थे, इसलिये वे सीधे चलते थे। जहां पहिये जाते थे, चारों प्राणी उधर ही जाते थे। यहां अर्थ यह है कि ये चारों प्राणी पूर्णतया पहियों की इच्छा को समर्पित थे। वे अपने नहीं थे। परमेश्वर की इच्छा उनकी इच्छा थी।

जीवित प्राणियों पर चमकदार बर्फ या शीशे के समान एक फैलाव था (पद 22)। उस फैलाव में से एक आवाज़ आई (पद 2)। जब यहेजकेल ने

ऊपर वाणी के स्रोत की ओर देखा, तो उसे एक महान सिंहासन दिखाई दिया (पद 26)। सिंहासन पर मनुष्य समान कोई था। यह मनुष्य आग के समान चमकदार था। उसके चारों ओर तेज़ अग्नि थी (पद 27)। वहां आग व बिजली का स्रोत था। उसकी महिमा प्रभु के तेज की सी थी। (पद 28) प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना का दर्शन समान था; और दीपदानों के मध्य "मनुष्य के पुत्र के समान" कोई था, जिसका वस्त्र उसके पैरों तक था और उसके सीने पर सोने का सीनाबन्द था। उसके सिर व बाल ऊन समान श्वेत थे, और उसकी आंखें आग के गोले के समान थीं। उसके पांव भट्टी में ताये गये पीतल के समान चमकदार थे, और उसकी वाणी बहुत से जल की गरज के समान थी। उसके दहिने हाथ में सात सितारे थे और उसके मुख से एक दोधारी तलवार निकल रही थी। उसका मुख सूर्य की पूर्ण चमक के साथ चमक रहा था। (बल मेरा) यह प्रश्न नहीं उठता कि यहेजकेल चारों प्राणियों को देख कर भावुक क्यों था, उस दिन जो उसने सिंहासन पर देखा वह कहीं महान था। प्रेरित यूहन्ना के समान, यहेजकेल उस प्राणी के सामने मुंह के बल गिरा। वह परमेश्वर को उसके सम्पूर्ण तेज में देख रहा था। इस दर्शन की एक और विशेषता वह धनुष था जो यहेजकेल ने देखा। (पद 28) प्रेरित यूहन्ना ने भी स्वर्ग में परमेश्वर के सिंहासन पर एक मनुष्य देखा था। पुराने नियम में धनुष हमें उस वाचा की याद दिलाता है जो नूह के साथ परमेश्वर ने बांधी थी। यद्यपि वह जलप्रलय से पृथ्वी को नाश कर सकता था तौभी उसने अनुग्रह व करुणा करना पसन्द किया। यह धनुष एक अनुग्रहकारी व प्रेमी परमेश्वर के संयम का प्रतीक है। यह उसके विपरीत है जो आग व बिजली सिंहासन पर विराजमान व्यक्ति में से निकल रही थी। जब कि वह एक पवित्र व अद्‌भुत परमेश्वर है, वह वो परमेश्वर भी है जो दया व करुणा दिखाने से आनन्दित होता है।

इस सब का क्या अर्थ है? कुछ टीकाकार इस दर्शन के पीछे गुप्त पहलुओं व अर्थ को देखने के लिये बहुत दूर तक जाते हैं। इससे कई बार कल्पना में हम चले जाते हैं। जो हम देखते हैं वह इस्राएल के परमेश्वर की उपस्थिति है जो यहेजकेल पर प्रकट हुई। स्वर्गदूतीय सेवक इस अद्‌भुत परमेश्वर को घेरे हुए थे। वह परमप्रधान व सर्वशक्तिमान है, तौभी अनुग्रहकारी व प्रेमी है। यह था यहेजकेल का परमेश्वर। यह परमेश्वर था जिससे निष्कासन में उसकी मुलाकात हुई। यहेजकेल ने उसकी झलक देखी

जो एक व एकमात्र इस्राएल का सत्य परमेश्वर था। उसने निष्कासन के मध्य परमेश्वर के तेज को देखा। उस दर्शन ने उसे याद दिलाया कि अभी भी परमेश्वर सृष्टि के सिंहासन पर विराजमान है। सर्वसामर्थी व सर्वज्ञानी परमेश्वर अभी भी राज्य करता है। निष्कासन में भी खुश होने का एक कारण है। परमेश्वर बदला नहीं। आज आपकी परीक्षा क्या है? परमेश्वर आपकी परीक्षा से बड़ा है। प्रतापी परमेश्वर आपके जीवन के लिये अपने उद्देश्यों को पूरा कर रहा है। उसने आपको त्यागा नहीं। आप उस पर पूर्ण भरोसा कर सकते हैं। यहेजकेल की सबसे कठिन परीक्षा में, उसे फिर देखने की आवश्यकता थी कि उसका परमेश्वर एक पवित्र, सर्वशक्तिमान तथा प्रतापी परमेश्वर है। उसे जानने की आवश्यकता थी कि परमेश्वर ने अपने लोगों को नहीं त्यागा। शायद आपको भी आंखें उठाकर देखने की आवश्यकता है कि उस महान व अद्‌भुत परमेश्वर की एक झलक देख सकें जिसकी हम सेवा करते हैं। उसको देखें जैसा वह है तो यह निश्चय ही हमारे दृष्टिकोण को बदलेगा कि अपनी परीक्षाओं को कैसे देखें।

## विचार करने के लिये:

- यदि यहेजकेल के समान आप एक पवित्र व सर्वशक्तिमान परमेश्वर को अपने सिंहासन पर बैठे देखते तो अपनी परीक्षाओं के प्रति आपका व्यवहार कैसे बदल जाता? क्या आज भी परमेश्वर अपने सिंहासन पर है? परीक्षा को आप कैसे देखते हैं उसको यह कैसे प्रभावित करता है?
- यह अध्याय परमेश्वर के विषय आप पर क्या प्रकट करता है?
- अपनी पीड़ा में परमेश्वर के दर्शन को खो देना क्यों सरल होता है? किस कारण हम उसे नहीं देख पाते?

## प्रार्थना के लिये:

- परमेश्वर से कहें कि आपको क्षमा करे, हर उस बार जब आप भूल गये कि वह एक प्रतापी व पवित्र परमेश्वर है।
- उससे कहें कि आपको इस योग्य करे कि आप अपनी परीक्षा में उस पर भरोसा करें।
- उसका धन्यवाद करें कि चाहे जो भी हो, नियंत्रण उसी का है।

2

# यहेजकेल की बुलाहट

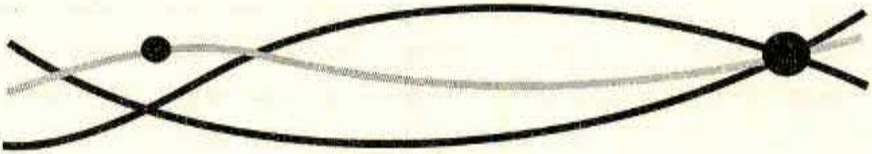

*पढ़ें यहेजकेल 2:1–3:15*

सेवकाई में ऐसे समय भी होते हैं जब परमेश्वर के दास निरुत्साहित हो जाते हैं। कई बार हमें विस्मय होता है कि क्या कोई उसे सुनता भी है जो हम कहते हैं। हमें हमारी समर्पित सेवा के द्वारा जीवन स्पर्श होते नहीं दिखते। इस परिस्थिति में संयम बरतना सरल नहीं होता। परमेश्वर जानता था कि यहेजकेल किसी और सेवक से भिन्न नहीं है। उसने भविष्यवक्ता को जताया कि उसकी बुलाहट कठिन होगी। उस बुलाहट में उसकी सफलता नापी जायेगी, उस संख्या से नहीं कि उसके संदेश को कितने लोगों ने सुना बल्कि इससे कि क्या यहेजकेल उसके वचन के प्रचार में विश्वासयोग्य रहा। गत अध्याय में हमने यहेजकेल द्वारा परमेश्वर के दर्शन की जांच की। इस्राएल का परमेश्वर इतना अद्‌भुत था कि भविष्यवक्ता उसके सामने मुंह के बल गिरा। जब वह पड़ा था तो एक वाणी ने उसे पुकारा, 'अपने पैरों पर खड़ा हो और मैं तुझ से बात करूंगा' (पद)। पद पर ध्यान दें जब तक परमेश्वर के आत्मा ने यहेजकेल में प्रवेश न किया वह अपने पैरों पर खड़ा न हो सका। यहां हम यह पाते हैं कि शारीरिक रूप से वह अयोग्य था कि खड़ा हो पाता, जब तक आत्मा उसको सामर्थ न देता। पुराने नियम काल के भविष्यवक्ता के रूप में उसको परमेश्वर का विशिष्ट ज्ञान था तथा अपने जीवन में उसके आत्मा के कार्य का भी।

जब यहेजकेल को उसके पैरों पर खड़ा किया गया तो प्रभु ने उससे बात की। उसने उसे बताया कि वह उसे एक विद्रोही जाति में भविष्यवाणी करने भेज रहा है। उन्होंने पीढ़ियों से प्रभु के विरुद्ध पाप किये। (पद) वे ढीठ व विद्रोही बच्चे थे (पद)। पद में परमेश्वर ने यहेजकेल को बताया कि उसकी सेवकाई के परिणाम महत्वपूर्ण नहीं हैं। उसे परमेश्वर का वचन सुनाना है चाहे लोग सुनें या न सुनें। कितनी बार हम परिणामों में फंस कर रह जाते हैं। एक सेवकाई की सफलता या विफलता को हम उसके रूप व दृश्य परिणामों से नापते हैं। परमेश्वर ने यहेजकेल को बताया कि वह ऐसे परिणाम नहीं देखेगा। यहेजकेल के लिये यह परमेश्वर का लक्ष्य न था। संबंधीय रूप से विश्वासयोग्य होना सरल है, जब बातें ठीक होती हों और सेवकाई में हर प्रकार के परिणाम मिल रहे हों। यहेजकेल को विश्वासयोग्य होना था चाहे लोग सुनने से इंकार करें। यह कहीं अधिक कठिन था।

परमेश्वर ने यहेजकेल को चेतावनी दी, जब वह लोगों में चलता फिरता था, जिनके पास वह उन्हें भेज रहा था, यह बिच्छुओं व कांटों में चलने के समान होगा (पद 6)। जब वह उनमें चलेगा तो वह उसे बिच्छुओं के समान काटेंगे। यदि वह बिच्छुओं से बचना चाहेगा तो कंटीली झाड़ी में फंसेगा। ये लोग उसकी सराहना नहीं करेंगे बल्कि उसके जीवन को कष्टपूर्ण बना देंगे। वे विद्रोही थे (पद 6) और कठोर हृदय के भी (3:7)। और वे उसकी नहीं सुनेंगे (3:7)। परमेश्वर ने भविष्यवक्ता को चेतावनी दी कि वे बातों से भी उस पर आक्रमण करेंगे (पद 6)। यहेजकेल को उनसे या उनके शब्दों से डरना नहीं है। यद्यपि वे उसकी उपस्थिति से प्रसन्न न होंगे, परन्तु वह निराश न हो (पद 6)। वह परमेश्वर जिसने उसे बुलाया है उसकी रक्षा भी करेगा।

हमें शायद विचित्र लगे कि क्या ऐसे लोगों के पास जाने का कोई अर्थ है। परमेश्वर ने यहेजकेल पर स्पष्ट किया कि यह उसकी इच्छा थी (पद)। उसको उन्हें वह सब बताना था जो प्रभु उसे देगा (पद 4,7)। लोग सुनें या न सुनें उसे परमेश्वर के वचन का विश्वासयोग्य सम्प्रेषणकर्त्ता होना था। यद्यपि वे उस पर हमला करें तब भी उसे धीरज धरना था कि परमेश्वर का वचन सुनाने से उसे कुछ न रोके। हमें उस व्यक्ति की सराहना करनी चाहिये जो इन परिस्थितियों में परमेश्वर की आज्ञाकारिता की बुलाहट में चले। परमेश्वर ने बहुत अनुयायियों की प्रतिज्ञा नहीं की। उसने ऐसी सफलता की

प्रतिज्ञा न की जैसे जगत देखता है। क्या ऐसी परिस्थितियों में आप आज्ञाकारी होना चाहेंगे?

जब यहेजकेल अपनी सेवकाई के स्वभाव पर सोच रहा था, परमेश्वर ने उसे एक चर्मपत्र दिया (पद 10)। यहेजकेल ने देखा कि वह विलाप, हाय व शोक के शब्दों से भरा था। प्रभु ने यहेजकेल से कहा कि उसे उस चर्म पत्र को लेकर खाना है। प्रेरित यूहन्ना को भी एक चर्मपत्र लेकर खाना था। (देखें प्रका. वा. 10:9-10)। यहां विचार यह है कि उसको चर्मपत्र के वचनों को हज़म करना था। उसे स्वयं को संदेश से भरना था कि वह उसका भाग बन जाये। जब यहेजकेल ने चर्मपत्र खाया तो पाया कि वह कड़वा व मीठा दोनों था। यह प्रस्तुति करता है परमेश्वर के वचन की शाप व आशीषों की। हमारे सामने सभी सेवकाइयों के लिये चुनौती है। जब तक वह हमारे अस्तित्व का भाग न बन जाये हम दूसरों को प्रचार कैसे कर सकते हैं जब तक वह जिसका हम प्रचार करते हैं हमारा भाग नहीं बना?

यहेजकेल में प्रभु ने भविष्यवक्ता को याद दिलाया कि वह उसको इस्राएल के घराने के पास भेज रहा था। उसको योना समान मिशनरी नहीं बनाया था। यहेजकेल की सेवकाई अपने ही लोगों में होगी। पद हमें बताता है कि उसको उन लोगों के पास नहीं भेजा जा रहा जो अनजानी भाषाएं बोलते थे जिनको समझना कठिन है। उसकी सेवकाई कहीं अधिक सरल होती यदि उसे विदेशी मिशन के लिये बुलाया जाता। वे लोग उसकी सुनते परन्तु उसके अपने लोग परमेश्वर के वचन के प्रति कठोर हैं। उनको उसके संदेश से कुछ लेना देना नहीं। कितनी बार जिन्होंने कभी सुसमाचार नहीं सुना उसको ग्रहण करने के अधिक इच्छुक होते हैं उनकी तुलना में जिन्होंने वर्षों से सुना हो।

यद्यपि जिन लोगों के लिये यहेजकेल की बुलाहट थी वे कठोर थे, परमेश्वर ने उनसे भी अधिक कठोर यहेजकेल को बानने की प्रतिज्ञा की। 'परन्तु देख मैंने तेरा मुख उनके मुखों के समान ढीठ और तेरे माथे को उनके माथों के समान हठीला कर दिया। मैंने तेरे माथे को कड़े पत्थर अर्थात् चकमक से भी अधिक कड़ा बनाया है यद्यपि वह एक विद्रोही घराना है, उनसे भयभीत न होना और न उनके सामने घबराना' (पद 8-9)। परमेश्वर उसको इस कठिन कार्य के लिये आवश्यक सामर्थ देगा। परमेश्वर आपको क्या करने के लिये बुला रहा है? आप निश्चिंत हो सकते हैं कि काम

कितना भी कठिन क्यों न हो, जो तुम्हें बुलाता है वह तुम्हें सामर्थ देगा उस काम को करने की जिसके लिये उसने बुलाया है, यदि तुम उसे अनुमति दो। पद 0 में ध्यान दें, यहेजकेल को अपने हृदय में परमेश्वर के वचन को ग्रहण करना था। ऐसा करके वह भावुक होकर प्रचार कर सकेगा। उसका प्रचार मन से नहीं परन्तु हृदय से होगा। सबसे अधिक सामर्थी उपदेश जो मैंने सुने हैं वे परमेश्वर के दासों के हृदय से निकलते हैं। यही आशा यहेजकेल से की जाती है। भविष्यवक्ता होने के नाते उसका हृदय भी भविष्यवक्ता का होना चाहिये, एक टूटा हृदय उन बातों से जिनसे परमेश्वर का हृदय टूटता है। कितनी बार हम बौद्धिक उपदेश देते हैं परमेश्वर उन लोगों की खोज में नहीं है जिनको सत्य का इतना ज्ञान है कि वे अपने मनुष्यत्व में उस सत्य द्वारा स्पर्श किये गये हैं। वह हमें बुलाता है वह प्रचार करने वो सुनाने के लिए जो हृदय से आये, जो उसके साथ सम्पर्क में हैं और उसकी भावनाओं व बोझ को बांटते हैं।

इसके बाद परमेश्वर का आत्मा यहेजकेल को नदी के पास ले गया जहां उसने अपनी बुलाहट को पाया था (अध्याय देखें)। पद में देखें कि वह 'कड़वाहट' में गया 'और अपनी आत्मा की गर्मी में।' इस कड़वाहट का कारण क्या था? क्या यह वह सेवकाई थी जिसके लिये परमेश्वर उसे बुला रहा था? यह सचमुच एक कठिन सेवकाई थी। क्या वह परमेश्वर के प्रति कड़वा था कि उसको इतनी कठोर सेवकाई दी? जबकि यह संभव है, एक और संभावना है जिस पर विचारना है। क्या ऐसा हो सकता है? क्या इस कड़वाहट का कारण उसके जीवन में पवित्रात्मा का कार्य था? परमेश्वर का आत्मा यहेजकेल पर उतरा। उसने बातों को भिन्न प्रकाश में देखा, अब जब परमेश्वर के साथ उसका महत्वपूर्ण सामना हुआ। उसका हृदय अब परमेश्वर के हृदय के साथ सामंजस्य में था। जिन बातों से परमेश्वर के हृदय को दुख होता था उससे उसका हृदय शोकित हुआ। यहेजकेल लैस होने का अर्थ जानता था कि परमेश्वर उसको वे आंखें दे जो वह देखें जो परमेश्वर देखता है। उसको ऐसे हृदय की आवश्यकता थी जो वैसा महसूस करे जैसा परमेश्वर महसूस करता है। परमेश्वर के आत्मा की भूमिका यहां संसार को वैसे देखना था जैसे परमेश्वर देखता है। यह सचमुच भविष्य संबंधी आत्मा थी। परमेश्वर की प्रजा के पाप के कारण उसका हृदय भारी था। केवल जब उसे इस बोझ का अनुभव हुआ तो वह प्रचार कर सका जैसे परमेश्वर चाहता

था कि वह प्रचार करे। केवल जब उसका हृदय टूटा होगा तो उसने भावुकता से प्रचार किया जैसा परमेश्वर उससे चाहता था। भविष्यवक्ता की भूमिका कठिन थी। यह शब्दों के बोलने से अधिक था। यह परमेश्वर के हृदय को बांटना था। क्या आपके पास परमेश्वर का हृदय है? क्या आपके हृदय पर वे बोझ हैं जो परमेश्वर के हृदय पर हैं? यह सब यहेजकेल की तैयारी का भाग था, उस भविष्य संबंधी सेवकाई के लिये जो परमेश्वर के पास उसके लिये थी।

परमेश्वर का आत्मा यहेजकेल को तेल अबीब ले गया। यह उसकी सेवकाई का आरम्भ बिन्दु होगा। पद 15 हमें बताता है कि सात दिनों तक यहेजकेल नगर में रहा और बोझ महसूस किया। अपनी बुलाहट में उसने इतना सामर्थपूर्ण अनुभव पाया कि पूरे सप्ताह वह कुछ नहीं कर सका केवल उस पर विस्मित होने के जो उसने देखा व सुना। आप निश्चय जान सकते हैं कि उसने उस बारे में बहुत सोचा कि गत दिनों में क्या हुआ था। परमेश्वर को उसका अनुभव वह नहीं था जो जल्दी भुलाया जा सके। यह उसके जीवन को बदलेगा और उसकी सेवकाई पर सामर्थी प्रभाव डालेगा। सारी सेवकाइयां यहां से आरम्भ होनी चाहिये- परमेश्वर के साथ गहरे व शक्तिशाली आमना सामना होने के बाद। यह परमेश्वर का व्यक्तिगत ज्ञान व उसके लिये परमेश्वर की इच्छा थी जो उसको उन समयों में से गुज़ारेगी जो अस्वीकृति व सताव के होंगे जिनका सामना उसे करना होगा।

इस सब का आज हम से क्या मतलब? आप शायद सदा प्रभु के तरीकों को न समझते हों। आपको समझने की आवश्यकता भी नहीं-बस आज्ञाकारी हों। यह सच है कि मार्ग सदा सरल नहीं होता। हमें बहुत ही कठिनाइयों का सामना करने के लिये बुलाया जायेगा। हमारा प्रभु भी अस्वीकृत हुआ। हम कोई बेहतर व्यवहार की आशा नहीं कर सकते। परन्तु निश्चय जानें कि परमेश्वर की सामर्थ कार्य के समानान्तर है। जब परिस्थिति कठिन होती है, तो परमेश्वर आपको और कठिन बनायेगा। वह कभी आपको तब तक करने को कार्य नहीं देगा जब तक उस काम को करने की पूर्ण शक्ति न दे। वह आपके जीवन में वो परीक्षा नहीं लायेगा जिसका सामना करने के लिये उसने आपको लैस नहीं किया। वह आपको आपकी योग्यता से अधिक परीक्षा में न पड़ने देगा जिसका सामना आप न कर सकें। अध्याय का प्रतापी परमेश्वर यहेजकेल के साथ उसकी सेवकाई में खड़ा होगा। यहेजकेल अपनी शक्ति

व योग्यता को जानेगा। वही परमेश्वर आज आपके व मेरे साथ खड़ा है। उसकी शक्ति में हम जयवन्त से भी बढ़कर हैं।

***विचार करने के लिये:***

- इस विचार में फैसला करना क्यों इतना प्रलोभन से पूर्ण है कि सफलता का अर्थ है अधिक अनुयायी होना? जो यहेजकेल ने सीखा वह आज हमें कैसे सिखाता है कि यह गलत है?
- इस विभाग में जो सीखा उसके अनुसार सेवकाई में सफलता क्या है?
- जो आज्ञाकारिता में चलना चाहते हैं परमेश्वर उनको क्या प्रतिज्ञाएं देता है?
- परमेश्वर के एक सेवक के लिये यहां क्या योग्यताएं दी गई हैं जो उसके नाम से सेवकाई करता है?

***प्रार्थना के लिये:***

- परमेश्वर से यहेजकेल समान हियाव मांगे कि बिना रुके चल सकें, दूसरे कुछ भी कहते या सोचते हों।
- परमेश्वर से उसका मन मांगें ताकि आप लोगों को वैसे देख सकें जैसे वह देखता है।
- सेवक होने की एक मुख्य कुंजी है कि परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत सामना हो। परमेश्वर से कहें कि आज आपको गहराई के साथ अपना प्रगटीकरण। दे।

3

# पहरुआ

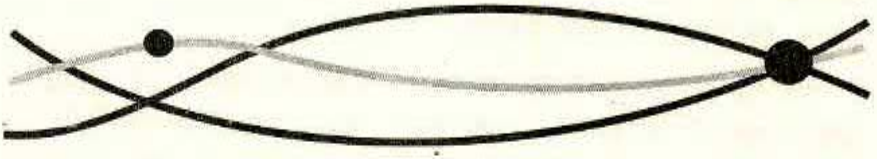

*पढ़ें यहेजकेल 3:16-17*

क्या आपने कभी पहरुआई या रक्षक का कार्य किया है? इस कार्य के महत्व को हम कम न समझें। यहेजकेल के दिनों में देश का जीवन इनके हाथ में होता था। एक सेना की सफलता या विफलता अपने पहरुओं की सावधानी पर निर्भर करती थी। यहेजकेल को परमेश्वर की प्रजा के लिये पहरुआ होना था। पहरुए के नाते यह उसका उत्तरदायित्व था कि आनेवाले खतरे से लोगों को सावधान करे। यह काम हल्केपन से नहीं किया जा सकता था। उसके लोगों का जीवन उस पर निर्भर करता था। उसको सावधान रहने की आवश्यकता थी। एक पहरुए के नाते यहेजकेल की ज़िम्मेदारी लोगों के दो समूहों की ओर थी- धर्मी व अधर्मी। पद 8 में हम देखते हैं कि यहेजकेल को अधर्मियों को आनेवाले दण्ड से सावधान करना था। यदि परमेश्वर उसे बताए कि अधर्मी मारे जाएंगे और वह (यहेजकेल) उन्हें आनेवाले दण्ड से सावधान न करे, तो इसके कारण परमेश्वर उसके लोहू का हिसाब उससे लेगा। उनकी मृत्यु के लिये उसे ज़िम्मेदार ठहराया जायेगा। यदि वह उन्हें चेतावनी दे और वे सुनने से इंकार करे तो वे मरेंगे, परन्तु यहेजकेल उनके लोहू से बरी होगा। एक पहरुए के रूप में यहेजकेल का काम लोगों को कायल करना नहीं था बल्कि आज्ञाकारिता में सत्य की घोषणा करनी थी और लोगों को चेतावनी देना था।

ऐसे युग में जब कि संख्या सफलता का माप है, हमें सुनना है कि परमेश्वर यहां क्या कह रहा है।

धर्मियों को भी चेतावनी दिए जाने की आवश्यकता है (देखें पद 20-21)। परमेश्वर के लोगों के सामने भी परीक्षा होती है कि क्षण भर के लिए उससे अपनी आंखें फेर लें। दाऊद ने व्यभिचार किया। पतरस ने जानते बूझते प्रभु का इंकार किया। परमेश्वर का भविष्यवक्ता होते यहेजकेल को अपने ही भाई बहनों को सावधान करना व बताना था, जब वे पतित हैं। परमेश्वर द्वारा बताये जाने पर यदि वह एक भाई को सावधान न करे तो हिसाब यहेजकेल से लिया जायेगा।

पद 20 हमें बताता है कि परमेश्वर 'ठोकर का पत्थर' उन धर्मियों के सामने रखता है जो पाप करते हैं। हमारा पाप कई बार हमें परमेश्वर की आशीष से दूर करता है। पौलुस विश्वासियों के बीमार होने की बात करता है यहां तक कि मरने की, क्योंकि वे अपने पाप में ढीठता से लगे हैं (देखें 1कुरि.11:30)। प्रभु में अपने भाई बहनों के प्रति हमारी एक निश्चित ज़िम्मेदारी है। हमें उनको सावधान करने के लिये बुलाया गया है जो धार्मिकता के मार्ग से भटक जाते हैं। हम किनारे पर खड़े होकर अपने भाई को पाप में गिरते हुए नहीं देख सकते कि उसको इस प्रकार कर आनेवाले खतरो से चेतावनी न दें। चाहे वह हमारी न सुने, उसको सावधान करना हमारा कर्त्तव्य है उस खतरे से जो उसकी ढीठता के कारण आ सकता है। परमेश्वर यहेजकेल से आशा करता था कि शत्रु की उपस्थिति के चिन्हों के विषय सावधान रहे। उसको अपने भाई बहनों को शत्रु की उपस्थिति के लिये सावधान करना है।

इस सबका अर्थ है कि भविष्यवक्ता को प्रभु के साथ सामंजस्य में रहना है। उसको वह सुनना है जो प्रभु उसको बता रहा है। परमेश्वर के साथ उसका संबध निकटता का होना चाहिये। एक पहरुए के समान उसे आत्मिक रीति से परमेश्वर के वचन के प्रति जागरुक रहना है तथा चारों ओर की परिस्थितियों के प्रति चाहिये कि उसके कान निरन्तर परमेश्वर के वचन को सुनें। ज़रा से इशारे पर उसको तैयार रहना है उनको सावधान करने के लिये जिनको सावधान करना है।

पद 22-23 में परमेश्वर यहेजकेल से उस मैदान में जाने को कहता है जहां उसने उससे बात की थी। यहां उसका परमेश्वर की महिमा से

आमना-सामना कबार नदी पर हुआ। एक बार फिर भविष्यवक्ता उस सब पर भावुक हुआ जो उसने देखा। वह मुंह के बल प्रभु के सामने गिरा। फिर, केवल जब प्रभु का आत्मा उसमें समाया तो वह अपने पैरों पर खड़ा हो सका। (देखें पद 2) गत कुछ सप्ताह से यहेजकेल आत्मिक शिखर पर था। उसने परमेश्वर के दर्शन पाये थे जिससे वह सचमुच भूमि पर विस्मय के कारण गिर पड़ा था। उसको परमेश्वर की ओर से एक विशिष्ट सेवकाई के लिये आज्ञा व सामर्थ दी गई, इन दिनों को वह जल्दी नहीं भूल सकता था।

यहां परमेश्वर ने यहेजकेल को याद दिलाया कि वह जिन लोगों में भविष्यवाणी करेगा वे उसकी सराहना नहीं करेंगे। वे उसको रस्सियों से बांधेंगे ताकि परमेश्वर के वचन का प्रचार वह उनके बीच घूम घूम कर न कर सके (पद 24-25)। परमेश्वर उसकी जीभ को उसके तालू से चिपका देगा ताकि वह इन लोगों से बोल न सके। परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया? उसने ऐसा इसलिये किया क्योंकि ये लोग विद्रोही थे। वे परमेश्वर के वचन को सुनने को तैयार न थे। वे अपने विद्रोह के कारण अपने पाप में मरेंगे। उनको पश्चात्ताप करने के लिये दूसरा अवसर न मिलेगा। केवल परमेश्वर ही जानता है कि अन्तिम बार आपने कब सुना कि ऐसा समय आयेगा जब परमेश्वर आगे को इन लोगों से बात न करेगा। वह उनसे दूर हो जायेगा, और वे अपने पापों में नाश होंगे। परमेश्वर को अपने जीवन से दूर करना कितना खतरनाक होगा।

पद 26 में हम देखते हैं कि परमेश्वर ने कई बार यहेजकेल की जीभ उसके तालू से चिपका दी। पद 27 में हम पाते हैं कि दूसरे समय होंगे जब परमेश्वर आशा करेगा कि वह बोले। यहेजकेल को न केवल उसके प्रति संवेदनशील होना है जो प्रभु उनसे कहना चाहता है, उसको यह भी जानना है कि प्रभु कब चाहता है कि वह बोले और कब चुप रहे। इस के लिये प्रभु के साथ सामंजस्य में रहना तथा उसकी इच्छा के प्रति अति महत्वपूर्ण है। क्या प्रभु के साथ आपका संबंध ऐसा है कि वह कुछ लोगों के पास आपको विशिष्ट संदेश के साथ भेजे- चेतावनी या उत्साह के? क्या आप उसकी अगुवाई को पहचान पायेंगे जब वह आपको न बोलने को कहता है? शारीरिक रूप से हमारे लिये यह असंभव है कि हम प्रत्येक तक पहुंच सकें। यह संदर्भ हमें यह नहीं कहता कि अपने रोज़गार या ज़िम्मेदारियां छोड़कर प्रत्येक व्यक्ति जो मिले उसे सुसमाचार सुनायें। परन्तु यह हमें चुनौती देता है कि प्रभु परमेश्वर के साथ सामंजस्य में तथा उसकी अगुवाई में, रहें अपने

जीवन में इस प्रकार कि जब वह सिखाने, चेतावनी देने, या उत्साहवर्धक वचन किसी भाई या बहन के लिये दे तो हम उसकी वाणी सुनकर आज्ञाकारिता से प्रतिक्रिया दें।

यहेजकेल की बुलाहट को हल्केपन से नहीं लिया जा सकता था। लोगों के जीवन उसकी चेतावनियों पर निर्भर करते थे। उसको आत्मिक रीति से सावधान रहना था। आज इस प्रकार के स्त्री पुरुषों की आवश्यकता है। संबंध हमारे लिये कितने चुनौतीपूर्ण हैं? क्या आपके हाथों पर उन स्त्री पुरुषों का लोहू लगा है जिनको आपने चेतावनी देनी थी? मैं यह नहीं कह रहा कि आप को सब कुछ त्याग कर हर उस व्यक्ति से बोलना है जिससे आप मिलें, परन्तु मैं कह रहा हूं कि हम सब को सुनना व सीखना है तथा प्रभु की अगुवाई में चलना है। प्रभु आपको उनके लिये ज़िम्मेदार नहीं ठहरायेगा जिनके पास जाने के लिये उसने आपको नहीं ठहराया। वह आप से उनका हिसाब लेगा जिनके प्रति व्यक्तिगत रूप से सेवा करने के लिये आपको बुलाया है। क्या किसी भी क्षण आप परमेश्वर की अगुवाई में चलने को तैयार हैं? क्या आप एक पहरुआ हैं? काश आप एक विश्वासयोग्य हों।

***विचार करने के लिये:***

- एक पहरुआ होने का अर्थ क्या है?
- क्या कुछ बातें हैं जिनके लिये अपने पड़ोसियों को सावधान करना है? मसीह में हमारे भाई बहनों के विषय क्या है? विशिष्ट बनें।
- क्या आपको कभी किसी व्यक्ति विशेष से बात करने के लिये? परमेश्वर की स्पष्ट अगुवाई का अनुभव हुआ है स्पष्ट करें।

***प्रार्थना के लिये:***

- अपने जीवन में अगुवाई के प्रति संवेदनशील आपको बनाने के लिये परमेश्वर से कहें।
- उन सब समयों के लिये उससे क्षमा करने को कहें, जब आप उस व्यक्ति से बात नहीं कर सके जिससे बात करने के लिये आपको बुलाया गया।
- उसके सेवक होने के नाते, उससे हियाव मांगें ताकि उसके द्वारा अगुवाई के आज्ञाकारी हों।

4

# सिकी हुई रोटी तथा गोबर

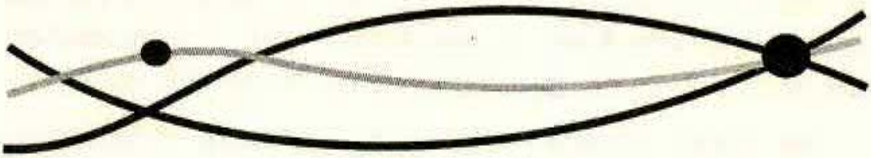

*पढ़ें यहेजकेल 4*

दूसरे कई भविष्यवक्ताओं के समान, यहेजकेल को प्रोत्साहित किया गया कि दृश्य विषयक पाठों का प्रयोग करे। ये विषयक पाठ लोगों को परमेश्वर का वचन उस प्रकार देंगे जिससे वे उन्हें समझ सकें। इस संदर्भ में यहेजकेल को नाटक करना था, नाटकीय रूप से, परमेश्वर का वचन लोगों तक पहुंचाने के लिये।

प्रथम, परमेश्वर ने भविष्यवक्ता से कहा कि मिट्टी की एक ईंट पर यरूशलेम नगर का चित्र बनाये। यह वह सामग्री होगी जिसके द्वारा भविष्यवक्ता अपने लोगों को संदेश देगा। फिर यहेजकेल से कहा कि उसे घेर, उसकी मोर्चाबन्दी कर, दमदमा बांध और युद्ध के यंत्र लगा। और नगर के चारों और शत्रु शिविर दिखाई दें।

ये वस्तुएं लगाने के बाद एक तवा लेना और उसे अपने व नगर के मध्य लगा, एक दीवार के रूप में। ऐसा करने के बाद, अपने मुंह को नगर से फेर। इस दृश्य का अर्थ क्या है? अति स्पष्ट, ईंट पर बनाया गया नगर यरूशलेम की प्रस्तुती था जिसकी शत्रु द्वारा घेराबन्दी की जायेगी। तवा लोगों के पापों का प्रतिनिधित्व करता प्रतीत होता है, जिसने उनके व उनके

परमेश्वर के मध्य रुकावट लगा दी है, और इस कारण उनकी आवश्यकता के समय उसने उनसे मुंह फेर लिया है। हमारे सामने दृश्य इतना सरल है कि बच्चा भी समझ ले।

घेराबन्दी हुए नगर की उसके सामने दृश्य प्रस्तुती के साथ भविष्यवक्ता को अपनी एक करवट पर लेटना था जो लोगों के पाप के प्रति चिन्हात्मक था। प्रतिदिन जब वह अपनी करवट लेटेगा एक वर्ष की प्रस्तुती करेगा कि जाति ने प्रभु परमेश्वर की ओर से पीठ फेरे रखी। यहेजकेल को इस्राएल के लिये तीन सौ नब्बे दिन दिये गये। यहूदा जाति को चालीस दिन दिये गये। यहेजकेल 1:8 बताता है कि प्रभु भविष्यवक्ता को रस्सी से बांधेगा ताकि वह उस अन्तराल में हिल न सके। यह स्पष्ट नहीं कि यह कैसे होगा।

हमें यहेजकेल की सराहना करनी चाहिये। बड़ी बातों में तो विश्वासयोग्य होना सरल होता है। यहां परमेश्वर उससे एक करवट पर एक वर्ष से अधिक लेटे रहने को कहता है। यह एक अद्‌भुत सेवकाई न थी। ऐसे समय रहे होंगे जब उसको विस्मय हुआ हो कि क्या उसके लिये उससे कुछ बेहतर न था। यह सरल नहीं है कि रोज शैय्या पर पड़े रहे या धीरज से प्रभु की प्रतीक्षा करता रहे, किसी मामले में उसके समय के लिये। परमेश्वर यहेजकेल से आज्ञाकारिता की अपेक्षा करता है, चाहे मूल्य कुछ भी हो। हम व्यस्त रहना चाहते हैं। परमेश्वर आज्ञाकारिता चाहता है। हम शायद परमेश्वर के तरीकों को न समझें, परन्तु उसके तरीके सिद्ध हैं। हमारा झुकाव होता है जल्दी करना और सेवकाई में कुछ बड़ा प्राप्त करना। कई बार परमेश्वर हमें केवल बुलाता है कि एक करवट लेट कर उसकी प्रतीक्षा करें।

इस्राएल देश को तीन सौ नब्बे दिन दिये गये (पद 4-5)। इस संख्या 390 के विषय कई कल्पनायें हैं। 931 ई. पू. रहूबियाम के राज्यकाल में इस्राएल के गोत्र यहूदा से अलग हो गये और अपना पृथक राष्ट्र बना लिया। यारोबाम इस्राएल का राजा बन गया जबकि रहूबियाम यहूदा का राजा था। यारोबाम ने इस्राएल के लिये एक नया धर्म व याजकपद स्थापित किया। उस समय के बाद से, इस्राएल ने एक राष्ट्र के रूप के प्रभु की सेवा न की। एक के बाद एक दुष्ट राजा देश पर राज्य करता रहा जब तक कि राज्य को अश्शूरियों ने नाश न कर दिया, और इस्राएली बंधुवाई में गये। इस्राएल व यहूदा के अलग होने के 399 वर्ष बाद, 538 ई. पू. राजा कुस्रू ने आज्ञा दी कि यहूदी अपने देश को लौटें। क्या यह संभावना है कि यहां वर्णित 390

वर्ष का समय वही है जो इस्राएल व यहूदा के पृथक होने व निर्वासन से वापस लौट कर पुन:निर्माण के आने के मध्य का है? परन्तु हम देखते हैं, स्पष्ट यह है कि परमेश्वर ने धीरज से 390 वर्ष तक इस्राएल के पाप को सहा।

जबकि यहेजकेल ने इस्राएल के लिये 390 दिन एक करवट लेटना पूरा किया, फिर प्रभु ने उससे कहा कि चालीस दिन और दहिने करवट लेटे ताकि यहूदा पर दण्ड सुनाया जाये। यहां दो बातें ध्यान देने योग्य हैं। यह महत्वपूर्ण हो सकता है कि यहेजकेल यहूदा के लिये दहिनी करवट लेटा। दहिना हाथ या दहिनी करवट, पवित्रशास्त्र में पक्ष को दिखाता है। जैसे, जब प्रभु यीशु पिता के पास लौटा, तो वह दहिने हाथ पर बैठा। दूसरे शब्दों में, उसे आदर का स्थान मिला। एक और बात जो यहां देखने की है वह यह है कि यहूदा को दिया गया समय उतना लम्बा नहीं था जितना कि इस्राएल को। जबकि उत्तरी इस्राएली राज्य पूर्णतया विद्रोह में रहा, यहूदा मित्र था। उससे ऐसे राजा हुए जो प्रभु की सेवा करते थे। यहूदा ने अपने इतिहास में कई आत्मिक क्रांतियों का अनुभव किया। यारोबाम के असमान, जिसने अपना ही याजकपद स्थापित किया, यहूदा ने उसी याजकपद के द्वारा सेवकाई जारी रखी; जिसकी स्थापना परमेश्वर ने की थी।

परमेश्वर ने इस्राएल के पाप विद्रोह के लिये 390 दिन नियत किये परन्तु यहूदा के लिये चालीस। प्रतिदिन जब यहेजकेल अपनी करवट पर लेटा रहा, एक वर्ष की प्रस्तुती करता है जबकि परमेश्वर धीरजवन्त था। उसके दिन के लोग इस बात को समझ सकते थे। कल्पना करें प्रतिदिन गुज़रते लोगों को, यहेजकेल को अपनी करवट पर से देखकर प्रतिदिन वे विस्मित होते थे कि वह वहां कितने समय रहेगा। इस बारे में वे यहेजकेल के धीरज से प्रभावित रहे होंगे। इस चित्रण का उद्देश्य ही यही था। यह इशारा करता था कि उनके पापों में परमेश्वर कितना धीरजवन्त रहा।

यद्यपि यह सेवकाई अपने में अति कठिन थी, मामला यहेजकेल 4:9-15 में और भी उलझ गया। परमेश्वर ने भविष्यवक्ता को बताया कि उस अन्तराल में उसे क्या खाना है। उसको दिन भर में एक नियुक्त समय पर प्रतिदिन आठ औंस (200 ग्राम) रोटी खानी है। रोटी की मात्रा प्रत्येक फ्रैंच ब्रैड स्टिक के बराबर होगी प्रतिदिन। वह प्रतिदिन एक क्वार्ट का दो तिहाई अर्थात् 0.6 लिटर पानी ले सकता था। एक वर्ष से अधिक

भविष्यवक्ता को इस खुराक पर रहना था- रोटी व जल की। यह कठिन नहीं था, परमेश्वर ने उससे कहा कि अपनी रोटी को मनुष्य के सूखे फुज़ले से पा सके। जब यहेजकेल ने विरोध किया तो प्रभु राज़ी हो गया और अनुमति दी कि अपनी रोटी को सूखे पशु के गोबर पर सेके। इसका क्या अर्थ है? यह परमेश्वर के लोगों को याद दिलाये कि समय उनके लिये कठिन होगा। अकाल व दरिद्रता उनका भाग होगा। उनको सीमित रोटी मिलेगी, और केवल वह आप उपलब्ध होगी जो उनके अपने सूखे फुज़ले से प्राप्त होगी।

यह अध्याय हमें एक अति महत्वपूर्ण प्रश्न पूछने पर बाध्य करता है: यहेजकेल यरूशलेम के पतन की भविष्यवाणी क्यों कर रहा था जबकि वह पहले ही निर्वासित था? परमेश्वर के लोगों का निर्वासन कई चरणों में आया। यहेजकेल के अनुसार यह भविष्यवाणी यहोयाकीन के निर्वासन के पांचवें वर्ष आई। यहोयाकीन के निर्वासन के बाद सिदकिय्याह यहूदा का राजा बन गया। उस समय, यद्यपि कुछ तो निर्वासन में जा चुके थे, बहुत से अभी भी यहूदा ही में थे। बाइबल हमें बताती है कि सिदकिय्याह ने देश में ग्यारह वर्ष राज्य किया (यिर्म. 2)। यह सिदकिय्याह के राज्यकाल में हुआ कि नबूकदनेस्सर ने नगर ले लिया। उसने समस्त भोजन आपूर्ति को रोक दिया, और बड़ा अकाल पड़ा जिसके विषय यहेजकेल भविष्यवाणी कर रहा था। सिदकिय्याह के ग्यारहवें वर्ष (यहेजकेल के भविष्यवक्ता होने की बुलाहट पाने के सात वर्ष बाद) नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम को बर्बाद कर दिया (देखें 2 राजा 2)। स्वाभाविक था, यहेजकेल यरूशलेम के नाश से वर्षों पहले निर्वासन में चला गया था तथा परमेश्वर की प्रजा के अन्तिम निर्गमन से पहले।

हम सब का इससे क्या लेना देना? हम सब का इससे क्या मतलब? क्या यह संदर्भ हमें यहेजकेल की वचनबद्धता को नहीं दिखाता कि प्रभु के वचनों का पालन किया जाये? हममें से कौन रोटी व जल की इस खुराक पर रहेगा, वर्ष भर एक संदेश को पाने के लिये उसके लोगों हेतू? हम में से कितने इतने ही समय तक अपनी करवटों पर लेट सकते हैं? आप परमेश्वर के वचन को सुनाने के लिये किस हद तक जा सकते हैं? यहेजकेल हम में से उनके लिये चुनौती है जो अपनी जीवन शैली में आराम पसन्द हो गये हैं? काश आज अधिकांश लोग यहेजकेल के समान हों जो प्रभु के वचन के लिये कठिनाई झेलने को तैयार हों। इस युग में जबकि हम बड़े गिरजाघर चाहते हैं और अनुयायियों की बड़ी भीड़, परमेश्वर हम पर प्रकट करता है

एक विश्वासयोग्य सेवक की सेवकाई, जो छोटे व महत्वहीन में विश्वासयोग्य रहा। काश परमेश्वर हमें क्षमा करे कि सेवकाई को हम आदर व सम्मान पाने का साधन बनायें। काश वह हमें और अधिक यहेजकेल दे सके जिसके लिए स्वयं का सम्मान पाना इस जगत के लिये कुछ नहीं है-लोग, जिनकी इच्छा है कि आज्ञाकारिता में चलें, चाहे मूल्य कुछ भी हो।

***विचार करने के लिये:***

- आप क्यों समझते हैं कि परमेश्वर ने यहेजकेल से इस संदेश का नाटक कराया, जबकि वह बस लोगों को बोलकर सुना देता?
- अपने को क्षण भर के लिये यहेजकेल के स्थान पर रखें। आप को कैसा लगेगा यदि परमेश्वर आपसे वह करने को कहे जो उसने यहेजकेल से करने को कहा? यह यहेजकेल के सम्मान के लिये कैसा रहता?
- यह संदर्भ किस प्रकार हमारे सफलता-पसन्द समाज से बातें करता है? यह हमें किस प्रकार चुनौती देता है?
- क्या आपको कभी प्रभु की प्रतीक्षा करनी पड़ी? यह कितना कठिन था?

**प्रार्थना के लिये:**

- परमेश्वर से शक्ति मांगें, उस प्रकार आज्ञाकारिता की जैसी यहेजकेल की थी।
- परमेश्वर से कहें कि अहम् तथा अहंकार से आपको स्वतंत्र करे ताकि आप आज्ञाकारी हो सकें, चाहे मूल्य कुछ भी हो।

5

# एक दण्डित प्रजा

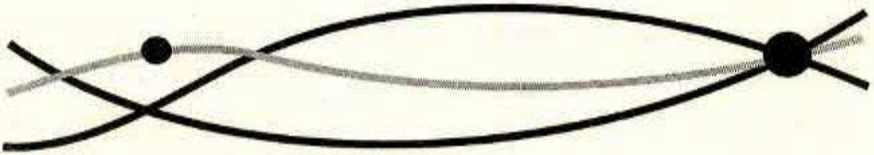

*पढ़ें यहेजकेल 5*

हमने देखा कि भविष्यवक्ता यहेजकेल की सेवकाई सरल न थी। जिन लोगों में वह काम करता था उन्हें बिच्छु कहा गया है। परमेश्वर ने उसको बताया कि लोग उसका संदेश नहीं सुनेंगे। गत अध्याय में हमने देखा कि किस प्रकार यहेजकेल से कहा गया कि एक वर्ष से अधिक वह एक करवट पर लेटा रहे, जो परमेश्वर के लोगों के पापों की प्रस्तुती हो। इस अन्तराल में वह रोटी व पानी की खुराक पर रहा। ऐसे समय रहे होंगे जब उसे विस्मय हुआ होगा कि क्या उसके जीवन के लिये परमेश्वर का वही लक्ष्य था। बातें भविष्यवक्ता के लिये कुछ सरल नहीं होतीं। यहां अध्याय में परमेश्वर अपने लोगों के लिये उसे एक संदेश देता है।

यहेजकेल का लोगों के लिये संदेश एक चिन्हात्मक कार्य में था। एक करवट लेटने का समय पूरा होने के बाद, प्रभु ने उससे कहा कि अपना सिर मुण्डा ले। बाइबल युग में सिर मुंडाना शोक का प्रतीक था। यहेजकेल के दिनों में लोग, यह देखकर, समझ जाते थे कि कुछ भयंकर होनेवाला है।

पद 2 हमें बताता है कि यहेजकेल को अपने बालों को लेकर तीन भागों में बांटना था। एक तिहाई को नगर के मध्य जलाना था। अगले तिहाई को

तलवार से काटना था। और अन्तिम तिहाई को हवा में उड़ा देना था। प्रभु ने यहेजकेल से कहा कि कुछ को अपने वस्त्र में रखे (पद 3)। बाद में यहेजकेल को इन कुछ बालों में से लैकर उन्हें आग में डालना था। इसका महत्व हम अभी देखेंगे।

लोग नहीं समझ सकते थे कि यहेजकेल क्या कर रहा था। परमेश्वर अपने लोगों को दिखा रहा था कि उनके साथ क्या होनेवाला था। यरूशलेम ने परमेश्वर की व्यवस्था से विद्रोह किया था। वह अपने चारों ओर की अन्यजातियों से भी अधिक बिगड़ गई थी। उसने परमेश्वर के वचन से इंकार कर दिया था। अब इस्राएल में चारों ओर की जातियों से अधिक पाप व भ्रष्टाचार था। परमेश्वर की संतान होने के नाते, वे परमेश्वर के स्तर के अनुसार नहीं जी रहे थे। क्योंकि वे परमेश्वर से फिर गये थे, इसलिये उन्हें दण्ड मिलेगा। सुनें, परमेश्वर ने उनके दण्ड का वर्णन कैसे किया, 'और तेरे सब घृणित कार्यों के कारण मैं तेरे मध्य ऐसा करूंगा जैसा मैंने न तो अब तक किया और न फिर कभी ऐसा करूंगा।' (पद 9)

परमेश्वर के लोगों का दण्ड उससे अधिक होगा जो किसी जाति ने कभी अनुभव किया हो। अपने दिनों में हम इस कथन के सत्य को उस प्रकार समझते हैं जैसे यहेजकेल न समझा होगा। हमने यहूदी जाति को किसी भी और जाति से अधिक क्लेश सहते देखा है। वे निरन्तर युद्ध में रहते हैं। समस्त इतिहास में उनको सताया व दुःखी किया गया। हमारे लिये, जो आज स्वयं को मसीही कहते हैं यह कैसी चेतावनी है। प्रभु यीशु के प्रति अपनी वचनबद्धता को हम हल्केपन से नहीं ले सकते।

परमेश्वर ने यहेजकेल को अपने लोगों पर आनेवाले दण्ड के विषय बताया। देश में अकाल इतना भयंकर होगा कि पिता अपने जीवित बच्चों को खायेंगे। बच्चे अपने माता-पिता को खायेंगे (पद 10)। जाति बिखर जायेगी (पद 11)। उनको परमेश्वर से आशीष मिली थी, परन्तु अब परमेश्वर उन पर दया नहीं करेगा (पद 11)। एक-तिहाई अकाल से नाश होंगे, जो उनके देश में पड़ेगा (पद 12) एक तिहाई शत्रु की तलवार का शिकार होंगे (पद 12)। अन्तिम तिहाई शत्रु द्वारा पीछा किये जाकर, तलवार की नोक पर, बिखर जायेंगे (पद 12)। पूरा देश नष्ट होगा (पद 14)। वह अपने चारों ओर की जातियों के लिये निन्दा का कारण होंगे (पद 14)। सिर मुण्डा कर यहेजकेल इन बातों की प्रस्तुती कर रहा था।

हमने यहेजकेल के बालों के विभाजन के महत्व को देखा। परन्तु पद में आप देखेंगे कि कुछ बाल सुरक्षित रूप में भविष्यवक्ता ने लेकर अपने वस्त्र में रख लिये थे। इन बालों को भी लेकर जला दिया जायेगा। (देखें पद) लगता है ये शेष बाल प्रस्तुती थे, उनकी, जिनको पहले परमेश्वर के दण्ड से बचा लिया था- आग, तलवार व निर्वासन से (बिखरने से)। ये वे थे जो देश में रह गये थे, निर्वासन के बाद भी और अभी भी प्रभु से विद्रोह करते थे। उन्होंने शिक्षा नहीं ली। यिर्मयाह की पुस्तक में हम पढ़ते हैं कि ये लोग किस प्रकार मिस्र जाना चाहते थे। परमेश्वर ने उन्हें यिर्मयाह भविष्यवक्ता के द्वारा चेतावनी दी कि वे मिस्र में नाश हो जायेंगे। इस चेतावनी के पाते भी वे उस देश को चले गये जिससे परमेश्वर ने मूसा द्वारा उनको छुड़ाया था। हो सकता है कि ये बाल इन लोगों की प्रस्तुती हों। पद हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर लोगों के पापों का बदला लेगा। वे जानेंगे कि परमेश्वर पाप के विषय गम्भीर है। जो उनके मध्य हुआ वह जातियों के लिये शिक्षा का कारण होगा। (पद 15) परमेश्वर क्रोध व प्रकोप के साथ उन पर दण्ड लायेगा (पद)। वह उनको अकाल के तीर से मारेगा। वह तीर चलाकर मारेगा (पद 16)। जिनको अकाल ने नहीं निगला, उन्हें जंगली पशु घात करेंगे (पद 17)। वे निःसंतान होंगे (पद 17)। महामारी व हत्या देश में होगी (पद 17)। परमेश्वर के प्रकोप की तलवार उन पर पड़ेगी (पद 17)।

बाइबल हमें बताती है कि यह दण्ड जातियों के लिये एक उदाहरण होगा। हम वे जातियां हैं। हमें वह शिक्षा गम्भीरतापूर्वक लेनी है। हम परमेश्वर के प्रति अपनी वचनबद्धता को हल्के तौर पर नहीं ले सकते। आज प्रभु के साथ आप का संबंध कैसा है? यहेजकेल के भविष्यवक्ता के संदेश पर ध्यान दें जो परमेश्वर की प्रजा के लिये था, उनके दिनों में। काश उनका अनुभव हमारे लिये एक चेतावनी हो।

### *विचार करने के लिये:*

- इस अध्याय में अपने लोगों को दण्ड देने में क्या प्रभु न्यायी है? स्पष्ट करें।
- एक क्षण सोचें कि क्या दण्ड आधीन ये लोग परमेश्वर की प्रजा हैं। आप क्या सोचते हैं, आज परमेश्वर अपनी प्रजा से क्या कहना चाहता है? क्या हम यहेजकेल के समय के इस्राएल की समकालीन कलीसिया से तुलना कर सकते है? उदाहरण दें।

- आज हमारे समाज पर दण्ड लाने से परमेश्वर को क्या चीज़ रोकती है?

***प्रार्थना के लिये:***

- एक क्षण अपने जीवन पर दृष्टि डालें। क्या आपके जीवन में ऐसी बातें हैं जिनका सुधार होना चाहिये? परमेश्वर से क्षमा मांगें और यह कि आपको जय दे।
- परमेश्वर से मांगें कि अपने लोगों को आज शुद्ध व नया करने के लिए जागृति भेजे।
- हमारे साथ उसके महान धीरज के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करें।

6

# तब तुम जानोगे

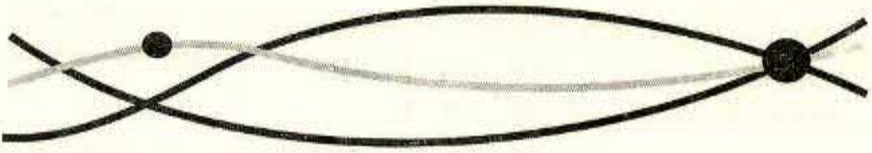

*पढ़ें यहेजकेल 6*

हम सदा नहीं समझ पाते कि परमेश्वर क्यों अपने तरीके से अनुशासित करता है। परन्तु निश्चित जान सकते हैं कि हमारा अनुशासन अकारण नहीं होता। हमारे अनुशासन द्वारा, परमेश्वर हमें कुछ अति महत्वपूर्ण पाठ देता है। वह हमें हमारे भले के लिये अनुशासित करता है। उसकी इच्छा होती है कि हमें अपनी निकटता में ले।

जबकि हम इस अध्याय को आरम्भ करते हैं, भविष्यवक्ता यहेजकेल को इस्राएल के पर्वतों की ओर मुख करके उनके विरुद्ध भविष्यवाणी करने को कहा गया। पर्वतों पर क्या हुआ कि परमश्ेवर को अपना भविष्यवक्ता उनके विरुद्ध भविष्यवाणी करने के लिये भेजना पड़ा? इस्राएल के पर्वत व पहाड़ियां थे जहां परमेश्वर के लोगों ने अन्य देवताओं की उपासना के लिये वेदियां बनाई। यशायाह व यिर्मयाह दोनों ने इस परमेश्वर के लोगों की बुराई का वर्णन किया। यिर्मयाह 6 में प्रभु पूछता है, *'क्या तुमने इस्राएल के अविश्वास को देखा है? उसने हर ऊंची पहाड़ी पर व हर फैले पेड़ के नीचे व्यभिचार किया है।'* (बल मेरा)

यशायाह 6:7 में प्रभु ने कहा, *'क्योंकि उन्होंने पर्वतों पर होमबलि चढ़ाये और पहाड़ियों पर मेरी अनाज्ञाकारिता की, तो मैं उनके पूर्व कार्यों का पूरा*

*मूल्य उनकी गोद में डालूंगा'* (बल मेरा)। इस्राएल के पर्वतों व पहाड़ियों के शिखर वे स्थान थे जहां परमेश्वर की प्रजा ने वेश्यावृत्ति की। यहां उन्होंने दूसरे देवताओं की उपासना करके परमेश्वर के नाम की निन्दा की। इस कारण भविष्यवक्ता को इस्राएल के पर्वतों व पहाड़ियों के विरुद्ध भविष्यवाणी करने को कहा गया। पद में देखें कि यहेजकेल को देश की घाटियों व नदियों के विरुद्ध भी भविष्यवाणी करनी थी। 2 इतिहास 28 में हमें बताया गया है कि इस्राएल की घाटियों में क्या हुआ; 'उसने बेनहिन्नूम की घाटी में होमबलि चढ़ाया और अपने बालकों को आग में जलाया, और उन जातियों जैसे घृणित कार्य किये जिनको मैं ने इस्राएलियों के सामने से निकाला था।' सब घृणित कार्य इस्राएल घाटी में करता था। यहां परमेश्वर की प्रजा ने अन्यजाति देवताओं के सामने बच्चों की बलि दी।

परमेश्वर अपने लोगों से क्रोधित था। उन्होंने पर्वतों व पहाड़ियों के शिखर अपनी आत्मिक वेश्यावृत्ति से भर दिये थे। जातियों के भयंकर कार्यों से पूरा देश भरा था। इस्राएल ने अपने परमेश्वर को छोड़ दिया था। वह बिना दण्ड के न छूटेगा।

क्योंकि उन्होंने परमेश्वर से मुख मोड़ लिया था, यहेजकेल ने भविष्यवाणी की कि उनके आराधना स्थल नाश किये जायेंगे। उनकी विदेशी वेदियां ढा दी जायेंगी (पद 4)। आराधना करनेवालों की हड्डियाँ उनकी वेदी के चारों ओर बिखरी हुई होंगी (पद 5)। उनके निवास स्थान निर्जन होंगे। (पद 6) धात हुए लोगों की लाशें देश में बिखरी पड़ीं होंगी (पद 7)। हमारे सामने पूर्ण नाश का दृश्य है। परमेश्वर को नाश करने में आनन्द नहीं आता। वह तो उनकी अनाज्ञाकारिता के कारण विवश था कि दण्ड दे। उसकी इच्छा उनको नाश करना नहीं परन्तु उन्हें एक अति महत्वपूर्ण सबक सिखाना है 'तुम्हारे लोग तुम्हारे मध्य मरे पड़े होंगे और तुम जानोगे कि मैं प्रभु हूं।' (पद 7)

हमारे लिये यह समझना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर का लोगों को अनुशासित करने का कारण था कि वे उसे गहराई से जानें। उसकी इच्छा थी कि अपने लोगों के साथ गहनता व निकटता के संबंध में जाये। कई बातों ने उनको उससे अलग कर दिया था। परमेश्वर उनसे इतना प्रेम करता था कि उनके लिए इस बारे में कुछ करता कि वह उन रुकावटों को दूर करे। जब रुकावटें दूर की जायेंगी तो वे जानेंगे कि वही एकमात्र सत्य परमेश्वर है। पुन:स्थापन के लिये पहली बात जो परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ संगति

के लिये इस अध्याय में की वह थी उन रुकावटों को हटाना जो उनको उससे अलग करती थीं। उसने उनके अन्य देवताओं के आराधना स्थल को अलग कर दिया।

रुकावटों को दूर करने के बाद, ध्यान दें पद 8 में परमेश्वर ने क्या किया। वे जिनको परमेश्वर ने बर्बादी से बचाया, जातियों में जहां उन्हें बखेरा जायेगा परमेश्वर को याद करेंगे। अपने निर्वासन के देश में वे परमेश्वर के आत्मा की कायल करने की सामर्थ के आधीन होंगे। यहेजकेल 6:9 हमें बताता है कि तब वे जानेंगे कि उन्होंने अपने पापों के कारण कैसे परमेश्वर के हृदय को तोड़ा है। वे स्वयं अपने बुरे व अधर्म के कामों के कारण लज्जित होंगे। पद 9 में देखें कि परमेश्वर को हमारे विद्रोह से कैसा लगता है। उसका हृदय शोकित होता है जब हम सत्य से भटक कर गलती में जाते हैं। मेरा पाप परमेश्वर को प्रभावित करता है। संगति के लिये उसकी इच्छा इतनी सशक्त है कि मेरे पाप के कारण वह शोकित होता है तथा पिस जाता है। अपने लोगों को अपने पास लौटाने के लिये परमेश्वर ने उन्हें शारीरिक रूप से तोड़ा। अब यहां वह उन्हें आत्मिक रीति से तोड़ता है। पुन:स्थापन से पहले टूटा मन होता है। हमें परमेश्वर के पास लौटने से पहले अपने पाप को देखना है।

परमेश्वर देश को मारेगा। लोग अपने घृणित कार्यों के कारण मरेंगे। वे तलवार, अकाल व महामारी के कारण गिरेंगे (पद 11)। उनके अधर्म के कार्यों ने परमेश्वर को कोपित किया है। यह दिखाने के लिये कि वह उनके पाप से कितना क्रोधित था, परमेश्वर ने भविष्यवक्ता यहेजकेल से कहा कि लोगों के सामने अपनी कलाई को मारे और अपने पैर पटके और चिल्लाये, 'अफसोस'। परमेश्वर क्यों क्रोधित था? वह इसलिए क्रोधित था क्योंकि लोगों ने परमेश्वर के साथ अपने संबन्ध को हल्के रूप में लिया था। वह क्रोधित था क्योंकि उन्होंने अन्यजाति देवताओं को उसकी तुलना में अधिक महत्व दिया। वह जलन रखनेवाला परमेश्वर है। वह ध्यान व प्रेम के लिये पुकारता है। इसको शायद हम कभी पूर्णतया नहीं समझेंगे। इतना महान् सृष्टिकर्त्ता क्यों मुझसे इतना प्रेम करेगा? यद्यपि हम कभी इसका स्पष्टीकरण नहीं कर सकते, हम ऐसे अद्‌भुत प्रेम से इंकार भी नहीं कर सकते।

परमेश्वर का प्रकोप उसके विद्रोही लोगों पर पड़ेगा। मारे हुओं के शव उनकी विदेशी वेदियों के सामने बिखरे पड़े होगे, पर्वतों के शिखरों पर, पेड़ों

के नीचे सारे देश में; उस दिन वे जानेंगे कि प्रभु ही परमेश्वर है। पद हमें बताता है कि समस्त देश निर्जन होगा। उत्तरी नगर दिबलाह से लेकर सुदूर दक्षिणी नगर तक पूरा देश सूनसान हो जायेगा। जहां कहीं भी लोग होंगे, निर्जनता में रहेंगे।

यद्यपि परमेश्वर का अनुशासन क्रूरता का था, वह लक्ष्यहीन न था। परमेश्वर अपने लोगों का ध्यान आकर्षित करना चाहता था। वे उसके भविष्यवक्ताओं की नहीं सुनते। वे अपने पूर्वजों के अनुभव से नहीं सीखते। परमेश्वर ने विवश होकर रुकावटें दूर की जिनसे लोग उसकी सुनने से दूर रहते थे। उसने उनके देश को नाश किया क्योंकि वह उसके लिये इतना महत्वपूर्ण न था जितना लोगों के साथ उसका संबध। उसने उनको उनके घरों से लिया और उनकी स्वतंत्रता उनसे ले ली क्योंकि वह उनके व उनके परमेश्वर के मध्य संगति में रुकावट थी। कोई भी वस्तु जो उनके व उनके परमेश्वर के मध्य थी वह उसने दूर कर दी। उनके प्रति उसका प्रेम इतना महान था कि वह उनसे सब कुछ लेने को तैयार था कि यदि, ऐसा करने से, निकटता पुनःस्थापित हो सकती। क्या चीज़ आपको परमेश्वर से दूर रखती है? आपके पूरे ध्यान को आकर्षित करने के लिये आपके जीवन से परमेश्वर क्या चीज़ दूर करेगा? परमेश्वर लोगों को उस बिन्दु तक लाना चाहता था कि पूर्णतया टूटे, इससे पहले कि उसकी सुनें। उनकी आशीषों को हटाया जाना स्वयं में एक आशीष था। उनके टूटेपन के कारण, उनको परमेश्वर के साथ घनिष्टता के स्थान में लाया गया।

**विचार करने के लिये:**

- आपके व परमेश्वर के साथ महान घनिष्टता के मध्य क्या है?
- परमेश्वर में विश्वास के प्रति आपके समाज व कलीसिया में आज क्या रुकावटें हैं?
- इन रुकावटों को दूर करने के लिये परमेश्वर को क्या करना होगा?
- आप क्या कुछ त्यागने को तैयार हैं ताकि परमेश्वर के साथ घनिष्टता का अनुभव कर सकें?
- यहां हम अपनी प्रजा के लिये प्रभु के प्रेम के विषय क्या सीखते हैं?

**प्रार्थना के लिये:**

- क्या कोई वस्तु आपके व परमेश्वर के मध्य आ गई है? परमेश्वर से क्षमा मांगें कि आपने उसको मध्य आने दिया।
- आपके जीवन से उन बातों को दूर करने के लिये उससे मांगें जो आपकी आत्मिक उन्नति व परिपक्वता को रोकती हैं। यदि आप उससे यह नहीं पूछ सकते, तो फिर उससे मांगें कि आपको इच्छुक बनाये।
- क्या आप अभी उसके अनुशासन का सामना कर रहे हैं? उसका धन्यवाद करें कि यह अनुशासन आपकी भलाई के लिये है।

7

# अन्त आ गया है

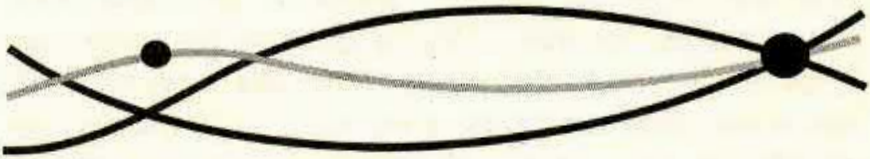

*पढ़ें यहेजकेल 7*

क्या आपके साथ कभी कोई त्रासदी हुई है? त्रासदी वह वस्तु है जिसकी आशा किसी और के साथ होने के लिये की जाती है। वह मेरे लिये अपेक्षित नहीं होती। त्रासदी सदा विस्मयकारी होती है। यहां परमेश्वर ने अपनी प्रजा से कहा कि उनका अन्त आ गया। यह अन्त अचानक से नहीं आया। उनके पास प्रत्येक अवसर था परमेश्वर की ओर फिरने का, परन्तु उन्होंने इंकार किया। अब उनको मूल्य चुकाना पड़ेगा। पद 2 में प्रभु ने उनसे कहा कि देश के चारों कोनों पर अन्त मण्डरा रहा है। दूसरे शब्दों में, सारे देश को पाप के परिणाम भुगतने होंगे।

पद 3 याद दिलाता है कि परमेश्वर द्वारा दण्ड धर्ममय होता है। उनका न्याय उनके कार्यों के द्वारा होगा। अब जो उन्हें प्रभु के हाथ से मिल रहा है वह केवल उसका बदला है जो उन्होंने उसके साथ किया। इस पर क्षण भर के लिये विचार करें। आप प्रभु से क्या प्राप्त करेंगे यदि वह आपको वह दे जिसके योग्य आप हैं? यहां परमेश्वर अपने लोगों से कहता है कि वह उनको वह देगा जिसके योग्य वे हैं। इससे तो हमारे हृदय पर भय छा जाना चाहिये क्योंकि हम सब उस स्तर के नीचे हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिये निर्धारित किया है। हमारे प्रति परमेश्वर के अनुग्रह के लिये उसकी

स्तुति करें। मसीह के कारण, हमारे पाप क्षमा व शुद्ध किये गये हैं। सुसमाचार का अद्‌भुत शुभ समाचार यह है कि हमें वह नहीं मिलता जो मिलना चाहिये। हम सावधान रहें कि हम प्रभु यीशु व उनकी दया की ओर पीठ न कर लें ओर और अपने को उसी परिस्थिति में न रखें जिस में इस्राएली इस संदर्भ में थे।

परमेश्वर का कोप सत्य था। क्योंकि उसकी प्रजा उसके विरुद्ध विद्रोह में लगी थी, परमेश्वर कोई दया न दिखायेगा। उनको छोड़ा नहीं जायेगा। उनका अन्त आ गया था। उस दिन, परमेश्वर का क्रोध उंडेला जायेगा। (पद 8) जवाबदेही और न्याय का दिन आ रहा था। ये कितने भयंकर शब्द हैं। एक दिन फिर इन शब्दों को दोहराया जायेगा। आज अनुग्रह का दिन है। आज परमेश्वर अपना हाथ बढ़ा रहा है कि आपको दया व क्षमा प्रदान करे। यदि आज आप उसकी दया व क्षमा से इंकार करेंगे, तो एक दिन उसे कहते सुनेंगे, "तुम्हारा अन्त आ गया।" वह दिन आ रहा है जब अन्तिम पुकार होगी और रेल स्टेशन से निकल जायेगी और आप उस परमेश्वर के क्रोध को सहने के लिये पीछे छूट जायेंगे जो आपके जीवन भर आप से विनती करता रहा।

वह दिन तुम्हारे और मेरे लिये कब आयेगा? इसे कोई नहीं जानता, दिन आ गया है। आपके व मेरे लिये, वह कभी भी हो सकता है। जीवन कितने शीघ्र समाप्त हो सकता है? हम में से कोई नहीं जानता कि क्या हम अगला दिन देख पायेंगे। मैं टोरोन्टो में एक गली में लोगों को प्रचार कर रहा था। सुसमाचार का प्रचार करने के बाद, एक व्यक्ति प्रभु के विषय बात करने के लिये आगे आया। हम कुछ देर बातें करते रहे और मैंने पूछा क्या उसने कभी अपने हृदय में प्रभु यीशु को ग्रहण किया। उसने कहा, नहीं। मैंने उससे पूछा, क्या वह उसी समय क्षमादान चाहता है। उसने कहा, 'मैं सोचता हूं, घर जाने तक मैं इसकी प्रतीक्षा करूं' (जहां भी वह था)। मैंने उसको याद दिलाया कि दरअसल उसको तो यह भी ज्ञान नहीं कि रात वह घर पहुंच पायेगा या नहीं। मैं नहीं जानता कि क्या उसने कभी अपना हृदय प्रभु के लिये खोला या नहीं। उस सभा के बाद मैं उससे कभी नहीं मिला। कल के बारे में कुछ निश्चित नहीं है।

पद 10 में यहेजकेल ने एक लाठी में कली निकलने के चिन्ह का प्रयोग किया। यह चित्रण हमें उन पुराने दिनों में ले जाता है जब परमेश्वर के लोगों

ने संदेह जताया कि हारून उनका अगुवा कैसे हो। परमेश्वर ने उन्हें एक चिन्ह दिया। उनमें से प्रत्येक एक लाठी लाया और प्रभु के आगे रख दी। जिसकी लाठी में कलियां निकल आये, वही होगा जो परमेश्वर का चुना हुआ दास है। हारून की लाठी में न केवल कलियां निकलीं बल्कि फूल व फल भी लगे। यह प्रभु की ओर से एक चिन्ह था। यहां पर परमेश्वर अपने लोगों को याद दिलाता है कि इसी प्रकार पाप के लिये भी उसके दण्ड के चिन्ह होंगे। इस्राएल की लाठी में कलियां लगीं और दुष्टता के फल लगे। अब उन्हें अपनी दुष्टता का मूल्य चुकाना होगा।

दण्ड से कोई नहीं बचेगा (पद 11)। उनके दण्ड के दिन कोई शोक करने वाला न होगा। बेचने व खरीदने वाले दोनों शोकित होंगे। खरीदने वाला इसलिये शोकित होगा क्योंकि जो उसने खरीदा वह उसका आनन्द न उठा सकेगा। विक्रेता शोकित होगा क्योंकि वह लाभ का आनन्द न उठा सकेगा। उसका जीवन संक्षिप्त कर दिया जायेगा। जो उसने जमा किया उसमें से कुछ भी अपने जीवन में हिसाब देने के दिन उसके काम न आयेगा। जो उनके पास था सब ले लिया जायेगा। उनको बंजर छोड़ा जायेगा। उन्होंने आत्मिक बातों में निवेश नहीं किया, और अब उनके पास कुछ न बचेगा।

तुरही फूंकी जायेगी और लोग तैयार किये जायेंगे, परन्तु कोई युद्ध में न जायेगा। लड़ने का अवसर आने के पहले ही उनको गिरा दिया जायेगा। वे तलवार, अकाल व महामारी से नाश होंगे। जो बचेंगे, बिखर जायेंगे (पद 16 देखें)। यहेजकेल ने इस बात को अध्याय में दिखाया जब उसने अपना सिर मुण्डा कर बालों को तीन भागो में बांटा (देखें यहेज. 5:1-4,12)। दण्ड का वह दिन बड़े शर्म व अपमान का दिन होगा।

उनका पैसा उनको परमेश्वर के प्रकोप से न बचायेगा। उनका सोना, चांदी कोई सामर्थ का कारण न होगा। वे अपने धन से परमेश्वर को रिश्वत नहीं दे सकते। वे किसी को किराये पर नहीं ले सकते, जो उन्हें परमेश्वर के प्रकोप से बचाये। परमेश्वर के प्रकोप के दिन, उनकी धन की अधिकाई भी जीवन की आवश्यकताएं उनको प्रदान न कर पायेंगी। वे अपने सोने और चांदी को 'अशुद्ध वस्तु' समान सड़कों पर फैंक देंगे (पद 9)। खरीदने के लिये कुछ न होगा क्योंकि उनकी आशीषें अन्यजातियों द्वारा लूट ली जायेंगी। (पद 20-21)

शत्रु उनके देश पर आक्रमण कर उनकी सम्पत्ति को ले लेगा। परमेश्वर उनको मन्दिर को अशुद्ध करने से न रोकेगा। कोई स्थान ऐसा न होगा जहां शत्रु न पहुंचेगा (पद 22)। परमेश्वर की प्रजा विस्मित होगी कि क्या परमेश्वर इस सब में है। उन्होंने मन्दिर में उसका सम्मान न किया, तो परमेश्वर उसको उनसे ले लेगा। अन्यजाति आकर देश व मन्दिर दोनों को ले लेंगे। हमें स्वयं से पूछना है कि क्या ऐसा कई स्थानों पर आज हमारे देश व कलीसिया में नहीं हुआ है। आज कलीसियाएं अविश्वासियों से भरी हुई हैं। पुलपिट से पास्टर लोग हमारे देश में सेवकाई करते हैं, जो स्वयं नहीं जानते कि प्रभु यीशु को अपना प्रभु व उद्धारकर्त्ता स्वीकारने का क्या अर्थ है। संडे स्कूल में वे शिक्षक पढ़ाते हैं जिन्होंने कभी अपने पापों से मन नहीं फिराया। क्या आज के हमारे मन्दिर अजनबियों को नहीं दे दिये गये, जैसा यहेजकेल के दिनों में था?

अपने पाप व विद्रोह में, परमेश्वर के लोग उस शांति को न पायेंगे जिसकी खोज में वे हैं। परमेश्वर बिना, उनके हृदय खाली होंगे। वे नबियों को पुकारेंगे, वरन् नबियों को कोई दर्शन न मिलेंगे। प्रभु खामोश होगा (पद 26)। जब वे अपने याजकों की ओर मुड़ेंगे, तो पायेंगे कि वे उनको सामर्थ न दे पायेंगे। जब उनके धार्मिक नेता उनकी सहायता न कर सकेंगे, तो वे अपने राजनैतिक नेताओं की ओर फिरेंगे। परन्तु उनका राजा शोक में पाया जायेगा और प्रधान सुनसान में (पद 27)। राजनैतिक नेताओं से कोई सहायता न मिलेगी। उनका ध्यान 'देश के दूसरे लोगों' की ओर होगा। परन्तु हरेक उनके समान दुखी होगा और उनकी समस्या का समाधान न कर सकेगा। (पद 27)

दरअसल यह अन्त होगा। कुछ भी नहीं रहेगा कि वे अपनी रक्षा के लिये कर सकें। सारी संभावनाएं उन्होंने समाप्त कर दीं। कोई नहीं होगा जो उनके बचाव के लिये आये। उनकी नियति परमेश्वर का प्रकोप है।

यहेजकेल हमें ऐसे जीवन जीने के खतरे बता रहा है जो परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह में हो। परमेश्वर के प्रकोप का दिन चला आ रहा है। एक समय है कि प्रभु यीशु संसार का न्याय करने आयेगा। उस दिन आप का धन व्यर्थ होगा। उस दिन आप बैठकर प्रभु से अपने दण्ड के लिये विनती न कर सकेंगे। आपके मित्र, धार्मिक नेता या राजनैतिक नेता आपकी सहायता न कर सकेंगे। अपने न्यायी के सामने आप अकेले खड़े होंगे। केवल आप

ही उसका उत्तर देंगे और दण्ड पायेंगे। समय आ रहा है जब परमेश्वर न्याय करेगा। वह सदा हमसे संघर्ष न करता रहेगा। यह अध्याय हमारे लिये एक सत्य चेतावनी है। इस समय वह अपनी क्षमा व करुणा प्रदान करना चाहता है। परन्तु वह दिन आ रहा है जब वह क्षमा के अपने दान को हटा लेगा और हमें वह देगा जिसके योग्य हम हैं। आज का दिन उद्धार का दिन हैं। आज मन फिराव का दिन है। बिना प्रभु की इच्छा के प्रति अपने को समर्पित किये बिना एक और क्षण को गुज़रने न दें।

### *विचार करने के लिये:*

- क्षण भर को अपने जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह के प्रमाणों पर विचार करें। क्या ऐसे समय हैं जब उसने आपको वह नहीं दिया जिसके योग्य आप हैं?
- यदि परमेश्वर इस समय हमें वह नहीं देता जिसके योग्य हम हैं, तो फिर क्यों उसके लिये जीवन जीने के लिये चिन्तित हैं? क्यों नहीं अपनी इच्छा से जीते?
- 'मन्दिर विदेशियों को दिया गया' का आज क्या प्रमाण है? इसके कुछ व्यावहारिक उदाहरण दें।
- उनके न्याय के दिन, लोग याजकों व भविष्यवक्ताओं के पास सहायता के लिये आये, परन्तु न पाई। यदि ये लोग आपके या आपके चर्च के पास व्यक्तिगत रूप से आयें, तो क्या उनको आवश्यक सहायता मिलेगी?

### *प्रार्थना के लिये:*

- क्या आपके जीवन में कुछ ऐसी बाते हैं जिनका अंगीकार करना ज़रूरी है? इन पापों को परमेश्वर के सामने मानने में कुछ क्षण लगायें।
- परमेश्वर से कहें कि आज की कलीसिया को शुद्ध करे। उन कलीसियाओं के लिये प्रार्थना करें, जिनकी अगुवाई वे लोग कर रहे हैं जिन्हें स्वयं प्रभु का ज्ञान नहीं।
- परमेश्वर से कहें कि आपको शुद्ध करे और अपने लौटने के लिये आपको तैयार करे।

8

# मन्दिर का दर्शन

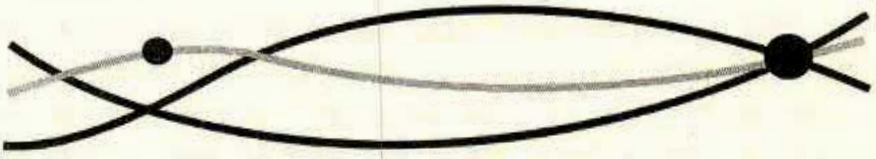

*पढ़ें यहेजकेल 8*

जबकि यहेजकेल देश के प्राचीनों के साथ अपने घर में बैठा था, प्रभु का आत्मा उस पर आया। हमें यह नहीं बताया गया कि प्राचीन यहेजकेल के घर क्यों आये थे। वे प्रभु का वचन सुनने के लिये अपनी स्वेच्छा से आये, या उनको आने के लिये विवश किया गया? स्पष्ट नहीं। स्पष्ट यह है कि जबकि प्राचीन यहेजकेल के साथ थे, उनकी उपस्थिति में प्रभु का हाथ उस पर था। हमें यह विचार मिलता है कि यहेजकेल परमेश्वर द्वारा बोलने की प्रतीक्षा कर रहा था। परमेश्वर उस पर अपने समयानुसार आया। आज हमारे युग में अपने व्यस्त कार्यक्रम में लगता है कि हमारे पास प्रभु की प्रतीक्षा करने के लिये समय नहीं है।

प्राचीनों की उपस्थिति में, भविष्यवक्ता को दर्शन में उठा लिया गया। यहेजकेल ने किसी मनुष्य का सा रूप देखा। यह व्यक्ति कमर से नीचे अग्नि से भरा था। कमर से ऊपर, वह अंगारे के समान चमक रहा था। इस वर्णन से हमें परिचित होना चाहिये। इसी व्यक्ति को परमेश्वर ने अध्याय में देखा था (देखें यहेज. 1:26-27)। जब भविष्यवक्ता ने उसे प्रथम बार देखा, उसने मुंह के बल गिरकर उसे दण्डवत् किया था। कोई शक नहीं कि वहां प्रभु यीशु मसीह अपनी महिमा में दिखा, जिसे यहेजकेल ने देखा।

जब यहेजकेल देख रहा था, इस व्यक्ति ने अपना हाथ बढ़ाया और बालों से पकड़ कर उसे उठाया और ऐसे स्थान पर ले गया जो स्वर्ग व पृथ्वी के मध्य था। अपने दर्शन में भविष्यवक्ता को यरूशलेम लाया गया। वह मन्दिर के भीतरी आंगन के उत्तरी द्वार पर खड़ा था। जब यहेजकेल इधर उधर देख रहा था तो उसने एक मूर्ति देखी। मूर्ति का कोई विवरण नहीं दिया गया है। वह मन्दिर में नहीं होनी चाहिये थी। उसको एक ऐसी प्रतिमा बताया गया है जो 'जलन को भड़काती' है (पद 3)। परमेश्वर वह परमेश्वर नहीं जो अपनी महिमा को दूसरों के साथ बांटे। इस मूर्ति के कारण उसे जलन हुई।

मन्दिर में जो प्रतिमा पाई गई उसके बिल्कुल विपरीत यहेजकेल को उस स्थान पर परमेश्वर की उपस्थिति का आभास हुआ। वह हमें याद दिलाता है कि उस दिन जिस महिमा का अनुभव उसने दर्शन में किया वह उस अनुभव के समान था जिसका विवरण उसने पुस्तक के आरम्भ में दिया। वह उसी परमेश्वर की उपस्थिति के प्रति जागरूक था जिसने उसको अपनी भविष्य संबंधी सेवकाई के लिये बुलाया। यह कल्पना करना कठिन है कि इसका यहेजकेल पर क्या प्रभाव हुआ। एक ओर तो वह परमेश्वर की पवित्र सामर्थी उपस्थिति का ज्ञान रखता था, जो भय को प्रेरित करती है। दूसरी ओर उसने लोगों की दुष्टता को देखा, जब कि वे इस महान व पवित्र परमेश्वर के नाम की निन्दा कर रहे थे। उसी मन्दिर में जहां उसकी आराधना होती है। यहेजकेल दो चरम के बीच फंसा था।

जब वह प्रतीक्षा कर रहा था तो उसने प्रभु की वाणी को सुना, 'क्या तू देखता है ये लोग क्या कर रहे हैं- इस्राएल का घराना यहां अति घृणित कार्य कर रहा है, वे बातें जो मुझे मेरे पवित्रस्थान से दूर कर देंगी?' (पद 6)। परमेश्वर ने यहेजकेल को याद दिलाया कि ये काम उसकी उपस्थिति को उसके लोगों से दूर कर देंगे। परमेश्वर ने इस बात पर गम्भीरता से देखा। वह ऐसे स्थान पर न रहेगा जहां उसकी निन्दा होती है। वह अपनी उपस्थिति तथा अपनी आशीष को हटा लेगा, यदि ऐसा ही चलता रहा। आज हमारे लिये यह कितनी सामर्थी चेतावनी है। कल्पना करें, आपका समाज कैसा होगा यदि परमेश्वर अपनी उपस्थिति को हटा ले। कल्पना करें, आपकी कलीसिया कैसी होगी यदि परमेश्वर अपनी आशीष को हटा ले।

तब यहेजकेल को मन्दिर के द्वार पर ले जाया गया जहां उसने दीवार में एक छेद देखा। प्रभु ने भविष्यवक्ता से कहा कि उस छेद को खोदे।

दीवार के छेद को खोदते हुए, यहेजकेल को एक द्वार दिखाई दिया। उसको उस द्वार से प्रवेश करने को कहा गया। यहेजकेल ने प्रवेश किया और वहां उसके सामने दीवार पर हर प्रकार के पशु व प्रतिमाओं के चित्र बने हुए थे। ये पशु तथा रेंगनेवाले जन्तु प्रभु की दृष्टि में अशुद्ध व घृणित थे। परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार, इस्राएलियों को इन पशुओं को छूना भी नहीं था। यहेजकेल ने परमेश्वर के मन्दिर में इन अशुद्ध वस्तुओं को देखा। इसके अतिरिक्त, यहेजकेल ने सत्तर प्राचीनों को हाथ में धूपदान लिये इन घृणित प्रतिमाओं के आगे धूप जलाते देखा। क्या ये वे प्राचीन थे जो घर में उसके सामने बैठे थे? क्या परमेश्वर उन प्राचीनों के गुप्त कार्यों को यहेजकेल पर प्रकट कर रहा था जो उसके सामने बैठे थे? उनकी इस दर्शन के प्रति क्या प्रतिक्रिया होगी?

'क्या तूने देखा इस्राएल के घराने के ये प्राचीन अंधेरे में क्या कर रहे हैं? परमेश्वर ने यहेजकेल से पूछा' (पद 12)। उन्हें विश्वास था कि वे जो गुप्त में कर रहे हैं परमेश्वर को उसका ज्ञान नहीं। परन्तु परमेश्वर ने उनको याद दिलाया कि वो सब देखता है जो वे करते हैं। मैं यहेजकेल के घर में उन प्राचीनों को देख सकता हूं जो अपने स्थान पर अशांत थे। वे बेचैन हो रहे थे जब यहेजकेल ने उनको बताया कि उन्होंने क्या देखा। वे जानते थे कि परमेश्वर उनसे तथा उनके पाखण्ड से भी बातें कर रहा है। आत्मिक अगुवे भी झूठ में जी सकते हैं, परन्तु वे उस झूठ को परमेश्वर से नहीं छिपा सकते।

इस कक्ष से, जो घृणित पशुओं व मूर्तियों से भरा था प्रभु भविष्यवक्ता को उसमें उत्तरी प्रवेश द्वार पर लाया। यहेजकेल ने कुछ स्त्रियों को अन्यजातियों की रीति पर बाबुल के देवता तामूज़ की महिमा करते देखा। इतिहासकार बताते हैं कि तामूज़ उपज का देवता था। यह उपज का देवता अच्छी फसल के लिये ज़िम्मेदार होता था। यहेजकेल ने जो देखा उससे वह परेशान हो गया। (पद 14) इन स्त्रियों को कैसे साहस हुआ कि परमेश्वर के मन्दिर में अन्यजाति देवता की उपासना कर रही थीं? जब वह इस दृश्य पर शोकित हुआ, तो प्रभु ने उससे कहा कि वह उसे और भी कुछ दिखायेगा।

उन्होंने मन्दिर के भीतरी आंगन में प्रवेश किया। वहां पच्चीस लोग मन्दिर की ओर अपनी कमर किये सिर झुका कर पूरब की ओर सूर्य की उपासना कर रहे थे। पद 17 में बताया गया है, "वे डाली को अपनी नाक

के आगे लिए रहते हैं।" जब कि हम नहीं जानते कि वास्तविक रीति क्या थी, माना जाता है कि यह भी कुछ अन्यजाति मूर्ति पूजा का तरीका था। यह महत्वपूर्ण हो सकता है कि उनकी पीठ मन्दिर की ओर थी ताकि वे झुक कर सूर्य को दण्डवत् कर सकें। ज़रूरी था कि परमेश्वर की ओर पीठ हो। यह अति गम्भीर चित्र है जो आज हमारे बीच में भी संभव हैं। यह परमेश्वर के भवन में भी काफी संभव है और उनके जो अपने को विश्वासी कहते हैं; तौभी उन्होंने कमर प्रभु की ओर विद्रोह में फेर रखी है। मूर्तियां या जिनके सामने आज हम दण्डवत् करते हैं भिन्न हो सकती हैं। कुछ लोग भौतिकवाद की मूर्ति के सामने झुकते हैं। कुछ अपने व अपने गर्व के सामने झुकते हैं। कुछ लोग संसारिकता के जाल में फंस गये हैं। जो कुछ परमेश्वर ने उस दिन मन्दिर में देखा उससे वह दुखी हुए। उसने बाह्य से आगे देखा और हृदय के व्यवहार को देखा। जब वह हमें देखता है तो उसे क्या दिखाई देता है?

मन्दिर दुष्टता से भरा था। यह वह स्थान था जो परमेश्वर के सम्मान को समर्पित था। अब उससे भी अधिक अपमान हो रहा है। यहां परमेश्वर के लोग अपने गलत कार्यों द्वारा उसके नाम की निन्दा करते हैं। आज हमारे देश में ऐसी कलीसियाएं हैं जो इससे कुछ भिन्न नहीं हैं। ये कलीसियाएं अपने इतिहास में कभी को प्रभु की महिमा के लिये समर्पित थीं। आज वे हमारे समय की अन्यजातियों की रीतियों में फंस कर पतित हो गई हैं। अब वे परमेश्वर को महिमा नहीं देते। जब वह आपके चर्च की दीवारों में से देखता है तो उसे क्या दिखाई देता है? जब वह आपके हृदय की गहराई से देखता है तो उसे क्या दिखाई देता है? ऐसा नहीं कि परमेश्वर के लोग धार्मिक नहीं, वे अभी भी मन्दिर जाते और भेंट लाते हैं। अपने को तसल्ली देने योग्य परमेश्वर को अपने में रखते हैं परन्तु अपने समय के अन्यजाति देवताओं के सामने भी झुकते हैं। परमेश्वर उनके पाखण्ड को देखता है। यहां वह अपने भविष्यवक्ता को एक झलक दिखाता है कि धरातल के नीचे क्या हो रहा है। आज उसे क्या दिखता होगा?

### *विचार करने के लिये:*

- क्या संभव है कि आज की कलीसिया भी पाखण्ड की दोषी है जैसा यहेजकेल के दिनों में परमेश्वर के लोग मन्दिर में थे? कुछ उदाहरण दें।

- आज कलीसियाएं अपने भीतर किस प्रकार के देवताओं को लाने की दोषी हैं?
- आज जब परमेश्वर हमारी कलीसियाओं को देखता है तो आप क्या सोचते हैं कि उसे दिखता है?
- क्या कुछ है जिसे हम परमेश्वर से छिपा सकते हैं? यह संदर्भ हमें इस प्रश्न का उत्तर देने में कैसे सहायक है?

***प्रार्थना के लिये:***

- अपने आत्मिक अगुवों के लिये प्रार्थना करें। परमेश्वर से कहें कि उन्हें विश्वासयोग्य हृदय दे जो पाखण्ड से स्वतंत्र हो।
- क्या कुछ वस्तुएं हैं जो आप अंधेरे में करते हैं जिनके विषय कोई नहीं जानता? यह संदर्भ हमें क्या सिखाता है? परमेश्वर से मांगें कि आपको ऐसे कार्यों व पापों से स्वतंत्र करे।
- एक क्षण प्रार्थना करें कि परमेश्वर उस अंधेरे को उजागर करे जो आपकी कलीसिया में है और जो उसे उन्नत होने से रोकता है।

9

# नगर में संहार

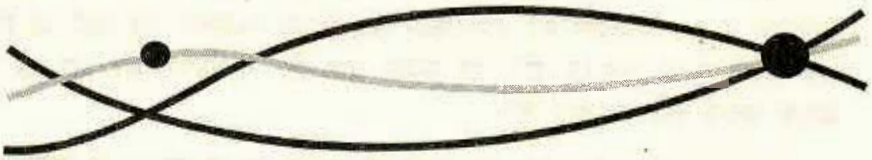

*पढ़ें यहेजकेल 9*

गत मनन में हमने देखा कि परमेश्वर भविष्यवक्ता यहेजकेल को किस प्रकार दर्शन में यरूशलेम को लाया। जहां उसने उसे नगर व मन्दिर दिखाया। यहां परमेश्वर ने मन्दिर में लोगों के पापों को दिखाया। इस पाप के कारण वे परमेश्वर को बाहर निकाल रहे थे। यहां अध्याय 9 में हम देखते हैं कि उनका क्या होगा जिन्होंने इस्राएल के पवित्र की ओर पीठ मोड़ ली।

अपने दर्शन में यहेजकेल ने एक ऊंची आवाज़ सुनी जो नगर के अधिकारियों के आने के लिये बुलाहट थी। पद में ध्यान दें कि इन व्यक्तियों को आज्ञा दी गई कि आक्रमक शस्त्रों के साथ आयें। यहेजकेल ने छः लोगों को आते देखा। इनमें से प्रत्येक हाथ में 'घातक हथियार' लिये आयो (पद 2)। उनमें से एक व्यक्ति महीन वस्त्र पहने था और उसके पास लेखन सामग्री थी।

ये लोग कौन थे? वे परमेश्वर के स्वर्गदूत ज्ञात पड़ते हैं। यह हम कई महत्वपूर्ण अवयवों द्वारा समझते हैं। प्रथम, ये वे उपकरण थे जिनका प्रयोग परमेश्वर अपने लोगों पर उनके पापों का दण्ड लाने के लिये करेगा। दूसरे, वह जिसके पास लेखन सामग्री थी उसने उस पर मुहर कर दी जो नगर में दुष्टता पर विलाप करते थे। यह विशेष उत्तरदायित्व केवल मानवों को नहीं

दिया जा सकता था। यहां ध्यान दें कि नगर का अधिकार स्वर्गदूतों के हाथ में था। यह हमें स्वर्गदूतों की सेवकाई के विषय कुछ बताता है। उनको नगर तथा व्यक्तियों पर अधिकारी बनाया गया है ताकि परमेश्वर के उद्देश्यों की पूर्ति करें।

ध्यान दें कि ये स्वर्गदूत आये और वेदी के सामने खड़े हो गये। वेदी वहां थी जहां पाप के लिये बलिदान चढ़ाये जाते थे। वे मन्दिर में उस चिन्ह के सामने खड़े होते थे जो परमेश्वर के लोगों के पाप का प्रतीक था और उस क्षमा का जो उनको मिल सकती थी। एक प्रजा के रूप में, परन्तु, इस्राएल ने इस क्षमादान को अस्वीकार कर दिया। इसलिये यह सही था कि यह स्वर्गदूतों के इकट्ठे होने का स्थान बना कि परमेश्वर की ओर से वे उसके लोगों को दण्डित करें।

जैसा यहेजकेल देख रहा था, वाचा के सन्दूक पर के करूब से परमेश्वर का तेज मन्दिर की डेवढ़ी पर आया। पुराने नियम युग में, परमेश्वर स्वयं का प्रगटीकरण करूब के पंखों से करता था, जो परम पवित्रस्थान में वाचा के सन्दूक पर था। अब उसकी उपस्थिति परमपवित्र स्थान से हटा दी गई। वह मन्दिर की डेवढ़ी पर जाने के लिये तैयार खड़ा था। परमेश्वर के लोगों के पापों ने उसके ही भवन से उसे निकाल दिया।

यहेजकेल ने परमेश्वर की वाणी को उस स्वर्गदूत को बुलाते सुना जिसके पास लेखन सामग्री थी। उसने उसको लोगों के मध्य जाने की आज्ञा दी, ताकि उन लोगों के माथों पर मुहर करे जो देश में पाप के कारण विलाप करते थे। माथे पर मुहर स्वाभाविक ही सुरक्षा के उद्देश्य से थी। परमेश्वर ध र्मी को दुष्ट के साथ दण्ड न देगा। गेहूं व कड़वे दानों को अलग करना था। उसने भेड़ों को बकरियों से अलग किया। यहां ध्यान दें कि ये वे थे जो देश के लोगों के पापों के विषय शोकित थे, जिन पर कि मुहर की गई। क्या हम उनमें होंगे? ऐसे समय होते हैं जब हम उस सबके प्रति इतने असंवेदनशील हो जाते हैं जो हमारे चारों ओर होता है कि पाप से लगता है हमें कोई परेशानी नहीं होती। हम दुष्टता पर न दुखी होते और न शोक करते हैं। लगता है परमेश्वर इस बात को गम्भीरतापूर्वक लेता है। वह ऐसे लोगों को देखता है जो पाप के प्रति उसके दुख में भागी होते हैं।

यहेजकेल ने सुना कि प्रभु ने मारक हथियारों से सज्जित स्वर्गदूतों को उस स्वर्गदूत के पीछे जाने के लिये कहा, जिसके हाथ में लेखन सामग्री थी

कि उन सब को नाश करें जिनके माथों पर मुहर नहीं की गई थी। उनको कोई दया नहीं दिखानी थी परन्तु उन सब को पूर्णतया नष्ट करना था जो अपने मध्य पाप पर शोकित नहीं होते। उनको बूढ़े, जवान, बच्चों, स्त्रियों सब को घात करना था (पद 6)।

ध्यान दें कि प्रभु ने स्वर्गदूत सेवकों से कहा कि पवित्रस्थान से आरम्भ करें। वहां से क्यों आरम्भ करें। वहां हमने देखा कि इसी स्थान पर परमेश्वर के नाम की निन्दा की गई। इन लोगों के पास अवसर था कि परमेश्वर की ओर फिरें परन्तु उन्होंने अपनी पीठ उसकी ओर फेर दी। विशेष रूप से ध्यान करें कि परमेश्वर ने मन्दिर के प्राचीनों से दण्ड देना आरम्भ किया। ये परमेश्वर के लोगों के अगुवे थे। उनका दण्ड अति कठोर था। उनका काम था कि परमेश्वर के लोगों को वचन का सत्य समझाते, इसके बदले उन्होंने उन्हें भटका दिया। अगुवों के रूप में निश्चय ही यह हमें हमारे बड़े उत्तरदायित्व की याद दिलाता है। न्याय हमसे आरम्भ होगा।

पद 7 में हम देखते हैं कि परमेश्वर को इससे कोई फर्क अब नहीं पड़ता कि उसका मन्दिर अशुद्ध हो। उसने अपने स्वर्गदूतों को मन्दिर में जाने की आज्ञा दी और कि आंगन को मृतकों से भर दे। परमेश्वर के लोगों के लिये यह कैसा विस्मय होगा कि स्वयं परमेश्वर उनके पाप के कारण अपने मन्दिर को अशुद्ध कर रहा है। अब यह स्थान पवित्र नहीं है। उसको अशुद्ध तो उन परमेश्वर के लोगों के कार्यों के द्वारा पहले ही कर दिया गया जो उसमें रहते थे।

स्वर्गदूत दण्ड देने के अपने मिशन पर निकल पड़े। यहेजकेल अकेला रह गया। उसने लोगों को बाहर नगर में जाकर निवासियों की हत्या करते देखा। यह कल्पना करना अति कठिन है कि उसके मन में क्या चल रहा था, जब वह इतनी भयंकरता को अपने सामने देख रहा था। स्त्री, पुरुष बच्चे, बूढ़े सब मारक शस्त्रों से मारे जा रहे थे। नगर में लाशें बिखरी पड़ी थीं। जब उसने यह भयंकर दृश्य अपने सामने देखा, यहेजकेल डरा कि कहीं सारा देश नाश न हो जाये। इस बात पर उसने परमेश्वर से प्रश्न किया। उसने पूछा क्या वह समस्त नगर को नाश करेगा (पद 8)। उसके पीछे यहेजकेल के मन में परमेश्वर के न्याय के प्रति शंका थी। परमेश्वर ने पद 9 में उसे याद दिलाया कि उनका दण्ड न्यायोचित था। देश हिंसा व हत्या से भरा था। वे परमेश्वर से फिर गये थे।

जब यहेजकेल इस मामले पर, प्रभु परमेश्वर से बात कर रहा था तो वह स्वर्गदूत जिसके पास लेखन सामग्री थी यह बताने के लिये वापस लौटा कि उसने अपना काम पूरा कर दिया। न्याय अन्तिम था। अब उस में परिवर्तन नहीं हो सकता था। अब आगे का कोई अवसर नहीं। हमारे सामने का यह दृश्य परमेश्वर के न्याय व पवित्रात्मा की याद दिलाता है। पाप परमेश्वर की दृष्टि में घृणित है। वह उसको हल्के तौर पर नहीं लेता। वह दिन आ रहा है जब प्रभु परमेश्वर पाप का दण्ड देगा। उस दिन वह कोई दया नहीं दिखायेगा। पश्चात्ताप का समय अभी है। अब समय है उसके पास आने का, इससे पहले कि देर हो जाये।

### *विचार करने के लिये:*

- क्या विश्वासियों के रूप में हम अपने स्तर नीचे कर रहे हैं, और पाप को और अधिक और अधिक स्वीकार रहे हैं? स्पष्ट करें।
- जैसे पाप के प्रति आज परमेश्वर शोकित है तो वह क्या चीज़ है जो हमें उसके समान शोकित नहीं होने देती?
- परमेश्वर के दण्ड के सत्य के विषय यह अध्याय हमें क्या सिखाता है?
- परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम का एक प्रतीक यह है कि हम शोकित होते हैं जब हम जानते हैं कि उसका हृदय टूटा है। क्या आप इस कथन से सहमत है, या नहीं? स्पष्ट करें। व्यक्तिगत रूप से इसका आपके लिये क्या अर्थ है?

### प्रार्थना के लिये:

- पाप के संबंध में परमेश्वर से मांगें कि आप को अपना हृदय व मन दे।
- परमेश्वर से उन सब अवसरों के लिये क्षमा मांगें जब आपने अपने चारों ओर के पापों के प्रति कोई चिन्ता नहीं दिखाई।
- परमेश्वर से कहें कि विश्वासियों की एक ऐसी पीढ़ी को तैयार करे जो पवित्रता व धार्मिकता के लिये देश में संघर्ष करे।

10

# तेज जाता रहा

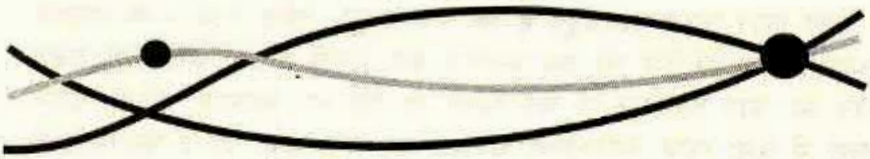

*पढ़ें यहेजकेल 10*

अध्याय 8 में हमें प्रभु के दृष्टिकोण से मन्दिर की एक झलक मिली। हमने देखा कि किस प्रकार परमेश्वर के मन्दिर में लोग दूसरे देवताओं की आराधना कर रहे थे। इससे प्रभु में ईर्ष्या जागृत हुई। उसने नगर भर में स्वर्गदूतों को भेजा कि लोगों का संहार करें, जो राष्ट्र के पापों के विषय शोकित न हुए। जो यहेजकेल ने उस दिन देखा उससे वह बड़ा प्रभावित हुआ। उसको विस्मय हुआ कि क्या यरूशलेम में कोई बचेगा जब परमेश्वर द्वारा दण्ड पूरा हो जायेगा।

जब दर्शन में यहेजकेल ने इधर उधर देखा, तो उसने कुछ करूब देखे। इन स्वर्गदूतों के विषय हम बाद में कुछ कहेंगे। इन करूबों के सिर पर यहेजकेल ने एक बड़ा सिंहासन देखा जो नीलम का बना लगता था। स्वाभाविक था, यह दर्शनीय सिंहासन था। इस अध्याय में यहेजकेल ने चार स्वर्गदूतीय प्राणी देखे, प्रत्येक के चार पैर और चार मुख थे। स्वाभाविक है कि अध्याय के ये प्राणी स्वर्गदूत थे, इस अध्याय के करूबों के समान। अध्याय के प्राणियों के ऊपर यहेजकेल ने उसी सिंहासन को देखा। (देखें यहेज. 1:26)

जब वह सुन रहा था, तो यहेजकेल ने सिंहासन में से एक आवाज़ सुनी जो महीन मलमल पहने व्यक्ति के लिये थी। इस व्यक्ति से हमारा परिचय अध्याय 9 में हुआ। यह वह था जिसके पास लेखन सामग्री थी और उसने उनके माथों पर मुहर लगाई जो पाप के विषय विलाप कर रहे थे (देखें यहेज. 9:2)। इस व्यक्ति से करूबों के नीचे पहियों में जाकर अंगारों को जमा करने को कहा गया। उसको उन्हें नगर नगर भर में फैलाना था। ये अंगारे परमेश्वर के दण्ड का प्रतीक मालूम देते हैं।

यह ध्यान करना महत्वपूर्ण है कि ये स्वर्गदूत, यहेज. 1:4-5 के अनुसार धधकती आग में घिरे थे। हम कल्पना कर सकते हैं कि पहियों में प्रवेश करने का कार्य हल्केपन से नहीं किया जा रहा था। मलमल पहिना व्यक्ति लपटों में घुसा ताकि आज्ञानुसार कोयलों को जमा करे। पद 2 पर ध्यान दें कि व्यक्ति को अपने हाथों में अंगारे भर कर उठाने थे। सामान्यता तो अंगारे हाथों को जला देते हैं। इस व्यक्ति की जलने से रक्षा की गई। परमेश्वर हमें कभी उस काम को करने के लिये नहीं बुलाता जिसके लिये वह हमें सज्जित न करे कि उसकी सामर्थ से न किया जाये। जब हम आज्ञाकारिता में चलते हैं तो वह हमारी रक्षा करता है, जैसा उसने इस मलमल पहने व्यक्ति की करी। यह दृश्य हमें मूसा की याद दिलाता है जब वह नाश हुए बिना प्रभु की उपस्थिति में गया।

जब व्यक्ति पहियों के मध्य गया, तो मन्दिर का भीतरी आंगन बादल से भर गया। प्रभु की महिमा करूबों के ऊपर से उठी और परमेश्वर के भवन की डेवढ़ी पर ठहर गई। यहेजकेल परमेश्वर के तेज के प्रगटीकरण को देख सका। उसने करूब के पंखों की आवाज़ को सुना व ध्यान से सुना। यह एक पवित्र क्षण था। करूब के परों की आवाज़ प्रभु की वाणी के समान थी। यह सामान्यता बताता है उस विस्मय के भाव को जो इस आवाज़ से पैदा हुआ।

तब यहेजकेल ने प्रभु की वाणी को उस व्यक्ति को आज्ञा देते हुए सुना जो मलमल पहने था कि 'पहियों के मध्य से आग ले जो करूबों में थे' (पद 6)। जब यहेजकेल देख रहा था, तो एक करूब ने हाथ बढ़ा कर कुछ अंगारे लिये और मलमल पहने व्यक्ति के हाथ में रख दिये। उसने पद 8 में ध्यान दिया कि करूब के परों के नीचे मनुष्य जैसे हाथ थे। मलमल पहने व्यक्ति ने आग ली और बाहर चला गया।

तब यहेजकेल का ध्यान करूब पर केन्द्रित हुआ और उसने पद 9-17 में उनका विस्तृत वर्णन किया। आइये क्षण भर इन करूबों पर ध्यान दें। भविष्यवक्ता ने पहले देखा कि प्रत्येक करूब का एक पहिया था। और इन पहियों का रंग फिरोजे का सा था। ये पहिये अध्याय के पहियों जैसे थे। प्रत्येक पहिया दूसरे पहियों में था। अपनी बनावट के कारण ये पहिये किसी भी दिशा में चल सकते थे (उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम)। आगे यहेजकेल ने देखा कि इन करूबों के शरीर व पहियों में आंखें ही आंखें थीं। हर ओर देखने की उनमें विशेष क्षमता थी। एक और महत्वपूर्ण बात इन करूबों के विषय यह थी कि उनमें से प्रत्येक के चार मुख थे। प्रत्येक करूब का-एक मनुष्य, एक सिंह व एक उकाब का मुख था। ये परमेश्वर की महानतम् कृतियों के चेहरे थे। करूब परमेश्वर की स्वर्गीय सृष्टि के प्रतीक थे। मनुष्य परमेश्वर की सृष्टि के पार्थिव राजा के चेहरे का प्रतीक था। सिंह जंगली पशुओं का राजा और उकाब पक्षियों का राजा। वे शक्तिशाली व बुद्धिमान प्राणी थे। पद में यहेजकेल ने ध्यान दिया कि ये करूब वे ही प्राणी थे जिनको अध्याय में उसने कबार नदी पर देखा था। उसने पद 20 में यह भी कहा कि जो सिंहासन उसने देखा वह इस्राएल के परमेश्वर का सिंहासन था।

पद 22 हमारे लिये कुछ समस्या पैदा करता है। यहेजकेल ने ध्यान दिया कि जो मुख उसने अध्याय 10 में देखे वे उन्हीं प्राणियों के चेहरों के समान थे जो उसने कबार नदी पर देखे थे। अध्याय 1 में कबार नदी पर भविष्यवक्ता ने चार प्राणियों का वर्णन किया जिनके मुख मनुष्य, बैल, सिंह व उकाब के समान थे। अध्याय 10 में परन्तु करूब का मुख बैल के समान न था। यहां चेहरा बैल के स्थान पर करूब का था। यहां भविष्यवक्ता ने हमें क्यों कहा कि चेहरे समान थे? टीकाकार इस पद से परेशान रहते हैं। स्पष्टीकरण का दायरा करूब के मुख की बैल के मुख से समानता से लेकर लेखकों की गलती तक बताया गया है जिन्होंने लेखों की प्रतिलिपियां बनाईं। यद्यपि इस पद का हमारे पास सही स्पष्टीकरण नहीं है परन्तु यहेजकेल ने अपनी बात कह दी। ये करूब उस अध्याय के करूबों के समान थे।

पहियों व करूबों में एक निकट संबध है। करूब की आत्मा पहियों में थी। जहां कहीं पहिये जाते थे, वहीं करूब जाते थे या इसका उल्टा। ये स्वर्गदूत अपने नहीं थे। उनकी अगुवाई किसी बाहरी शक्ति के द्वारा की जा रही थी। वे पूर्णतया पहियों पर आधारित थे। उनकी आत्मा पहियों में थी।

यह वह भाव है कि हमें भी इन स्वर्गदूतों के समान होना है। हमें प्रभु यीशु द्वारा खरीदा गया है। हम उसके सेवक हैं। हमने अपने अधिकार छोड़ दिये। अब हमें बुलाहट है कि उसकी अगुवाई व आज्ञा के अनुसार चलें, वह आज्ञाकारिता से हो, उन करूबों के समान।

जब मलमल पहने व्यक्ति ने करूब से आग को ले लिया, तो परमेश्वर का तेज मन्दिर की डेवढ़ी पर से हट गया। वह करूबों के ऊपर चला गया। पद 19 में करूब भी पृथ्वी व मन्दिर से उठकर स्वर्ग की ओर उठ गये। जब वे ऊपर उठ रहे थे तो प्रभु का तेज उनके साथ चला गया और आगे को परमेश्वर का तेज मन्दिर में न रहा। लोगों के पापों ने उसे दूर कर दिया। उनका न्याय किया गया और वे अपनी दुष्टता पर छोड़ दिये गये।

इन अध्यायों में हमारे लिये कितना शोकपूर्ण चित्रण किया गया है। परमेश्वर की उपस्थिति आगे को अपने लोगों के साथ न थी। उनके पापों के अनुसार न्याय किया गया। उनके दुष्ट कर्मों ने प्रभु की उपस्थिति को दूर कर दिया। क्या यह चित्रण आज हमारे लिये चेतावनी है? नया नियम हमें सिखाता है कि हमारी देह प्रभु के मन्दिर हैं। जब प्रभु आपके हृदय में देखता है, तो क्या देखता है? क्या वह वही देखता है जो उसने यरूशलेम के मन्दिर में देखा? क्या उसका मन्दिर प्रभु यीशु के सम्मान को समर्पित है? क्या जो वह आपके मन व हृदय के भीतर देखता है, उससे खुश है? केवल आप ही इन प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं। यहेजकेल की भविष्यवाणी को हल्केपन से न लें। प्रका. वा. 3:20 बताता है कि यीशु कलीसिया के द्वार पर प्रवेश के लिये खड़ा है। उसको तो पहले ही कलीसिया के भीतर होना चाहिये था, परन्तु लौदीकियों ने अपने पापों के कारण उसे बाहर ही रखा। आप भी तो ऐसा ही नहीं कर रहे? यह सत्य है परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है कि वह हमें न कभी छोड़ेगा और न कभी त्यागेगा। हमारे लिये यह समझना आवश्यक है कि यद्यपि परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से हमें न छोड़ेगा, उसका तेज व उसकी सामर्थ हमें छोड़ सकती है। आज बहुत से विश्वासी हैं जो सामर्थहीन विश्वासियों के समान जीते हैं। वे अपने जीवनों में परमेश्वर की महिमा को प्रतिबिम्बित नहीं करते। दरअसल उनमें तथा उनके आस पास के अविश्वासियों में बहुत कम अन्तर है। वे प्रतिदिन परमेश्वर के आत्मा से परिपूर्ण नहीं होते। वे अपनी सामर्थ से मसीही जीवन जीना चाहते हैं। दरअसल उन्होंने अपने जीवन से परमेश्वर को निकाल दिया है, यद्यपि वे अभी भी उसका नाम लेते

हैं। परन्तु इससे कितना अन्तर हो जाता है। उसकी तुलना में जब प्रभु की उपस्थिति सामर्थी तौर से हमारे साथ होती है। लोग अन्तर को देखते हैं और अन्तर प्रभाव डालता है।

क्या आपने परमेश्वर को अपने जीवन से बाहर कर दिया है? क्या अपने पाप के द्वारा आपने महिमा व सामर्थ को दूर कर दिया है? आज ही उसके सामने उसका अंगीकार करें। आज्ञाकारिता में अपना हृदय उसके लिये खोलें। काश कि वह आप को फिर प्रवाहित करे। जो मन्दिर के साथ हुआ वह अपने साथ न होने दें।

### *विचार करने के लिये:*

- क्या परमेश्वर का तेज और उसकी सामर्थ हमारी कलीसियाओं व हमारे व्यक्तिगत जीवनों से निकल सकती है जब तक परमेश्वर स्वयं हमें न त्यागे? स्पष्ट करें।
- क्या आप ऐसे व्यक्तियों के उदाहरण सोच सकते हैं जिनसे परमेश्वर की सामर्थ व तेज का भाव उन के जीवनों से पाप के कारण जाता रहा? क्यों परमेश्वर ने उन्हें उस अन्तराल में छोड़ दिया?
- उन लोगों में क्या अन्तर होता है जो परमेश्वर के आत्मा से परिपूर्ण होते हैं तथा वे जो अपने ही प्रयत्नों से मसीही जीवन जीना चाहते हैं?

### *प्रार्थना के लिये:*

- एक बार मूसा ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसे अपना तेज दिखाये। वह जानता था कि परमेश्वर का उसका अनुभव पूर्ण न था। वह अपने जीवन में उसकी महिमा के विषय और अधिक जानना चाहता था। क्या आज आप उस प्रार्थना को करना चाहते हैं।
- आपको परमेश्वर का अनुभव एक गहरे स्तर पर अपने जीवन में भाग लेने से क्या चीज़ रोकती है? परमेश्वर से कहें कि वह आज आपसे उन रुकावटों को दूर करे।

11

# देग

*पढ़ें यहेजकेल 11*

हमें यह नहीं मानना चाहिये कि प्रत्येक मसीही अगुवा परमेश्वर का जन होता है। वे भी हैं जो सेवक तो कहलाते हें परन्तु वे सत्य सेवक नहीं। यहेजकेल में प्रभु का आत्मा भविष्यवक्ता यहेजकेल को मन्दिर के पूर्वी फाटक पर लाया। यहां भविष्यवक्ता को पच्चीस लोग मिले। हम इन पच्चीस लोगों से यहेजकेल 8:16 में मिल चुके हैं। वे मन्दिर के प्रवेश द्वार पर थे तथा अपनी पीठ मन्दिर की ओर करके सूर्य की आराधना कर रहे थे। यद्यपि ये लोग मन्दिर में थे, वे दुष्ट व्यक्ति थे। उनको परमेश्वर के तौर तरीकों की कोई चिन्ता न थी। बाइबल हमें बताती है कि वे 'नगर में दुष्ट सलाह देते थे' (पद 2)।

वे परमेश्वर के लोगों को क्या परामर्श दे रहे थे? पद हमें बताता है, वे कहते हैं, 'क्या शीघ्र ही घर बनाने का समय नहीं आयेगा? यह नगर एक हांडी है, और हम मांस।' समझने के लिये यह पद अति कठिन है। ये लोग दरअसल क्या कर रहे थे? आइये पहले देग के उदाहरण पर विचार करें। यह ध्यान देना रुचिकर होगा कि यहेजकेल ने यहेजकेल की पुस्तक में समान चित्रण का प्रयोग किया है। यहेजकेल में भविष्यवक्ता को प्रभु की ओर से आज्ञा मिली कि एक लोहे का देग ले (एक प्रकार की हांडी) और उसको मिट्टी की

तख़्ती पर जहां यरूशलेम का चित्र बना है उस चित्रण पर रख दे। यह उस सत्य का प्रतीक था कि नगर को उसके शत्रु घेर लेंगे। क्या यह संभव है कि इन पच्चीस लोगों ने यहेजकेल के चित्रण को लेकर अपने दुष्ट कार्यों को न्यायोचित ठहराने के लिये उसे तोड़ा मरोड़ा है? 'हां' वे शायद स्वयं से कहते है, 'जैसा यहेजकेल ने कहा, हम इस देग के भीतर हैं। परन्तु क्या यह सिद्ध नहीं करता कि हम सुरक्षित व ठीक से रहेंगे? क्या उस देग की दीवारें हमें शत्रु से सुरक्षित नहीं रखेंगी?' यहेजकेल का देग परमेश्वर के दण्ड का चित्रण करता है। उन्होंने देग का गलत अर्थ निकाला - शांति व सुरक्षा।

पद में ये लोग घर बनाने की बात करते हैं। इस पद के अनुवाद में यहां कुछ कठिनाई हुई है। एक अनुवाद में है, 'क्या भवन निर्माण का समय शीघ्र न होगा?' दूसरा अनुवाद 'घरों के बनाने का समय निकट नहीं है?' शब्द 'समय' है। तिरछे शब्दों से यह दिखाते हुए कि मूल में ये शब्द इस प्रकार नहीं हैं परन्तु इस पद को अंग्रेज़ी में सार्थक बनाने के लिये इनकी आवश्यकता है। इस से इस पद की व्याख्या में हमें समस्या पैदा होती है। क्या इन व्यक्तियों ने लोगों को घर बनाने का परामर्श दिया या नहीं? उत्तर इस बात पर निर्भर करता है कि आप मूल भाषा से इस पद का अनुवाद कैसे करते हैं। हम समझते हैं कि ये जो परामर्श लोगों को दे रहे थे वह दुष्टता का था। यदि वे उनको घर बनाने का परामर्श दे रहे थे तो यहां विचार यह है कि उन्हें विश्वास नहीं था कि परमेश्वर द्वारा दण्ड निकट था। वे परमेश्वर की प्रजा को उत्साहित कर रहे थे कि जैसा जीवन जी रहे हैं, जीयें। यदि, एक ओर तो यहां परामर्श घर बनाने का नहीं है, तो यह समझा जाता कि उनको किसी प्रकार सुरक्षा घेरा बनाने की आवश्यकता नहीं ताकि अपने को आने वाले शत्रु से बचा सकें। कुछ भी हो, अगुवे अंधियारे व नाश की भविष्यवाणी के विषय संदेह जता रहे थे व लोगों को झूठी सुरक्षा का आश्वासन दे रहे थे।

यिर्मयाह भविष्यवक्ता भी अगुवों के विरुद्ध इस प्रकार भविष्यवाणी करता है। 'छोटे से बड़े तक सब लालची हो गये हैं लोभ के; भविष्यवक्ता व याजक एक समान, सब धोखे की चाल चलते हैं। वे मेरे लोगों के ज़ख्मों पर पट्टी बांधते हैं मानो वह गम्भीर नहीं है। जब शांति नहीं तो वे कहते हैं 'शांति, शांति' (यिर्म. 6:13-14)।, यिर्मयाह के दिनों में भविष्यवक्ताओं ने लोगों को यह सोचने के लिये बहकाया कि सब कुछ ठीक ठाक है। जबकि असल में बातें सब गलत थीं।

हम धोखा खाना बर्दाश्त नहीं कर सकते। हमारे दिनों में भी झूठे भविष्यवक्ता हैं। वे ऐसे प्रेम के परमेश्वर का प्रचार करते हैं जो कभी किसी को नरक नहीं भेजेगा। वे घोषणा करते हैं कि स्वर्ग में सबके लिये एक स्थान है। वे कहते हैं कि सब धर्म परमेश्वर तक पहुंचाते हैं। यह परमेश्वर के वचन का संदेश नहीं है। धोखा न खाओ। सत्य एक ही है। परमेश्वर का वचन जो कि पवित्रशास्त्र में मिलता है, हमारा एक भरोसेमन्द अगुवा है।

ऐसा नहीं कि यहेजकेल के दिनों में जो कहा जा रहा था वे बातें परमेश्वर को सुनाई नहीं दे रही थीं। वह हमारे मन के विचारों को जानता है (पद 5)। वह जानता था कि किस प्रकार उसके लोगों ने मारे हुओं से गलियां भर दी हैं। उन्हें महसूस हुआ कि क्योंकि वे पवित्र नगर के देग में थे तो वे हानि से बचे रहेंगे। यहेजकेल ने उनको चेतावनी दी कि ऐसा नहीं था। पद 7 में परमेश्वर ने अपने लोगों से कहा कि वह उनको उनकी चारदीवारी वाले नगर से बाहर निकालेगा। वह उनको उनके देग की सुरक्षा से बाहर निकालेगा। वे उसी तलवार से गिरेंगे जिसका उन्हें डर था। परमेश्वर यरूशलेम की बड़ी चारदीवारी को भी उस दण्ड को न रोकने देगा जो वह अपने लोगों पर लाने वाला था। पद 9 में यहेजकेल ने उन्हें बताया कि उनको अजनबियों के हवाले किया जायेगा, जो उन पर विजयी होंगे। नगर उनके लिये आगे को देग न रहेगा, न ही वे देग के भीतर का चुना हुआ मांस होंगे (पद 11)। वे झूठी आशा के आधीन थे। उनका सब कुछ जाता रहेगा।

आज आप किस बात में भरोसा करते हैं? आपका 'देग' क्या है? कुछ के लिये वह उनका मसीही परिवार है। कुछ के लिये उनकी कलीसिया है। दूसरे विश्वास करते हैं कि यदि वे पर्याप्त भले काम करें तो स्वीकृत होंगे। यहेजकेल के दिनों के समान, यह सोचकर धोखा न खायें, कि इनमें से कोई भी वस्तु आपको परमेश्वर द्वारा लाये दण्ड से बचा सकेगी। केवल मसीह का लोहू क्षमा करने के योग्य है।

यहां तक कि जब यहेजकेल भविष्यवाणी कर रहा था, तो प्रभु ने लोगों को एक चिन्ह दिया। उन पच्चीस अगुवों में से एक को प्रभु ने मारा (पद 13)। यह उसका एक छोटा सा पूर्व स्वाद था, जो होने वाला था। उस दिन परमेश्वर के सामर्थ के प्रदर्शन से स्वयं यहेजकेल पर चोट लगी। लोग जो भविष्यवक्ता की सुन रहे थे वे कुछ नहीं कर सकते थे, सिवाय इसके कि सुनते। परमेश्वर ने उन्हें एक चिन्ह दिया था। इस चिन्ह से इंकार करना

मूर्खता होगा। इन घटनाओं के बाद, प्रभु ने फिर यहेजकेल के द्वारा बातें की। उसने उसे याद दिलाया कि यद्यपि वह अपने लोगों को उनके पापों के लिये दण्ड देगा, वह उनको त्यागेगा नहीं। यद्यपि वे जगत से दूर कोनों तक बिखर जायेंगे, परमेश्वर तब भी उनके साथ रहेगा। उसने पद 6 में प्रतिज्ञा की कि वह अपने बिखरे लोगों के लिये शरण स्थान होगा। अनुशासन में भी, हम परमेश्वर के अनुग्रह व करुणा को देखते हैं। उसने भविष्यवक्ता को यह भी बताया कि अपने लोगों को दण्ड देने के बाद वह उनको पुन:स्थापित कर देगा। यहेजकेल ने भविष्यवाणी की कि ये बिखरे हुए लोग फिर यरूशलेम को लौटेंगे (पद 17)। यह कुछ दिनों के बाद एज्रा व नहेम्याह की आधीनता में होगा।

उस दिन जब परमेश्वर अपने लोगों को पुन:स्थापित करेगा उनको नया हृदय व नई आत्मा दिये जायेंगे। उनके मध्य पवित्रात्मा का मण्डराना होगा। वे देश से घृणित वस्तुओं को दूर करेंगे। वे परमेश्वर के मार्गों पर चलेंगे। परमेश्वर उनके पत्थर के हृदय को हटा कर उन्हें मांस के हृदय देगा (पद 19)। जो प्रभु के मार्गों से इंकार करेंगे उनको दण्ड मिलेगा और वह उन कार्यों को जो उन्होंने किये उनके ही सिरों पर लायेगा।

हमारे लिये यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि जब इस्राएली एज्रा व नहेम्याह के आधीन लौटे तो उनको नया हृदय व नई आत्मा नहीं मिले। तो यह हमें समझाता है कि एज्रा व नहेम्याह के दिनों में, यद्यपि भविष्यवाणी की पाक्षिक परिपूर्णता होगी परन्तु इससे भी बड़ा पूरा होना होगा।

वह पूरा होना अन्ततः प्रभु यीशु के द्वारा आएगा, जो अपने लोगों को नया हृदय देकर उनमें पवित्रात्मा को डालेगा। भविष्य में, यहेजकेल ने उस दिन को देखा, जब परमेश्वर अपनी प्रजा के मध्य जागृति लायेगा। अभी हमें इस्राएल के जीवन में इस भविष्यवाणी को पूरे तौर पर पूरा होना देखना है। परन्तु एक भावना है कि यहेजकेल की भविष्यवाणी के पूरा होने को अपनी कलीसिया में आज हम देख रहे हैं। पौलुस ने कलीसिया को आत्मिक इस्राएल कहा (रोम. 9:6-8)। हम आज देख रहे हैं कि परमेश्वर हमारे दिनों में पत्थर हृदयों को तोड़ रहा है। हम देख रहे हैं कि वह अपने लोगों को पवित्रात्मा से भर रहा है और उनको सज्जित कर रहा है कि ऐसे रहें मानो यीशु उनमें वास करता है।

जब यहेजकेल भविष्यवाणी कर रहा था, तो परमेश्वर का तेज पर्वत के शिखर पर इस्राएलियों पर से हटा लिया गया। परमेश्वर ने स्वयं को अपने लोगों से दूर कर लिया। उनके पापों व विद्रोह ने उसको उनसे बहुत दूर कर दिया, परन्तु वह लौटेगा जब वह उनके पापों को सुधारेगा। वह उनको त्यागेगा नहीं। इसके बाद यहेजकेल का दर्शन समाप्त हुआ, और उसने स्वयं को बाबुल में परमेश्वर के लोगों के मध्य पाया। तो उसने उन्हें अपना दर्शन बताया।

आज हमारे दिनों में इस अध्याय की हमारे लिये क्या चुनौती है? इस्राएल के अगुवे जो भी कर रहे थे, बातें ठीक नहीं थीं। परमेश्वर अपने लोगों से क्रोधित था। यह अध्याय हमें बताता है कि आत्मिक अगुवे भी गलत निर्देश पाते हैं। वे विश्वासयोग्य हो सकते हैं। वे अच्छा जीवन जीने वाले भले लोग हो सकते हैं परन्तु यह निश्चय नहीं देता कि उन्हें परमेश्वर के वचन के सत्य का ज्ञान है। यहेजकेल का संघर्ष अपने समय के अगुवों के साथ हुआ। परमेश्वर के लोग विरोधी संदेश पा रहे थे। आज हमारे दिनों में भी बहुत से संदेश दिये जा रहे हैं। हमारा एकमात्र अधिकारिक अगुवा परमेश्वर का वचन है। उनसे धोखा न खायें जो झूठा संदेश देते हैं। परमेश्वर के वचन की जांच स्वयं करें। जो आप मंच से सुनते हैं उसकी जांच परमेश्वर के वचन के प्रकाश में देखें। अपने विश्वासों की भी जांच करें। परमेश्वर का वचन आपका एकमात्र अगुवा हो।

***विचार करने के लिये:***

- हमारे दिनों में क्यों झूठे शिक्षकों के लिये फूलना फलना सरल है?
- लोगों को परमेश्वर के वचन की स्पष्ट शिक्षा से हटाने में क्यों सम्प्रदाय इतने सरल हैं? इस अध्याय में झूठे शिक्षक क्यों सफल थे?
- आज हमारे 'देग' क्या हैं? उद्धार व स्वर्ग के निश्चय में से लोग किस पर भरोसा करते हैं?

***प्रार्थना के लिये:***

- क्या आपके क्षेत्र में मसीही कलीसियाएं हैं जो अपने सदस्यों को झूठी सुरक्षा प्रदान करती हैं? प्रार्थना करें कि परमेश्वर उनके मध्य अनुग्रह का कार्य करे।

- क्या आप को अपने उद्धार का निश्चय है? परमेश्वर से कहें कि आपके जीवन के कोई 'देग' हैं तो उन्हें प्रगट करे जिन पर आप भरोसा कर रहे हैं कि वह आपके लिये परमेश्वर का पक्ष प्राप्त करेंगे।
- किसी को इस आने वाले सप्ताह मसीह के द्वारा उद्धार का संदेश देने के लिये परमेश्वर से अवसर मांगें।

12

# एक झूठी इस्राएली कहावत

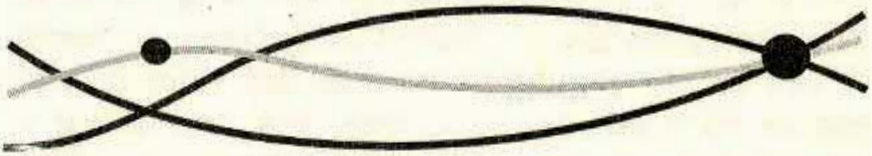

*पढ़ें यहेजकेल 12*

यदि आपको ज्ञात होता कि प्रभु आज आ रहा है, तो क्या आप अपने जीवन में कुछ बदलते? हम पाप में जारी रहते हैं, इसलिये नहीं कि हम नहीं जानते कि हम गलत कर रहे हैं, परन्तु इसलिये कि हमें लगता है कि हमारे पास अभी सुधार करने का समय है इससे पहले कि प्रभु को उत्तर दें। यहेजकेल 12 इस मानसिकता को चुनौती देता है। यह इस्राएलियों की मानसिकता थी। वे विद्रोही लोग थे। उन्होंने उन भविष्यवक्ताओं के वचन के प्रति अपनी आंखें व कान बन्द कर रखे थे जो परमेश्वर ने भेजे थे। यह देखते हुए कि उसके लोग आगे को उसके वचनों को न सुनेंगे, परमेश्वर ने यहेजकेल को बुलाया कि उसके संदेश को नाटकीय रूप से उनके सामने दृश्य रूप में प्रस्तुत करे।

यहेजकेल 12 में प्रभु ने यहेजकेल से कहा कि अपने सामान को इस प्रकार बांधे, मानो वह निष्कासन में जा रहा है। यह उसे इस्राएलियों को देखते करना था। उसको दिन में अपना सामान बांधना था और शाम को अपने कंधे पर रखकर नगर से जाना था, मानो उसे बंधुवाई में ले जाया जा रहा था (पद 4)। इस संदेश के नाटकीय रूप का कारण स्पष्ट था, 'उन्होंने

सोचा होगा यद्यपि वे एक विद्रोही घराना हैं' (पद)। यदि वे उपदेश को न सुनें, तो शायद नाटक द्वारा सुनें। तरीका महत्वपूर्ण नहीं था। महत्वपूर्ण यह था कि संदेश इस प्रकार सम्प्रेषित किया जाये कि लोग समझें।

यहां ध्यान दें कि यहेजकेल का नगर को छोड़ना कुछ विचित्र था। उसको लोगों के देखते, दीवार में छेद करना था, और उस छेद में से जाना था (पद 5)। जब वह नगर से होकर जा रहा था तो उसको अपना मुंह ढंककर और अपना सामान कंधे पर रख कर जाना था। वह अपना मुंह क्यों ढकता है। पद 0 से हम देखते हैं कि यह कार्य प्रतीक था कि राजा का क्या होगा। बाइबल 2 राजा 25:3-7 में बताती है कि सिदकिय्याह, जो निष्कासन के समय यरूशलेम का अधिकारी था, उसकी आंखें निकाल दी जायेंगी ताकि वह देख न सके। यरूशलेम का शासक अपने सामान को कंधे पर रखकर दीवार के, एक छेद से होकर भागेगा, यहां पद 12 में देखें कि, यद्यपि राजा बच निकलने का प्रयत्न करेगा, परमेश्वर अपने जाल को उस पर बिछायेगा और उसे कसदियों के देश (बाबुल) ले जायेगा। उसकी सेना हवा में बिखर जायेगी। सिदकिय्याह के साथ यही हुआ। पद 12 आगे बताता है कि यद्यपि शासक कसदियों के देश में रहेगा और अंततः वहीं मरेगा, वह उसको कभी देख नहीं पायेगा। यह उस सत्य को बताता है कि बाबुलवासी उसकी आंखें निकाल लेंगे और अंधा कर देंगे। इस भविष्यवाणी की निष्कासन के विवरण से तुलना हमें दिखाती है कि ये बातें बिल्कुल वैसे ही हुईं जैसा यहेजकेल ने कहा था। इस संदर्भ की उससे तुलना करें जो यहेजकेल भविष्यवाणी कर रहा था।

'चौथे महीने के नवें दिन से *नगर में ऐसा भयंकर अकाल पड़ा* कि देश की प्रजा के लिये कुछ खाने को न रहा। तब नगर की शहरपनाह में दरार की गई, और दोनों दीवारों के बीच फाटक से जो राजा के उद्यान की ओर था, सब योद्धा रात्रि में भाग निकले, यद्यपि कसदी चारों ओर थे। उन्होंने अराबा का मार्ग लिया। परन्तु कसदी सेना ने राजा का पीछा किया और यरीहो के मैदान में उसे जा पकड़ा। तब उसकी सारी सेना तित्तर बित्तर हो गई। तब वे राजा को बन्दी बनाकर बेबीलोन के राजा के पास बाबुल ले आये और उसने उसे दण्ड की आज्ञा दी। उन्होंने सिदकिय्याह के सामने उसके पुत्रों को बध किया तथा उसकी दोनों आंखे फोड़ डालीं और उसे कांसे की बेड़ियों से जकड़कर बेबीलोन ले गये।' (2 राजा 25:3-7, बल मेरा)

पद 15 में हम सीखते हैं कि परमेश्वर के प्रकोप के दिन उसके लोग चारों दिशाओं में बिखर जायेंगे। बहुत से अपने जीवन से हाथ धो लेंगे और अपने शत्रु की तलवार से मारे जायेंगे। परमेश्वर उनमें से कुछ को शेष छोड़ेगा ताकि वे परमेश्वर द्वारा दण्ड का वर्णन आनेवाली पीढ़ियों को सुना सकें।

पद 18 में परमेश्वर ने यहेजकेल से कहा है कि कांपते हुए खा और पी। यह इसलिये कि इस्राएली चिन्ता तथा निराशा के साथ खाये पियेंगे, उस सबके कारण जो अपने चारों ओर होते देख रहे थे। उनके नगर उजाड़ दिये जायेंगे। उनका देश बर्बाद हो जायेगा। वे हिंसा व नाश से घिरे होंगे। जब उन्होंने अपने चारों ओर यह सब होते देखा तो उन्होंने जाना कि इस्राएल में एक परमेश्वर था। वे यह भी पहचानेंगे कि उन्होंने उसे भुला दिया। बाइबल हमें बताती है कि एक दिन हर घुटना झुकेगा और पहचानेगा कि यीशु प्रभु है। (फिलि. 2:10-11) वे भी, जो उस पर संदेह करते हैं एक दिन जानेंगे कि वह प्रभु है। यहेजकेल के दिन के इस्राएलियों के लिये, परन्तु, देर हो गई थी। उनका दण्ड आ गया था। अधिक देर तक प्रतीक्षा न करें। उसके पास अभी आयें।

भविष्यवक्ता के वचनों के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया को देखें। उनकी एक कहावत कुछ इस प्रकार थी। 'दिन बीतते जाते हैं दर्शन की बात व्यर्थ निकलती है' (पद 22)। यह कहावत हमें इस्राएल के विश्वास की स्थिति दिखाती है। इस्राएल देश में दर्शन किसे मिलते थे? क्या वे भविष्यवक्ता नहीं थे? ये लोग यह कह रहे थे 'एक के बाद एक दिन बीतता जाता है परन्तु जो भविष्यवक्ता हमें बताते हैं वह कभी नहीं घटता। उनके दर्शन कभी भी पूरे नहीं होते।' सुनें पद 27 में वे क्या कहते हैं, 'जो दर्शन उसने देखा है वह तो वर्षों बाद के लिये है, और जो वह भविष्यवाणी करता है वह तो बहुत आगे भविष्य की बात है।' ये लोग चिन्ता नहीं करते कि भविष्यवक्ता क्या कहते हैं। उन्होंने महसूस नहीं किया कि यहेजकेल उनसे क्या कह रहा था कि उनके जीवन काल में होगा। उनका मानना था कि परमेश्वर के साथ बातें सुधारने के लिये उनके पास काफ़ी समय होगा। यह उस समय की मानसिकता थी।

लोगों के इस व्यवहार के प्रति प्रतिक्रिया में परमेश्वर ने यहेजकेल से कहा कि इस कहावत का स्थान एक दूसरी कहावत शीघ्र लेगी, 'वह दिन निकट है जब कि सारे दर्शन पूरे होंगे।' (पद 23) हां, वह दिन आ रहा था

जब भविष्यवक्ताओं के दर्शन पूरे होंगे। यरूशलेम के नाश के संबंध में. यहेजकेल का दर्शन तथा उसके साथी नबियों के दर्शन अधिक दूर की बात न थी। परमेश्वर पद 28 में अपने लोगों को याद दिलाता है कि उसके वचन अब आगे को रुके न रहेंगे। अब समय था कि परमेश्वर उन वचनों को पूरा करेगा। अब दण्ड का दिन था। परमेश्वर के लोगों के पास समय न था जो वे समझ रहे थे। वह उनको बुलायेगा कि अपने कामों का लेखा दें, उससे भी बहुत पहले जो वे सोच रहे थे।

क्या यह अध्याय हमें यह सोचने पर बाध्य नहीं करता कि हम अपनी आत्मिक स्थिति को देखें? आज हमारे दिनों में बहुत से लोग हैं जो पाप में जीते हैं। उनकी पूरी इच्छा है कि परमेश्वर के साथ अपनी बातों को सुधार लें, परन्तु अभी नहीं। परिवर्तन लाने से पहले वे कुछ दिन और जीना चाहते हैं। कई तरीकों से वे इस्राएली लोगों के समान हैं। वे जानते हैं कि प्रभु आ रहा है तथा उनको मन फिराने के लिये कहेगा। परन्तु वे महसूस करते हैं कि लेखा देने से पहले उनके पास अभी बहुत समय शेष है। यदि आपकी परिस्थिति यह है तो मैं आपको जीवन की अनिश्चियता याद दिलाता हूं। आप का जीवन कभी भी समाप्त हो सकता है। प्रभु यीशु किसी भी क्षण आ सकता है। यदि वह आज आपको अपने पास बुलाता है, तो क्या आप उसका सामना करने को तैयार होंगे? हम सबके लिये आवश्यक है कि अपने जीवन को इस प्रकार जीएं कि हम सदा प्रभु के आगमन के लिये तैयार रहें। आपके पास शायद उतना समय न हो जितना आप समझते हैं कि है। आज ही आप को घर बुलाया जा सकता है। याद रखें कि परमेश्वर ने यहेजकेल से कहा कि वह दिन आ रहा है जब नबियों के वचन पूरे होंगे। क्या आप तैयार होंगे?

### *विचार करने के लिये:*

- यहेजकेल के संदेश की प्रस्तुती के लिये लगता है परमेश्वर सृजनात्मकता को उत्साहित कर रहा है कि नाटक द्वारा उसकी प्रस्तुती करे। हरेक में इस प्रकार की योग्यता नहीं होती। आप सृजनात्मक तरीके से कैसे अपने चारों ओर के लोगों के सामने सुसमाचार की प्रस्तुती कर सकते हैं?
- आप क्यों सोचते हैं कि हम अपने जीवनों में आवश्यक परिवर्तन लाने के लिये अपने फैसलों को टालते रहें?

- यदि आप को ज्ञात हो जाए कि आज पृथ्वी पर आपका अन्तिम दिन है तो आप क्या परिवर्तन करेंगे?

***प्रार्थना के लिये:***

- परमेश्वर से मांगें कि वह आपको उन योग्यताओं के प्रयोग में विश्वासयोग्य बनाये जो उसने आपको दूसरों तक पहुंचने के लिये दी हैं।
- परमेश्वर से मांगें अपने समय का सर्वश्रेष्ठ उपयोग करने को कि आपकी सहायता करे अपने समय का सर्वश्रेष्ठ उपयोग करने में जो उसने आपको पृथ्वी पर दिया है।
- यदि आपने प्रभु यीशु को कभी अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार नहीं किया, तो अपने जीवन का अब एक भी क्षण बर्बाद न करें। उसकी इच्छा को समर्पित हों। जो क्षमा वह आज आपको देना चाहता है उसको ग्रहण करें।

13

# सफेदी फिरी दीवारें

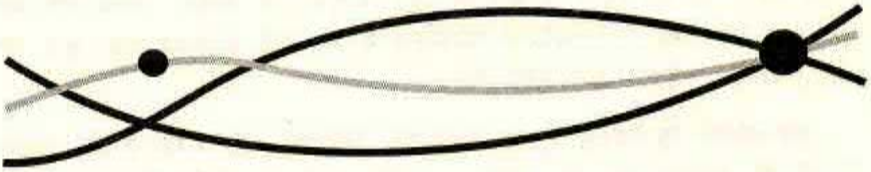

*पढ़ें यहेजकेल 13*

अध्याय 11 में यहेजकेल से कहा गया था कि अपने समय के आत्मिक अगुवों का उनकी शिक्षा के कारण सामना करे। यद्यपि वे अगुवे प्रभावी रूप से बात करते थे, परन्तु परमेश्वर यहां उनकी तुलना सफ़ेदी फिरी दीवारों से करता है। बाहर से वे ठीक दिखती हैं, परन्तु भीतर कमियां व दरार हैं।

ये स्त्री पुरुष भविष्यवाणी कर रहे हैं 'अपने हृदय से नहीं' (पद 2)। वे अपने विचारों का प्रचार करते हैं। उन्हें परमेश्वर के वचन से कोई मतलब नहीं। उनका संदेश प्रभु की ओर से नहीं। पद हमें बताता है कि ये भविष्यवक्ता 'अपनी आत्मा के अनुसार चलते हैं।' परमेश्वर का अधिकारिक वचन लोगों के विचारों की तुलना में दूसरा स्थान रखता है। क्या हमारे दिनों में बातें बदल गई हैं?

यदि आपके पास प्रचार करने या सिखाने का अवसर कभी हुआ है, तो आप जानते हैं कि इस फंदे में फंसना कितना सरल है। आपको झूठी शिक्षा नहीं देनी कि इस परीक्षा में पड़ें। यह काफी संभव है कि सत्य को इस प्रकार सिखायें कि उससे ध्यान प्रचारक पर केन्द्रित हो और उस पर नहीं जो परमेश्वर लोगों तक पहुंचाना चाहता है। कितनी बार मैंने स्वयं को

परमेश्वर के लोगों के सामने खड़ा पाया है, बिना यह जाने कि परमेश्वर मुझसे क्या चाहता है कि उन्हें बताऊं। और मैंने अपने ही बौद्धिक विचार संदर्भ के विषय दिये। हम पर भी यह दोषारोपण हो सकता है कि 'अपने मन के अनुसार' न कि परमेश्वर का वचन लोगों को सुनाते हैं।

यहाँ भविष्यवक्ताओं की तुलना रेगिस्तानी लोमड़ियों से की गई है। इस कथन को समझना कठिन है। लोमड़ी जाति अति चतुर मानी जाती है, उसको उस बर्बादी के लिये भी जाना जाता है जो वह करती है। ये भविष्यवक्ता इसी प्रकार के थे। धोखे व झूठ के द्वारा वे दूसरों के भरोसे अपना पेट भरते थे। यह सत्य कि ये लोमड़ियां मरुस्थल में हैं, उन्हें और चालाक बना देता है। (क्योंकि भोजन कम होता है)।

इन नबियों के विरुद्ध दूसरा दोषारोपण परमेश्वर यह करता है कि उन्होंने दरारों की मरम्मत नहीं की (पद 5)। यहां नगर की दीवार के विषय कहा गया है। शत्रु परमेश्वर के लोगों पर आक्रमण किये जा रहा है। वे विश्वास की दीवार में छेद करने में सफल हुए हैं। नबियों को कोई चिन्ता नहीं थी कि लोगों के विश्वास को बिगाड़ा जा रहा था। इससे उन्हें कोई परेशानी न थी कि परमेश्वर के लोगों के जीवन में झूठ रेंग कर प्रवेश कर रहा था। उन्होंने शत्रु का सामना करने के लिये लोगों को सशक्त नहीं किया। वे सत्य नहीं सिखाते थे। वे दीवार में इन बड़ी दरारों को छोड़ रहे थे। यह शत्रु को खुला निमंत्रण था।

अपने समय में इसे सही शिक्षा की दीवार के पास सुस्ती से नहीं खड़ा रहना है जिसको शत्रु के आक्रमण द्वारा तोड़ा जा रहा है। हम अपने भाई बहनों को सत्य से भटकते नहीं देख सकते कि उनको लौटा लाने के लिये कुछ न करें। हमें अपने सम्मान, या लोग हमारे विषय में क्या सोचते हैं उसका ध्यान नहीं करना। हमें प्रवाह के साथ नहीं बहना, जब कि परमेश्वर हमें सत्य के लिये खड़ा होने के लिये बुलाता है।

यहेजकेल हमें बताता है कि इन झूठे नबियों ने अपनी भविष्यवाणियों को यह कहकर बताया, 'परमेश्वर इस प्रकार कहता है' (पद 6)। परन्तु जो उन्होंने प्रचार किया, वह प्रभु की ओर से न था। उनकी भाषा धार्मिक होती थी। वे परमेश्वर व विश्वास की बातें करते थे, परन्तु वे परमेश्वर के दूत न थे। वे उसके शत्रु थे। प्रभु उनके विरुद्ध था क्योंकि वे उसकी प्रजा को भटकाते थे। वे व्यर्थ व मूर्खता की बातें सुनाते थे (पद 7-8)।

हम पद 9 में देखते हैं कि इन झूठे भविष्यवक्ताओं व शिक्षकों ने परमेश्वर के नाम में झूठ बोले थे। परमेश्वर का हाथ उनके विरुद्ध था। परमेश्वर के लोगों की मण्डली में उनका स्वागत न होगा। परमेश्वर उनको देश से दूर करेगा। उनकी उपस्थिति का हर लेखा मिटा दिया जायेगा। ये झूठे नबी निष्कासित किये जायेंगे। वे स्वयं को परमेश्वर के सेवक कहते थे, परन्तु वे उसके शत्रु थे। उनके कारण परमेश्वर के लोग खतरनाक तरीके से झुंड में भटक रहे थे। उनको परमेश्वर को उत्तर देना था कि उन्होंने किस प्रकार लोगों को गलत राह दिखाई। परमेश्वर उनके द्वारा अधिक हानि किये जाने से पहले ही उनको रोकेंगा।

परमेश्वर ने पद 10 में इन लोगों पर लोगों की हत्या का आरोप लगाया। वे शांति की बात करते थे जब कि कोई शांति न थी। वे उनके समान थे जो उस दीवार पर सफ़ेदी पोतते हैं, जो कि दरारों व छिद्रों से भरी थी। इस्राएल उस टूटती दीवार के समान था। देश में बड़ी मरम्मत की आवश्यकता थी। भविष्यवक्ताओं ने देश की आत्मिक समस्याओं को गम्भीर न समझा। उन्होंने लोगों को उनके पाप नहीं दिखाये। उन्होंने लोगों को झूठी तसल्ली व आशा दी। उन्होंने उन्हें बताया कि सब कुछ ठीक होगा जब कि वास्तव में सचमुच परमेश्वर द्वारा दण्ड उन पर आने वाला था।

वह दिन परमेश्वर के लोगों के लिये कितने शोक का दिन होगा। स्त्री पुरुषों ने इन भविष्यवक्ताओं में विश्वास रखा। उनकी अनन्त नियति उन झूठी बातों पर आधारित थी, जो ये भविष्यवक्ता बताते थे। जब वे परमेश्वर के सम्मुख खड़े होंगे तो महसूस करेंगे कि उन्हें धोखा दिया गया। बहुतों के लिये बहुत देर हो चुकेगी। परमेश्वर उनकी सफेदी पुती दीवार पर वर्षा करेगा तथा अपने दण्ड की ओर वह गिर पड़ेगी।

इस्राएल में जो धोखा हो रहा था वह केवल पुरुष भविष्यवक्ताओं के कारण नहीं था। स्त्रियां भी लोगों को भटका रही थीं। इस्राएल की स्त्रियों में वे थीं जो कलाई व सिरों के लिये जादुई ताबीज़ बनाती थीं। (पद 18) ये वस्तुएं अन्यजाति रीतियों पर प्रयोग होती थीं। क्या रीतियां थीं, यह तो अनिश्चित है। पद 18 हमें बताता है कि ये स्त्रियां परमेश्वर के लोगों के प्राणों का 'शिकार करती थीं' या 'फंदे में फंसाती थीं।' ये स्त्रियां परमेश्वर द्वारा दण्ड से न बचेंगी। उन्हें उनकी दुष्टता के लिये दण्ड दिया जायेगा। परमेश्वर चाहता है कि हम झूठे धर्मों के दुष्ट तरीकों से बचें।

मुझे याद है जब हम हिन्द महासागर के री-यूनियन द्वीप पर काम करते थे। अगुवे एक नये विश्वासी के साथ उसके घर जाते थे। वे उसकी सारी वस्तुओं को ढूंढते और उन वस्तुओं को ले लेते थे जो झूठे देवताओं से संबंधित होती थीं। कलीसिया के अगुवों के साथ वे समुद्र में जाकर, कुछ प्रार्थना करने के बाद उन सब धार्मिक वस्तुओं को समुद्र में फैंक देते थे। वे अपने भूतपूर्व धर्म से पूर्णतया अलग हो जाते थे। यही प्रभु परमेश्वर इस्राएल में लोगों से अपेक्षा करता था। उनको अपने ताबीज़ आदि जिनका झूठे देवताओं की उपासना में प्रयोग होता था, फैंकने पड़ते थे। आज हमसे भी वह यही आशा करता है।

पद 19 को देखें कि न्याय किस प्रकार बिगाड़ा जाता था। जिनको मृत्युदण्ड मिलना चाहिये था उन्हें एक मुट्ठी जौ व रोटी के बदले छोड़ दिया जाता था। और जिनको स्वतंत्र होना चाहिये था उनको मृत्युदण्ड दिया जाता था। न्याय नहीं रहा। देश में घूसखोरी सामान्य थी। यदि आपके पास धन था तो आप अपराध करके भी बच सकते थे। यदि पैसा नहीं था कि न्यायियों को दिया जाता तो दण्ड मिलता, उन बातों के लिए भी जो आपने नहीं कीं। परमेश्वर ने इन बातों को देश में देखा। ये कार्य दण्ड बिना न रहेंगे।

परमेश्वर ने पद 20-21 में अपने लोगों को याद दिलाया कि वह उनकी कलाइयों से ताबीज़ हटायेगा और उनके प्राण को स्वतंत्र करेगा जिन्हें फंदे में फंसाया गया। ये स्त्रियां अपने अन्यजाति कार्यों के द्वारा दूसरों को भटका रही थीं। जो उनके पास आते थे वे उनके फंदों में फंस जाते थे। उन्हें धोखे से इन झूठे कार्यों में फंसाया जाता था। इस झूठी शिक्षा ने देश के धर्मियों को शोकित किया।

इन झूठे शिक्षकों ने दुष्टों के हाथ मज़बूत किये। परमेश्वर ऐसा नहीं होने देगा। उसके अपने लोग भविष्यवक्ताओं व शिक्षकों के दुष्प्रभाव का शिकार हो रहे थे। परमेश्वर जानता था उसके लोग कौन हैं। वह उनको झूठे भविष्यवक्ताओं के हाथों से स्वतंत्र करेगा। (पद 23) वह अपनों से अत्यधिक प्रेम करता है तथा नहीं देख सकता कि झूठा प्रचार करने वालों के हाथ वे नाश हों।

आज हमें कितना अधिक प्रार्थना करने की आवश्यकता है कि परमेश्वर अपने लोगों को आज के झूठे भविष्यवक्ताओं के हाथ से बचाये। बहुत से उस धोखे से अनजान हैं जो उनकी कलीसियाओं में हो रहा है। परम्पराएं व

अहंकार बहुतों को बांधे हुए हैं। यहां परमेश्वर ने अपने लोगों को स्वतंत्र करने की प्रतिज्ञा की। इससे आज हमें कितना उत्साह मिलता है। उनके मध्य भी जो आज झूठे धर्मों तथा सम्प्रदायों द्वारा धोखा खा रहे हैं वे हैं, जिन तक परमेश्वर पहुंचेगा और उन्हें अपने पास लेगा।

हमारे दिनों में भी बहुत से झूठे भविष्यवक्ता व सम्प्रदाय हैं। वे बहुत आत्मिक बन कर दिखाते हैं। हम उनके धार्मिक शब्दों के धोखे में न आयें। वे सफ़ेदी फिरी दीवारों के समान हैं। बाहर से वे बड़े शुभचिंतक दिखाई देते हैं, परन्तु भीतर से पाखण्ड व धोखे से भरे हैं। काश, इन झूठे भविष्यवक्ताओं को जानने की परमेश्वर हमें बड़ी पहचान दे।

### *विचार करने के लिये:*

- क्या आप सोचते हैं कि हमारे समय के झूठे भविष्यवक्ता सचमुच विश्वास करते हैं कि वे सत्य सिखा रहे हैं?
- क्या आप अपने चारों ओर के लोगों को इन झूठे भविष्यवक्ताओं की शिक्षा के फन्दे में फंसे देखते हैं? इस संदर्भ से आपको क्या तसल्ली मिलती है?
- हम कैसे बता सकते हैं कि कोई प्रभु का सच्चा भविष्यवक्ता है?
- यह संदर्भ हमें झूठे धर्मों की रीतियों व वस्तुओं के फैंकने के विषय क्या सिखाता है? यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

### *प्रार्थना के लिये:*

- क्या आप कुछ ऐसे लोगों को जानते हैं जो धार्मिक हैं, परन्तु खोए हुए? एक क्षण उनके लिये प्रार्थना करें। परमेश्वर से मांगें कि उनको उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता को दर्शाए।
- आज के झूठे भविष्यवक्ताओं के लिये प्रार्थना करें। परमेश्वर से कहें कि उनके हृदयों को सत्य की समझ के लिये खोले।
- उन सत्य विश्वासियों के लिये प्रार्थना करें जो झूठी शिक्षा के फंदे में फंसे हैं। इस अध्याय में परमेश्वर उनको स्वतंत्र करने की प्रतिज्ञा करता है। उसके वचन पर विश्वास करें तथा प्रार्थना करें कि वह उनको स्वतंत्र करे।

14

# धर्मी पिता, बिगड़े बच्चे

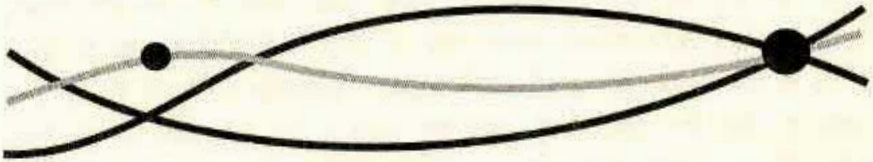

*पढ़ें यहेजकेल 14*

ऐसे लोग भी हैं जो सोचते हैं कि उनका पालन पोषण उनको स्वर्ग ले जायेगा। यह सत्य कि आपका पालन पोषण एक अच्छे मसीही परिवार में हुआ आपको स्वर्ग में स्थान पाने का निश्चय नहीं देता। आप एक ऐसे चर्च के सदस्य हो सकते हैं जो परमेश्वर के वचन का प्रचार करता हो और तौभी आत्मिक रीति से खोया हुआ हो। प्रत्येक व्यक्ति अपने निजी जीवन के लिये परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी है। आप किसी और के कंधे पर स्वर्ग नहीं जा सकते।

यहेजकेल में इस्राएल के प्राचीन, भविष्यवक्ता यहेजकेल से पूछने आये। ये प्राचीन वैसे लोग नहीं थे जैसा उनको होना चाहिये था। प्रभु ने पद में भविष्यवक्ता पर प्रगट किया कि उन्होंने अपने हृदयों में प्रतिमाएं स्थापित कर रखी हैं। क्या इससे आपको विस्मय होता है कि ये लोग मूर्ति पूजक थे और तौभी भविष्यवक्ता से पूछने आये? क्या ऐसा ही आज हमारे समय में नहीं होता? ये प्राचीन यही सब कर रहे थे।

प्रभु ने यहेजकेल से कहा कि वह उन प्राचीनों को अपनी समस्याओं को लेकर उसके पास आने (पद)। यद्यपि इन अगुवों से बात करना परमेश्वर

परमेश्वर का कर्त्तव्य नहीं था, क्योंकि उनके हृदय उससे बहुत दूर थे, उसने यहेजकेल को उनके लिये संदेश दिया। पद 6 में परमेश्वर ने उनसे मन फिराने तथा मूर्तियों से फिरने को कहा। यदि वे अपनी मूर्तियों से मन नहीं फिरायेंगे तो परमेश्वर उनसे अपना मुख फेर लेगा और अपने लोगों में से उन्हें काट डालेगा (पद 8)। परमेश्वर सीधी बात पर आया। वह उनके हृदयों को जानता था और जल्दी ही उनका न्याय करेगा, यदि वे मन न फिरायेंगे।

पद 9 व 10 में परमेश्वर ने स्पष्ट किया कि झूठे भविष्यवक्ताओं का दण्ड, जो प्रभु का वचन नहीं बोलते, उनके समान वैसा ही होगा जो उनकी सुनते थे। झूठे भविष्यवक्ता अपने पदों के पीछे छिप नहीं सकते। वे दूसरे लोगों के समान नाश हो जायेंगे क्योंकि उन्होंने परमेश्वर से विद्रोह किया। इस दण्ड के पीछे एक उद्देश्य था। पदों पर ध्यान दें कि परमेश्वर उनको दण्ड देगा ताकि वे उसके पास लौटें। वह उनका परमेश्वर होना चाहता था ताकि उन पर अपना प्रेम उण्डेले। परन्तु उनके संबंधों में रुकावटें थीं। परमेश्वर ने यहेजकेल से कहा कि परमेश्वर उनकी रोटी की पूर्ति को काट देगा (पद 12-13)। कुछ लोग परमेश्वर के भारी अनुशासन के नीचे नाश होंगे। परमेश्वर उनको अपने से दूर भटकने व अपने नाम की निन्दा करने नहीं देगा। वह इस विद्रोह को रोकने और उनको अपने पास लौटा ले आने के लिये वह करेगा जो उसे करना चाहिये। शायद आपने ऐसा कुछ अनुशासन अपने जीवन में अनुभव किया हो। परमेश्वर का अनुशासन कभी सरल नहीं होता। यह जानना कैसी आशीष है कि परमेश्वर हमसे इतना प्रेम करता है कि हमारे लिये लड़े।

परमेश्वर अपना दण्ड देश के इन झूठे भविष्यवक्ताओं पर उंडेलेगा (पद9)। परमेश्वर उनको भावी कहने के फंदे में डालेगा। फिर वह उनको नाश करेगा। यहां क्या हो रहा है? परमेश्वर भावी कहने के लिये क्यों इन लोगों को फन्दे में फंसायेगा जब उसने जाना कि जो वचन वे बोल रहे हैं झूठे हैं? यहां हमें यह समझना है कि परमेश्वर सदा हर परीक्षा को हमसे नहीं हटाता। यहां तक कि प्रभु यीशु को परीक्षा का सामना अपनी सेवकाई में करना पड़ा। उसका शैतान से सीधा सामना हुआ और उसके द्वारा उसे चालीस दिन तक आज़माया गया। यद्यपि परमेश्वर सदा हमसे हर परीक्षा को दूर नहीं करेगा, हम निश्चय जान सकते हैं कि वह उस हर परीक्षा का, जो हम सहते हैं, हमें अपनी निकटता में लाने के लिये प्रयोग करेगा। कई बार इन परीक्षाओं

को हमारी जांच के लिये तथा हमारी असली गुणवत्ता को प्रगट करने के लिये रूप दिया जाता है। इस दशा में इन भविष्यवक्ताओं की जांच हो रही थी। यीशु समान उनके सामने अवसर था, पाप करने का और परमेश्वर की ओर से मुंह फेरने का। बिल्कुल आदम व हव्वा के समान, अदन की वाटिका में, उनके सामने पाप करने का अवसर था। परमेश्वर ने उन्हें इस ओर आकर्षित किया और यह परीक्षा उनके सामने आने दी। वह उनके हृदय की गुणवत्ता को जानना चाहता था। परमेश्वर ने इन भविष्यवक्ताओं को झूठ बोलने से नहीं रोका। उसने उन्हें अपने दर्शन बोलने दिये। उसने उन्हें नहीं रोका। उसने उन्हें अपनी दुष्टता बोलने दी परन्तु उसके लिये वह उन्हें दण्ड देगा।

यहां हमें देखना चाहिये कि परमेश्वर कई बार हमें परीक्षाओं का सामना करने की अनुमति देता है। वह सदा परीक्षाओं को हमारे मार्ग में आने से नहीं रोकता। हमें इन परीक्षाओं का हर दिन सामना करना है। प्रश्न यह है कि हम इन परीक्षाओं का क्या करें। मैं ऐसे लोगों से मिला हूं जिनका विश्वास था कि यदि परमेश्वर सचमुच चाहता कि किसी विशेष परिस्थिति में उनकी जय होती, तो वह परीक्षाओं को हटा देता। सदा ऐसा नहीं होता। ऐसे समय होते हैं जब परमेश्वर हमें कहता है कि स्वयं इन परीक्षाओं से भागें। यहेजकेल के दिनों में भविष्यवक्ता जांच में असफल हुए क्योंकि वे उन परीक्षाओं से न भाग सके, जो उनके सामने आईं।

जब प्रभु ने इस्राएलियों का न्याय किया, तो नूह, दानिय्येल या अय्यूब भी अपने बच्चों के लिये विनती नहीं कर सकते थे (पद14)। हम इन तीन व्यक्तियों के विषय क्या जानते हैं जो हमें समझने में सहायता करता है कि क्यों परमेश्वर ने इस पद में विशेष रूप से उनका ज़िक्र किया? नूह के विषय बाइबल कहती है: 'परन्तु नूह परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी था। नूह का वर्णन यह है। नूह एक धर्मी व्यक्ति था, अपने समय के लोगों में निर्दोष, और परमेश्वर के साथ चलता था' (उत. 6:8-9)।

नूह धर्मी व परमेश्वर का विश्वासयोग्य था। उसकी पीढ़ी में कोई उसके समान न था। नूह के दिनों में, जब जल प्रलय के द्वारा परमेश्वर का क्रोध पृथ्वी पर उंडेला जाने को था, तो केवल वह और उसका परिवार ही परमेश्वर द्वारा दण्ड से बचे। नूह के द्वारा, मानव वंश बच सका।

दानिय्येल के संबंध में हम पढ़ते हैं, 'तब अध्यक्ष और अधिपति शासन प्रबंध के विषय में दानिय्येल में दोष ढूंढने लगे, परन्तु उसकी विश्वासयोग्यता

के कारण उन्हें न तो दोष लगाने का कोई आधार और न भ्रष्टता का कोई प्रमाण मिला। कर्त्तव्य हीनता या भ्रष्टता भी उसमें न पाई गई। तब उन्होंने कहा, 'हम इस दानिय्येल में उसके परमेश्वर की व्यवस्था के सिवाय और किसी बात में उस पर दोष लगाने का कोई आधार न पा सकेंगे।' जब अधिकारी गण ने दानिय्येल में दोष ढूंढना चाहा तो कोई न पा सके। यदि वे उस पर किसी बात का दोष लगाना चाहें तो उसके परमेश्वर के साथ संबंध के विषय ही लगा सकते थे।

अय्यूब के संबंध में, स्वयं परमेश्वर ने शैतान से कहा, 'क्या तूने मेरे सेवक अय्यूब को देखा है? उसके समान समस्त पृथ्वी पर कोई नहीं है, वह निर्दोष व धर्मी है, एक व्यक्ति जो परमेश्वर का भय मानता व बुराई से दूर रहता है' (अय. 8)। परमेश्वर के अपने शब्दों में, पृथ्वी के ऊपर अय्यूब के समान कोई व्यक्ति न था। यहां एक व्यक्ति था जिसको स्वयं परमेश्वर ने विश्वासयोग्य व धर्मी कहा।

इस अध्याय में नूह, दानिय्येल व अय्यूब का वर्णन है, वे आदर्श चरित्र के लोग थे। यहेजकेल के द्वारा परमेश्वर ने अपने लोगों से कहा कि यदि ये लोग भी इस्राएल के लिये विनती करें तौभी वे आने वाले दण्ड से जाति को न बचा सकेंगे। यदि परमेश्वर लोगों व जानवरों के नाश के लिये देश में अकाल भेजे तो ये ही अकेले बचते। वे और किसी को अपने साथ न बचा सकते थे। यदि परमेश्वर वन पशुओं को भेजे, तो क्योंकि ये धर्मी लोग थे, अपने परिवारों को भी न बचा पाते। यदि परमेश्वर देश में मारे जाने के लिये, मनुष्य व पशुओं दोनों पर, तलवार भेजे, तो इन तीन धर्मी जनों के पुत्र व पुत्रियां भी यदि अपने पापों से पश्चात्ताप न करते तो मारे जाते। यदि परमेश्वर महामारी भेजे, तो केवल यही लोग बचते, क्योंकि उनके संबंध परमेश्वर के साथ सही थे।

परमेश्वर ये चारों प्रकार के दण्ड इस्राएल पर भेजने वाला था। दण्ड कठोर होगा। परमेश्वर के लोग किसी और पर भरोसा नहीं कर सकते थे कि वे उनके लिये मध्यस्थ बनें। इस महादण्ड से बचने वाले एक महत्वपूर्ण शिक्षा प्राप्त करेंगे। वे सीखेंगे कि वे अपने पापों के लिये व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी थे। दानिय्येल की संतान नाश हो जाती यदि उस समय वे यरूशलेम वासी होते और परमेश्वर की ओर न फिरते। नूह का

विश्वास उसकी संतान को न बचा सकता। और यही अय्यूब के लिये कहा जा सकता था।

यह अध्याय हमें सिखाता है कि हम सब व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर को लेखा दें। ये परमेश्वर के तीन जन अपनी संतान को भी परमेश्वर द्वारा दण्ड से बचा नहीं सकते थे। हो सकता है कि आप का पालन-पोषण एक नूह या दानिय्येल समान परिवार में हुआ हो। आपके माता-पिता शायद परमेश्वर के विश्वासयोग्य रहे हों। आप शायद उस चर्च में जाते हैं जहां परमेश्वर का वचन सुनाया जाता है। आपके चारों ओर शायद ऐसे स्त्री व पुरुष हों जो प्रभु से प्रेम करते हैं। इस संदर्भ में जिन बच्चों का वर्णन किया गया है उनकी चाहे देखभाल कैसे भी मसीही वातावरण में की गई हो, वह उन्हें नहीं बचा पायेगी। आपके माता पिता मसीही हो सकते हैं और तौभी आप पापों में नाश हों। आपके मसीही मित्रगण शक्तिहीन होंगे। दण्ड के दिन आपके लिये कुछ करने को कोई ऐसा पवित्र जन नहीं जो आपकी बात परमेश्वर के सामने रख सके, जब वह अपने कोप को उण्डेलेगा। परमेश्वर को लेखा देने के लिये आपको अकेले ही खड़ा होना पड़ेगा।

परमेश्वर का प्रकोप एक सत्य है। यहेजकेल हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर समस्त जाति को नाश न करेगा। वह कुछ को शेष छोड़ेगा। वह दिन आ रहा है जब परमेश्वर फिर विशेष तरीके से शेष अपने लोगों के जीवन में कार्य करेगा। उनके द्वारा वह जाति को दिखायेगा कि परमेश्वर के साथ सही संबंध में रहना कितना आवश्यक है। इस्राएल उन शेष का भाग था। हमारे पास वे लेख हैं कि परमेश्वर ने अपने लोगों से क्या कहा हमारे पास उसकी चेतावनी व दण्ड का पूरा विवरण है। यहेजकेल के द्वारा परमेश्वर हमें याद दिलाता है कि एक दिन हमें भी उस पवित्र परमेश्वर के सामने अकेले खड़े होना है कि अपने जीवनों का लेखा दें। दूसरों पर भरोसा न करें। अपने चर्च के या अपने आत्मिक अगुवों के भरोसे न रहें। केवल प्रभु यीशु ही आपको आपके पापों से बचा सकता है। आपको व्यक्तिगत रूप से उसके पास आना है।

### *विचार करने के लिये:*

- यहां परमेश्वर की उस इच्छा के विषय हम क्या सीखते हैं, जो व्यक्तिगत संबंध वह अपने लोगों के साथ रखना चाहता है?

- आज हम किन बातों पर विश्वास करते हैं कि वे हमें स्वर्ग ले जायेंगी?
- क्या प्रभु यीशु के पीछे चलने का आप ने व्यक्तिगत फैसला किया है? कोई और आपके लिये यह फैसला नहीं ले सकता। एक क्षण के लिये सोचें कि जिस विश्वास का आप दावा करते हैं वह सचमुच आपका है?

## *प्रार्थना के लिये:*

- क्या आप कुछ लोगों को जानते हैं जो स्वर्ग जाने के लिये गलत बातों पर विश्वास रखते हैं ? परमेश्वर से पूछने के लिये क्षण भर लगायें कि उनके गलत तरीकों को समझने में सहायता करे।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि उसने केवल यीशु मसीह के द्वारा आपको आपके उद्धार का निश्चय दिया है।
- उससे कहें कि अभी आपको खोजे ताकि जब आप उसके सामने खड़े हों तो आप शर्मिन्दा न हों।

15

# बेकार दाखलता

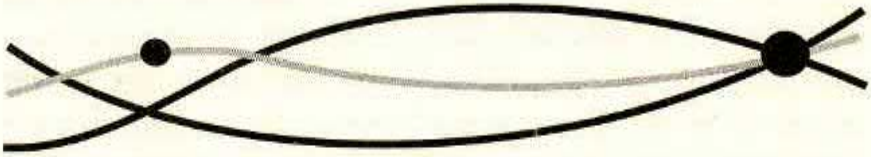

*पढ़ें यहेजकेल 15*

क्या आपने कभी दाखलता देखी है? आप एक दाखलता की लकड़ी का वर्णन कैसे करेंगे? दाखलता की लकड़ी के विषय जिस पहली बात पर हमारा ध्यान जाता है वह यह है कि वह बहुत बल खाई हुई होती है। एक दाखलता सामान्यता बहुत लम्बी व पतली होती है। क्योंकि दाखलता तेज़ बढ़ने वाला पौधा होता है, इसलिये उसकी लकड़ी मज़बूत नहीं होती। दाखलता की लकड़ी किसी भी व्यावहारिक काम की नहीं होती। वह बड़ी भी नहीं होती, न ही मज़बूत होती, और न ही सीधी कि उससे कोई काम की चीज़ बनाई जा सके। आप क्या सोचेंगे यदि आपका पड़ोसी आपसे कहे कि मैं दाखलता की लकड़ी से घर बनाने जा रहा हूं? क्या आप उसको मूर्ख नहीं समझेंगे?

मान लीजिये इस चित्रण में हम एक और आयाम जोड़ें। आइये मान लें कि इस लकड़ी को आग में से निकाल लिया गया। किनारे जल चुके हैं और मध्य भाग भी काला पड़ गया है। तो यह लकड़ी किस काम की रहेगी? अपनी स्वाभाविक स्थिति में लकड़ी को कम से कम सजावट के लिये तो प्रयोग किया जा सकता है। अब तो ऐसा करना भी असम्भव है। दाखलता की लकड़ी जो आग में से निकाली गई बिल्कुल बेकार होती है। इसका एकमात्र लाभ संभवतः जलाने के लिये हो सकता है।

यहेजकेल ने अपने लोगों को बताया कि वे इस जली हुई दाख के समान थे। वे प्रभु परमेश्वर के लिये किसी फायदे के नहीं थे। उनका एकमात्र प्रयोग परमेश्वर के प्रकोप की आग में होगा। वहां आग में वे दूसरों के लिये उदाहरण होंगे कि वे उन्हें देखें। अपने पापों के कारण, प्रभु अपना मुख उनसे फेर लेगा कि उनको भस्म करे।

आइये इस चित्रण पर विस्तृत दृष्टि डालें। परमेश्वर के लोग किस प्रकार इस दाखलता के समान थे? प्रथम, याद रखें दाखलता टेढ़ी मेढ़ी और मुड़ी हुई होती है। परमेश्वर के लोग ऐसे ही थे। वे दाखलता के समान टेढ़े मेढ़े थे, क्योंकि उन पर उनके चारों ओर की परिस्थितियों का सरलता से प्रभाव होता था। वे एक झूठे देवता से दूसरे की ओर फिरते थे। वे सत्य परमेश्वर की ओर से मुंह फेर लेने को सरलता से सहमत होते थे। उनकी अन्यजाति स्त्रियां उनको प्रभावित करती थीं। वे ईर्ष्या के साथ अपने अन्यजाति पड़ोसियों के दुष्ट कार्यों पर दृष्टि करते थे। वे प्रभु की सेवा करते थे और फिर दूसरे देवताओं की सेवा करने के लिये फिर जाते थे। जिस मार्ग पर वे चलते थे वह सीधा व सकड़ा नहीं था। वे एक समय से प्रभावित होकर इधर से उधर डगमगाते थे। परिणामस्वरूप परमेश्वर के लिये वे बेकार थे।

दूसरा, दाखलता के समान, इस्राएलियों ने परमेश्वर को अनुमति न दी कि विपरीत परिस्थितियों के द्वारा भी उन्हें सशक्त करता। जब उनके मार्ग में वह रुकावटें आती थीं, तो वे उनके चक्कर लगाते थे। अपनी विपरीत परिस्थितियों में वे प्रभु पर मन नहीं लगाते थे। उन्होंने स्वयं को वचनबद्ध नहीं किया कि सीधे प्रभु की सामर्थ से रुकावटों को पार कर जायें। उन्होंने अपनी आंखें प्रभु पर नहीं गड़ाईं और न उसके मार्गों पर चले। शायद आपने देखा है कि वृक्ष की जड़ें कठोर वस्तुओं को भी पार कर जाती हैं। मैं ने बड़ी चट्टान के मध्य भी वृक्षों को बढ़ते देखा है। परन्तु उनकी जड़ें पार होकर आवश्यक पोषण प्राप्त करती हैं। दाखलता की ये बात नहीं होती। दाखलता तेज़ी से बढ़ती है। रुकावटों को पार करने के बदले और उन रुकावटों द्वारा सशक्त होकर, दाखलता घुस कर उसके दूसरी ओर चली जाती है। परिणाम एक ऐसी लकड़ी के रूप में होता है जिसमें कोई शक्ति नहीं होती। इस्राएल दाखलता के समान है। वह कमज़ोर और बेकार थी।

तीसरा, दाखलता का स्वभाव होता है बाहर तथा ऊपर की ओर बढ़ना। वन के बड़े वृक्ष अपनी शक्ति को आकाश की ओर जाने की दिशा देते हैं।

इस्राएलियों का स्वभाव था कि अपने अंकुरों को परमेश्वर की ओर नहीं परन्तु बाहर अपने पड़ोसियों की ओर भेजते थे। वे अधिकतर उसे देखते थे जो उनके अन्यजाति पड़ोसी करते थे, इसकी तुलना में कि परमेश्वर की ओर देखते। उनका विश्वास परमेश्वर के वचन पर आधारित नहीं था, परन्तु अपने समय के तौर तरीकों पर। परिणाम होता था-एक बेकार दाखलता।

परमेश्वर की दृष्टि में, इस्राएल एक जली हुई दाखलता की लकड़ी थी। उसका प्रभु के लिये कोई भी व्यावहारिक लाभ न था। उसके पापों ने उसको बेकार कर दिया था। आपके विषय क्या है? क्या आप इस दाखलता के समान हैं? क्या आपके पापों ने आपको स्वामी के प्रति बेकार कर दिया है? दाखलता के अधूरेपन के होते हुए भी वह सबसे स्वादिष्ट फल को पैदा करती है। इस दाखलता के समान हम भी पाप द्वारा टेढ़े मेढ़े हो गये हैं। हम कभी आशा रहित नहीं होते, क्योंकि परमेश्वर हमारा प्रयोग कर सकता है, महान फल अपनी महिमा के लिये पैदा करने के लिये। हम चाहे कितने भी बिगड़े या टेढ़े मेढ़े हों, यह दाखलता दरअसल हम सभी की तस्वीर है। अधिक से अधिक हम दाखलता की लकड़ी के समान हैं। हम अपनी स्वाभाविक स्थिति में, परमेश्वर के लिये इतने अयोग्य हैं। परमेश्वर दाखलता को लेना चाहता है ताकि उससे कुछ अद्‌भुत कर सके। वह आप में महान फल पैदा करना चाहता है। इस्राएल ने अपने को परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत न किया, इसके बदले परमेश्वर से मुख मोड़ लिया। हमें कितना सावधान रहना है ताकि हम उसी गलती का शिकार न हों।

### *विचार करने के लिये:*

- इस संदर्भ में वर्णित दाखलता की समानता में हम किस प्रकार हैं?
- इस सत्य में आप क्या महत्व देखते हैं कि दाखलता अपनी सभी कमियों के होते, सबसे महान फल को पैदा कर सकती है? आपको इससे क्या उत्साह प्राप्त होता है?
- आपकी असफलताएं क्या हैं? असफलताओं के होते भी परमेश्वर ने आपको कैसे प्रयोग किया है?

*प्रार्थना के लिये:*

- प्रभु का धन्यवाद करें कि हमारी बहुत सी कमियों के होते हुए भी वह हमें बहुत सा फल लाने के लिये प्रयोग कर सकता है।
- प्रभु से कहें कि आपके द्वारा और फल अपनी महिमा के लिये उत्पादित करे।

16

# अविश्वासयोग्य यरूशलेम

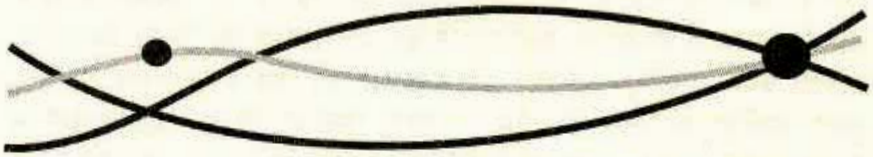

*पढ़ें यहेजकेल 16*

व्यक्तिगत रूप से, मैं समस्त पवित्रशास्त्र किसी और संदर्भ के विषय नहीं सोच सकता जो यहेजकेल 16 जैसा सशक्त हो। बिना आत्मा में गहराई से प्रभावित हुए आप इस अध्याय को नहीं पढ़ सकते। यहां हमारे पास यरूशलेम का दृष्टान्त है। यह अध्याय हमें दिखाता है कि परमेश्वर के दृष्टिकोण से इस्राएल के देश में क्या हो रहा था।

आरम्भ करते हुए, यरूशलेम की तुलना एक शिशु से की गई है। शिशु का जन्म कनानियों के देश में हुआ। परमेश्वर ने इब्राहीम से प्रतिज्ञा की थी कि वह उनको कनानियों का देश देगा; "उस दिन परमेश्वर ने इब्राहीम से एक वाचा बांधी और कहा, "यह देश मैं तेरे वंशजों को दूंगा, मिस्र की नदी से लेकर फरात महानद तक कनातियों, कनज्जियों, कदोमियों, हित्तियों, परिज्जियों, रफातियों, एमोरियों, कनानियों, गिरासेयों व यबूसियों का देश।" (उत. 8-2, बल मेरा)

बाद में मिस्र में परमेश्वर ने मूसा से बात की। उसने उसे इब्राहीम, इसहाक व याकूब की प्रतिज्ञा याद दिलाई, "प्रभु ने कहा, निश्चय मैंने मिस्र में रहने वाली प्रजा की पीड़ा को देखा है, और उनसे बेगार कराने वालों के

कारण उनकी पुकार पर ध्यान दिया है, क्योंकि मैं उनके दुखों को जानता हूं। अत: मैं उतर आया हूं कि उनको मिस्रियों के हाथ से छुड़ाऊं और उस देश में से निकालकर एक अच्छे और विस्तृत देश में पहुंचाऊं, अर्थात् एक ऐसे देश में जिसमें दूध और मधु की धाराएं बहती हैं जो कनानियों, हित्तियों, एमोरियों, परिज्जियों, हब्बियों और यबूसियों का देश है" (निर्ग 3:7-8 बल मेरा)।

यहां कनानियों के देश में इस्राएल जाति का जन्म हुआ था। परमेश्वर ने इस्राएल को याद दिलाया कि उसका पिता एक एमोरी और उसकी मां हित्ती थी। संभवत: दो कारण से परमेश्वर ने इन दो जातियों को उनके माता पिता बताया; प्रथम, क्योंकि परमेश्वर की प्रजा को वह देश उत्तराधिकार में मिला दूसरा, क्योंकि परमेश्वर के लोगों ने उनके दुष्कर्मों को भी उत्तराधिकार में लिया। अमोरियों की दुष्टता के विषय हम उत्पत्ति 15:16 में पढ़ सकते हैं। सुनें, सारा ने अपने पति इब्राहीम से क्या कहा: 'मैं इन हित्तीय स्त्रियों के कारण जीवन में परेशान हूं' (उत. 27:46)। स्वाभाविक था कि हित्ती रीतियों ने अपना प्रभाव छोड़ा। परमेश्वर के लोगों को यह दुष्टता उत्तराधिकार में मिली।

एक नये जन्मे शिशु समान, इस्राएल को उसकी नाभि-नली काटे बिना त्याग दिया गया। उसको धोया नहीं गया। उस पर उसे शुद्ध करने के लिये नमक नहीं लगाया गया, ताकि कीटाणु मर सकते। किसी ने उसके नंगेपन को ढकने व गर्मी पहुंचाने के लिये उसे वस्त्र में न लपेटा। उसको अकेले छोड़ दिया गया, कोई देखभाल करने वाला न था। यहेजकेल हमें बताता है कि यह नया जन्मा बच्चा एक खुले मैदान में फैंक दिया गया, जहां कोई आश्रय न था; ताकि मर जाये।

जब प्रभु परमेश्वर उधर से गुज़रा तो उसकी ऐसी स्थिति थी। उसने इस्राएल को लोहू में लथपथ देखा। उसे उस पर दया आई। उसको मरते देखकर उसने पुकारा, 'जीती रह।' उसने उसे अपनी गोद में लिया और उसकी तब तक देखभाल की जब तक वह बड़ी न हो गई। हम इस वचन की सामर्थ को कम न समझें, 'जीती रह।' हममें से किसने इस वचन के महत्व को अपने जीवन में अनुभव नहीं किया? परमेश्वर हमारे पाप में और हमारी विवशता में हम तक पहुंच कर जीवन देता है। वह हमें जीने का कारण देता है। यह शिशु एक सुन्दर स्त्री बन गया। प्रभु ने उसको देखा और

उससे प्रेम किया। उसने उसको अपनी पत्नी बना लिया व उसके साथ एक वाचा संबंध स्थापित किया। जब वह उसकी पत्नी हो गई, परमेश्वर ने उसको सर्वश्रेष्ठ वस्त्र व आभूषण पहनाये। उसने उसको सर्वश्रेष्ठ भोजन खिलाया। उसकी सुन्दरता की ख्याति विश्व भर में फैल गई। यह सब परमेश्वर के कारण था।

परन्तु समय के साथ वह अपनी सुन्दरता पर गर्व करने लगी। उसने वेश्यावृत्ति आरम्भ की, और अपने पति से संतुष्ट न थी। जो आभूषण परमेश्वर ने उसको दिये थे उनसे उसने अपने लिये मूर्तियां बना लीं। इन मूर्तियों को उसने बूटेदार वस्त्र पहनाये। उसने उनके लिये श्रेष्ठ भोजन व तेल बलिदान रूप में चढ़ाया। उसने इन अन्यजाति देवताओं के लिये, अपने पुत्र व पुत्रियों तक को बलिदान में चढ़ाया; जो प्रभु के विवाह के कारण उससे जन्मे थे। इस्राएल के चारों ओर बच्चों की बलि देना अन्यजाति परम्परा थी। कई बार इस्राएल भी इस रीति को अपनाती थी और उसने भी देश के ऊँचे स्थानों पर चारों ओर के अन्यजाति देवताओं के लिये अपने बच्चों को बलि चढ़ाया। उसके पति, परमेश्वर को कितना दुख हुआ। वह उस सब को भूल गई थी जो परमेश्वर ने उसके लिये किया।

बात यहीं समाप्त नहीं हो गई। पूरे देश में उसने अन्यजाति वेदियां बनाईं। अपने पति से अधिक वह अजनबियों को पसन्द करती थी। यहेजकेल हमें बताता है कि वह वेश्या से भी अधिक पतित हुई क्योंकि अपने प्रेमियों को बुलाकर उनको धन देती थी। वे उसको नहीं फंसाते थे। उसने स्वयं को खुलेआम अपने चारों ओर की जातियों को दिया। वेश्यावृत्ति के लिये उसकी भूख अनियंत्रित थी। वह कभी संतुष्ट न हुई। उसके वेश्यावृत्ति के कार्य बढ़ते गये। पद 27 हमें बताता है कि अन्यजाति फिलिस्तीनियों की पुत्रियां भी उसके व्यवहार से स्तब्ध थीं। उसका हृदय परमेश्वर से बहुत दूर था। उसका पाप चारों ओर की जातियों से अधिक था।

परमेश्वर देखता न रहेगा, जबकि उसकी पत्नी सिर के बल पाप व नाश में पड़ी है। उसके प्रति प्रेम के कारण वह उसको प्रेमियों के सामने नंगा करेगा। वे उससे अपना मुंह फेर लेंगे। उसके प्रति ईर्ष्या के कारण (पद 38), परमेश्वर मूर्तियों को तोड़ डालेगा। जैसा उस समय का नियम था, उसका पत्थरवाह किया जायेगा और तलवार से उसके टुकड़े टुकड़े किये जायेंगे। उसका घर जला दिया जायेगा। (उसके घर के जलाये जाने का उद्धरण

संबंधित हो सकता है उससे, जब उसके शत्रु यरूशलेम में आये और उसको जलाकर खाक कर दिया)। उसको रगड़ दिया जायेगा क्योंकि उसने वह स्मरण नहीं किया कि परमेश्वर ने उसके लिये क्या किया।

आनेवाली पीढ़ियों तक लोग इस्राएल के लिये कहावत कहेंगे, 'जैसी मां, वैसी बेटी' (देखें पद)। उन स्त्रियों के लिये जो अपने पतियों से फिर जाती हैं, देश के लोग कहेंगे कि वे अपनी मां इस्राएल के समान हैं। वह परमेश्वर के प्रति दुष्टता व विद्रोह की पर्यायवाची बन जायेंगी।

यहेजकेल ने यरूशलेम के विषय अपने दृष्टान्त को यह समझा कर जारी रखा कि उसकी दो बहनें थीं। एक बहन सामरिया और दूसरी सदोम। ये दोनों नगर अपनी दुष्टता के लिये जाने जाते थे। सदोम लूत के दिनों में अपनी दुष्टता के लिये कुख्यात था। पद 49 बताता है कि यह नगर अहंकारी व सुस्ती से भरा था, तथा दरिद्रों व ज़रूरतमन्दों की सहायता नहीं करता था। इस कारण, यह नगर नाश किया गया। सामरिया जो कि इस्राएल के घराने का उत्तरी राज्य था यरोबाम के आधीन परमेश्वर से फिर गया था। उसके राज्यकाल में उन्होंने परमेश्वर की आराधना के स्थान पर जो उनके पितरों का परमेश्वर था सोने के बछड़ों की आराधना करनी आरम्भ कर दी। पद में परमेश्वर ने लोगों से कहा कि सामरिया ने तब भी परमेश्वर की पत्नी यरूशलेम की तुलना में आधे ही पाप किये, जो अब दोषी है। इस संबंध में सबसे बुरी बात यह थी कि वह शर्मिन्दा भी न थी।

यरूशलेम को अपनी दुष्टता के कारण शर्मिन्दगी उठानी पड़ेगी। उसको बन्धुआई में ले जाया जायेगा। इससे पहले कि परमेश्वर ने उसे दण्ड दिया, वह अपनी बहनों सामरिया व सदोम को घृणा की दृष्टि से देखती थी। पद 56 व 57 हमें बताते हैं कि वह तो अपनी बहनों का नाम तक न लेगी। वह स्वयं को उनसे उत्तम समझती थी। यहेजकेल के समय के यहूदी अपने आप को परमेश्वर के जन और इसलिये अपने चारों ओर की जातियों से श्रेष्ठ समझते थे। यरूशलेम अपने चारों ओर के राष्ट्रों को घृणा से देखती थी परन्तु अब वह अपने भटकेपन के शर्मनाक परिणामों को भुगतेगी। अब सूरिया तथा फिलिस्तीन उसे घृणा से देखेंगे। एक समय वह पृथ्वी की सुन्दरता व गर्व थी। और अब उसे संसार की अविश्वसनीय आंखों के सामने शर्मिन्दा किया जायेगा।

हमारे दिनों में भी उन कुछ के जीवन में जो प्रभु की सेवा करने का दावा करते हैं हम पाप व शर्म को उघड़ा देखते हैं। उसको शर्मिन्दा किया गया, और उसके महान आत्मिक राज्य उनके साथ पतित हो गये। इस अध्याय की चेतावनी को हमें किस प्रकार ग्रहण करना है? गम्भीरतापूर्वक! आइये, उसे कभी न भूलें जो प्रभु ने हमारे लिये किया है। आइये सदा उस गड्ढे को याद रखें जिस में से हमें निकाला गया।

यहाँ ध्यान दें कि यद्यपि परमेश्वर यरूशलेम को दण्ड देगा, वह उसे पूर्णतया न त्यागेगा। पद 60-63 हमें बताते हैं, यद्यपि अपने पापों के लिये उसे कठोर दण्ड दिया जायेगा, तथापि परमेश्वर उसके साथ अपनी वाचा को याद रखेगा। परमेश्वर फिर अपने आत्मा को उस पर उंडेलेगा। वह फिर उसकी लहूलूहान व मरती हुई देह को उठायेगा और अपनी गोद में लेगा। वह उसे उसकी जवानी के दिन याद दिलायेगा, जब उसको सबके द्वारा त्याग दिया गया था। परमेश्वर अपनी अविश्वासयोग्य पत्नी के साथ अपनी वाचा को याद रखेगा। वह उस पर पश्चात्ताप की आत्मा को उण्डेलेगा। इससे हम समझते हैं कि परमेश्वर अभी भी यहूदी जाति में सामर्थ के कार्य करेगा। यहेजकेल हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर इस्राएल को उसकी भूतपूर्व महिमा को लौटायेगा। उसको ज़िम्मेदारी दी जायेगी कि अपनी विद्रोही बहनों, सामरिया व सदोम की चिन्ता करे। स्वाभाविक ही, यह इस कारण नहीं था कि उसने स्वयं को इस योग्य सिद्ध किया। उसको यह ज़िम्मेदारी केवल इसलिये दी जायेगी क्योंकि परमेश्वर अनुग्रहकारी परमेश्वर है जो पापियों को अपने पास पुन:स्थापित करता है और उनको वह देता है जिसके योग्य वे नहीं होते।

आज हमारी कलीसियाओं से यह पद हमसे क्या कहता है उनके विषय जो पतित हुए, मन फिराया व आज सेवकाई में लौटना चाहते हैं? क्या पाप की कोई क्षमा नहीं? जब परमेश्वर क्षमा करता है तो क्या भूलता नहीं और हम से ऐसा व्यवहार नहीं करता मानो हमने कभी पाप किया ही नहीं? पौलुस प्रेरित भी परमेश्वर द्वारा सामर्थी तरीके से प्रयोग किया गया। उसने तो कलीसिया को सताया था, तौभी परमेश्वर ने उसका प्रयोग किया और वह एक महान प्रेरित बन गया। पतरस ने प्रभु का इंकार किया परन्तु उसे परमेश्वर का उपकरण बनाया गया कि तीन हज़ार लोगों तक एक ही दिन में पिन्तेकुस्त के दिन पहुंचा। दाऊद व्यभिचार के पाप में गिरा तौभी वह

परमेश्वर के मन के अनुसार एक व्यक्ति था। उसकी (परमेश्वर की) क्षमा के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करें। उसकी स्तुति करें कि वह हमें विद्रोह की दुर्गन्ध में पड़े रहने नहीं देता।

कितनी बार हमने परमेश्वर के सब्र को ललकारा है। शायद जब आप पढ़ते हैं, आप अपने जीवन पर दृष्टि करने के लिये विवश होते हैं। शायद आप भी, इस छोटे बालक के समान, मरने के लिये छोड़ दिये गये थे। संसार ने आपको खाली व अनाथ छोड़ दिया। आप ने अपने को त्यागा हुआ महसूस किया। प्रभु यीशु ने आप पर करुणा की। उसने हाथ बढ़ाकर आपको उठाया और नाली में से निकाला। उसने आपको वस्त्र पहनाये और बड़ी आशीषें दीं। आपको उसने ऐसे प्रेम किया जैसा आपको पहले कभी नहीं किया गया। उसने आपको अपने पास खींच लिया।

परन्तु आज आपने अपना पहला सा प्रेम छोड़ दिया। इस संसार की वस्तुओं ने आपको परीक्षा में डाला। आपने अपनी पीठ उसकी ओर कर ली। इस अध्याय की युवा पत्नी के समान अपने पति से अधिक अनजानों को आपने पसन्द किया। शायद परमेश्वर आपको बुला रहा है कि आप उस गड्हे को याद करें जिसमें से आप को निकाला गया। (भजन. 40:2) क्या आज आप उसके पास नहीं लौटेंगे? क्या आप स्वीकार नहीं करेंगे कि आप भटक गये थे? वह अपने हाथ फैलाये प्रतीक्षा कर रहा है।

### *विचार करने के लिये:*

- यह अध्याय परमेश्वर की करुणा के विषय हमें क्या सिखाता है?
- इस्राएल के भटक जाने के बाद भी, यहाँ ध्यान दें कैसे परमेश्वर उसको वापस अपने पास लाकर उसके पाप क्षमा करने को तैयार है। यह हमें उनके विषय क्या सिखाता है जो आज प्रभु से भटक जाते हैं?
- क्या इस अध्याय में पत्नी के साथ आप अपनी पहचान कर सकते हैं? आप परमेश्वर से कैसे भटक गये? उसने आपको क्या आशीषें दीं?
- यह अध्याय हमें इस विषय पर क्या सिखाता है कि उनके साथ हमारा व्यवहार कैसा हो जो प्रभु से भटक गये हैं?

*प्रार्थना के लिये:*

- प्रभु का धन्यवाद करें कि उसने आपको नहीं त्यागा, यद्यपि आप विश्वासयोग्य नहीं भी रहे।
- क्षण भर को सोचें कि आप अपने जीवन में प्रभु रहित कहां थे। उसने आपके लिये क्या किया? उसके अनुग्रह के लिये उसका धन्यवाद करें।
- परमेश्वर से कहें कि आपको उनके साथ धीरज दे जिनको अभी तक उनके पापों व विद्रोह पर जय नहीं मिली। प्रभु से सहायता मांगें कि आप भी उनसे ऐसे प्रेम कर सकें जैसे वह प्रेम करता है।

17

# उकाब तथा दाखलता

*यहेजकेल 17 पढ़ें*

मसीही गति में ऐसे समय होते हैं जब हम प्रभु की इच्छा को नहीं समझते। हो सकता है प्रभु हमें ऐसे स्थानों पर चलने को कहे जो मनभावने न हों। परीक्षा विपरीत दिशा में के योना भागने के समान हो सकती है। परन्तु योना के समान हम पाते हैं कि यह कितना सरल होता यदि हम आज्ञापालन करते। इस्राएलियों ने बहुत दुख उठाया क्योंकि अपने जीवनों में उन्होंने परमेश्वर की योजना को पूरा नहीं किया। उनके भिन्न विचार थे। इस अध्याय में परमेश्वर के लोगों को उसे व उसके उद्देश्यों को अस्वीकृत करने के खतरे बताए गए हैं। यहां हम उकाब के दृष्टान्त से आरम्भ करते हैं। यह उकाब एक सुन्दर पक्षी था। यह शक्तिशाली था। उसके लम्बे पंख मज़बूत थे। उसके पंख लम्बे व रंगीन थे। इस संदर्भ में वह बाबुल के राजा की प्रस्तुती करता है (देखें पद 12)।

यह उकाब लेबनान को आया (दक्षिणी राज्य यहूदा की प्रस्तुती है)। उसने देवदार की फुन्गी नोच ली (पद 3) और उसको व्यापारियों के देश को ले गया। 2 राजा 24:8 में हम पढ़ते हैं कि जब यहोयाकीन यहूदा का राजा बना तो उसने प्रभु की दृष्टि में दुष्टता की। प्रभु ने बाबुल के राजा

नबूकदनेस्सर को यहूदा के विरुद्ध भेजा। उसने नगर को घेर लिया (2 राजा 24:10) और यहोयाकीन को बन्दी बना ले गया (2 राजा 24:12)। उसको बाबुल ले जाया गया, जिसे व्यापारियों का देश कहा गया है। राजा यहोयाकीन 'देवदार की फुन्गी' समान प्रतीत होता है, जिसको उकाब (नबूकदनेस्स्कर) बाबुल ले गया।

उकाब देश से बीजों को भी ले गया और पर्याप्त सिंचाई के स्रोत वाली उपजाऊ भूमि पर लगाया (पद 5)12 राजा 24:16-17 के अनुसार नबूकदनेस्सर ने यहोयाकीन की जगह यहूदा में सिदकिय्याह को राजा बनाया। उसने सिदकिय्याह व उसके अधिकारियों को लोगों पर राज्य करने का अधिकार दिया, जो यहूदा के देश में थे। हर योग्य व्यक्ति को बाबुल ले जाया गया था ताकि वहां गुलामी करे। जो यहूदा में रह गये वे दरिद्र व अकुशल थे। राजा सिदकिय्याह इन लोगों पर राज्य करता था और उसे बाबुल के राजा को वफ़ादारी की निश्चयता देनी थी। राजा सिदकिय्याह और वे जो इस्राएल में बचे थे वह 'बीज' हो सकते हैं, जिनको उकाब ने यहूदा की उपजाऊ भूमि में लगाया।

जिस बीज को उकाब ने बोया वह एक दाखलता बन गया और उसकी डालियां फैलीं। सिदकिय्याह की अगुवाई के आधीन विकास का कार्य हुआ था। ध्यान दें, इसी कारण, डालियां उकाब तक पहुंची थीं। सिदकिय्याह शपथ के आधीन नबूकदनेस्सर के प्रति वफादारी के लिये वचनबद्ध था (देखें पद 13)। उसने उसको अपनी आधीनता व आदर भेंट की। ध्यान दें कि जब कि 'डालियां' नबूकदनेस्सर तक पहुंचीं, सिदकिय्याह की 'जड़ें' दृढ़ता से यहूदा की भूमि में जमी रहीं।

अब हमें दूसरा उकाब मिलता है (पद 7)। यह उकाब भी महान व शक्तिशाली था। यहेजकेल हमें बताता है कि इस दूसरे उकाब को देखकर, दाखलता ने अपनी जड़ों व डालियों को झुकाया और उनको इस दूसरे उकाब की ओर फैलाया। ऐसा करके, दाखलता (सिदकिय्याह व दूसरे जो इस्राएलीं रह गये थे) पहले उकाब की ओर से फिर गई। सिदकिय्याह ने केवल बाबुल के प्रति वफ़ादारी की शपथ को नहीं तोड़ा परन्तु परमेश्वर के साथ भी वाचा के संबंध को तोड़ा (पद 19)। यहां ध्यान दें कि किस प्रकार दाखलता की जड़ें उखाड़ दी जायेंगी (पद 9)। याद रखें कि ये जड़ें इस्राएल देश में जमी थीं, वह देश जिसकी परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी। नबूकदनेस्सर

से हटने के बाद, वे अपनी पीठ परमेश्वर की ओर से मोड़ रहे थे, जिसने उन्हें प्रतिज्ञा के देश में रहने की अनुमति दी। हम 2 इति. 36:13 में सिदकिय्याह के विषय पढ़ते हैं: 'उसने भी राजा नबूकदनेस्सर से विद्रोह किया जिसे उसने परमेश्वर के नाम से शपथ दिलाई थी। उसने अपनी गर्दन को कठोर किया और अपने हृदय को कठोर किया और प्रभु की ओर नहीं फिरा जो इस्राएल का परमेश्वर है।"

नबूकदनेस्सर से संधि तोड़ने के बाद सिदकिय्याह दूसरे उकाब की ओर सहायता के लिये मुड़ा। यह दूसरा उकाब कौन था? यिर्मयाह 7 हमें बताता है कि सिदकिय्याह के राज्यकाल में, मिस्री यरूशलेम की सहायता के लिये आए (यिर्म. 37:5)। पद इसका निश्चय देता है। यह दूसरा पक्षी मिस्र देश की प्रस्तुती करता है। जहां तक सिदकिय्याह की बात है, क्योंकि उसने बाबुल के राजा के साथ अपनी वाचा को तोड़ा, पद 8-12 बताते हैं कि परमेश्वर अपने जाल को उस पर फैलायेगा तथा उसको व उसकी प्रजा को बाबुल में लायेगा। यह कैसे हुआ, इसकी कहानी यिर्मयाह 52 में दी गई है। उन्होंने अपने जीवन के लिये परमेश्वर की इच्छा को ग्रहण करने से इंकार किया और सहायता के लिये मिस्र पर आशा लगाई। मिस्र में उनको वह आवश्यक सहायता प्राप्त न होगी। परमेश्वर के लोग इस दाखलता के समान जड़ समेत नाश होंगे (पद 9-10)। एक मृत दाखलता के समान उनको जमा कर के फैंका जायेगा।

यहां हमारे ध्यान देने लायक बात यह है, जब कि बाबुल परमेश्वर के लोगों का शत्रु था, परमेश्वर चाहता था कि कुछ समय के लिये इस्राएल में उसकी आधीनता को स्वीकारे। बाबुल वह राज्य था जिसका प्रयोग परमेश्वर ने अपने लोगों को दण्ड देने के लिये करना था। इस समय बाबुल के विरुद्ध होकर, वे परमेश्वर के अनुशासन का मुकाबला कर रहे थे। हम सब जानते हैं कि कभी कभी परमेश्वर का अनुशासन कितना कठोर होता है। कई बार हम बस रुकना चाहते हैं। कई बार बातों को हम अपने हाथ में ले लेते हैं ताकि प्रक्रिया को तेज़ कर सकें। परमेश्वर हमें बुलाता है कि उसके अनुशासन को ग्रहण करें। उसका तरीका हमें वे लोग बनाने का होता है, जो होने के लिये उसने हमें बुलाया है।

इसके बदले कि हम परमेश्वर से भागें, इस अनुशासन के समय उस पर भरोसा करना व उसकी स्तुति करना सीखें। वह उसको आपकी भलाई

व अपनी महिमा के लिये प्रयोग करेगा। यह कहानी का अन्त नहीं है। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि वह एक दूसरे देवदार की फुनगी लेगा तथा कुछ कोमल डालियां विशेष पर्वत के शिखर पर लगायेगा (पद 22)। वह जड़ पकड़ेगा और एक सुन्दर देवदार बन जायेगा। वह हर प्रकार के पक्षी का आश्रय बनेगा। यह स्पष्ट रूप से परमेश्वर के लोगों के अपने देश लौटने की बात करता है। समस्त संसार देखेगा कि परमेश्वर किस प्रकार एक अनावश्यक प्रजा को महान बनायेगा। विद्रोह के होते भी परमेश्वर की प्रजा के लिये एक आशा है। परमेश्वर का काम उनमें पूरा नहीं हुआ।

इस अध्याय की हमारे जीवन के लिये व्यावहारिकता क्या है? परमेश्वर ने आपको कहां रोपा है? आपकी वर्तमान परिस्थितियां क्या हैं? सिदकिय्याह को वह स्थान पसन्द नहीं था, जहां उसे रोपा गया। उसको बाबुल के राजा के आधीन रहना पसन्द नहीं था। वह ग्रहण नहीं कर सका कि प्रभु ने उसको बाबुल के अधिकार की भूमि में रोपण की अनुमति दी। उसने प्रभु की इच्छा के विरुद्ध विद्रोह करने का चयन किया। बाबुल के प्रति अपनी शपथ को उसने तोड़ दिया और सहायता मांगने के लिये मिस्र के राजा के पास पहुंचा। वह नाश हो गया क्योंकि उसने अपनी जड़ों को उस भूमि से उखाड़ दिया जहां परमेश्वर ने उसको रोपा था।

आपके विषय क्या है? कई बार परमेश्वर की इच्छा बड़ी कठिन होती है। कई बार हम नहीं समझ पाते कि परमेश्वर क्यों कुछ बातें हमारे साथ होने दे रहा है। यह उत्तम होगा कि हम अपनी जड़ों को परमेश्वर की इच्छा में गहराई पकड़ने दें, चाहे हमें समझ भी न आये, न कि उनको बाहर खींच लें और मामलात को अपने हाथ में ले लें। जड़ें खींच लेने की और अपने स्थान को छोड़ देने की परीक्षा तो आती है। सिदकिय्याह के समान न बनें इसकी अपेक्षा अपनी जड़ें परमेश्वर में दृढ़ रहने दें, आप कभी नाश नहीं हो सकते। अन्त में परमेश्वर ही विश्वासयोग्य निकलेगा।

### *विचार करने के लिये:*

- परीक्षा के समय अपने स्थान को छोड़ने का विचार इतना सशक्त क्यों हो जाता है? क्या कारण होता है कि हम अपने जीवनों में परमेश्वर की इच्छा के प्रति अशांत हो जाते हैं?

- क्या परमेश्वर हमारे जीवनों के लिये भलाई को उत्पन्न करने के लिये उसका प्रयोग कर सकता है जो बुरा दिखाई देता हो? यह अनुच्छेद हमें इसके विषय क्या सिखाता है?

- क्या आप उस समय को याद कर सकते हैं जब परमेश्वर ने दुष्टता या आपके जीवन की त्रासदी को बड़ी भलाई की उपलब्धि के लिये प्रयोग किया? स्पष्ट करें।

***प्रार्थना के लिये:***

- प्रभु का धन्यवाद करें कि वह प्रतापी राजा है जो सबसे भयंकर त्रासदी को भी हमारे जीवनों में भलाई के लिये परिवर्तित कर सकता है।

- यदि इस समय आप जांच की प्रक्रिया से होकर गुज़र रहे हैं, तो परमेश्वर से मांगें कि उस की प्रतीक्षा करने की शक्ति आप को दे।

- क्या आपका कोई मित्र या परिचित है जो कठिन समय से गुज़र रहा है? प्रभु से मांगने में क्षण भर लगायें कि वह प्रभु उसकी परीक्षा में उसके साथ हो।

18

# पितरों के पाप

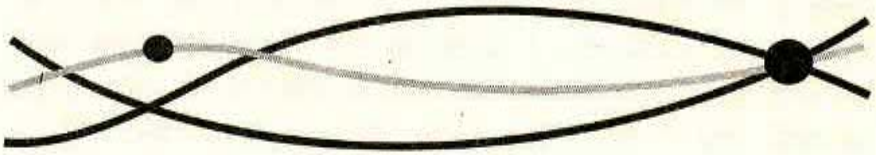

*पढ़ें यहेजकेल 18*

इस्राएल देश में एक कहावत थी जो इस प्रकार थी, 'पितरों ने खट्टे अंगूर खाये और दांत खट्टे हुए बच्चों के' (पद 2)। इसका क्या अर्थ था? इसका अर्थ था कि बच्चों को अपने पितरों के पापों का दण्ड भुगतना पड़ता है। इस कथन में कुछ सत्य है। एक दुष्ट पिता के पुत्र से बात करें। एक अविश्वासयोग्य या शराबी पिता के बच्चे के पास बैठें। आप जल्दी ही जान पायेंगे कि बच्चों का घर में अनुभव बड़े नाटकीय ढंग से उनको प्रभावित करता है। इस अर्थ में पितरों के पापों के कारण बच्चे दुख उठाते हैं।

इस्राएली लोग इसको एक कदम और आगे ले गये। वे विश्वास करते थे कि जब पिता पाप करता है, तो वह पूरे परिवार की ओर से करता है। उनको लगता था कि परमेश्वर पिता के पापों के कारण समस्त परिवार को नाश करेगा। परमेश्वर ने उन्हें बताया कि ऐसा नहीं है: 'जो प्राण पाप करेगा वही मरेगा।' (पद 4) प्रत्येक व्यक्ति अपने पापों के लिये परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी है। हमें किसी दूसरे के पापों का कभी लेखा नहीं देना होगा।

यहेजकेल इस अध्याय में उसके अर्थ को चार उदाहरण देकर हमें समझाता है। पहला उदाहरण एक धर्मी पिता का है (पद 5-9)। यह पिता

मूर्ति पूजा नहीं करता। वह स्वयं को अपवित्र नहीं करता। वह अपने पड़ोसी की पत्नी का आदर करता है। वह अपने समाज के लोगों के साथ सामंजस्य के साथ रहता है। वह सताये हुओं पर करुणा करता है और दरिद्रों की आवश्यकताओं को पूरा करता है। वह परमेश्वर की व्यवस्था पर चलता है। परमेश्वर कहता है, 'ऐसा व्यक्ति निश्चय जीवित रहेगा।' (पद 9)

परन्तु इस धर्मी व्यक्ति का एक पुत्र था (पद 10-13)। उसका पुत्र एक हिंसक व्यक्ति है जो मूर्ति पूजा करता है। वह दरिद्रों को सताता है। प्रभु कहता है 'वह निश्चय मरेगा' (पद 13)। उसका धर्मी पिता परमेश्वर के प्रकोप के दिन उसको बचा न पायेगा। यह सत्य, कि उसका पालन पोषण एक धर्मी परिवार में हुआ उसको परमेश्वर के प्रकोप से नहीं बचा सकता। वह अपने पापों में मरेगा, परन्तु उसका पिता बच जायेगा। हम लोगों का परिवार के आधार पर न्याय नहीं कर सकते या उस चर्च के आधार पर जिस में वे जाते हैं। आप एक भले परिवार से संबंध रखते हों तथा एक अच्छी कलीसिया से, तौभी अपने पापों में खोये हो सकते हैं।

यहेजकेल हमें दूसरा उदाहरण देता है। यहां वह एक पुत्र के विषय बात कहता है जो अपने पिता के पाप को पहचान कर उनसे फिरता है (पद 14-17)। इस दशा में पुत्र बचेगा और पिता नाश होगा। पुत्र पिता के दोष का भागी न होगा। आधारभूत सिद्धान्त पद 20 में पाया जाता है, 'जो प्राण पाप करेगा नाश होगा। पुत्र पिता के पाप में भागी न होगा, न ही पिता पुत्र के पाप में। धर्मी व्यक्ति की धार्मिकता उसके लेखों में होगी और दुष्ट की दुष्टता उस पर दोषारोपण करेगी।'

अभिभावकों के लिये अपने को दोषी ठहराना कितना सरल होता है जब उनके बच्चे मार्ग से भटक जाते हैं। बाइबल हमें बताती है कि प्रत्येक बच्चा अपने कार्यों के लिये परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी है। आप अपने बच्चों के पापों के लिये उत्तरदायी नहीं। यद्यपि अपने बच्चों के पालन पोषण को प्रभु के मार्गों में करने के लिये हम उत्तरदायी हैं, परन्तु उनकी प्रतिक्रिया के लिये वह हमें उत्तरदायी नहीं ठहराता। उन्हें अपने विषय परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी होना है।

यहेजकेल हमें तीसरा उदाहरण पद 21-23 में देता है। यहां हम एक पापी व्यक्ति को देखते हैं जो प्रभु की सेवा करने के लिये अपने पापों से

फिरता है। यहेजकेल हमें बताता है कि उसके बीते समय के कोई भी अपराध याद नहीं किये जायेंगे (पद 22)। इस पर एक क्षण विचार करें। शायद आपकी पृष्ठभूमि भयानक रही हो। आप अपने बीते जीवन के लिये शर्मिन्दा हों। जब आप सोचते हैं कि प्रभु से मिलने से पहले आपने क्या किया तो आप कांप उठते हैं। अपनी पृष्ठभूमि को देखना निराशापूर्ण होता है, तब शैतान आपके मन में शंका के बीज बोना आरम्भ करता है। आप विस्मित होते हैं कि क्या परमेश्वर आपको क्षमा करेगा। यहेजकेल 18:22 हमें बताता है कि 'जो अपराध उसने किये उनमें से कोई भी उसके विरोध में याद न किया जायेगा।' 'कोई भी नहीं' का क्या अर्थ है? क्या इसका अर्थ है 'एक नहीं?' आप का एक भी अपराध नहीं, एक भी पाप नहीं (चाहे कितना बड़ा या छोटा हो) आप के विरुद्ध रखा नहीं जायेगा, यदि प्रभु परमेश्वर आपको क्षमा करता है। आज इस पद से आप क्या तसल्ली पा सकते हैं। अपने पापों को उसके सामने लायें। उनका अंगीकार करें और परमेश्वर की आधीनता में हो जाएं।

अन्तिम उदाहरण पद 24 में मिलता है। यहां हम एक धर्मी व्यक्ति से मिलते हैं जो प्रभु से फिर जाता है। बाइबल हमें बताती है कि वह व्यक्ति मरेगा। दूसरे शब्दों में, उसको उसके पापों का दण्ड मिलेगा। यहेजकेल हमें याद दिलाता है कि उसकी समस्त 'धार्मिकता जो उसने की स्मरण न की जायेगी।' वह परमेश्वर के दण्ड से इसलिये न बचेगा कि बीते समय में वह प्रभु के प्रति विश्वासयोग्यता के साथ सेवा करता रहा। विश्वासियों को भी प्रभु को अपने कामों का लेखा देना है (2 कुरि. 5:10)।

कुछ लोग महसूस करते हैं कि शायद परमेश्वर उनके बीते समय के पापों को हमारे भले कामों की तुलना में एक मापदण्ड पर रखता है। यहां यहेजकेल की शिक्षा इसके बिल्कुल विपरीत है। पाप एक रोग के समान होता है। जब एक रोग का आक्रमण होता है तो आपके बीते समय के अच्छे स्वास्थ्य से कुछ फर्क नहीं पड़ता। बीमारी उस सारे व्यायाम व पोषक भोजन की फिक्र नहीं करती जो गत समय में आपने खाया। जब बीमारी आप पर आक्रमण करती है तो वह आप का जीवन ले सकती है, चाहे आप जीवन भर कितने भी स्वस्थ रहे हों। यही पाप के साथ है। हमारा धर्मी रूप से व्यक्ति किया गया समय निश्चय नहीं देता कि हम भविष्य में पाप के रोग

के शिकार न होंगे। पाप एक धर्मी व्यक्ति और अधर्मी का भी का नाश कर सकता है। वह किसी व्यक्ति का पक्ष नहीं करता।

यहेजकेल के समय के लोग इस आधारभूत शिक्षा को ग्रहण नहीं कर सके (पद 25-29)। उन्हें लगता था परमेश्वर को कम से कम इतना ध्यान तो रखना चाहिये कि एक अच्छे परिवार में उनका पालन पोषण हुआ। उनका विश्वास था कि उनके धर्म के कार्य कुछ अर्थ रखते हैं, चाहे उस समय वे प्रभु के लिये न जीते हों। बहुत से लोग हैं जो आज भी इसी प्रकार सोचते हैं। वे पार होने के लिये अपने भले कामों तथा अपने अच्छे पालन पोषण पर भरोसा करते हैं। यहां परमेश्वर हमें बताता है कि हम सब को अपने जीवनों का परमेश्वर के सामने लेखा देना होगा। पितरों को अपने बच्चों को लेखा नहीं देना। बच्चे अपने पितरों के भरोसे नहीं रह सकते। परमेश्वर हमारे कार्यों को एक मापदण्ड पर नहीं रखता। वह जानना चाहता है कि इस समय आप कहां है। सब कुछ शुद्ध किया जा सकता है। आपको पूर्णतया क्षमा किया जा सकता है यदि आप उसके पास आयें-परन्तु आना आपको है।

परमेश्वर अपने लोगों से विनती करता है कि अपने पापों से उसकी ओर फिरें। वह उन्हें क्षमा करने के लिये प्रतीक्षा कर रहा है। उसको उनकी मृत्यु से आनन्द नहीं होता। उनके प्राणों को चंगा करने व जीवन देने पर उसे बड़ा आनन्द मिलता है। परमेश्वर उन्हें एक नया हृदय व आत्मा देने को तैयार है जो उसके सम्मुख शुद्ध हो। वह हमें अपने पास आने व रहने के लिये बुलाता है। आप ही अकेले अपने पापों के लिये कुछ कर सकते हैं। कोई और आपकी सहायता नहीं कर सकता।

***विचार करने के लिये:***

- स्वर्ग जाने के लिये आज लोग किस बात पर भरोसा करते हैं?
- क्या एक धर्मी व्यक्ति के लिये पाप में गिरना संभव है? आपके जीवन के कौन से क्षेत्रों में आज पतित होने से रक्षा किये जाने की आवश्यकता है?
- आज आप परमेश्वर के साथ कहां खड़े हैं? क्या आप उसके साथ ठीक हैं? स्पष्ट करें।

*प्रार्थना के लिये:*

- क्या आप ऐसे लोगों को जानते हैं जो स्वर्ग जाने के लिये अपने पालन पोषण या कलीसिया पर भरोसा करते हैं? प्रार्थना करें कि परमेश्वर उन पर प्रगट करे कि उनको एक उद्धारकर्त्ता की आवश्यकता है।
- क्या आप ऐसे माता-पिता या बच्चे हैं जो अभी तक प्रभु में नहीं आये? परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको अपने पास लाये।
- यदि आज आप माता या पिता हैं, तो अपने बच्चों के पालन पोषण के लिये परमेश्वर से बुद्धि मांगें। यदि आप माता या पिता नहीं हैं, तो किसी विशिष्ट परिवार के लिये प्रार्थना करें, जिसे आप जानते हैं।

19

# सिंह तथा दाखलता

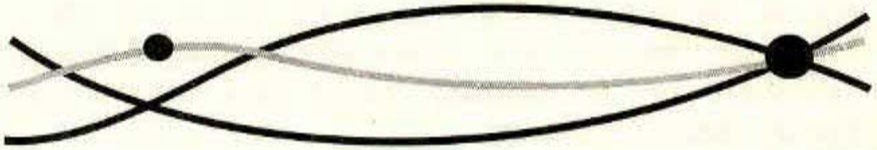

*पढ़ें यहेजकेल 19*

क्या आपने कभी सोचा है कि बिना परमेश्वर के आप आज कहां होते? जो भी हमारे पास है वह उसके कारण है। वह अपनी आशीषें हम पर अधिकाई से उंडेलता है। बहुत बार परमेश्वर ने जो हमें दिया है उसे हम अपनी महिमा के लिये प्रयोग करते हैं। हम अहंकारी व ढीठ हो गये हैं। हम बड़बोले हैं कि हम आत्म-निर्मित हैं। हम परमेश्वर से फिर जाते हैं। यही इस्राएल व उसके राजाओं के साथ था। इस्राएल को सीखना था कि वह परमेश्वर, जो आशीष देता है उन आशीषों को हटा भी सकता है। इस अध्याय में हमारी मुलाकात दो इस्राएली राजाओं से होती है। उनको महान सिंह के रूप में चित्रित किया गया है। क्योंकि उन्होंने उस महिमा का कुप्रयोग किया जो परमेश्वर ने उन्हें दी और ढीठ बनकर परमेश्वर से फिर गये। वह उन्हें अधिकार से वंचित करेगा। इस विभाग में इस्राएल की तुलना एक सुन्दर दाखलता से की गई है जिसको परमेश्वर ने उसके विद्रोही हृदय के कारण उखाड़ दिया। आइये इन उदाहरणों को देखें।

इस्राएल वह सिंहनी है जो अपने बच्चों को पाल रही है। विशेषकर एक बच्चा अति शक्तिशाली व सामर्थी हो गया। वह एक सुन्दर सिंह बन गया।

वह सिंह डर का कारण था। वह अपने शिकार को फाड़ कर मनुष्यों को निगल जाता था। क्योंकि वह ऐसा दुष्ट व भयानक सिंह था, उसके लिये एक फन्दा लगाया गया, लोगों ने उसे फंसाने के लिए एक गड़हा खोदा। वह उनके फन्दे में फंस गया। उसे बंधुवाई में लेने वाले उसे मिस्र ले गये जहां वह आगे को उनके लिये खतरा न रहेगा। यह चित्रण किसका है? बहुत से टीकाकार विश्वास करते हैं कि यह राजो यहोआहाज था। इस्राएल ने एक सिंहनी के रूप में इस महान राजा को जन्म दिया। वह एक दुष्ट राजा था। बाइबल हमें यहोआहाज के विषय बताती है: 'उसने यहोवा की दृष्टि में बुराई की, जैसे उसके पितरों ने की थी।' (2 राजा 23:23) तीन महीने के राज्य के बाद, फिरौन नेको बेड़ियां डालकर उसे मिस्र में बंधुवाई में ले गया (देखें 2 राजा 23:31-33)। यहोआहाज, एक सिंह समान, फन्दे में फंसा और मिस्र के निष्कासन में भेज दिया गया।

अपने एक बच्चे के चले जाने पर इस्राएल - सिंहनी, ने विवश होकर दूसरे बच्चे पर दृष्टि की। उसने दूसरे को प्रथम का स्थान लेने के लिये तैयार किया। यह बच्चा भी अपने भाई के समान था। वह अपने शिकार को फाड़ता था। वह लोगों को निगल जाता था। वह नगरों को नाश करता था। लोग उसके दहाड़ने से डरते थे। जातियां उसके विरुद्ध इकट्ठी हुईं। उन्होंने उसे पकड़ा और उसे बंधुवाई में बाबुल ले गये।

यह दूसरा सिंह कौन है? फिरौन ने यहोआहाज के भाई एलियाकीम को सिंहासन पर बैठाया। 2 राजा 23:34 के अनुसार, फिरौन ने एलियाकीम नाम बदलकर यहोयाकीम रख दिया। यहोयाकीम अपने भाई के समान एक दुष्ट राजा सिद्ध हुआ। 2 राजा 24:2 में हम पढ़ते हैं कि उसकी दुष्टता के कारण, परमेश्वर ने बहुत सी जातियों को उसके विरुद्ध भेजा। इस पद में हम पाते हैं बाबुल, आराम (सीरिया), मोआब तथा अम्मोन इन सब ने इस समय आक्रमण किया। यह यहेजकेल 19:8 से मेल खाता है।

यहोयाकीम के राज्यकाल में, नबूकदनेस्सर ने देश पर आक्रमण किया और यहोयाकीम को उसका सेवक बनने पर विवश किया। तीन वर्ष तक यहोयाकीम बाबुल के राजा की सेवकाई करता रहा। तीन वर्ष बाद उसने बाबुल से विद्रोह कर दिया (देखें 2 राजा 21:17)। इस कारण बाबुलवासियों ने इस्राएल के दक्षिणी राज्य यहूदा पर आक्रमण किया। 2 इति. 36:5-7 के अनुसार यहोयाकीम को पीतल की बेड़ियों में जकड़ कर बाबुल ले जाया गया। इस दूसरे बच्चे के साथ भी पहले ही के समान व्यवहार हुआ। उसको

उसके पद से हटा कर बंधुआई में ले जाया गया। ये सब कुछ वैसे ही हुआ जैसा परमेश्वर ने अपने दास यहेजकेल द्वारा भविष्यवाणी की थी।

इस अध्याय में दूसरा चित्र दाखलता का है। यहेजकेल की पुस्तक में तीसरी बार, परमेश्वर के लोगों को एक दाखलता द्वारा चित्रित किया गया है (देखें अध्याय 15 व 17)। एक दाखलता के समान इस्राएल को जल के तट पर लगाया गया। उसके आदर्श स्थान के कारण वह बहुत सा फल लाई। उसकी डालियां सुन्दर तथा मज़बूत थी। उसके पत्ते मोटे थे। वह ऊंची हो गई। उसकी डालियां शासक का राजदण्ड बनाने योग्य थीं। परन्तु वह दाखलता उखाड़ दी गई। उसको भूमि पर गिरा दिया गया। उसका फल तोड़ लिया गया। पूर्वी हवा ने उसे सूखा दिया। उसकी डालियां सूख गईं और आग से जल गईं। उसकी सूखी हुई डालियां, जो कभी शासक का राजदण्ड बनाने योग्य थीं, अब किसी काम की नहीं थीं।

बाबुल वह पूर्वी हवा थी जिसने आकर परमेश्वर के लोगों की दाखलता को सूखा दिया। जब बाबुलवासी आये, तो उन्होंने यहूदा की सम्पत्ति लूट ली। उन्होंने उसके घर व मन्दिर को जला दिया। उन्होंने सूखी दाखलता को लिया और बाबुल से निष्कासित कर दिया, जहां उसको पुनः रोपा गया। वहां निष्कासन में सारा अहंकार व सम्मान दूर किया गया। वे बीमार लोग थे जो परमेश्वर के किसी लाभ के न थे।

परमेश्वर की प्रजा ने अपने राजाओं के समान, उससे मुंह मोड़ लिया। वह एक महान जाति थी। एक समय आस-पास की जातियां उसका भय मानती थीं। इस्राएल उस महान सिंह के समान था जिसकी गर्जन सुननेवालों के हृदय को घबरा देती थी। वे समृद्ध जाति थे। परमेश्वर की आशीषों में वे फले फूले। इस्राएल उस दाखलता के समान था जिसकी डालियां एक शासक का राजदण्ड बनाने योग्य थी। परन्तु परमेश्वर की प्रजा अहंकारी व ढीठ थी। उन्हें लगा कि उन्हें परमेश्वर की आवश्यकता नहीं। वे समझते थे कि वे अपनी चिन्ता आप कर सकते हैं। उनके विद्रोह के कारण परमेश्वर ने अपनी आशीषों को ले लिया। उसने उनका पक्ष न लिया। वे सूख गये और जग हंसाई का पात्र बन गये।

आज हम भी परमेश्वर बिना कहां होंगे? यदि आप किसी सेवकाई में प्रभु की सेवा करते हैं, वह सेवकाई प्रभु बिना कहां होगी? एक क्षण को उन बहुत सी आशीषों पर ध्यान दें, जो आपके पास हैं। किसके हाथ से ये

आशीषें आपको मिलीं? कौन आप के हृदय को धड़कन देता है? कौन आपको प्रत्येक वह सांस देता है जो आप लेते हैं? कौन आपको जीवन व शक्ति देता है? परमेश्वर बिना आप नाश हो जायेंगे।

आइये इस अध्याय से शिक्षा लें। कितनी जल्दी परमेश्वर आपकी सेवकाइयों से अलग हो सकता है। वह कितनी जल्दी उन आशीषों को हटा सकता है जो उसने हम पर उंडेली हैं। हम अपने महान परमेश्वर के कितने कृतज्ञ हों। हम उसको हल्केपन से न लें। इस्राएल की महान दाखलता उखाड़ी गई। यह हमारे साथ भी हो सकता है, यदि प्रेमी परमेश्वर की करुणा व अनुग्रह न हो। वह सब जो उसने आप के लिए किया उसके लिये उसका धन्यवाद करें। उन आशीषों का प्रयोग करें जो उसने आपको दी हैं कि आप उसकी सेवा व आदर करें। उसकी आशीषों के लिए यह न समझें कि वैसे ही मिल जायेंगी। कितनी जल्दी वह वो सब ले सकता है जो उसने दिया है।

### *विचार करने के लिये:*

- क्षण भर को परमेश्वर की उन आशीषों पर विचार करें जो हाल ही में उसने आपको दी हैं। क्या इनमें से कोई उसके बिना संभव थी?
- यह मान लेना इतना कठिन क्यों है कि परमेश्वर बिना हमारे पास कुछ न होगा?
- जीवन में उपलब्धियों के लिये आप ने जो परिश्रम किया है यदि आप से ले लिया जाये तो क्या होगा?
- क्या आपने कभी स्वयं को अपनी उपलब्धियों पर दृष्टि करते देखा है, और क्षण भर के लिये सोचें, क्या ये सब वस्तुएं आपके प्रयत्न से प्राप्त हुईं? इस अध्याय से आप क्या सीखते हैं?

### *प्रार्थना के लिये:*

- आज अपने जीवन में उसकी आशीषों के प्रमाण के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करें।
- उससे मांगें कि आप को क्षमा करे, उन समयों के लिये जब आप उसके हाथ को अपने जीवन में देखने से असफल हुए।
- उससे मांगें कि इन आशीषों को उसकी महिमा के लिये प्रयोग करने में वह आपकी सहायता करे।

20

# विद्रोह तोड़ा गया

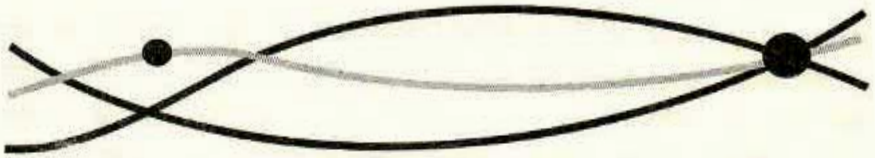

*पढ़ें यहेजकेल 20*

क्या आप कभी ऐसे व्यक्ति से मिले हैं जिसने प्रभु को स्वीकार तो किया हो परन्तु फिर उससे भटक गया हो? आज के हमारे समय में ऐसे लोगों का होना सामान्य बात है। हो सकता है भटका हुआ व्यक्ति आपके निकट का हो। संभव हो कि वह आपका पुत्र या पुत्री हो। हो सकता है आपका पति या पत्नी हो जिसने प्रभु यीशु से अपना पहला सा प्रेम छोड़ दिया। कहीं आप तो नहीं? यहेजकेल के दिनों में परमेश्वर के लोग इस परिस्थिति में थे।

जब हम इस अध्याय को आरम्भ करते हैं, देश के प्राचीन व भविष्यवक्ता यहेजकेल के पास आये कि प्रभु से पूछें। वे उसके वरदान को पहचानते थे, परन्तु उसकी सुनने को तैयार न थे। इस पुस्तक में यह प्रथम बार नहीं कि वे प्रभु से पूछने के लिये आये। इस अध्याय में वे परमेश्वर का वचन सुनने आये। यहां पद में ध्यान दें कि परमेश्वर उनसे क्या कहना चाहता था: 'मनुष्य के पुत्र, इस्राएल के प्राचीन से बात कर और कह: परमप्रधान परमेश्वर यों कहता है: क्या तुम मुझ से पूछने आये हो? मेरे जीवन की सौगन्ध, मैं तुम्हें अपने से पूछने न दूंगा, परमप्रधान यहोवा कहता है।'

प्रभु प्राचीनों से बात करना क्यों नहीं चाहता? इस प्रश्न के उत्तर में परमेश्वर उन्हें उनके पूर्वजों के काल में ले गया। उसने उन्हें याद दिलाया कि कैसे उसने उन पर स्वयं को प्रगट किया। मिस्र देश में वे दासत्व के क्लेश से उसको पुकार रहे थे। परमेश्वर ने उनकी दोहाई को सुना और अपने दास मूसा द्वारा उनके पास आया। उनके लिये उसने एक ऐसा देश तैयार किया जहां दूध व शहद बहता था और उन्हें सबसे सुन्दर देश में रखा। उसके इस महान वरदान के बदले, उसने उनसे केवल यह कहा कि मूर्तियों से फिरकर उसकी सेवा करें। परन्तु उन्होंने मूर्तियों को अलग करने से इंकार किया बल्कि मिस्र के देवताओं की उपासना करते रहे। परमेश्वर उन पर अपना क्रोध उण्डेलना चाहता था, परन्तु उसने धीरज धरा (पद 9)। उसने क्यों चुना कि उनका नाश न करे? 'परन्तु ऐसा मैं ने अपने नाम के निमित्त किया, जिससे मेरा नाम उन जातियों की दृष्टि में जिनके मध्य इस्राएली रहते थे अर्थात् जिनके देखते मैंने उन्हें मिस्र देश से निकालने के द्वारा अपने आप को उन पर प्रगट किया था, अपवित्र न ठहरे।" (पद 9)

परमेश्वर ने चुना कि जातियों के बीच उसका नाम अपवित्र न ठहरे। जातियां क्या कहतीं यदि परमेश्वर के लोग नाश किये जाते? क्या वे उसके नाम की निन्दा न करते? 'यह कैसा परमेश्वर है जो अपनी ही प्रजा को नाश करता है?' वे पूछते। उसने धीरज धरा ताकि समस्त संसार अपने लोगों के प्रति उसके महान प्रेम व धीरज को देखें।

उनके पाप के होते, यहोवा अपने लोगों को मिस्र देश से निकाल लाया। उसने उन्हें अपने नियम दिये ताकि पृथ्वी की समस्त जातियों से वे भिन्न हों। उसने उनको चेतावनी दी कि वे अपने जीवन का खतरा उठाकर उसकी व्यवस्था का उल्लंघन न करें। परमेश्वर ने उन्हें सात में से एक दिन विश्राम दिवस मानकर उसकी संगति करने को कहा। एक बार फिर उसकी प्रजा ने आज्ञापालन से इंकार किया। उन्होंने उसकी व्यवस्था को अस्वीकृत व अपमानित किया। उन्होंने परमेश्वर द्वारा दिये गये पवित्र दिन को अपवित्र किया। परमेश्वर ने उनके पापों के कारण उनको नाश करने की ठानी, परन्तु फिर उसने अपने हाथ को रोका। क्या चीज़ थी जो उसको उन्हें दण्ड देने से रोक रही थी? 'परन्तु ऐसा मैं ने अपने नाम के निमित्त किया, जिससे मेरा नाम उन जातियों की दृष्टि में जिनके देखते मैं उनको निकाल ले आया अपवित्र न ठहरे।' (पद 14)

एक बार फिर हम देखते हैं कि अपने नाम के निमित्त, परमेश्वर ने इन पापियों पर धीरज व करुणा की। जब कि अपने पापों के कारण, वह पीढ़ी जंगल में नाश होती। प्रजा नाश नहीं हुई। परमेश्वर के अनुग्रह व करुणा को फिर उसकी संतान पर उंडेला जायेगा।

परमेश्वर ने इस संतान से बात की। उसने उनको अपनी आज्ञाओं का पालन करने की आज्ञा दी ताकि अपने माता-पिता के मार्गों पर न चलें। उन्होंने तो परमेश्वर द्वारा माता-पिता पर दण्ड को जंगल में देखा थ। यह संतान, अपने पितरों के समान परमेश्वर से फिर गई (पद 21)। उन्होंने उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया। तीसरी बार इस अध्याय में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने एक प्रजा के रूप में उनको नाश करना चाहा। परन्तु उसने अपना हाथ रोका। पद 22 इसका कारण बताता है, 'परन्तु मैं ने अपना हाथ खींच लिया और ऐसा मैंने अपने नाम के निमित्त किया जिससे मेरा नाम उन जातियों की दृष्टि में जिनके देखते मैं उनको निकाल ले आया अपवित्र न ठहरे।'

एक बार फिर, अपने नाम की खातिर, प्रभु ने चुना कि अपनी प्रजा को नाश न करे। परन्तु वे बिना दण्ड न छूटे, परमेश्वर उन्हें जाति भर में बिखेट देगा (पद 23)। उसने उनको उनके दुष्ट कार्यों में छोड़ दिया (पद 23)। उनके पापी मार्गों के कारण परमेश्वर ने उनके द्वारा अपनी आराधना को अपवित्र ठहराया। यहां ध्यान दें कि किस प्रकार उनकी भेंटें व दान केवल रीतियां थे (पद 26)। एक ओर उन्होंने अपनी भेंटें प्रभु को दीं और दूसरी ओर उन्होंने अपने पहलौठों को आग में चलाया ताकि अन्यजाति देवताओं को प्रसन्न करें (पद 26)। उन्होंने न केवल ऐसा किया, परन्तु 28 पद हमें बताता है कि वे ऊंचे पर्वतों व पहाड़ियों पर गये तथा देश के देवताओं को भेंट व बलिदान चढ़ायें। उन्होंने एक सत्य परमेश्वर को त्याग दिया जिसने उन्हें मिस्र देश से छुड़ाया था। वे स्थान जहां वे अन्य देवी देवताओं की उपासना करते थे 'बामा' अर्थात् 'ऊंचे स्थान' कहलाते थे। बच्चों ने अपने माता पिता के समान ही किया। उन्होंने स्वयं को परमेश्वर के सम्मुख पूर्णतया अशुद्ध किया। पद 32 बताता है कि उनकी इच्छा अपने चारों ओर की जातियों के समान बनने की थी। वे उनके देवताओं की सेवा कर उनकी मूर्तियों को दण्डवत् करते थे। उन्होंने अपना फैसला कर दिया था। वे अपने पूर्वजों के परमेश्वर को नहीं चाहते थे।

परमेश्वर की अपनी प्रजा के प्रति क्या प्रतिक्रिया रही? उसने वैसा व्यवहार नहीं किया जिस योग्य वे थे, न ही उस तरीके से जिस की अपेक्षा की जा सकती थी। पद 32 में प्रभु ने कहा, 'जो तुम्हारे मन में है वह कभी न होगा।' परमेश्वर उन्हें विद्रोह जारी रखने न देगा। 'मैं तुम पर राज्य करूंगा' (पद 33)।

हां, उनके विद्रोह के होते भी परमेश्वर उन पर राज्य करेगा। वह उनको जगत के छोर से जहां भी वे हों जमा करेगा। वह मुंह दर मुंह उनसे विनती करेगा (पद 35)। वह उनको ऐसे गिनेगा जैसा चरवाहा अपनी भेड़ों को गिनता है। जब वे उसकी लाठी के नीचे से गुज़रेंगी तो वह उन्हें शुद्ध करेगा। उनके मध्य के विद्रोही अनुशासित किये जायेंगे। उस दिन, परमेश्वर के लोग उसकी आत्मा से बड़े कार्य को अपने मध्य काम करते देखेंगे।

जब वह उन्हें शुद्ध करेगा तो वे फिर परमेश्वर की सेवा करेंगे। एक बार फिर परमेश्वर उनकी स्वेच्छिक भेंटों व बलिदानों को लेकर आनन्दित होगा। वह उनको चारों ओर की जातियों की दृष्टि में पवित्र करेगा। सब जानेंगे कि इस्राएल परमेश्वर का है। जातियां देखेंगी कि परमेश्वर ने अपने हाथ से अपने लोगों पर अपनी छाप लगाई है। जब परमेश्वर का आत्मा उनमें मण्डरायेगा, तो वे अपने दुष्ट तरीकों को याद रखेंगे और यह कि कैसे वे प्रभु के प्रति विद्रोही हुए। अपनी की हुई दुष्टता पर वे पछतायेंगे। वे मन फिराने तक पहुंचाये जायेंगे। इस सब में वे उसके अद्‌भुत अनुग्रह को अपने चारों ओर देखेंगे।

पद 46 में परमेश्वर ने यहेजकेल से कहा, दक्षिण की ओर मुख कर और उसके विरुद्ध भविष्यवाणी कर। यहेजकेल बाबुल में था जब उसने दक्षिण की ओर देखा, तो उसने उस देश की ओर देखा जो परमेश्वर ने यहूदियों को दिया था। उसने प्राचीनों से कहा कि परमेश्वर ने देश में एक आग आरम्भ की है जो बुझेगी नहीं। देश नाश हो जायेगा। परमेश्वर देश को शुद्ध करना आरम्भ करेगा। ठीक करना बाबुल राष्ट्र के द्वारा किया जायेगा जो देश पर आक्रमण करके उसे जीत लेगा। देश के प्राचीन जो यहेजकेल से मिलने आये थे समझ नहीं पाये कि परमेश्वर अपने नबी के द्वारा क्या कह रहा था। उनसे वह दृष्टान्तों में बातें कर रहा था, जिसके अर्थ गुप्त थे।

वे समझ नहीं पाये गलती क्या थी। परमेश्वर क्यों क्रोधित था? उन्होंने ऐसे प्रकोप के योग्य क्या किया है? आत्मिक व राजनैतिक अगुवे होते हुए भी वे परमेश्वर की बातों के प्रति पूर्णतया अंधे थे।

आज के समय में इस परिच्छेद की हमारे लिये क्या व्यावहारिकता है? क्या यह हमारे प्रियजनों के प्रति उत्साहवर्धक नहीं है जो अपनी उस आरम्भिक वचनबद्धता से भटक गये जो प्रभु के लिये उनकी थी? परमेश्वर ने यहां अपने लोगों को नाश करने का इरादा अपने नाम की खातिर त्याग दिया। जब हम प्रभु को अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण करते हैं, हम उसकी संतान बन जाते हैं और उसका नाम अपने ऊपर लेते हैं। इस अध्याय में परमेश्वर की इच्छा थी कि उनको बचाये रखे जो उसके नाम के कहलाते हैं। उनके पापों के होते, उनको बचाये रखा गया। जब उनको दण्ड दिया गया, तब भी उन्हें त्यागा नहीं गया। परमेश्वर अपने लोगों को अनुमति नहीं देगा कि वे विद्रोह में बने रहें। उनको शुद्ध किया जायेगा। दुष्टता दूर की जायेगी और वे उसके पास विश्वासयोग्य हृदयों के साथ लौटेंगे। परमेश्वर आज भी उनके जीवनों में पराक्रमी है, जो उससे विद्रोह करते हैं।

क्या आप के प्रियजन हैं जिन्होंने प्रभु के प्रति अपने प्रथम प्रेम को छोड़ दिया है? क्या हम इस अध्याय को अपने उन प्रियजनों के लिये नहीं ले सकते? क्या हम परमेश्वर की उस प्रतिज्ञा को नहीं ले सकते, कि वह उनको शुद्ध करे जो उसके हैं, यद्यपि वे उससे भटक गये? आपके पुत्र या पुत्री का क्या हाल है? आपके पति या पत्नी का क्या? यदि परमेश्वर ने पुराने नियम में अपने लोगों को अपने नाम के निमित्त त्यागने से इंकार किया, तो क्या वह आज अपनी संतान के प्रति विश्वासयोग्य न रहेगा? यदि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि वह यहेजकेल के दिनों में अपने लोगों को शुद्ध करेगा, क्या हम इस प्रतिज्ञा को अपने उन मित्रों व प्रियजनों के लिये नहीं ले सकते, जो आज सत्य के पथ से भटक गये हैं? क्या परमेश्वर आज अपनी संतान को त्याग देगा यदि उसने यहेजकेल के दिनों में ऐसा करने से इंकार किया? मित्रों, उत्साहित हों। परमेश्वर तो अपने विद्रोही बच्चों पर अधिकारी है (पद) और उनको यहेजकेल के दिनों में भी लौटा लाया तो वही परमेश्वर आज भी है। मन को कमज़ोर न करें। वह अपनों को नहीं त्यागेगा।

### *विचार करने के लिये:*

- क्या आप कभी प्रभु से भटके हैं? उस सारे समय में क्या परमेश्वर ने कभी आपको त्यागा?
- इस अध्याय से आपको आज अपनी जाति व कलीसिया के लिये क्या साहस मिलता है?
- क्षण भर सोचें कि परमेश्वर गत कुछ वर्षों में आप के साथ किस प्रकार धीरज धरे रहा।

### *प्रार्थना के लिये:*

- आज परमेश्वर के आपके प्रति धीरज के लिये प्रभु का धन्यवाद करें।
- क्या आप ऐसे कुछ लोगों को जानते हैं जो इस समय प्रभु से भटके हुए हैं? प्रभु से क्षण भर के लिये कहें कि उनके जीवन में कार्य करे, जैसे यहां उसने प्रतिज्ञा की कि वह इस्राएली लोगों के जीवन में कार्य करेगा।

21

# एक तलवार चमकाई व तेज़ की गई

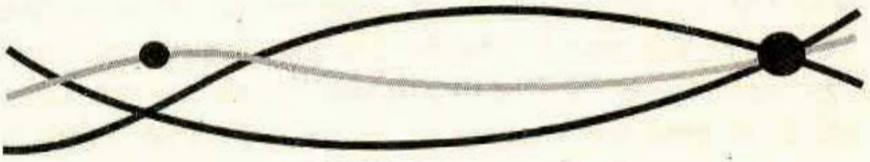

*यहेजकेल 21 पढ़ें*

गत अध्याय में हमने देखा कि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि वह पश्चात्ताप की आत्मा को अपने लोगों पर उण्डेलेगा (यहेज. 20:43)। जबकि वह उनका नाश कर सकता था, उसके प्रेम व दया ने उनको संभाले रखा। परमेश्वर अत्यन्त प्रेम व करुणा का परमेश्वर है। परन्तु वह एक धर्मी क्रोध व न्याय का परमेश्वर भी है। इस अध्याय में यहां परमेश्वर अपने लोगों को याद दिलाता है कि एक न्याय का दिन आ रहा है।

भविष्यवक्ता को कहा गया कि यरूशलेम नगर के पवित्र स्थानों के विरुद्ध भविष्यवाणी करे। यहां ध्यान दें कि उसको अधर्म के अड्डों के विरुद्ध प्रचार नहीं करना था। उसको पवित्र स्थानों के विरुद्ध बोलना था। यहां परमेश्वर की आराधना होनी चाहिये थी। यहां सर्वशक्तिमान के नाम को ऊंचा उठाया जाना चाहिये था, परन्तु उसका अपमान किया जा रहा है।

पद 3 हमें बताता है कि प्रभु इन पवित्र स्थानों के विरुद्ध था। वह अपनी तलवार मयान में से निकाल रहा था कि उनको काट डाले (मार डाले)। यहां ध्यान दें कि वह उनको काटने पर था, 'धर्मी व दुष्ट दोनों को।' उत्तर से दक्षिण तक, सभी प्राणी परमेश्वर के प्रकोप के भारी हाथ का अनुभव करेंगे।

धर्मियों को दुष्टता के साथ क्यों दुख सहना होगा? क्या ऐसा हो सकता है कि धर्मी भी परमेश्वर से दूर हो गये? क्या अपने समय में वे सुस्त पड़ गये? क्या अपने चारों ओर के पाप की वे अनदेखी कर रहे थे? क्या वे संसार के तरीकों पर चलने की परीक्षा में थे? यहां स्पष्ट बात यह है कि प्रत्येक को परमेश्वर के कठोर दण्ड के हाथ के नीचे रखा जायेगा। धर्मियों को अपनी अनदेखी करने की नींद से जागने की आवश्यकता थी।

परमेश्वर ने नबी को बुलाया कि लोगों के सामने टूटे हृदय के साथ कर्राहे (पद 6)। हमें यहां यह तो नहीं बताया गया कि नबी ने यह किस प्रकार किया। प्रसंग स्पष्ट है, परन्तु कि उसने यह इस प्रकार किया जिससे ध्यान उसकी ओर हो गया। जब लोगों ने उससे पूछा कि वह इतना शोकित क्यों है, तो उसको उन्हें बताना था कि यह इस कारण है जो परमेश्वर ने उनके साथ करने की योजना बनाई है। यहां हमें समझना है कि संभवत: यहेजकेल को हृदय से शोक था। भविष्यवक्ता के हृदय में सचमुच परमेश्वर समान दर्द व शोक का अहसास था। यहेजकेल को इसको नाटकीय रूप से प्रस्तुत करना था। संभवत: परमेश्वर ने उसके हृदय पर उस दण्ड के विषय बोझ रखा था जो उसके लोगों पर आने वाला था। शायद इसी प्रकार वह हमारे हृदयों पर बोझ डालता है।

यहेजकेल ने लोगों को याद दिलाया कि वह दिन आ रहा है जब हर हृदय पिघल जायेगा। उनके प्राण ढीले होंगे। उनकी आत्माएं सुस्त होंगी। उनके घुटने कमज़ोर होंगे क्योंकि परमेश्वर का प्रकोप कठोर है। जब हम परमेश्वर के सामने हम अपने जीवनों पर मनन करते हैं तो हम कहां खड़े होते हैं? हम सब को एक दिन परमेश्वर जो महान न्यायी है उसके सामने खड़ा होना होगा। क्या हम तैयार होंगे। देश की बिगड़ी आत्मिक स्थिति के प्रति हमारी प्रतिक्रिया क्या है? क्या हमारा हृदय यहेजकेल के समान टूटा है? क्या हम बड़े शोक से कर्राहते हैं? क्या हमें उस दण्ड के विषय मालूम है जो आने वाला है।

परमेश्वर की तलवार उसके लोगों के विरुद्ध थी। वह मारने के लिये एक बड़ी चमकाई तेज़ की गई तलवार थी। वह उनके बीच चमकेगी तथा वेग के साथ बिजली के समान नाश करेगी। यह आनन्द का समय न होगा। कोई मुकाबला संभव नहीं। राजदण्ड और उसके द्वारा प्रस्तुत सभी में से कोई

भी परमेश्वर के प्रकोप की तलवार का सामना न कर सकेगा। जैसे लोहा लकड़ी के समाने, प्रभु द्वारा दण्ड उन पर टूट पड़ेगा (देखे पद 21)। जब परमेश्वर यहेजकेल से बात कर रहा था उस समय वह तलवार चमकाई व तेज़ की जा रही थी। वह शीघ्र ही मारने वाले को दी जायेगी ताकि पृथ्वी पर परमेश्वर के फैसले को पूरा करे।

यह रोने व विलाप करने का समय था (पद 12)। परमेश्वर ने यहेजकेल से कहा कि अपनी छाती पीटे (अपने जांघ पर मारे), शोक के चिन्ह के रूप में। परमेश्वर के लोगों पर तथा देश के अधिकारियों के विरुद्ध आतंक पड़ने वाला था। परमेश्वर की तलवार राजदण्ड (यहूदा के राजा का चिन्ह) को भी न छोड़ेगी। उसको भी परमेश्वर के प्रति विद्रोह करने के परिणाम भुगतने होंगे। इस मामले में वह परमेश्वर का सामना न कर सकेगा।

पद 14 में यहेजकेल ने लोगों को याद दिलाया कि परमेश्वर द्वारा दण्ड की यह तलवार देश में बड़ी हानि करेगी। वह देश के निजी कक्षों में भी प्रवेश करेगी और गुप्त स्थानों के पाप को भी ठीक करेगी। छिपने का कोई स्थान न होगा। नगर के हर फाटक पर तलवार उनकी प्रतीक्षा करेगी। यहां तक कि नगर पर दण्ड से बचने के लिये भगोड़ों का चित्रण था जब वे भागें तो शत्रु फाटक पर उनकी प्रतीक्षा करता होगा। जो एक एक कर उनको काटेगा। भय का आक्रमण होगा। पद 6 एक बड़ी तलवार की बात करता है जो दहिने से बायें घूम रही थी और मार्ग की हर वस्तु को निगल जाती थी। जब तक देश पर उसका दण्ड पूरा न हो ले परमेश्वर का प्रकोप ठंडा न होगा।

परमेश्वर द्वारा दण्ड की यह तलवार परमेश्वर के लोगों पर आयेगी? वह बाबुल देश के द्वारा आयेगी। परमेश्वर ने यहेजकेल से एक मार्ग चिन्ह बनाने को कहा (पद 19)। यह चिन्ह दो ओर इशारा करेगा। एक दिशा रबाह नगर की ओर जो अम्मोन देश में है। दूसरी दिशा यहूदा में यरूशलेम की ओर। परमेश्वर इन दो देशों को दण्ड देगा।

बाबुल का राजा सड़क के कटाव पर खड़ा देखा गया। जो यहेजकेल द्वारा बताये गये मार्ग चिन्ह को देख रहा था (पद 21)। वह अपनी सेना पहले कहां भेजेगा? वह फैसला लेने के लिये पर्ची डालेगा। कुछ टीकाकार विश्वास करते हैं कि उसने अपने कंधे के धनुषों पर उन नगरों के नाम

लिखे और फिर उनमें से एक को बाहर खींचा। जिस नगर का नाम प्रथम तीर पर लिखा था वही नगर होना था जिस पर वह पहले आक्रमण करेगा। चयन के लिये वह अपनी मूर्तियों से परामर्श लेगा। वह कलेजे की जांच करेगा (एक अन्यजाति रीति - देवताओं की इच्छा जानने के लिये)। पहले यरूशलेम को चुना गया। उसका नाश किया जायेगा। जब कि हम बाबुल की मूर्तियों से परामर्श लेते देखते हैं, परन्तु राजा के मार्ग का निर्धारण करनेवाला प्रभु परमेश्वर था। परमेश्वर इन रीतियों पर भी पराक्रमी था।

पद 23 हमें बताता है कि वे जिन्होंने बाबुल से संधि की थी (यहूदा का राजा व उसके अधिकारी) विश्वास नहीं करेंगे कि उनका राष्ट्र नष्ट किया जायेगा। वे समझते थे कि वे सुरक्षित थे। परन्तु परमेश्वर उनके पाप का दण्ड देकर उन्हें स्तब्ध कर देगा। हमारे दिनों में भी बहुत से ऐसे लोग हैं। पता नहीं क्यों वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर के दण्ड से वे सुरक्षित हैं। वह दिन आयेगा जब अपने कर्मों का लेखा देने के लिये उन्हें परमेश्वर के सामने खड़ा होना पड़ेगा। वह कितना भयानक दिन होगा।

क्योंकि उन्होंने खुलकर परमेश्वर से विद्रोह किया उनको 'बंधुवाई' में ले जाया जायेगा (पद 24)। उनका दिन आ गया था। देश के अधिकारियों से परमेश्वर ने कहा 'मुकुट हटाओ।' यह नम्र होने का दिन था। परमेश्वर ने बाबुल वासियों को अनुमति दी कि लोगों को पराजित करें। उनको तब तक पुनःस्थापित न किया जायेगा जब तक जाति उसको न सौंपी जाये जिसकी वह दरअसल थी (पद 27)। वह कौन है, जाति जिसकी सम्पत्ति थी? क्या वह यीशु मसीह नहीं? केवल वह ही उनके हृदयों को सही कर सकता है। वह उनको अपने प्रभु परमेश्वर के लिये पुनःस्थापित करेगा। वह ही केवल उनकी आशा था।

यहां ध्यान दें कि परमेश्वर के लोग कितने शक्तिहीन थे। वे शत्रु का शिकार हुए। उनको कुचला गया व सताया गया। अन्ततः दोष केवल उनका ही था कि अपने परमेश्वर से फिर गये थे। अब वे अपने विद्रोह व पाप के भयंकर परिणामों को सहेंगे।

जहां तक अम्मोन देश की बात है - वह दूसरा नाम जो मार्ग चिन्ह पर था, उसको भूला न जायेगा। एक तीर पर उसका भी नाम था। उनको अपने भविष्यवक्ताओं के झूठे दर्शनों पर विश्वास नहीं करना था जो उनको केवल

धोखा दे रहे थे। ये भविष्यवक्ता उन्हें क्या बता रहे थे? क्यों वे उन्हें बता रहे थे कि सब कुछ ठीक हो जायेगा? यह संदेश आज हम कितनी बार सुनते हैं? वे शांति की घोषणा कर रहे थे, जब कि कोई शांति न थी। परमेश्वर अपना कोप उन पर भी भड़कायेगा (पद 31)। उनका कुशल उन लोगों के हाथों में सौंपा जाएगा जो नाश करते हैं (पद 31)। वे परमेश्वर के प्रकोप की आग का ईंधन होंगे। उनका लोहू बहाया जायेगा, और आगे को उनकी याद न रहेगी (पद 32)।

यहां ध्यान दें कि पहले दण्ड परमेश्वर की प्रजा को मिलेगा। वे बेहतर जानते थे। उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था मिली थी और वे उसके मार्गों को जानते थे, परन्तु उन्होंने उसको ग्रहण न किया। वे उसकी संतान थे, और उसको उनका विशेष ध्यान रहता था। उनका दण्ड खुशनुमा न था। इसकी आशा न थी, यद्यपि उसकी भविष्यवाणी स्पष्ट थी। उनको विश्वास न था कि परमेश्वर कभी उस तरीके से जो उसने किया उनको अनुशासित करेगा। शायद हम भी ऐसा सोच सकते हैं। हम जानते हैं कि परमेश्वर हमारे जीवन के पाप को पसन्द नहीं करता, परन्तु यह जानते हैं कि उसका धीरज सदा तक रहता है। उनके लिये यह कितना विस्मय का कारण था कि एक दिन इस अहसास के साथ जागें कि अब उन्हें परमेश्वर को अपने पापों का हिसाब देना पड़ेगा। यद्यपि परमेश्वर का धीरज सत्य है, उतना ही सत्य उसका दण्ड भी है। हम उसकी परीक्षा न करें बल्कि हम अध्याय से शिक्षा लें। आगे के लिये न छोड़ें। एक दिन बड़ी देर हो जायेगी।

### *विचार करने के लिये:*

- अपने समय की कलीसिया की स्थिति पर क्षण भर के लिये विचार करें। आज परमेश्वर के दण्ड को क्या चीज़ रोक रही है?
- सुरक्षा के लिये हम कहां जाते हैं? हमें कैसे महसूस होता है कि परमेश्वर हमसे कभी हमारे पापों का लेखा नहीं लेगा?
- हम उसके मध्य संतुलन कैसे पाते हैं -यह शिक्षा कि परमेश्वर प्रेम है और यह कि वह न्याय व प्रकोप का परमेश्वर है? क्या आप की कलीसिया में इस शिक्षा के मध्य संतुलन है? यह संतुलन कितना महत्वपूर्ण है?

*प्रार्थना के लिये:*

- परमेश्वर से मांगें कि आज की कलीसिया तक पहुंचकर उसका नवीनीकरण करे। उससे जागृति भेजने को कहें कि उसकी कलीसिया जागृत हो, इससे पहले कि अधिक देर हो जाये।
- क्षण भर को गहराई के साथ अपने हृदय को देखें। यदि प्रभु की तलवार आपके 'निजी कक्ष' में पहुंच गई तो उसे क्या मिलेगा?
- उसके अविश्वसनीय धीरज के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करें, जिसका प्रदर्शन उसने आप के प्रति आपकी असफलताओं व कमियों से किया है।

22

# दरार में खड़े होना

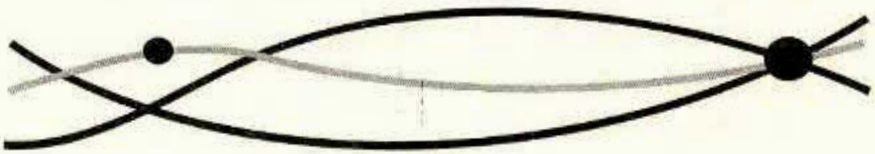

*पढ़ें यहेजकेल 22*

परमेश्वर अपने लोगों से अति क्रोधित था। गत मनन में हमने देखा कि वह किस प्रकार अपने लोगों से युद्ध करने के लिये अपनी तलवार को चमका व तेज़ कर रहा था। परमेश्वर का क्रोध अकारण न था। यहेजकेल 22 में परमेश्वर ने अपने लोगों पर अपने वचन को तोड़ने के 29 अपराध लगाये। पद में भविष्यवक्ता यहेजकेल को न्यायी बना कर खड़ा किया गया। जब वह सुन रहा था तो परमेश्वर ने लोगों पर दोषारोपण किया। परमेश्वर ने निम्न पापों के लिये दोषारोपण किया:

1. निर्दोष का लोहू बहाना (पद 3-4)
2. मूर्ति पूजा (पद 3-4)
3. अधिकारियों के लोहू बहाने के अधिकार का गलत प्रयोग (पद 6)
4. अपने माता पिता से घृणा का व्यवहार करना (पद 7)
5. परदेसी को सताना (पद 7)
6. अनाथ से दुर्व्यवहार (पद 7)
7. विधवा से दुर्व्यवहार (पद 7)
8. परमेश्वर की पवित्र वस्तुओं का निरादर (पद 8)

9. सब्त को तोड़ना (पद 8)
10. निन्दा करना (पद 9)
11. इस्राएल के पर्वतों पर नीच काम करना (पद 9)
12. अन्यजाती पर्वतीय स्थानों पर खाना (पद 9)
13. अपनी मांओं के साथ यौन संबंध (पद 10)
14. स्त्री के अशुद्ध काल में यौन संबंध (पद 10)
15. पड़ोसी की पत्नियों से यौन संबंध (पद 11)
16. बहुओं के साथ यौन संबंध (पद 11)
17. बहनों के साथ यौन संबंध (पद 11)
18. लोहू बहाने के लिये घूस लेना (पद 12)
19. ज़रूरत से अधिक ब्याज लेना (पद 12)
20. अपने पड़ोसी से धन का लाभ उठाना (पद 12)
21. प्रभु को त्यागना (पद 12)
22. अधिकारी या भविष्यवक्ता लोगों को निगलते हैं (पद 25)
23. याजक व्यवस्था का उल्लंघन करते हैं (पद 26)
24. अधिकारी लाभ के लिये लोगों की हत्या करते हैं (पद 27)
25. भविष्यवक्ता परमेश्वर के नाम से झूठ बोलते हैं (पद 28)
26. पैसा लूटना या सताव (पद 29)
27. डकैती (पद 29)
28. दरिद्रों से दुर्व्यवहार (पद 29)
29. परदेसी को सताना (पद 29)

परमेश्वर ठीक ही अपने लोगों से क्रोधित था। उनके अनियंत्रित पाप उनके दण्ड के दिन को निकट ले आये (पद 4)। यहां ध्यान दें कि परमेश्वर के प्रति हमारे पाप व विद्रोह उसके द्वारा दण्ड को शीघ्र लाते हैं। एक ऐसा समय आता है जबकि हमारा पाप इतना बड़ा हो जाता है कि परमेश्वर हमारे देश पर दण्ड लाये। परमेश्वर के लोग अपने पापों के परिणाम पहले की देखने लगे थे। परमेश्वर ने उन्हें जातियों की दृष्टि में हंसी का पात्र बनाया। उनके चारों ओर की जातियां उनका अनादर करती हैं। अब आगे को न तो परमेश्वर का पक्ष उनको मिलेगा और न ही उनके चारों ओर की जातियों का पक्ष उन्हें मिलेगा। उनकी पहली सी महिमा जाती रही (पद 5)।

परमेश्वर ने लोगों की बेईमानी और पाप के कारण अपनी कलाई चलाई (पद)। जब उसने पुकारा तो उसकी वाणी में निराशा थी: 'उस दिन क्या होगा जब मैं तुम्हारा न्याय करूंगा? क्या उस दिन तुम्हारे हाथ बलवन्त होंगे?' (पद 14)। अपने पापों के कारण परमेश्वर के लोग जातियों में बिखर जायेंगे (पद 15)। जैसे भट्टी में धातु को शुद्ध किया जाता है, उसी प्रकार परमेश्वर की प्रजा को उसके अनुशासन व प्रकोप की भट्टी में डाला जायेगा। वहां उसके महान न्याय के आधीन उनके मुकाबला करने की क्षमता पिघल जाएगी। प्रजा के रूप में उन्होंने परमेश्वर के नवीनीकरण की वर्षा की ताज़गी से इंकार किया (पद 24)। परन्तु वे दिन आते हैं जब वे उसे फिर प्रभु के रूप में पहचानेंगे और उसकी ओर फिरेंगे (देखें पद 17-22)। इसके प्रमाण हम परमेश्वर की प्रजा के समस्त इतिहास में देखते हैं। हम उस जागृति के विषय पढ़ते हैं जो 2 राजा 23 में योशिय्याह राजा के समय हुई, जब परमेश्वर की प्रजा ने स्वयं को उस वाचा के प्रति पुन: वचनबद्ध किया जो परमेश्वर ने उससे की थी। इसके परिणामस्वरूप लोगों ने दण्डवत् किया, और वे परमेश्वर के स्तर से गिर गये। जबकि परमेश्वर के लोगों के लिये ताज़गी के दिन हुए, यहूदियों के लिये, मुझे लगता है कि परमेश्वर की उन तक विशेष रीति से पहुंचने की अभी भी विस्मयकारी योजना है।

जब परमेश्वर ने अपनी प्रजा को देखा, तो उसने एक व्यक्ति को चाहा जिस पर वह विश्वास कर सकता और उनको नाश न करता। परन्तु उनमें से एक भी व्यक्ति न मिला। वे पूर्णतया पाप के हाथ बिक गये थे, छोटे से बड़े तक। इस कारण, परमेश्वर अपने धर्मी प्रकोप को उन पर बरसायेगा। उसके प्रकोप की अग्नि उन्हें खा जायेगी। परमेश्वर उनके दुष्कर्मों का बदला उनको देगा। यह सत्य है कि यहेजकेल प्रभु का विश्वासयोग्य था, परन्तु देश के समस्त लोगों में कोई और प्रभु का खोजी न था।

हमें यह विश्वास दिलाया गया है कि यदि उनमें एक भी धर्मी व्यक्ति होता तो जाति बच जाति। यह हमें सदोम व अमोरा की याद दिलाता है। परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा कि यदि उसे उन नगरों में 10 भी धर्मी लोग मिल जाते, तो वह उन्हें छोड़ देता। यहां भी ऐसा ही लगता है। हमारा प्रभाव समाज पर बचाव का प्रभाव डालता है। यीशु हमें 'पृथ्वी के नमक' कहता है (मत्ती 5:13)। ऐसे समय होते हैं जब एक ही बात जो परमेश्वर को इस

पृथ्वी पर अपना प्रकोप उंडेलने से रोकती है, और वह है अपनी संतान के लिये उस का प्रेम। हमारी भूमिका कितनी महत्त्वपूर्ण है।

क्या ऐसा हो सकता है कि आज परमेश्वर किसी के लिये दरार में खड़े होने के लिये आपको बुला रहा है? अध्याय 21 में हमने देखा कि परमेश्वर द्वारा दण्ड के लिये तलवार तेज़ की जा रही थी। वह गिरने को तैयार थी। परमेश्वर को अपने लोगों को नाश करने में कोई आनन्द नहीं आता। उसको दुख था कि कोई उसके पास क्षमा मांगने ही नहीं आया। निर्गमन 32:9-14 में परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वह अपनी प्रजा को उनके पाप के कारण नाश कर देगा। मूसा दरार में खड़ा हो गया तथा उसने इस्राएल के लिये विनती की। परमेश्वर ने अपनी इच्छा से उनको मूसा की प्रार्थना के कारण छोड़ दिया। क्या आज परमेश्वर आपको अपने मित्र के लिये दरार में खड़ा होने के लिये बुला रहा है? क्या वह चाहता है कि उनकी खातिर आप अपना मुख प्रभु को दिखायें? शायद उसके द्वारा दण्ड की तलवार अभी उनके सिर पर लटकी हुई हो। शायद आपकी प्रार्थनाएं उसे गिरने से रोक ले।

हमारा देश, यहूदा देश के मुकाबले में किस मापदण्ड पर है? कुछ समय उन 29 शिकायतों की जांच पर लगायें जो परमेश्वर की अपने लोगों से है। क्या आपका देश यहूदा देश के लोगों के पाप के समान अपराधी नहीं? जब प्रभु हमारे देश पर दृष्टि करेगा, क्या उसको कोई स्त्री पुरुष मिलेगा जो बहाव के विपरीत हो? क्या आप वह स्त्री या पुरुष होंगे जो दरार में खड़ा हो सके? उनके लिये परमेश्वर का धन्यवाद करें जो सत्य के लिये दृढ़ता से खड़े होते हैं। क्या ऐसा हो सकता है कि वे इसका कारण हैं कि परमेश्वर द्वारा दण्ड कुछ समय के लिये रोका गया है? काश हम विश्वासयोग्य हों। परमेश्वर के वचन के प्रति हमारी विश्वासयोग्यता द्वारा हम अभी भी अपने राष्ट्र को परमेश्वर द्वारा दण्ड से बचा सकते हैं।

### *विचार करने के लिये:*

- इस्राएल के पापों की तुलना उससे करें जो आज आपके राष्ट्र में हो रहा है। आप का राष्ट्र कहां है?
- क्या कोई है जिसके लिये आज आपको दरार में खड़े होना है?
- यह अध्याय हमें परमेश्वर द्वारा क्षमा करने की इच्छा के विषय क्या बताता है?

- प्रभु यीशु हमारे लिये दरार में कैसे खड़ा होता है?

**प्रार्थना के लिये:**

- अपने राष्ट्र के लिये प्रार्थना करें। परमेश्वर से मांगें कि उसको अपने दण्ड से बचाये।
- क्या आप किसी ऐसे को जानते हैं जो परमेश्वर से भटक गया? उस व्यक्ति की ओर से परमेश्वर की दया को मांगें।

23

# ओहोला और ओहोलीबा

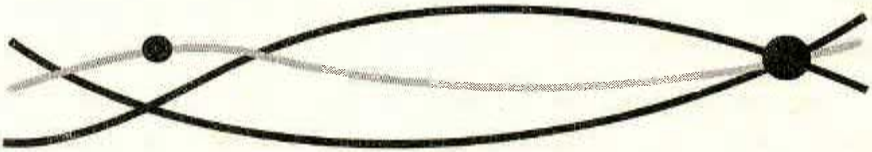

*पढ़ें यहेजकेल 23*

कहते हैं कि इतिहास अपने को दोहराता है। ऐसा लगता है कि हम दूसरों की गलतियों से नहीं सीखते। कुछ कार्यों के खतरों के बारे में हम अपने बच्चों को बताते हैं। परन्तु लगता है कि हमारी संतान हमारी गलती को अवश्य दोहराएगी। अनुभव सबसे अच्छा शिक्षक है। हम उसको कभी नहीं समझते जो हमारे माता पिता हमें सिखाते हैं जब तक स्वयं उन बातों का अनुभव प्राप्त न कर लें। यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण होता है। संसार कितना बेहतर हो जाये, यदि दूसरों के अनुभवों से सीख सके। इस अध्याय में हम ओहोला और ओहोलीबा नामक दो युवतियों से मिलते हैं। ये युवतियां बहने हैं। ये दो नगरों सामरिया व यरूशलेम की प्रतीक हैं और उनकी नियति यह है कि अपनी शिक्षा को कठोर तरीके से सीखें।

ओहोला बड़ी बहन थी (पद 4)। वह सामरिया का प्रतीक है-इस्राएल के उत्तरी राज्य की राजधानी (पद 4)। ओहोला मिस्र में पली बढ़ी (पद 3)। वहां मूसा के नेतृत्व में उसका एक जाति के रूप में जन्म हुआ। ओहोला का हृदय विद्रोही था। जीवन के आरम्भ में ही वह वेश्या बन गई। वह दूसरे देवताओं की लालसा करने लगी। वहां मिस्र में वह प्रभु से फिर गई ताकि मिस्रियों की प्रतिमाओं की सेवा करे। यद्यपि वह परमेश्वर की थी और

उसको कई पुत्र व पुत्रियां दिये गए (पद 4)। पद में उसका चित्रण इस प्रकार किया गया, जिसके स्तनों को परदेसियों ने सहलाया। दूसरे शब्दों में उसने फिरकर संसार से प्रेम किया और परमेश्वर की विश्वासयोग्य न रही।

जब मूसा के नेतृत्व में उसने उसे मिस्र से स्वतंत्र कराया तो उसने दूसरी जातियों के देवताओं की लालसा की (पद 5)। इन जातियों ने अपने ऐश्वर्य से उसे आकर्षित किया। वह उनके बहुमूल्य वस्त्रों तथा युवा घुड़सवारों से आकर्षित हुई। उसने अश्शूर जाति के देवताओं से भी स्वयं को कलुषित किया (पद 7)। दूसरे शब्दों में उसने दूसरे देवताओं की सेवा की और इस्राएल के परमेश्वर से फिर गई।

बहुत ही आरम्भिक आयु से ओहोला ने अपने असली पति से मुंह फेर लिया। अपनी समस्त युवावस्था में वह दूसरे देवताओं के साथ अपने को कलुषित करने की दोषी पाई गई। जो मिस्र में आरम्भ हुआ वह एक जाति के रूप में जीवन भर उसमें चलता रहा। एक जलन रखने वाले पति के समान, परमेश्वर क्रोधित हुआ। उसने ओहोला को उसके अश्शूरी प्रेमियों के हाथ में कर दिया (पद 9)। उन्होंने उसे नंगा किया और उसका सब कुछ ले गये। उसके देश को नाश किया और उसका सब कुछ लूट लिया तथा उसके पुत्र व पुत्रियों की हत्या की। अन्त में उन्होंने ओहोला की भी हत्या कर दी। उसकी हत्या उसी के द्वारा की गई जिसकी लालसा उसने की।

निश्चय जानें, आज भी शैतान हमें इसी तरह फंसाता है। वह पाप को आकर्षक बनाता है। वह स्वयं को 'ज्योति का दूत' दर्शाता है (2 कुरि. 11:14)। धोखे से वह हमें सीधा फन्दे में फंसाता है। जब हम उसकी परीक्षाओं का शिकार हो जाते हैं, तो अपने आपको उन्हीं वस्तुओं के द्वारा घिरा और नाश किया हुआ पाते हैं जिनसे हम आकर्षित हुए। ओहोला (इस्राएल) के साथ यही हुआ। वह जातियों के देवताओं के पीछे फिरी। अन्ततः उसी के द्वारा वह नाश हुई।

यहां यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर ने ओहोला को उनके हाथ में दे दिया जिनकी वह लालसा करती थी। यद्यपि कोई भी परीक्षा ऐसी नहीं कि परमेश्वर की सामर्थ से उस पर जय प्राप्त न की जा सके। यदि हम बुराई की अपनी इच्छा पर अडिग रहते हैं तो संभव है कि वह हमें उन लालसाओं के प्रति छोड़ दे। लालसा, लोभ, कड़वाहट, क्रोध और इस प्रकार

की बहुत सी बुराइयां विश्वासी पर तथा अविश्वासी दोनों पर जय पा सकती हैं। हम में से कितनों ने इनमें से एक या कई के द्वारा पराजय को पाया है?

ओहोला की बहन, ओहोलीबा भी उसी के समान थी। वह यरूशलेम नगर की प्रतीक थी, जो इस्राएल के दक्षिणी राज्य (यहूदा) की राजधानी थी। उसका भी पालन पोषण मिस्र देश में हुआ। अपनी बहन के समान वह भी मिस्र देश में वेश्या बन गई। जब मूसा के नेतृत्व में उसने मिस्र को छोड़ा, अपनी बहन के समान, उसने भी अश्शूरियों व उनके देवताओं की लालसा की।

ओहोलीबा ने देखा कि उसकी बहन के साथ क्या हुआ (पद 11)। यहूदा ने देखा कि अश्शूरियों ने उत्तरी इस्राएली राज्य के पाप के कारण उसे बंधुवाई में ले लिया। उसने अपनी बहन की आत्मिक वेश्यावृत्ति का अन्ततः परिणाम देखा। वह सब देखने पर भी उसने शिक्षा नहीं ली। उसने अपनी बहन के पाप को दोहराया। उसने न केवल अश्शूरियों व उनके देवताओं की लालसा की, परन्तु बाबुलवासियों व उनके देवताओं की भी (पद 14)।

यहां पद 7 में प्रगति देखिये। ओहोलीबा ने आरम्भ किया उन बाबुलवासियों के चित्रों को देखकर, उनकी लहराती पगड़ियों व सुन्दर कमर पेटियों की। उसने उन पर ध्यान केन्द्रित किया। जब उसने उन चित्रों को देखा तो वह उनकी लालसा करने लगी (पद 17)। अपने को उनकी लालसा करने देकर, वह अगले चरण पर गई; उसने बाबुल में उनके पास संदेशवाहक भेजे। ध्यान दें कि स्वयं उनके पास जाने का साहस उसमें न था। उनमें उनकी रुचि को देखकर बाबुलवासी उसके पास आये। उसको उनके पास जाना नहीं पड़ा। निश्चय जानें यदि शैतान जानता है कि आप रुचि रखते हैं और आपने उन विचारों को अपने मन में संजोया है तो वह आप पर परीक्षा भेजेगा। इस सबके कारण उसने बाबुलवासियों के साथ व्यभिचार किया (पद 17) और अनन्तः परमेश्वर के विरुद्ध वेश्यावृत्ति व विद्रोह के लिये खुल गई। एक कार्य से दूसरा कार्य निकला। पद 9 में उस पर दोषारोपण है कि उसमें अनैतिक कार्यों की अधिकाई थी। अन्ततः उसकी अनैतिकता ने परमेश्वर की उपस्थिति को उससे दूर कर दिया (पद 18)।

कितनी बार व्यक्ति इसी प्रक्रिया द्वारा अनैतिक जीवन शैली का शिकार होता है? यहूदा के लोगों के समय, उन्होंने स्वयं को अनुमति दी कि अपने

चारों ओर की अश्लीलता को देखें। इन चित्रों ने उनकी लालसा को भड़काया। इसके साथ उनकी लालसा ने उनको अनैतिकता में पहुंचाया। यहूदा अपने चारों ओर के पापों से संतुष्टि पाने लगा। हमें भी जागरुक होना चाहिये कि कहीं हम भी उसी फन्दे में न फंस जायें। हमारे लिये यह कितना महत्वपूर्ण है कि आरम्भ में ही ऐसी बातों को रोक दिया जाये।

उसके पाप के कारण, परमेश्वर - उसका पति, क्रोधित हो उससे फिर गया। इस सत्य के होते कि उसके कर्मों ने उसे परमेश्वर से दूर कर दिया, उसने उस सब से जो वह कर रही थी, नहीं रुकना चाहा। इसके बदले उसने स्वयं को पाप के लिये और पूर्णतया दे दिया। पद 20 समझने के लिये कुछ कठिन है। उसके प्रेमियों को 'गधे' के समान शरीर वाला तथा घोड़े के वीर्य के समान बताया गया है 'जिनके लिंग गधे के समान और वीर्य घोड़ों के समान था।' इस विचार से यह ज्ञात पड़ता है कि उनकी यौन भूख संतुष्ट नहीं होती थी। उसके प्रेमी अपने शरीर के दासत्व में थे। अब उसका साथ ऐसों का था। वे परमेश्वर से कितने भिन्न थे, जो उसका सीधा व प्रेमी पति था।

परमेश्वर ने ओहोलीबा के प्रेमियों को उसके विरुद्ध उभारा (पद 22)। जिन युवकों की वह लालसा करती थी वे उसके पास आयेंगे, उसकी लालसा की पूर्ति करने व उसे नाश करने (पद 22)। वे उसके पास हाथों में शस्त्र लेकर आयेंगे (पद 24)। उसको उसके पाप का दण्ड मिलेगा। उसके पुत्र व पुत्रियों को ले जाया जायेगा (पद 23)। उसकी सम्पत्ति ले ली जायेगी (पद 26)। उसने जो भी परिश्रम किया वह सब उससे ले लिया जायेगा (पद 29)। ओहोलीबा को भी वही प्याला पीना पड़ेगा जो उसकी बहन ने पिया (पद 32)। वह शोक, बर्बादी व पीड़ा का प्याला था (पद 32)। उसे अपने पाप के परिणाम भुगतने होंगे (पद 35)। काश वह अपनी बहन के अनुभवों से सीख सकती। कितनी बार, ओहोलीबा के समान, हमारी भी पाप के द्वारा क्या परीक्षा नहीं हुई? वह इतना आकर्षक दिखता है कि हमारी अभिलाषाएं हम पर जयवन्त होती हैं। जब अन्ततः हम अपनी अभिलाषाओं से पराजित होते हैं, तो पाते हैं कि उसकी तो हमें अपेक्षा न थी। हमें संतुष्ट करने के बदले, ये पाप हमें खाली कर जाते हैं; पीड़ा में, दोषी, शर्मिन्दा व मरते हुए।

परमेश्वर ने यहेजकेल से कहा कि यहूदा जाति के पाप को उस पर उजागर कर। उसने व्यभिचार किया है (पद 37)। उसने अपनी संतान को

मूर्तियों के सामने बलि चढ़ाया है (पद 37)। दूसरे शब्दों में, उसने अन्यजाति देवताओं की वेदियों पर बच्चों की बलि चढ़ाने की अन्यजाति प्रथा का पालन किया है। उन्होंने परमेश्वर के सब्त तथा उसके पवित्रस्थान को अशुद्ध किया है (पद 38)। वह बच्चों की बलि चढ़ाती और फिर मन्दिर में आकर उसी दिन परमेश्वर का नाम लेती थी (पद 39)। उसने अपने चारों ओर की जातियों की लालसा की (पद 40-45)। अपने बुढ़ापे में भी वह सर्वशक्तिमान से विद्रोह करती रही (पद 43-44)। परमेश्वर ने व्यभिचार के कारण एक क्रोधित भीड़ को उसका पत्थरवाह करने के लिये बुलाया। वह उसको दूसरों के लिये उदाहरण बनायेगा। वह उसकी दुष्टता को जारी रखने नहीं देगा (पद 48)। अन्ततः वह जानेगी कि परमेश्वर ही एकमात्र सत्य परमेश्वर है।

इस्राएल व यहूदा के समान पाप में गिर जाना कितना सरल है। अपने ध्यान को संसार की वस्तुओं की ओर फेर देना कितना सरल है। कितनी बार संसारिक आनन्द के लिये लालसा की परीक्षा आती है। परमेश्वर से हमारी दृष्टि हटाने के लिये। आकर्षण कितना शक्तिशाली होता है हम कई बार भय व विपत्ति के समय सहायता के लिये दूसरे स्त्रोतों की ओर जाते हैं। केवल वे ही नहीं जो परमेश्वर के वचन से अज्ञान होते हैं, उससे फिर जाते हैं। पाप का आकर्षण कई बार आज्ञाकारिता की हमारी इच्छा से अधिक शक्तिशाली होता है। पाप के आनन्द के लिये हम जानबूझकर अनाज्ञाकारिता करते हैं। परमेश्वर आहोलीबा से क्रोधित था क्योंकि उसने अपनी दुष्ट बहन की सी चाल दोहराई। उसने देखा था कि किस प्रकार परमेश्वर ने ओहोला को उसके पापों का दण्ड दिया था। परन्तु उसने शिक्षा लेने से इंकार किया। उसका दण्ड अधिक कठोर होगा। यहां परमेश्वर हमें इससे फिर जाने के खतरे बताता है तथा इस्राएल व यहूदा की गलतियों को दोहराने के। क्या हम ओहोलीबा के समान बनकर अपने कान बन्द कर लेंगे? क्या हम उसके अनुभवों से सीखेंगे, या हम भी उसी प्रकार पापों में स्वयं भी गिरेंगे?

ओहोला तथा ओहोलीबा के उदाहरण विचार करने के लिये हैं। आइये स्वयं की पुनः जांच करें। क्या प्रभु के साथ हम ठीक हैं? क्या इन दो बहनों के समान किसी और के पीछे जाने के लिये हमने परमेश्वर से मुंह फेर लिया है? क्या ओहोला और ओहोलीबा का इतिहास हमारे जीवन में दोहराया जायेगा? क्या इस उदाहरण के विषय सोचने समझने की परमेश्वर हमें बुद्धि देगा ताकि हम भी ऐसे ही फन्दे में न पड़ें।

*विचार करने के लिये:*

- अश्लीलता के खतरों के विषय इस विभाग से हम क्या सीखते हैं?
- क्या आप कभी ऐसी परिस्थिति में होते हैं जब आपने किसी और की गलती को दोहराया हो? किस बात से आपको प्रेरणा मिली कि अपने चारों ओर के लोगों के उदाहरणों की अनदेखी करें?
- यह विभाग हमें पाप को ठीक करने के विषय में क्या सिखाता है?

*प्रार्थना के लिये:*

- क्या पाप के प्रति किसी विशेष आकर्षण के साथ हम संघर्षरत् हैं?
- परमेश्वर से मांगें कि आपको दिखाये कि आपको इस अध्याय से क्या लेना है?
- परमेश्वर से उन समयों के लिये क्षमा मांगें जब आप शत्रु की परीक्षाओं के शिकार होते हैं।
- परमेश्वर का उन बहुत सी चेतावनियों के लिये धन्यवाद करें जो उसने हमें अपने वचन से दी हैं।

24

# हाण्डी का दृष्टान्त

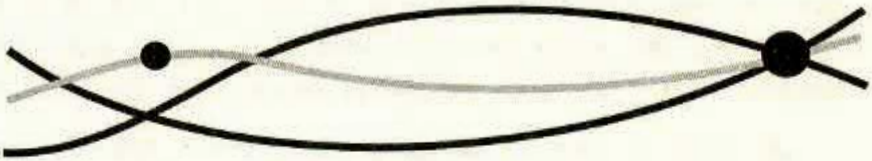

*पढ़ें यहेजकेल 24:1–14*

क्या कभी ऐसा हुआ कि आग पर चढ़ी हाण्डी सूख गई? यह अति निराशाजनक अनुभव हो सकता है। यह अनुभव और भी हतोत्साह करने वाला हो जाता है यदि उसमें आपकी पसन्द का भोजन हो जिसे आपने ध्यानपूर्वक छांटा हो। यहेजकेल 2 एक हाण्डी का सशक्त चित्रण प्रस्तुत करता है जो पक कर सूख गई। पद 2 में ध्यान दें कि जिस दिन यहेजकेल को परमेश्वर ने यह दृष्टान्त दिया, वह दिन था जब बाबुल के राजा ने यरूशलेम की घेराबन्दी को आरम्भ किया। तो यह दृष्टान्त बाबुल द्वारा यरूशलेम की घेराबन्दी से संबंधित है।

परमेश्वर कई बार पाप के विषय इस्राएलियों को सिखाने के लिये विषयक पाठ प्रयोग करता है। इस अध्याय की हाण्डी पानी से भरी थी तथा आग पर रखी गई। अच्छे से अच्छा मांस उसके अन्दर डाला गया। मांस उबलते हुए पानी में पकता रहा (पद 5)। हाण्डी के समान, परमेश्वर के लागों को अनुशासित करने के लिये आग पर रखा गया। परमेश्वर उस रसोइये के समान अपने लोगों से प्रसन्न था जो अच्छे मांस के विषय आनन्दित होता है। परमेश्वर के अनुशासन की आग उनके नीचे इस उद्देश्य से थी कि उनका सर्वश्रेष्ठ निकले। मुख्य रसोइये के समान परमेश्वर ने हाण्डी में मांस के साथ सही

मसाले डाले (पद 10)। समय व धीरज के साथ, परमेश्वर के लोग वे सब बनेंगे जो मुख्य रसोइये की इच्छा थी, कि वे बनें।

परमेश्वर का अनुशासन, यद्यपि हमारे लिये भला है, तौभी कभी सरल नहीं होता। ऐसे समय भी होते हैं जब हम परमेश्वर से उसके प्रति विद्रोह करते हैं जो वह हमारे जीवन में मुख्य रसोइये के रूप में करता है। परन्तु परमेश्वर हमें ध्यानपूर्वक तैयार कर रहा है। वह इससे बड़ा खुश होता है जब हम उसको कार्य करने देते हैं और वह हमें सुन्दर वस्तु बनाता है। गर्मी हमारे जीवन से समस्त कच्चे पाप को दूर करती है। मसाले वह स्वाद देते हैं जो उसको अच्छा लगे। पार्थिव रसोइयों के असमान, यह रसोइया कभी अपने प्रयत्नों में असफल नहीं होता। हम उस पर पूर्णतया भरोसा कर सकते हैं।

इस दृष्टान्त पर ध्यान करें कि उबलती हाण्डी में झाग पाये गये। बहुत गर्मी के होने पर भी ये झाग खत्म नहीं हुए (पद 6)। परमेश्वर ने अपनी संतान को अनुशासित करना चाहा, परन्तु उन्होंने उसकी न सुनी। इस झाग के समान पाप ने उनके जीवन दागदार कर दिये। वे अपने पापों से चिपटे रहे। उन्होंने पकने के स्वाभाविक तरीके से शुद्ध होने से इंकार किया।

पद 7 के अनुसार, परमेश्वर के लोग अपनी दुष्टता पर शर्मिन्दा न हुए। यहेजकेल ने कहा कि उन्होंने निर्दोषों का लहू नंगी चट्टान पर उण्डेला। चट्टान पर उण्डेला गया लहू हरेक के देखने के लिये वहां रहता है। यरूशलेम ने अपनी दुष्टता को छिपाने का कोई प्रयत्न न किया। उसने कोई प्रयत्न नहीं किया कि निर्दोष का लहू भूमि पर उण्डेले जहां उसको मिट्टी से ढक कर छिपाया जा सकता था। उसने सुनकर अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया। क्योंकि उसने खुले में परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया, उसको खुले में ही दण्ड दिया जायेगा। परमेश्वर उसके लहू को चट्टान पर बहायेगा जहां सब उसको देख सकें (पद 8)।

यरूशलेम उस हाण्डी के समान है। हाण्डी के भीतर बेहतरीन मांस था। परमेश्वर के लोग उस मांस के समान थे। वे परमेश्वर से फिर गये और उनके पाप का झाग हाण्डी की एक ओर उठा। पूरा नगर उनके पाप से भरा था। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के नम्र अनुशासन से इंकार किया, उनको अधिक कठोरता के साथ दण्ड दिया जायेगा। हाण्डी के नीचे लकड़ियों का ढेर लगाया गया। यरूशलेम के पापों का झाग और भी बड़ी आग से जलाकर

समाप्त किया जायेगा, एक टुकड़े का एक बार (पद 6)। मांस (परमेश्वर की प्रजा का प्रतीक) जल जायेगा। यह होगा, जब बाबुलवासी उनके देश पर आक्रमण कर उसे नाश करेंगे।

पद पर ध्यान दें कि खाली जली हुई हाण्डी फिर ली जायेगी और सीधे आग पर रखी जायेगी। उसको इन कोयलों पर तब तक रखा जायेगा जब तक कि उसका तांबा आग में चमकने न लगे। उसकी समस्त अशुद्धता को नाश किया जायेगा। यह हाण्डी यरूशलेम का प्रतीक है। उसको बाबुल द्वारा आक्रमण के समय लूटा व जला दिया जायेगा।

इस समस्त परिस्थिति के विषय सबसे दुर्भाग्य की बात यह सत्य था कि मांस तथा हाण्डी दोनों को ही जलना था। यदि परमेश्वर के लोग उसके अनुशासन को प्रतिदिन के आधार पर लेना सीख जाते, तो उनको उस पर सताव सहना न पड़ता जैसे उन्होंने किया। अपने जीवनों पर जितना पाप का ढेर उन्होंने लगाया उतनी ही अधिक आग आवश्यक थी उस पाप को जलाने के लिये। यदि वे परमेश्वर के अनुशासन को नम्र गर्मी से सुखाना सीख जाते, तो उनको उसके दण्ड के प्रकोप की जलन को सहना न पड़ता।

इस्राएलियों के समान हम भी कभी प्रभु के नम्र अनुशासन को स्वीकारना नहीं सीखे। हम छोटी बातों में भी उसकी शिक्षा को सुनना नहीं चाहते। जिन छोटे पापों के विषय वह हमसे बोलता है उनको भी हम नहीं सुधारते। इस्राएल व यहूदा के लोगों के समान अपने पापों का ढेर न लगायें। परमेश्वर के अनुशासन की धीमी गर्मी को अपने पापों को शुद्ध करने दें, नहीं तो शीघ्र ही एकमात्र चीज़ जो आपको शुद्ध करेगी वह होगी उसके दण्ड की जलनपूर्ण गर्मी।

### *विचार करने के लिये:*

- अपने पाप को तथा प्रभु के नम्र अनुशासन को स्वीकारना इतना कठिन क्यों होता है?
- आप प्रभु के अनुशासन को कैसे पहचानते हैं?
- क्या आपके जीवन में कुछ चीज़ें हैं जिनका सुधार आपको आज करना है? वे क्या हैं?
- परमेश्वर का अनुशासन हमें कैसे सिखाता है कि वह हमसे प्रेम करता है?

*प्रार्थना के लिये:*

- परमेश्वर से प्रार्थना करें कि अपने जीवन में उसके नम्र अनुशासन को पहचानने में आपकी सहायता करे।
- उसका धन्यवाद करें कि आप भरोसा कर सकते हैं कि वह आपके जीवन में क्या कर रहा है, जब यह कठिन नज़र आता हो।
- उसका धन्यवाद करें कि वह आपको इतना प्रेम करता है कि जब आप गलत हों तो आप को सुधारे व अनुशासित करे।

25

# यहेजकेल की पत्नी की मृत्यु

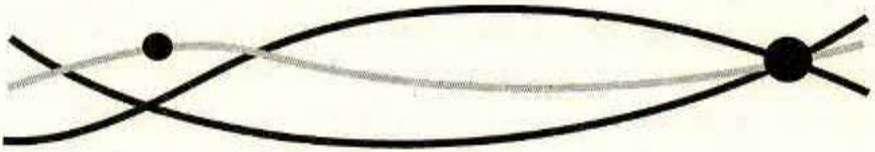

*पढ़ें यहेजकेल 24:15-27*

क्या आपने कभी अपने प्रियजन को खोया है? यदि खोया है तो आप उस की पीड़ा को समझ सकते हैं। भविष्यवक्ता यहेजकेल विवाहित था। उसकी पत्नी के विषय जो भी हम जानते हैं वह पवित्रशास्त्र के एक छोटे से अनुच्छेद में दिया गया है। यहां हम झलक पाते हैं जो यहेजकेल व उसकी पत्नी के मध्य था।

एक दिन उसको यह बताने परमेश्वर भविष्यवक्ता के पास आया कि वह उसके आंखों की अभिलाषा व आनन्द को लेने वाला है (पद 16)। यह कथन बहुत कुछ बताता है। क्या आपको कभी विस्मय हुआ एक विवाह के टूटने पर जिसको आप सोचते थे, सही चल रहा है? यह सरल होता है कि लोग सोचें कि आपके विवाह में सब कुछ ठीक चल रहा है। जब कि सत्य यह है कि वहां सब खराब है। मनुष्य अच्छा दिखावा कर सकते हैं।

परन्तु परमेश्वर को मूर्ख नहीं बनाया जा सकता। वह हमारे मन के विचारों को पढ़ सकता है। वह हमारे हृदयों को समझता है। वह हमें उससे भी अधिक भली प्रकार जानता है जितना हम स्वयं को जानते हैं। वह जानता है कि क्या हुआ, जब और कोई भी नहीं देखता था। जब परमेश्वर ने

यहेजकेल से कहा कि वह उसके आंखों के आनन्द को ले लेगा, तो वह हमें इस विषय पर बहुत कुछ बताता है कि यहेजकेल अपनी पत्नी के विषय क्या सोचता था।

यहेजकेल की पत्नी उसके लिये आनन्द थी। यहेजकेल उसको मानता व उससे अति प्रेम करता था। वह उसके लिये अति आनन्द व खुशी का कारण थी। उसके होते उसको आनन्द आता था। यहेजकेल व उसकी पत्नी के मध्य संबंध, परमेश्वर व उसके लोगों के मध्य संबंध का एक सुन्दर चित्रण है। आप जानते हैं, परमेश्वर अपनी प्रजा से बड़ा आनन्द पाता था। उसने उन पर आशीषों की वर्षा की। वह उनसे बहुत प्रेम करता था। आप उस पीड़ा को जान सकते हैं जो यहेजकेल को हुई होगी, जब उसको बताया गया कि परमेश्वर उसकी पत्नी को ले लेगा। वह पीड़ा उससे भिन्न न होगी जो परमेश्वर ने अपने हृदय में महसूस की जब उसने अपनी प्रजा को दण्ड दिया।

ध्यान दें कैसे पद 16 बताता है कि 'एक ही बार में' परमेश्वर यहेजकेल के हृदय की अभिलाषा को ले लेगा। क्या आप महसूस करते हैं कितनी जल्दी आप उन वस्तुओं को खो सकते हैं जो आप के हृदय में प्रिय हों? क्षण भर में उनको आपसे दूर किया जा सकता है। यह तो केवल परमेश्वर के अनुग्रह से है कि जो हमारे पास है वह हमारे पास है। हमारे लिये यह अहसास आवश्यक है कि परमेश्वर को उन वस्तुओं को ले लेने का अधिकार है जो उसने हमें दीं। कितनी बार हम इस प्रकार कहते हैं मानो हमारा परमेश्वर पर ऋण है। जिस क्षण हमने अपना जीवन मसीह को दिया हमने प्रत्येक व्यक्तिगत अधिकार छोड़ दिया जिसका हमें विश्वास था हमारे पास है। विश्वासी होने के नाते हमारा कोई अधिकार नहीं है। हम अहं के प्रति मर चुके हैं और सारे अधिकार परमेश्वर के आगे डाल दिये हैं। हमारे अधिकार तो उसके साथ क्रूस पर बलिदान हो गये। अब हम अपने नहीं हैं। जो हमारा है उसका है और उसकी खुशी पर निर्भर है। क्या आप इस बात को स्वीकारने को तैयार हैं? मसीही जीवन में कोई उन्नति नहीं हो सकती जब तक हम इन शर्तों को स्वीकार न करें। हम सम्पूर्ण रूप से मसीह के हैं। यहेजकेल को इस सत्य का सामना करना था कि परमेश्वर उसकी पत्नी को ले लेगा।

किसी प्रियजन के नुकसान के प्रति शोक करना अति स्वाभाविक है। प्रभु ने भविष्यवक्ता यहेजकेल से कहा कि उसको पत्नी के लिये शोक नहीं करना।

जब उसकी पत्नी की मृत्यु हो तो उसे आंसू नहीं बहाने। उसको सार्वजनिक रूप से अपने शोक को प्रगट नहीं करना। उसको ऐसे जताना है जैसे कुछ हुआ ही नहीं। जीवन स्वाभाविक रीति से चलना चाहिये। जैसा परमेश्वर ने कहा था उसकी पत्नी की संध्या समय मृत्यु हो गई। उसने परमेश्वर की वाणी का पालन किया और जीवन को स्वाभाविक रीति से चलाया। लोगों की समझ में नहीं आया कि क्या हो रहा था। उन्होंने भविष्यवक्ता को अपनी स्वाभाविक दिनचर्या में देखा, मानों कुछ हुआ ही नहीं। उन्होंने उसे आंसू बहाते नहीं देखा। जो हुआ उस पर उसने शोक नहीं जताया। वे तो जानते थे कि वह अपनी पत्नी से प्रेम करता था, इसलिए वे उससे पूछने आये कि उसने अपनी पत्नी की मृत्यु पर ऐसी प्रतिक्रिया क्यों दी।

अब यहेजकेल के पास लोगों के लिये स्पष्टीकरण का अवसर था कि परमेश्वर ने उसकी पत्नी को क्यों ले लिया। परमेश्वर ने नबी की पत्नी का प्रयोग लोगों की शिक्षा के लिये किया। जल्दी ही वह उनकी आंखों के आनन्द को ले लेगा। उनका नगर, उनका मन्दिर, उनके बच्चे सब शत्रु की तलवार का शिकार होंगे। उनको भी वह खो जाने की पीड़ा होगी जो उनको अतिप्रिय था। यहेजकेल के समान, वे अकेले में, आपस में शोक करेंगे (पद 23)। परन्तु शोक का कोई सार्वजनिक प्रदर्शन न होगा।

वे सार्वजनिक रूप से अपने शोक का प्रदर्शन क्यों नहीं करेंगे? जब कि उनके शत्रु उन्हें बंधुवाई में ले गये, वे अपने शोक का प्रदर्शन नहीं कर सकते थे। उनके निर्वासन के देश में उनको अपनी हानि पर पारम्परिक रूप से शोक करने की अनुमति न होगी। उनके साथ दासों जैसे व्यवहार किया जायेगा। शोक करने के लिये समय ही न होगा। उनको एकदम काम पर लगाया जायेगा ताकि महान बाबुल के उद्देश्य को पूरा करें।

पद 27 हमें बताता है कि उस दिन जब उसके लोगों के लिये परमेश्वर इस वचन को पूरा करेगा, यहेजकेल का मुंह खोला जायेगा। वह फिर खामोश न रहेगा। हमें यह किस प्रकार समझना है? यदि हम यहेजकेल की शेष पुस्तक को देखें तो हम पाते हैं कि नबी अब परमेश्वर के लोगों में आनेवाले दण्ड की भविष्यवाणी नहीं कर रहा। उसकी पुस्तक के अध्याय 25-33 में नबी जातियों से बात करेगा। यह उस अध्याय तक नहीं होगा जब कि यहेजकेल फिर परमेश्वर की प्रजा से बात करेगा। यह यरूशलेम के पतन

के बाद होगा। यह उस भविष्यवाणी को पूरा करेगा जो परमेश्वर ने यहेजकेल को उसकी पत्नी की मृत्यु के द्वारा दी। जब यहेजकेल ने फिर परमेश्वर की प्रजा से बात की, तो वह नाश व बर्बादी के संदेश के साथ नहीं था। उसके संदेश आशा व पुन:स्थापन के संदेश बन जायेंगे। उसकी पत्नी की मृत्यु के साथ यहेजकेल ने परमेश्वर की प्रजा के विरुद्ध अपनी भविष्यवाणियां समाप्त कीं। आप को कैसा लगता यदि आप भविष्यवक्ता यहेजकेल होते?

आप क्या प्रतिक्रिया देंगे यदि आप पायें कि परमेश्वर ने आपके प्रियजन को ले लिया ताकि उसका प्रयोग किसी और को शिक्षा देने के लिये हो? भविष्यवक्ता के लिये यह स्पष्ट करना सरल न था कि उसकी पत्नी की मृत्यु का अर्थ उनके लिये क्या था जो उसका अर्थ उससे पूछ रहे थे। परन्तु यह संदेश कितना शक्तिशाली होता। चाहे जो पीड़ा उसको हुई, यहेजकेल ने दीनता से प्रभु की इच्छा के लिये स्वयं को समर्पित किया और अपने जीवन काल का सबसे कठिन संदेश एक याजक व नबी के नाते प्रचार किया। क्या आप में वह साहस होता?

कई बार परमेश्वर हमें गहरी खाइयों में से होकर ले जाता है। कई बार हमारा मार्ग ढालू तथा कठिन होता है। परमेश्वर के तरीके हमारे तरीके नहीं। हम सदा परमेश्वर के उद्देश्यों को नहीं समझ सकते। परन्तु प्रभु होने के नाते उसको अधिकार है कि हमारे साथ जैसा चाहे करे ताकि हम उसकी निकटता में आ सकें। क्या आप उसको स्वीकारने को तैयार हैं जो वह आपके मार्ग में भेजता है? मुझे एक कलीसिया के एक डीकन की दुखद मृत्यु याद आती है जिसमें मैं कुछ समय पहले जाता था। इस मृत्यु से समस्त कलीसिया में एक विस्मयकारी लहर दौड़ गई। विशेषकर युवा इसके द्वारा जीवन की क्षणभंगुरता की गहरी जागरुकता में लाये गये। बाद के महीनों में जो उस भाई की मृत्यु के बाद के थे, कई युवा कलीसिया में आने लगे। प्रभु की बातों में रुचि लेने का एक नवीनीकरण हुआ। इस भाई को जैसा मैं जानता था, यदि वह जानता कि उसकी मृत्यु उन युवाओं की आत्मिक नवीनीकरण का कारण बनेगी तो उसके नवीनीकरण के लिये वह खुशी के साथ मृत्यु को स्वीकार लेता। कई बार मुझे लगता है कि यहेजकेल की पत्नी को भी ऐसा ही लगा होगा। मैं केवल यह प्रार्थना कर सकता हूं कि मेरी भी ऐसी ही इच्छा हो।

### *विचार करने के लिये:*

- विश्वासी होने के नाते हमारे अधिकार क्या हैं? क्या हम सचमुच ऐसे जीते हैं जैसे हमने अपने सब अधिकार प्रभु को सौंप दिये हों?
- क्या आप प्रभु को वे चीज़ें समर्पित कर सकते हैं जिनसे आपका हृदय आनन्दित होता है? आपको समर्पित करना कब अधिक कठिन लगेगा?
- क्या परमेश्वर ने आपसे कभी वह वस्तु ली है जिसमें आप आनन्दित होते थे? उसने उसका प्रयोग आपकी भलाई और अपनी महिमा के लिये कैसे किया?

### *प्रार्थना के लिये:*

- सब कुछ समर्पित करने की अपनी अयोग्यता का प्रभु के सामने अंगीकार करें।
- प्रभु से सहायता मांगें कि सब कुछ समर्पित करने में आपकी सहायता करे।
- अपने जीवन को पुनः उसको भेंट करें कि जैसे वह ठीक समझे उसका प्रयोग करे।
- उसका धन्यवाद करें कि जो वह कर रहा है उस पर आप भरोसा कर सकते हैं, चाहे आप सदा समझ न पाते हों।

26

# अपने शत्रुओं से प्रेम करो

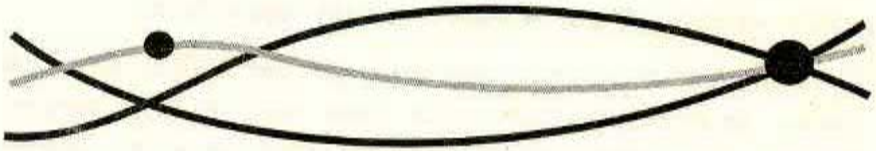

*पढ़ें यहेजकेल 25*

जब आपके शत्रु का पतन होता है आप क्या करते हैं? हम सब जानते हैं कि हमारी स्वाभाविक प्रतिक्रिया होनी चाहिए: 'अपने शत्रुओं से प्रेम करो और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो' (मत्ती 5:44)। यह हममें स्वाभाविक रीति से नहीं आता। हमारे सामने इस अनुच्छेद में हम परमेश्वर के लोगों के पतन पर जातियों की प्रतिक्रिया को देखते हैं। इस अध्याय में चार जातियों को सम्बोधित किया गया है। प्रत्येक जाति भिन्न प्रकार की प्रतिक्रिया देती है। आइये, जो हमारे सामने उदाहरण हैं उन्हें देखें।

*अम्मोन* (1-7)

पहली जाति जिसका यहां ज़िक्र है, वह अम्मोन है। यरूशलेम के पतन पर अम्मोन की प्रतिक्रिया क्या थी? हमारा अनुच्छेद बताता है कि वे बोले 'आहा।' यह आनन्द की प्रस्तुती होती है। जब उन्होंने मन्दिर के अनादर को देखा वे आनन्दित हुए। जब उन्होंने देश को उजाड़ होते देखा, वे खुश हुए। वे खुश थे जब उन्होंने देखा कि परमेश्वर के लोगों को बंधुवाई में ले जाया जा रहा है। पद 6 बताता है कि अम्मोनियों ने ताली बजाई और आनन्दपूर्वक पैर पटके जब परमेश्वर के लोगों को बंधुवाई में ले जाते देखा।

हमें मानना पड़ेगा कि परमेश्वर के लोगों का तो वह हुआ जिसके योग्य वे थे। वे परमेश्वर से फिर गये थे। यद्यपि परमेश्वर ने कई बार उन्हें चेतावनी दी, उन्होंने सुनने से इंकार किया। इससे अम्मोन को यह अधिकार नहीं मिलता कि वे उनके नाश पर आनन्दित होते। यरूशलेम के पतन के प्रति उनके व्यवहार से परमेश्वर खुश न हुआ। वह उन्हें पूरब के आनेवाले एक शत्रु के हाथ में कर देगा। यह शत्रु उनकी रोटी खा लेगा और उनके देश पर अधिकार कर लेगा। उनके महान नगर उजाड़ होकर ऊँट व भेड़ों के लिये चरागाहों में बदल जायेंगे। एक जाति के रूप में उनका नाश होगा क्योंकि परमेश्वर की प्रजा के पतन पर उन्होंने आनन्द किया।

जब आपके शत्रु का पतन होता है तो क्या आप आनन्दित होते हैं? वे गलती पर हो सकते हैं। उन्होंने शायद आपके जीवन को परेशान हाल कर दिया हो। परन्तु परमेश्वर यह नहीं चाहता कि उनके पतन पर हम आनन्दित हों। परमेश्वर का अनुग्रह हमें कितना चाहिये कि हम अपने शत्रुओं की आवश्यकताओं व पीड़ा को महसूस कर सकें? यद्यपि एक समय हम स्वयं परमेश्वर के शत्रु थे, उसने हम पर करुणा की। उसने अपने पुत्र को हमारे लिये मरने हेतु भेजा जब कि हम विद्रोह करने में लगे हुए थे। उसका प्रेम हमारी घृणा व नफ़रत पर प्रभावी हुआ। उसने पाप व दुष्टता से आगे देखा और उसके नीचे के व्यक्ति को देखा। उसने हमसे प्रेम किया जब कि हम उसके शत्रु थे। क्या हम, जिन्होंने उसकी करुणा का अनुभव किया है अपने शत्रुओं के पतन पर आनन्दित होना चाहिये? परमेश्वर ने अम्मोनियों के लिये एक गम्भीर दण्ड रखा। यह हमें इस बात को दिखाता है कि परमेश्वर इस मामले को कितनी गम्भीरता से लेता है।

*मोआब (8-11)*

दूसरी जाति मोआब की प्रतिक्रिया देखें: 'यहूदा और सब जातियों के समान हो गया है' (पद 8)। क्या कहा उसने? क्या वह कुछ इस प्रकार नहीं कह रहा? 'देखो इनको वे परमेश्वर की प्रजा होने का दावा करते हैं, और अब देखें उनके साथ क्या हुआ। वे हमसे कुछ अच्छे नहीं थे। उनका परमेश्वर हमारे देवताओं से कुछ उत्तम नहीं है। वे सोचते थे वे कुछ विशेष हैं, परन्तु हैं नहीं।'

मोआब ने अपने शत्रु के प्रति आलोचना का व्यवहार रखा। न केवल परमेश्वर की प्रजा के पतन पर आनन्द किया, बल्कि उनकी आलोचना भी

की। उनकी मुसीबत के समय खुलेआम उनका ठट्ठा किया। उनकी मानसिकता इस प्रकार की थी, 'हमने तो पहले ही कहा था।' इस प्रकार के व्यवहार का विकास करना कितना सरल है। ऐसा व्यवहार न केवल शत्रु के पतन पर आनन्दित होता है बल्कि उसके ज़ख्मों पर नमक छिड़कता है। वे जिनका व्यवहार ऐसा होता है अपने शत्रुओं को लातें मारते हैं, जब वे नीचे पड़े हों। क्या आपने कभी स्वयं को ऐसी परिस्थिति में पाया है? अपने को न्याय करने तथा शत्रु पर दोषारोपण का अधिकार न दें। न्यायी तो केवल परमेश्वर है। उनके व्यवहार के कारण, मोआब को भी शत्रु के हवाले किया जायेगा (पद 10)। परमेश्वर हमारे साथ ऐसा न करे और यह देखने में हमारी सहायता करे कि हमारे तरीके कहां गलत हैं।

*एदोम (12-14)*

तीसरी प्रतिक्रिया एदोमियों की ओर से आई। परमेश्वर उनके नगरों को नाश करेगा। वह उनसे प्रतिशोध लेगा। परमेश्वर एदोम से इतना क्रोधित क्यों था? एदोम ने परमेश्वर के लोगों से प्रतिशोध लिया (पद 12)। सुनिये यरूशलेम के पतन पर एदोमियों ने कहा: 'इसको फाड़ डाल, इसको इसकी नींव तक उखाड़ फैंक' (भजन. 137:7)। यहेजकेल बताता है कि एदोमियों ने 'इस्राएल की संतान का बलपूर्वक उनकी विपत्ति के समय तलवार से लहू बहाया, उस समय जब उनका अधर्म अन्त की ओर था।' ओबद्याह भविष्यवक्ता अधिक विस्तारपूर्वक बताता है कि जब यरूशलेम का पतन हुआ तो एदोम ने क्या किया:

जिस दिन तू अलग खड़ा रहा
और पराए उसकी सम्पत्ति लूट कर ले गये
हां, विदेशियों ने उसके फाटकों में घूम कर
यरूशलेम पर चिट्ठी डाली
उस दिन तू भी उनमें से एक था।

अपने भाई के दिन अर्थात्
उसकी विपत्ति के दिन उसको ताकता न रह।
यहूदियों के विनाश के दिन आनन्दित हो,
हां, उनके संकट के दिन बड़ा बोल मत बोल।
मेरी प्रजा के विनाश के दिन
उनके फाटकों में प्रवेश करना।

हां, उनके विनाश के दिन
तू उनके संकट को ताकता रह
और उनके विनाश के दिन उनकी सम्पत्ति न लूट।
प्रजा के भागने वालों को घात करने के लिये
चौराहे पर खड़ा न हो
और न उनके संकट के दिन
उनके बचे हुओं को बन्दी बना (ओबद्याह, पद 11-14)।

एदोम ने न केवल परमेश्वर की प्रजा के नाश के दिन आनन्द किया या आलोचना की, बल्कि शत्रु की सहायता की कि उनका नाश करे। उसने शत्रु की सेना का साथ दिया। एदोमी स्वयं ऐसा काम न कर पाते, पर जब उन्होंने देखा कि अब समय है, उन्होंने यहूदा को नाश करने में सहायता करके बाबुल की परिस्थिति का लाभ उठाया।

ऐसे पाप में फंस जाना कितना सरल है। आप क्या करते हैं जब चारों ओर के लोग दूसरे व्यक्ति के विरुद्ध बातें कर आलोचना करते हैं? क्या यह सरल नहीं कि उनके साथ जुड़ कर आप भी वही करने लगें? यद्यपि विशेष रूप से हम उनकी निन्दा के लिये ज़िम्मेदार होना नहीं चाहते तो हम कह सकते हैं कि बात तो किसी और ने आरम्भ की थी। आप अपनी करनी के लिये किसी भी आड़ में नहीं छिप सकते। परमेश्वर आपके पाप के लिये आपको उत्तरदायी ठहरायेगा।

*पलिश्ती (15-27)*

यहां अन्तिम उदाहरण पलिश्ती का है। यह एक जाति थी जो खुलेआम परमेश्वर की प्रजा का नाश करना चाहती थी। पलिश्ती बावुलवासियों के पीछे नहीं छिपे, जैसे एदोमियों ने किया। पलिश्ती परमेश्वर के लोगों से खुल कर शत्रुता करते थे। यद्यपि कई बार यह पहचान सरल होती है कि स्वाभाविक शत्रुओं को टीक कर सकें, तब भी वे काफी खतरनाक होते हैं। हम में से बहुतों में अपना भीतरी चेहरा दिखाने का साहस नहीं होता, जब दूसरे के प्रति हमारी भावनाओं की बात होती है। हम अपनी असली भावनाओं को छिपाने का प्रयत्न करते हैं। कम से कम इन प्रत्यक्ष शत्रुओं के साथ, हम जानते हैं हमारी क्या स्थिति है। वे पाखण्डी नहीं होते। यद्यपि यह उन्हें बेहतर नहीं बनाता। उनको भी उनके पापों का दण्ड मिलेगा। ध्यान दें, परमेश्वर ने क्या कहा कि उनके साथ क्या होगा: 'मैं कड़ाई के साथ उनसे

महाप्रतिशोध लूंगा। और जब मैं उनसे बदला लूंगा तब वे जान जायेंगे कि मैं यहोवा हूं' (पद 17)।

इस अध्याय में हमने परमेश्वर की प्रजा के पतन के प्रति चार भिन्न प्रतिक्रियाएं देखीं। इस अध्याय से हम क्या सीखते हैं? क्या हमें इन जातियों के प्रकाश में जांच करने की आवश्यकता नहीं? अपने शत्रुओं व उनके दुर्भाग्य के समय हमारी प्रतिक्रिया क्या होती है? हमारे जीवनों में क्या मसीह का प्रेम हमारे शत्रुओं के प्रति तेज के साथ चमकता है? कितनी बार हमें उन्हीं अपराधों में पाया जाता है जैसे ये जातियां थीं? काश परमेश्वर हमें योग्यता प्रदान करे कि हम अपने शत्रुओं से प्रेम करें, जैसे मसीह ने हमसे प्रेम किया।

### *विचार करने के लिये:*

- क्या आपके जीवन में ऐसे लोग हैं जो आपके साथ गलत व्यवहार करते हैं? उनके प्रति आपकी प्रतिक्रिया क्या होती है जब वे पीड़ा या दुख में होते हैं?
- जब हमारा शत्रु दुख उठाता है तो हमारी प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए?
- एक क्षण विचार करें कि आप भी उन्हीं अपराधों के दोषी हो सकते हैं जैसी इस अध्याय की जातियां।

### *प्रार्थना के लिये:*

- प्रभु का धन्यवाद करने को क्षण भर निकालें उस प्रेम के लिये जो उसका आपके प्रति है, जब कि आप ने उससे शत्रुता की थी।
- क्या आप किसी ऐसे को जानते हैं जिससे प्रेम करना आपको कठिन होता है? विशेष रूप से कौन? परमेश्वर से उस व्यक्ति से प्रेम करने के अनुग्रह को मांगें, जैसे उसने आपसे प्रेम किया है।

27

# भौतिकवादी सोर

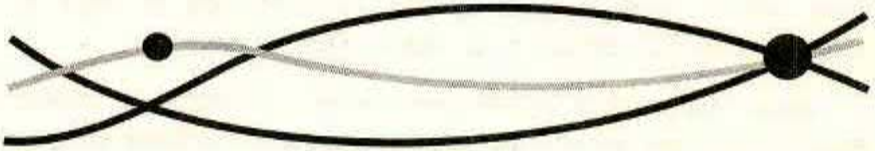

*पढ़ें यहेजकेल 26*

अध्याय 26-28 में यहेजकेल ने सोर क्षेत्र के विरुद्ध भविष्यवाणी की। इतिहासकार हमें बताते हैं कि यहेजकेल के समय में सोर एक अति महत्त्वपूर्ण वाणिज्य का केन्द्र था। वह दो श्रेष्ठ बन्दरगाहों पर गर्व करता था। जहां जलयान व्यापार आपूर्ति के लिये आ सकते थे। नगर इनमें से एक बन्दरगाह के चारों ओर बना था। दूसरा बन्दरगाह तट से दूर द्वीप पर बना था जो मुख्य नगर से एक मार्ग से जुड़ा था। विदेशी जलयान नियमित रूप से व्यापार के लिये सामग्री लेकर इस महानगर में आते थे। भौतिकवाद अधिकाई से था, जबकि व्यापारी व सौदागर अपने भविष्य को आज़माने यहां आते थे।

सोर का भौतिकवादी सम्पत्ति से प्रेम का प्रमाण उसकी इस प्रतिक्रिया में मिलता है जो उसने यरूशलेम के पतन पर की: 'मैं परिपूर्ण हो जाऊंगा: वह नाश हो गई' (पद 2)। यरूशलेम एक स्मृद्ध नगर था। अब क्योंकि उसका पतन हो गया था, उसका व्यापार भी सोर के हाथ लग जायेगा। सोर आनन्दित था क्योंकि यरूशलेम की बर्बादी से सोर की स्मृद्धि होगी।

इस्राएल की आवश्यकता के समय सोर को कोई तरस न आया। उसकी एकमात्र चिन्ता थी कि इस्राएल की परेशानी से किस प्रकार लाभ उठाये।

भौतिकवाद वस्तुओं के महत्व को बढ़ाता है तथा लोगों के मूल्य को कम करता है। हमें दुख होता है जब हम बाल की उपासना में बाल-बलिदान के विषय पुराने नियम में पढ़ते हैं। परन्तु हम महसूस नहीं करते कि हम भी उसी पाप के दोषी हो सकते हैं। कितनी बार हमारे बच्चों को वेदी पर रखा गया और भौतिकवाद के देवता के सामने बलिदान कर दिया गया? कितनी बार हमने अपने जीवन साथी को उसी वेदी पर रखा है? भौतिकवाद के देवता का सम्मान करने के लिये हम अपने परिवार व मित्रों के साथ संबंध को बलिदान कर देते हैं। सम्पत्ति व धन पर हमारा ध्यान केन्द्रित होता है। भौतिकवाद का देवता मानव बलि से आनन्दित होता है। उनकी खोज में बहुत दूर देखने की आवश्यकता नहीं जो भौतिकवाद के चर्च में आराधना करते हैं।

बाइबल हमें बताती है कि जब नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर आक्रमण किया तो उसने नगर को नाश कर दिया। 2 राजा 25 इस आक्रमण की क्रूरता का वर्णन करता है। नबूकदनेस्सर ने महत्वपूर्ण भवनों को जला डाला। राजा के सामने उसके पुत्रों की हत्या करने के बाद राजा की आंखें निकलवा दीं। नगर के घेराव के कारण अकाल ने माता पिता को विवश किया कि अपना प्राण बचाने के लिये अपने बच्चों को खा जाएं। गर्भवती स्त्रियों के पेट तलवार से फाड़ दिये गये। तलवार की नोक पर लोगों को उनके घरों से निकाल दिया गया। बहुत जाने गईं। सोर ने ऐसी किसी बात की चिन्ता न की। उसकी एकमात्र चिन्ता थी कि किस प्रकार उस धन को प्राप्त करे जो इस्राएल के मार्ग से हट जाने के बाद उपलब्ध हो सकता था। भौतिकवाद के देवता ने सोर की संवेदनशीलता को सुन्न कर दिया। भौतिकवाद से इससे कम और क्या अपेक्षा की जा सकती है।

सोर के भौतिकवाद के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया को देखें। पद 3 में परमेश्वर ने उस भाषा का प्रयोग किया जिसे सोर के लोग समझ सकते थे। वे सागर तट पर रहने वाले लोग थे। वे प्रतिदिन अपनी बन्दरगाहों पर जलयानों को देखते थे। इस कारण से प्रभु ने उन्हें बताया कि वह उन पर व उनके जलयानों पर बड़ी लहरों के समान आयेगा। दण्ड की वह लहर उनको मिटा देगी। वह उनकी दीवारों को ढा देगी ठीक जैसे बड़ी चट्टान का धरातल होता है (पद 4)। उनका धन, उनकी जमा सम्पत्ति, उनके सुन्दर घर गायब हो जायेंगे। जातियां उन्हें लूटेंगी (पद)। उसी प्रकार सोर के चारों ओर के भी अपने पाप के नाशक परिणामों को जानेंगे। उनको भी तलवार से घात किया जायेगा, जब उनके शत्रु लहर के समान कोपित हो उन पर टूट पड़ेंगे।

पद 7 में प्रभु ने सोर से कहा कि वह बाबुल को उसके विरुद्ध लायेगा। इसी जाति ने यहूदा को बर्बाद किया था। सोर को भी वही दण्ड मिलेगा। बाबुल के घोड़े और रथ उन्हें घात करेंगे। वे उनकी दीवारों व सशक्त मीनारों को तोड़ डालेंगे। बाबुल के असंख्य रथों से उड़ती धूल उनके देश को भर देगी। सोर के नागरिक घोड़ों के खुरों से रौंदे जायेंगे। जिस सम्पत्ति से वे इतना प्रेम करते थे, उनसे लूट कर ले ली जायेगी। उनके 'सुन्दर भवन' खण्डहर हो जायेंगे (पद 12)। संगीत व गीत, जो भौतिकवादी सोर की संस्कृति का भाग थे आगे को सुनाई नहीं देंगे (पद 13)। इसके बदले, मौत जैसी खामोशी होगी। एक जाति के रूप में वह नाश किया जायेगा और फिर कभी न बसाया जायेगा।

भौतिकवादी समाज का अन्ततः अन्त यही है। भौतिकवाद का देवता कभी संतुष्ट नहीं होता। जितना ले सकता है उसे लेने के बाद वह आप से लेकर आपको खाली तथा बर्बाद कर देगा। ऐसे व्यक्तियों की बहुत सी कहानियां हैं जो सफलता की ऊंचाइयों पर पहुंचकर अन्त में अपने आप को अनाथ व बेघर पाते हैं।

उसके प्रति चारों ओर की जातियों की प्रतिक्रिया देखें जो सोर के साथ हुआ (पद 15-16)। उनको विस्मय हुआ कि सामर्थी सोर का पतन हो गया। उनके मन में कभी न आया था कि ऐसा नगर गिर सकता था। मेरा मानना है कि जो कुछ सोर के साथ हुआ वह स्वयं उस पर विश्वास न कर सका। जो सोर के साथ हुआ उस भय से वे कांप उठे थे। वह इतना अधिक स्मृद्ध व सुरक्षित था। उसके मन में भी कभी न आया कि उसका सब जाता रहेगा, जो उसने इतने परिश्रम से पाया था। उस आशीष को जो हमें मिली कभी न सोचें कि हमें तो मिलनी चाहिये थी। सर्वोत्तम परिस्थिति में वह मकड़ी के जाल से लटकी होती है। सर्वशक्तिमान के एक श्वास,से वह भूमि पर गिर जाती है।

पद 17 व 18 एक विलाप हैं। दण्ड की धर्मी भविष्यवाणी पीढ़ियों को याद दिलाने के लिखी गई कि भौतिकवाद के खतरे और इस संसार की वस्तुओं की असुरक्षा को जानें। वह जो जातियों के लिये आतंक तथा ईर्ष्या का कारण था अब न रहा। पद 19-21 में हम पढ़ते हैं कि सोर की नियति अनन्त नाश थी। उसको 'गड्हे' में उतारा जायेगा। वह गड्हा अनन्त मृत्यु का स्थान है। उसको कोई प्रतिफल न मिलेगा। उसके समस्त स्वप्न व आशाएं भविष्य के लिये अचानक से टूट जायेंगे। पौलुस तिमुथियुस को 1तिमु. 6:10 में कहता

है, 'धन का लोभ हर प्रकार की बुराई का मूल है। कुछ लोगों ने धन की लालसा में विश्वास से भटक कर स्वयं को दुखों से छलनी कर दिया।'

सोर नगर के पतन का कारण भौतिकवाद था। धन सम्पत्ति के प्रति उसका प्रेम उसको कब्र तक ले गया। वह अपने पर भरोसा करता था तथा अपनी योग्यताओं व धन पर भी। वह ढेर के शिखर पर पहुंच गया था। वह संसार के लिये ईर्ष्या का कारण था, परन्तु अब वह पूर्णतया खाली था। कहीं आप भी तो इसी देवता के फन्दे में नहीं फंसे हुए। इस अनुच्छेद की चेतावनी पर ध्यान दें। यह अनुच्छेद उन सबके लिये चेतावनी है जो सोर के पदचिन्हों पर चलते हैं। आज ही प्रभु को समर्पित हों। अपने पाप का अंगीकार करें। केवल परमेश्वर में ही सुरक्षा है।

***विचार करने के लिये:***

- हमने यहां कहा कि भौतिकवाद का देवता वह देवता है जो मानवबलि चाहता है। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? अपने अनुभव से इसके कुछ उदाहरण दें। आपके जीवन में कितने लोग और अधिक धन व स्मृद्धि की प्राप्ति के लिये बलिदान किये गये?
- यह संसार हमें कितनी सुरक्षा दे सकता है? हमारे लिये कितना सरल होगा सब कुछ खो देना जिसको प्राप्त करने के लिये हमने इतना परिश्रम व प्रयत्न किया है?
- भौतिकवाद इतना आकर्षक क्यों है?
- अन्त में भौतिकवाद हमें कहां छोड़ता है?

***प्रार्थना के लिये:***

- भौतिकवाद की खोज में क्या आप ने किसी का बलिदान किया है? प्रभु से क्षमा मांगें कि वह आपको दिखाये कि सुधार के लिये क्या करना है।
- प्रभु का धन्यवाद करें कि केवल उसी में सुरक्षा है।
- सोचें, प्रभु ने आपके जीवन में आपको क्या दिया है। यह पहचानने का प्रयत्न करें कि उसके बिना कुछ भी संभव न होता। जो उसने आपको दिया है उसके लिये उसका धन्यवाद व उसकी आराधना करें। अपनी प्रार्थनाओं में विशिष्ट बनें।

28

# महान सोर

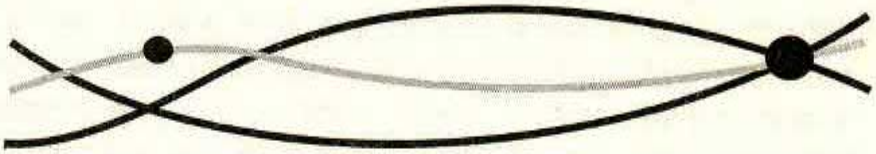

*पढ़ें यहेजकेल 27*

गत अध्याय में हमने देखा कि सोर एक धनी व स्मृद्ध राष्ट्र था। अध्याय 27 व 28 में विस्तार से सोर की स्मृद्धि के विषय वर्णन किया है। उसके पास वह सब था जिसकी संभवत: आशा की जा सकती थी। जो अपने धन दौलत, आराम व स्मृद्धि पर गर्व कर सकता था। यह सब उसे कहां ले गया या उसका अन्त क्या हुआ? अध्याय 27 एक ऐसे राष्ट्र का चित्रण करता है जिसकी महानता ने उसे नाश कर दिया। अन्तत: यह अध्याय हमें विवश करता है कि जीवन की अपनी प्राथमिकताओं की जांच करें।

आइये सोचें यह अध्याय सोर की महानता के विषय हमें क्या बताता है। पद 3 से हम पाते हैं कि सोर समुद्र तट पर स्थित था। उसका स्थान वह मुख्य कारण था कि वह एक सफल व स्मृद्ध व्यापार का केन्द्र था। पद 3 उन व्यापारियों के विषय बताता है जो सोर के महान बन्दरगाहों पर व्यापार के लिये आते थे। नगर स्वयं एक सुन्दर स्थान था (पद 3-4)। सोर के निवासी जानते थे कि उनका नगर सुन्दर था, और वे उसकी सिद्ध सुन्दरता पर गर्व करते थे। उनके मानव निर्मित ढांचे व भवन उसकी स्वाभाविक शान को बढ़ाते थे।

परमेश्वर ने उसकी तुलना एक महान समुद्र में चलते जहाज़ से की। यह वह भाषा थी जिसको वे समझ सकते थे। जलयान उसकी आय का साधन थे। सोर निवासी जलयानों के अपने भाग को देखते थे। वे इस कल्पना को पहचान सकते थे। एक महान जलयान के समान, सोर का निर्माण अपने समय की श्रेष्ठ वस्तुओं से हुआ। उसकी देह चीड़ वृक्षों से बनी थी। (पद 5) लबनोन के देवदारों से बने उस जलथान पर नक्काशी की गई थी। (पद 5) उसके चप्पू बाशान के वृक्षों की मज़बूत लकड़ी से बने थे (पद 6)। उसका ऊपरी भाग कुप्रुस के हांथी दांत से बना था (पद 6)। वह गर्व के साथ अपने मस्तूल दिखाती थी जो मिस्र से मंगाये गये सुन्दर वस्त्रों से बने थे (पद 7)। वह एलिशाह के नीले व बैंजनी वस्त्रों से ढका था। (पद 7) सीदोन व अर्वाद के कुशल चप्पू चलाने वाले उसे समुद्रों में ले जाते थे (पद 8)। उसको उसके महान बुद्धिमान लोग चलाते थे (पद 9)। ज्ञानी व गबल के प्राचीन उसको सीलते थे (पद 9)। फारस, लूद व पूत के सैनिक व कुशल योद्धा उसकी रक्षा करते थे और वीरता के साथ उसे ढालों व टोपों से सजाकर बहुत सी विजयों की याद दिलाते थे (पद 10)। अर्वद व हेलेक के लोग उसकी दीवारों की रक्षा करते थे (पद 11)। वह कितना महान नगर था! सब कुछ उसमें सर्वश्रेष्ठ था। उसमें कोई कमी न थी।

सोर ने अपने चारों ओर के देशों के साथ व्यापार किया। पद 12–14 हमें उसके व्यापारी साथियों की एक सूची देते हैं। तर्शीश से उसने चान्दी, लोहा, रांगा और सीसा मोल लिया (पद 12)। उसने यावान, तूबल और मेशेक के लोगों से अपने माल के बदले दास-दासी और पीतल का व्यापार किया (पद 13)। तोगर्मा के घराने से सम्पत्ति लेकर उसने घोड़े, सवारी के घोड़े और खच्चर दिये (पद 14)। ददानी हाथी दांत के सींग और आबनूस की लकड़ी का उसके साथ व्योपार करते थे (पद 15)। उसकी कारीगरी के कारण, आराम ने अपने मरकत, बैंजनी रंग का और बूटेदार वस्त्र, सन, मूंगा और लालड़ी बदले में दिया (पद 16)। यहूदा और इस्राएल ने उसके साथ मिन्नीत का गेहूं, पन्नग, और मधु, तेल, बलसान का व्यापार किया (पद 17)। दमिश्क ने उसके लिए दाखमधु और ऊन को उपलब्ध कराया (पद 18)। वदान ओर यूनान ने उसके माल के बदले में उसे सूत, फौलाद, तज और अगर दिये। (पद 19) सवारी के लिए ददान उसका व्योपारी हुआ (पद 20)। अरब और केदार ने उसके साथ मेम्नों, भेढ़ों और बकरों का व्यापार किया

(पद 21)। शमा और रामा ने बहुमूल्य मणि, सोना, सब भांति का मसाला देकर उसे चमकाया (पद 22)। हारान, कन्नो, एदेन, शबा ने उसके साथ नीले और बूटेदार वस्त्रों, देवदार की बनी हुए विचित्र कपड़ों की पेटियां लाकर लेन देन किया। यदि आपको कुछ खरीदना हो तो सोर वह स्थान आ जहां आप इसके लिए जा सकते थे। विश्व में किसी भी स्थान की सर्वोत्तम सामग्री को प्राप्त करने के लिए आप सोर जा सकते थे। अपने दिनों का वह एक महान वाणिज्य केन्द्र था।

भौतिक रूप से कहा जाए तो वह एक सम्पन्न राष्ट्र था। तर्शीश के जहाज़ विश्व के कोनों से उसके लिए सामग्री लाते थे (पद 25)। वह धनवान व प्रतापी नगर था (पद 25)। इस धन व प्रताप के साथ, आप सोचेंगे कि उसका भविष्य सुरक्षित होगा। अब क्या चीज़ उसे नीचे गिरा सकती है? उसकी सम्पन्नता व प्रताप का कोई अन्त नहीं दिख रहा था। उसके पतन का प्रभाव विश्व की आर्थिक व्यवस्था पर पड़ता।

परन्तु यह स्मृद्धि सदा रहने वाली न थी। पद 26 में यहेजकेल ने एक महान जलयान का चित्रण किया है। सोर समुद्र के मध्य लदे हुए यान के समान था। पूर्वी हवा आकर उससे टकराई। उस पूर्वी हवा का बल इतना अधिक था कि उसके दो भाग हो गये। उसका धन, व्यापार सामग्री, नाविक, सैनिक व समस्त चालक दल समुद्र में गिर गये (पद 27)। यह था एक राष्ट्र, जिसको लगता था सब ठीक चल रहा है। कोई भी चीज़ उसको गिरा न सकती थी। उसका भविष्य सुरक्षित था - कम से कम वह ऐसा सोचता था।

आज हमारे लिये यह कैसी चेतावनी है। सबसे अच्छी स्थिति में भी हमारी सम्पत्ति मकड़ी के जाले में लटकी होती है। क्षण भर में पूर्वी हवा हमसे हर चीज़ को उड़ा सकती है। कल के लिये आपके पास क्या गारंटी है? क्या गारंटी है आपके पास कि कल सुबह आप उठेंगे, या आपका सब कुछ जाता न रहेगा, जिसको इतने परिश्रम से आपने प्राप्त किया है? इस अणु युग तथा रसायनिक युग में, क्या यह समझना मूर्खता नहीं होगी कि जो हमारा है वह सुरक्षित है?

सोर के पतन ने सारे संसार को हिला दिया। उसके मल्लाहों के डूबने की चीख से देश हिल जायेगा (पद 28)। समुद्र के मल्लाह सोर के निकट लंगर डालेंगे और विस्मित होंगे। उसकी जातियां बिलख बिलख कर रोयेंगी।

अपने सिर पर मिटट्ी डालेंगी, अपने सिर को मुंडायेंगी, टाट ओढ़ेंगी, सोर के नाश पर रोना व विलाप होगा (पद 30-32)। उनके मन में भी कभी नहीं आया था कि उस महान जाति पर ऐसा कुछ घटेगा। सोर ने बहुतों को संतुष्ट किया, राजाओं को ऐश्वर्य की वस्तुओं से धनी बनाया, परन्तु वह समुद्र की सतह पर टूटा पड़ा है। उसका धन व दौलत, उसके पास वह सब था जो संसार उसको दे सकता था, परन्तु वह नाश हो गया क्योंकि परमेश्वर के साथ उसका संबंध ठीक न था। अब सोर को उसके महान धन या स्मृद्धि कारण नहीं बल्कि उसके पतन के कारण याद किया जायेगा! कभी को महिमापूर्ण जाति अब आगे को न रहेगी।

कितनी जल्दी हम अपनी स्मृद्धि को अधिकतर मान लेते हैं। हम आभास नहीं कर पाते कि यदि सर्वशक्तिमान परमेश्वर न चाहता तो हमारे पास कुछ न होता। हम अपनी सम्पत्ति के सहारे सुरक्षित होते हैं और परमेश्वर से दूर होते जाते हैं। यद्यपि हम इसको कभी स्वीकारेंगे नहीं, हमारी जीवन शैली इस विश्वास को बताती है कि हम यह स्वयं कर सकते हैं। इस सब सरलता से भौतिकवाद आत्म - पर्याप्ता में खिंच सकते हैं। काश हम सोर से शिक्षा ले सकें, कि इससे पहले देर हो जाए।

### *विचार करने के लिये:*

- क्षण भर को सोचें कि क्या आप भौतिकवाद की चकाचौंध में फंस गये हैं? क्या आप उसके आकर्षण को महसूस करते हैं? कुछ उदाहरण दें।
- इस अध्याय से आप क्या चेतावनी लेते हैं? क्या आपके जीवन में कुछ बदलाव आने की आवश्यकता है?

### *प्रार्थना के लिये:*

- आपकी आवश्यकताओं के लिये प्रबंध करने के लिये परमश्वेर का धन्यवाद करें।
- मांगें कि वह आप पर ऐसा मार्ग प्रगट करे जिससे आप सोर के फन्दे में फंस गये हैं।
- उससे कहें कि जीवन में आपकी प्राथमिकताओं को बदले।

29

# सोर के राजा पर हाय

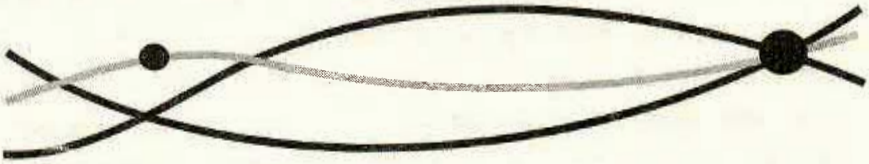

*यहेजकेल 28 पढ़ें*

इस अध्याय में परमेश्वर ने सोर के प्रति भविष्यवाणी को पूरा किया। उसने इस भाग में सोर के राजा को सम्बोधित किया। आइये विचार करें परमेश्वर को इस महान व्यक्ति के विषय क्या कहना था।

ध्यान दें सोर का राजा स्वयं को किस प्रकार देखता था। पद 2 बताता है कि वह एक बड़ा घमण्डी व्यक्ति था। वह अपने आप को देवता मानता था। उस समय के पृथ्वी पर की सबसे स्मृद्ध जातियों में से एक का वह नेता था। वह उस दौलत पर गर्व करता था जो उसके बन्दरगाह से नित्य आती थी। उसको लगता था कि उसको कोई हानि नहीं पहुंचा सकता था। उसके पास आवश्यकता की हर वस्तु थी। उसकी दौलत उसके मस्तिष्क पर चढ़ गई थी। परमेश्वर ने यहेजकेल भविष्यवक्ता के द्वारा उसको याद दिलाया कि वह केवल एक मनुष्य ही है।

न केवल राजा स्वयं को ईश्वर समझता था, वह स्वयं को अति बुद्धिमान भी समझता था। वह अपने को अपने लोगों के ऊपर बताता था। वह अपने को दानिय्येल से अधिक बुद्धिमान बताता था (इस्राएली बुद्धिमानों में से एक जो राजा नबूकदनेस्सर के समय बाबुल में निर्वासन की अवस्था में रहता

था)। दानिय्येल इतना बुद्धिमान था कि बाबुल के राजा ने उसे सभी बाबुल के ज्ञानियों पर मुख्य अधिकारी ठहराया। यहां सोर का राजा दावा करता है कि वह दानिय्येल से भी अधिक बुद्धिमान था। वह दावा करता था कि उसकी बुद्धिमानी का प्रमाण वह धन था जो उसने अपने नगर में जमा कर लिया था। उसका विश्वास था कि वह उसके बुद्धिमत्ता से प्रशासन करने का परिणाम था कि सोर इतना धनी था।

इस घमण्डी व्यक्ति के पास परमेश्वर का वचन पहुंचा। क्योंकि उसने स्वयं को अपने लोगों के सामने एक ईश्वर के समान ऊंचा उठाया, परदेशियों को भेजा जायेगा कि उसके देश पर आक्रमण करें (पद 7)। ये विदेशी बड़ी जातियों के होंगे। वे मन में एक ही उद्देश्य को लेकर आयेंगे - नगर तथा उसकी सारी सुन्दरता व ऐश्वर्य को नाश करने (पद 7)। सोर नगर अपने धन सहित नाश होगा। पद 8 के अनुसार वह गहरे गड्ढे में जायेगा तथा समुद्र के मध्य भयंकर मृत्यु से मरेगा। इतिहासकार हमें बताते हैं कि प्राचीन सोर नगर अब समुद्र के नीचे है, जैसा परमेश्वर ने कहा था।

परमेश्वर के दण्ड के प्रति राजा की प्रतिक्रिया क्या होगी? क्या वह उनसे कहेगा जो उसकी हत्या करेंगे कि वह ईश्वर है (पद 9)? उसको बताया जायेगा कि वह असल में क्या है - केवल मानव। मृत्यु वह तरीका है जो महानतम् स्त्री व पुरुष को दीन कर सकता है। यहां हमारी शक्ति, बुद्धि व अहंकार सब हमसे छिन जाता है। हम प्राणहीन मांस व हड्डियों के लोथड़े बन जाते हैं। जैसा कि एक दिन परमेश्वर के सम्मुख खड़ा होना है (रोम. 14:10)। उस दिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा कि कितना पैसा, शक्ति या धन हमारे पास है। काम जो आयेगा केवल हमारा परमेश्वर के साथ संबंध। सोर का एक शक्तिशाली राजा उस महत्व के विषय हमारे लिये शिक्षा है कि हमें परमेश्वर के सामने खड़े होने के लिये तैयार रहना है।

यहेजकेल को भविष्यवाणी करने के लिये बुलाया गया कि परमेश्वर का धर्ममय दण्ड सोर के राजा पर होगा। यहां यहेजकेल सोर के राजा के दृष्टिकोण से बोल रहा है, जो वह स्वयं को समझता था। यहेजकेल उसे 'परिपूर्णता का आदर्श' कहता है (कम से कम राजा अपने को यह समझना पसन्द करता है)। यद्यपि हम संदर्भ से जानते हैं कि वह हससे बहुत दूर था (पद 11)। वह बुद्धि, सुन्दरता तथा परिपूर्णता से भरपूर था (कम से कम यह विचार वह दूसरों को देना चाहता था)। वह अदन की वाटिका में रहता था और

जिनकी कल्पना की जा सकती वे सारे बहुमूल्य पत्थर उसके चारों ओर थे (पद 13)। जब यहेजकेल यहां अदन की वाटिका की बात करता है, तो कविता की भाषा में बोल रहा है। उसने सोर की अदन की, वाटिका से तुलना की, उसकी सुन्दरता तथा परिपूर्णता के कारण।

राजा होने के नाते 'वह छाने वाला करूब' था या 'मुख्य करूब'। वह मानो परमेश्वर के अपने पर्वत पर रहता था, परमेश्वर की उपस्थिति के तेज में। अपनी सब बातों में वह सिद्ध था, जब तक उसका पतन न हुआ। हम इसे शाब्दिक रूप में न लें। यहां यहेजकेल पद्य की भाषा में बोल रहा था। सोर का राजा केवल एक मनुष्य था जो अपने को ईश्वर समझता था। वह स्वयं को अपने सब तरीकों में पूर्ण तथा सिद्ध मानता था। परन्तु वह दरअसल एक मनुष्य था, जो पाप व अधर्म से गहराई से फंसा हुआ था। वह अपने व्यापार की अधिकाई के कारण हिंसा से भरा था (पद 10)। भौतिकवाद के ईश्वर ने उस पर जय पाई। वह अहम से तथा अपनी सम्पत्ति से फूला हुआ था। इस कारण मुख्य करूब को परमेश्वर की उपस्थिति से निकाल दिया गया। उसको अग्निमय पत्थरों से हटा दिया गया (पद 16)। क्या यह संदर्भ उन बहुमूल्य पत्थरों व धन को बताता है जो उसने जमा किया था? अन्त में यह सब व्यर्थ ठहरेगा।

उसका हृदय अपनी सुन्दरता के कारण अहंकार से ऊंचा था (पद 17)। जो बुद्धि परमेश्वर ने उसे दी थी उसने उसे दुष्ट-कर्मों के लिये प्रयोग करके भ्रष्ट कर दिया था। इस कारण उसे पृथ्वी पर निकाल दिया गया था कि दूसरे उस पर चलें। वहां पृथ्वी पर उसकी सुंदरता व महिमा को रोक दिया गया। पद 8 में देखें कि सोर के राजा को विश्वास का कोई प्रयोग न था। अपने पापों के द्वारा उसने वेदियों को अशुद्ध किया। परमेश्वर उसके विरुद्ध अग्नि भेजेगा। वह आग उसे भस्म कर देगी और देखने वालों के सामने राख बना देगी (पद 18)। हर कोई जो उसको जानता था शून्य हो जायेगा (पद 19)। परमेश्वर सर्वशक्तिमान के हाथ के द्वारा पृथ्वी के इस धनी व्यक्ति के पास कुछ न बचेगा। हर कोई देख सकेगा कि परमेश्वर लोगों की बड़ी शक्ति व बुद्धि पर हंसता है। परमेश्वर के सामने महानतम् लोग भी मच्छर समान हैं।

पद 20-26 में परमेश्वर पड़ोसी नगर सीदोन की बात करता है। परमेश्वर को उस नगर में भी महिमा प्राप्त होगी। वह उसमें महामारी भेजेगा। उसकी सड़कों पर लहू बहेगा। चारों ओर से उसके विरुद्ध एक तलवार

उठेगी। उसको भी दण्ड मिलेगा। उसको दण्ड मिलेगा क्योंकि वह इस्राएल के घराने के लिये 'पीड़ादायक कांटेदार झाड़ी' था। परमेश्वर उन बातों के प्रति अंधा नहीं जो उसने उसकी प्रजा के विरुद्ध कीं। वह सीदोन को उन पापों के लिये दण्ड देगा जो उसकी संतान के विरुद्ध किये गये।

परमेश्वर की प्रजा के लिये भविष्यवाणी के साथ, जो निर्वासन में थे यहेजकेल इस विभाग को समाप्त करता है (पद 25-26)। उसने भविष्यवाणी की कि उन्हें जमा करके फिर स्वदेश लौटाया जायेगा। वहां वे सुरक्षित रहेंगे और प्रभु की आशीष को जानेंगे, जब वह उनके देश को स्मृद्ध करेगा। वह हमें बताता है कि परमेश्वर उन सब को दण्ड देगा जो जातियां उसकी प्रजा का अपमान करती थीं। यद्यपि यह इस्राएलियों के लिये अपनी प्रजा के रूप में एक विशेष प्रतिज्ञा है, यह आज हम विश्वासियों के लिये भी एक प्रतिज्ञा है। लोगों के साथ क्या हो रहा है परमेश्वर उसकी अनदेखी नहीं करता। हम उसके लिये बहुमूल्य हैं और वह हमसे बहुत प्रेम करता है।

इस विभाग का आज हमसे क्या मतलब है? यहां अपने सामने हम एक महान राजा का चित्रण देखते हैं। भौतिकवाद के ईश्वर ने उसका नाश कर दिया। धन के प्रभु व आराम के जीवन ने उसको परमेश्वर से दूर कर दिया। अपनी स्मृद्धि में हम परमेश्वर को कितना सस्ता समझने लगते हैं। हम आभास नहीं कर पाते कि यदि सर्वशक्तिमान परमेश्वर न होता तो हम अपने परिवारों की आवश्यकताओं की पूर्ति भी न कर पाते। हमें इस बात का कितना अधिक आभास होना चाहिये। जैसा परमेश्वर ने सोर में किया, वह हमारे साथ भी कर सकता है। कितनी जल्दी वह अपनी आशीषों को हमसे हटा सकता है। हम उसको वैसे ही न समझें। आइये, दैनिक आधार पर आशीषों के लिये उसकी स्तुति व धन्यवाद करें। आपकी भौतिक सम्पत्ति आपकी उस समझ को न छीन ले कि आप अपने परमेश्वर पर कितने निर्भर हैं।

### *विचार करने के लिये:*

- आप क्यों सोचते हैं कि सोर के राजा के विचार अपने विषय इतने ऊंचे थे? क्या इसमें कुछ न्यायोचित था?
- क्या हमारे लिये यह संभव है कि आज वैसे ही फन्दे में हम फंस जायें? कुछ उदाहरण दें कि हम कैसे अहंकारी हो सकते हैं।

- क्या यह संभव है कि हमारी कलीसियाओं में भी हम अपनी मण्डली व परमेश्वर के वरदानों के विषय घमण्डी हो जाते हैं?

***प्रार्थना के लिये:***

- परमेश्वर से मांगें कि आपको समझ दे कि हमारे अहं में कुछ नहीं है, जिसके विषय हम घमण्ड करें क्योंकि जो भी आपके पास है वह परमेश्वर के हाथ से मिलता है।
- परमेश्वर से उन समयों के लिये क्षमा मांगें जब आपने विश्वास किया कि यह आपकी बुद्धि व आपकी शक्ति के कारण था कि आपने अपने उद्देश्य को पूरा कर लिया।
- परमेश्वर का धन्यवाद करने के लिये क्षण भर निकालें, उसकी बुद्धि व शक्ति के लिये। उसको उन सब आशीषों का स्रोत जानें।

30

# एक महान जाति का पतन

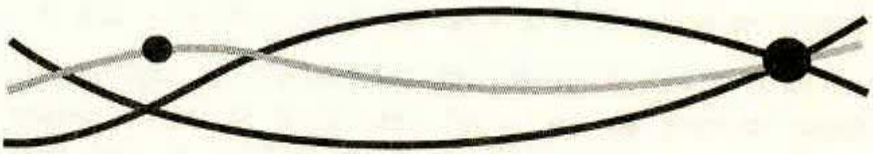

*पढ़ें यहेजकेल 29*

मिस्र राष्ट्र भी अपने समय का एक अति प्रभावशाली राष्ट्र था। आज के दिन भी हम उसकी संस्कृति तथा उपलब्धियों पर विस्मित होते हैं। अद्‌भुत पिरामिड आज के हमारे आधुनिक युग में भी बहुतों को आकर्षित करते हैं। उसके बीते समय की दौलत पर हम विस्मित होते हैं। इतिहास में उसके फिरौन संसार के सबसे प्रभावशाली लोगों में से हुए हैं। अध्याय 29-32 यहेजकेल के इस महान राज्य मिस्र के विषय हैं। परमेश्वर को उससे बहुत कुछ कहना था।

यहेजकेल 29 में भविष्यवक्ता ने मिस्र का वर्णन करने के लिये दो उदाहरण लिये। इनमें से पहला चित्रण एक बड़े समुद्री जीव का था (पद 3-6)। यहां हमें इस बड़े जीव के विषय कुछ बातों पर ध्यान देना है। पहले ध्यान दें कि यह जीव दावा करता था कि महानद नील उसका है। नील नदी मिस्र राष्ट्र की प्रस्तुती थी। गत मनन में हमने देखा कि किस प्रकार परमेश्वर ने सोर की तुलना एक महा-जलयान से की (क्योंकि वह बन्दरगाही नगर था)। नदी का चित्रण मिस्र के लिये अति उपयुक्त था, क्योंकि नील नदी इस देश से बहती थी और उसके धन का आधार थी।

यहां हम देखते हैं कि यह महाजीव दावा करता था कि नदी उसने बनाई है और वह उसकी है। फिरौन एक अति अहंकारी व्यक्ति था। वह विश्वास करता था कि मिस्र की महानता उसकी अपनी बुद्धि तथा कुशल प्रशासन का परिणाम थी। यह विश्वास करना हमारे लिये कितना सरल होता है कि हम सब कुछ कर सकते हैं। यह महसूस करना सरल होता है कि जहां हम आज हैं इसलिये हैं क्योंकि हमारे अन्दर कौशल व योग्यताएं हैं। फिरौन नहीं महसूस कर सका कि यदि इस्राएल का परमेश्वर न चाहता तो उसके पास कुछ न होता। यहां तक कि अविश्वासी भी उस सब के लिये पूर्णतया परमेश्वर पर निर्भर होते हैं जो उनके पास है या उन्होंने प्राप्त किया है।

पद 4 में ध्यान दें कि नील की छोटी मछलियां इस समुद्री जीव के छिलकों पर चिपट गईं। जब कि हमें बताया गया है कि ये छोटी मछलियां क्या थीं, तो स्पष्ट है कि वे मिस्र के प्रति भक्तिपूर्ण थीं। वे उसकी शक्ति व सामर्थ की सराहना करती थीं। रक्षा के लिये वे उससे चिपटी थीं।

परमेश्वर मिस्र के विरुद्ध था। पद में वह उससे कहता है कि वह उनके जबड़ों में बड़े कांटे डालकर उसे कुशल मछुवारे के समान नील से निकाल लेगा। फिर वह उसे एक बंजर स्थान में ले जायेगा और धूप में नाश होने के लिये छोड़ देगा। वहां वह अपने अनुयायियों के साथ नाश होगी, जो उससे चिपटे हुए थे। आकाश के जंगली पक्षी आकर उनके सड़े मांस को खायेंगे, उसके, जो कभी को एक महान राष्ट्र था। उसका अहंकार तोड़ दिया जायेगा। जब ऐसा होगा तो सब जानेंगे कि इस्राएल का परमेश्वर ही एकमात्र सत्य परमेश्वर है। फिरौन यद्यपि स्वयं को ईश्वर समझता था, वह केवल व्यक्ति था।

दूसरे चित्रण में, यहेजकेल ने मिस्र की तुलना एक सरकण्डे से की (पद 6-7)। यिर्मयाह 41-42 में हम पढ़ते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर के लोग मिस्र को भाग कर अपनी विपत्ति में सहायता पाने गये। परन्तु मिस्र परमेश्वर के लोगों के लिये एक टूटा सरकंडा सिद्ध हुआ। जब परमेश्वर के लोगों ने सहायता के लिये सरकंडे का सहारा लेना चाहा तो वह टूट गया तथा उनका कंधा टूट गया और कमर मुड़ गई। मिस्र का सरकंडा परमेश्वर के लोगों का उनकी विपत्ति के समय उनका सहायक न हुआ। आज भी हम बहुत से सरकंडों के उदाहरण हैं। यहां हमें जो सीखना है वह यह है कि जो सुरक्षित दिखाई देता है दरअसल हमें अन्त में बंजर व सूखा छोड़ता है। केवल

परमेश्वर ही हमारी सुरक्षा हो सकता है। इस्राएल को यह कठोरता से सीखना पड़ा।

यह महान राष्ट्र जो पृथ्वी का गर्व था, अब परमेश्वर के दण्ड की तलवार का आभास पायेगा। वह स्मृद्ध डेल्टा नील का मरुस्थल बन जायेगा (पद 9)। पद 9 हमें बताता है कि परमेश्वर मिस्र को एक बंजर स्थान बना देगा क्योंकि उसने अपनी महानता पर अहंकार किया (पद 11-12)। चालीस वर्ष तक न तो पशु न मनुष्य इस कभी को स्मृद्ध देश में से होकर गुज़रेंगे। वे वैसा ही दुख उठायेंगे जैसा परमेश्वर की प्रजा ने उठाया। उस पर भी आक्रमण कर बंधुवाई में लिया जायेगा। उसे भी बाबुलवासियों द्वारा पृथ्वी पर बिखेर दिया जायेगा। चालीस वर्षोंखतक उनका देश जंगली पशुओं का निवास होगा। इन चालीस वर्षो के बाद वह अपने देश लौटेंगे (पद 13-14)। वह फिर कभी महान न होगा और एक निम्न राष्ट्र रहेगा (पद 14)। फिर कभी संसार के भरोसे के योग्य न बनेगा, जैसा वह यहेजकेल के दिनों में था (पद 16)। आज तक यह भविष्यवाणी सत्य हो रही है। मिस्र ने फिर कभी उस सामर्थ व प्रभाव को न पाया जो कभी एक राष्ट्र के रूप में उसके थे। बाइबल हमें बताती है कि इस दण्ड का कारण उसका अहंकार था। मिस्र देश आज हमारे लिये अहंकार व आत्म-विश्वास के खतरे का एक तात्कालिक उदाहरण है।

पद 17-20 में परमेश्वर हमें दिखाता है कि यह भविष्यवाणी किस प्रकार पूरी होगी। नबूकदनेस्सर, बाबुल का राजा, मिस्र पर आक्रमण करेगा। परमेश्वर ने उसे इस्राएल व यहूदा के विरुद्ध दण्ड के उपकरण के रूप में प्रयोग किया। अध्याय 26-28 में हमने देखा कि वह सोर पर दण्ड के लिये भी परमेश्वर का उपकरण था। अब वह मिस्र पर आक्रमण करेगा और उस को भी जीत लेगा। यहां पद 8 में ध्यान दें कि सोर की घेराबंदी नबूकदनेस्सर के लिये सरल न थी। टीकाकार हमें बताते हैं कि यह घेराबन्दी 13 वर्ष तक रही। जब अन्ततः बाबुल ने सोर पर जय पाई वह इस युद्ध पर इतना व्यय कर चुका था कि उसे इस जय से कुछ प्राप्त नहीं हुआ। यहां पद 18 में परिश्रम की प्रस्तुती को देखिये। एक सेना के रूप में उन्होंने सोर के विरुद्ध बहुत परिश्रम किया। देश को जीतने के प्रयत्न में वे गंजे हो गये, और उस भारी बोझ से उनके कंधे ज़ख्मी हो गये, जय के इन वर्षों में। मिस्र के साथ ऐसा नहीं होगा। मिस्र नबूकदनेस्सर को एक इनाम के रूप में दिया गया।

मिस्र के लिये लड़ाई वह लड़ाई थी जो बाबुल के धन को बढ़ायेगी। यहां नबूकदनेस्सर राष्ट्रों पर उसके दण्ड को लाने के सेवक के रूप में परमेश्वर से मज़दूरी पायेगा।

जब यह भविष्यवाणी पूरी हुई, परमेश्वर एक बार फिर इस्राएल में 'सींग' उगने कारण होगा (पद 21)। परमेश्वर अपने लोगों को सामर्थ लौटायेगा। मिस्र का पतन युग का चिन्ह था। जब इस्राएल ने मिस्र के पतन को देखा, वह जानेगा कि उसका छुटकारा निकट है। उस समय परमेश्वर ने यहेजकेल को बताया कि उसका मुंह खोला जायेगा, और वह फिर इस्राएल के बात करेगा, जैसे पहले की थीं (पद 21)। यह उसके साथ ठीक बैठेगा जो परमेश्वर ने भविष्यवक्ता से 24:25-27 में पहले ही कह दिया था। इस से हम समझते हैं कि कुछ समय के लिये, यहेजकेल परमेश्वर के लोगों से बातें नहीं करेगा। केवल मिस्र के पतन के बाद परमेश्वर फिर यहेजकेल को इस्राएल के घराने के पास वचन देकर भेजेगा। भविष्यवक्ता के रूप में यहेजकेल को सीखना था कि कब परमेश्वर का वचन सुनाना है और कब चुप रहना है। उसको वैसे ही बोलना था, जैसे परमेश्वर उसे अगुवाई देगा। मेरा विश्वास है यहां हमारे लिये एक शिक्षा है। क्या हममें अपने जीवनों में प्रभु की अगुवाई की पहचान की पर्याप्त समझ है? कितनी बार हम बोलते हैं जब हमें चुप रहना चाहिये, या चुप रहे हैं जब हमें अन्तर जानने को बोलना चाहिये था? काश परमेश्वर हमें परख दे।

### *विचार करने के लिये:*

- अहंकार व अहंकार के खतरे के विषय इस अध्याय से हम क्या सीखते हैं?
- क्या आपने कभी अहंकारी होने की परीक्षा को महसूस किया है? आपके जीवन के किस क्षेत्र में आपको सबसे अधिक अहंकार की परीक्षा आई?
- क्या यह संभव है कि जो मिस्र का हुआ वह हमारे राष्ट्र के साथ भी हो सकता है? आज हम किन चीज़ों से अपना भरोसा जोड़ते हैं?

*प्रार्थना के लिये:*

- क्षण भर सोचें कि प्रभु बिना आज आप कहां होते। जो उसने आपके जीवन से किया उसके लिये परमेश्वर की स्तुति करें।
- प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपको इस अहंकार के बड़े पाप से बचाये। अभी किसी अहंकार का अंगीकार करें जो आपमें हो और परमेश्वर से मांगें कि आपको दीनता प्रदान करे।
- क्या जब नहीं बोलना चाहिये था आप पर बोलने की परीक्षा आई? क्या आप तब चुप रहे जब आपको बोलना चाहिये था? परमेश्वर से सहायता मांगें कि आप अन्तर जान सकें।

31

# मिस्र के लिये तलवार

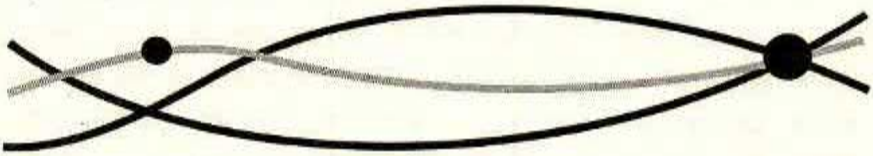

*पढ़ें यहेजकेल 30*

मिस्र की शक्ति ने बहुत लोगों को आकर्षित किया। यहां तक कि यूसुफ के समय इस्राएलियों ने भी उसकी आशीष से लाभ उठाया। गत मनन में हमने देखा कि जो उसके पास था उसके कारण फिरौन अति अहंकारी हो गया। वह सचमुच समझता था कि अपने कौशल तथा प्रशासन के द्वारा उसने राष्ट्र को वैसा बना दिया जैसा वह उस के समय था। अपने समय के संसार पर उसका बड़ा सामर्थी प्रभाव था। अपनी स्मृद्धि के कारण मिस्र सुरक्षित महसूस करता था।

इस अध्याय में परमेश्वर फिर यहेजकेल से मिस्र के लोगों के विषय में भविष्यवाणी करने को कहता है। पद 2 में ध्यान दें कि उसका 'विलाप' करना उस कारण है जो मिस्र पर बीतने वाला था। उसके दण्ड का दिन निकट था। वह दिन मिस्र के इतिहास में अति अंधियारे का दिन होगा। उसको अन्यजातियों का दिन कहा गया है, अन्यजाति संसार के अविश्वासियों के लिये दण्ड का दिन। मिस्र ने स्मृद्धि तथा प्रसिद्धि का जीवन जिया था, अब उसके दण्ड का समय आ गया। वह इस दिन के लिये तैयार न था। यह भयंकर दण्ड का दिन था। उसकी धन व स्मृद्धि उस दिन कोई अर्थ न रखेगी।

इस महान जाति पर एक बड़ी तलवार गिरने वाली थी। यह परमेश्वर के दण्ड की तलवार थी। कूश (इथियोपिया) में दुख होगा। जब तलवार मिस्र पर चलेगी तो उसका धन जाता रहेगा। उसके निवासी मारे जायेंगे और उसकी नींवें ढा दी जायेंगी (पद)। वे सब चीज़ें जिनमें उसके लोग आनन्दित होते थे (उसका निर्माण कार्य तथा धन) अन्त में मूल्यहीन होंगे। मिस्रियों को इस सृष्टि के परमेश्वर के सामने नंगा किया जायेगा कि उसको उत्तर दें कि उन्होंने अपना जीवन किस प्रकार जिया।

पद 5 व 6 में ध्यान दें कि न केवल मिस्र का पतन होगा बल्कि उन सब का भी जो उसके साथ मिल गये थे। वे मिस्र की महिमा पर विस्मित थे। वे उसके धन व प्रभाव के कारण उसके पास इकट्ठे हो गये थे। मिस्र ने उन्हें आकर्षित कर भटका दिया। अब उन्हें भी मिस्र के साथ दुख उठाना पड़ेगा। ऐसा कभी न कहा जाये कि आपके पापों का प्रभाव केवल आप पर होता है। सच तो यह है कि हम सब किसी न किसी प्रकार दूसरों के जीवनों को स्पर्श करते हैं। आपका उन पर क्या प्रभाव है जो निरन्तर आपके सम्पर्क में रहते हैं? क्या उसके कारण जो उन्होंने आपके जीवन में देखा उनका भी नाश होगा?

पद 7-9 हमारे लिये उस भयानक अन्त को बताता है जिनका पतन मिस्र के बुरे उदाहरण के कारण हुआ। ये देश निर्जन व नाश होंगे (पद 7)। उनको जलाकर भस्म कर दिया और रौंदा जायेगा (पद 8)। पद 9 हमें बताता है कि उन पर पीड़ा छा जायेगी। जो मिस्र के आकर्षण के शिकार होकर पतित हो गये। उनके लिये कितना भयंकर समय रखा है। मिस्र अपने चाहनेवालों को सीधे नरक ले जा रहा था। कितनों ने आज विश्वासियों के जीवन में बुरे उदाहरणों को देखकर एकमाज अनन्त जीवन मुंह फेर लिया है? मिस्र को दोष सहना पड़ा। ये पद हमें किस प्रकार प्रभु के लिये जीने के लिये और उसके अच्छी साक्षी बनने के लिये चुनौती देते हैं, इसलिये हम मिस्र के दोष को अपने कंधों पर नहीं लेते।

पद 9 में ध्यान दें, किस प्रकार परमेश्वर ने यहेजकेल को बताया कि वह एक दूत को इथियोपिया (कूश) भेजेगा, उनको उनकी सुस्ती व लापरवाही से भयभीत कर निकालने के लिये। क्या उस दूत के आज हमारे पास आने की भी आवश्यकता है? कितनी बार हमने विश्वासी होने के नाते प्रभु यीशु के प्रति सुस्ती व लापरवाही की है? कितनी बार हमने अपनी

रीतियों व धार्मिक अनुष्ठानों से स्वयं को सुरक्षित महसूस किया है और स्वयं को आत्मिक रूप से सोते पाया है? यह उस लड़ाई के प्रति जो सत्य के प्रति हमारे सामने है कितना जागरुक होता है और उनकी अन्ततः नियति के लिये जिन्होंने प्रभु से मुंह फेर लिया है। हमें किस प्रकार नया होना है तथा परमेश्वर के साथ अपनी चाल में नवीनीकरण लाना है। यहां ध्यान दें कि परमेश्वर ने इथियोपिया को दण्ड नहीं दिया जब तक पहले चेतावनी न दी। उसने उसे अपनी ओर आने के लिये पहले दूत भेजा, परन्तु उसने सुनने से इंकार किया।

परमेश्वर मिस्र पर बाबुल के द्वारा महादण्ड लायेगा (देखें पद 10-12)। बाबुल की सेना सब सेनाओं से भयावनी थी। वे अपनी शक्ति व क्रूरता के लिये जाने जाते थे (पद 11)। वह मिस्र पर टूट पड़ेगी व उसके मित्रों पर और उन्हें नाश करेगी। मिस्र की महिमा अन्ततः समाप्त होगी। देश मिस्र के मारे हुओं से भर जायेगा (पद 12)। परमेश्वर द्वारा दण्ड नील नदी को सुखा देगा (पद 12)। यह सब पर स्पष्ट होगा कि परमेश्वर का हाथ उनके विरुद्ध था।

पद 13-19 अधिक विस्तार से उस बर्बादी को बताते हैं जो परमेश्वर के दण्ड के दिन होगा। मेम्फिस (नोप) की मूर्तियों का अन्त होगा (पद 13)। मिस्र देश में कोई प्रधान न उठेगा (पद 13)। पूरा राष्ट्र भय की छाया में चला जाएगा (पद 13)। एक बार उन्हें विश्वास था कि महान फिरौन उनकी रक्षा करेगा। आज वे अपने शत्रुओं से आतंकित हैं। ऊपरी मिस्र निर्जन छोड़ा जायेगा और ज़ोआन को जलाकर भस्म कर दिया जायेगा। (पद 7) थीब्स नगर को दण्ड मिलेगा; उसको 'तूफानी' आक्रमण से ले लिया जायेगा, और उसके बहुत से निवासी मारे जायेंगे (पद 14-16)। पेलूसियम महानगर परमेश्वर के क्रोध के बल और पीड़ा। को अनुभव करेगा (पद 15-16)। नोप में प्रतिदिन परेशानी होगी (पद 16)। आवेन और पीबेसेत के युवक परमेश्वर द्वारा दण्ड की तलवार से मारे जायेंगे और उनके नगरों के निवासी बंधुवाई में जायेंगे। वे बाबुल की महान सेना से अपने नगरों की रक्षा नहीं कर सकेंगे (पद 17)। मिस्र के लिये वह अति अंधियारे का दिन होगा, जब परमेश्वर उन पर दण्ड लायेगा। यहेजकेल ने भविष्यवाणी की कि मिस्रियों को उनके देश से ले जाकर बंधुवाई में ले जाया जायेगा (इस्राएल व यहूदा के समान)। यह सब इस प्रकार होगा कि मिस्र देश को मानना होगा कि इस्राएल का परमेश्वर एकमात्र सत्य परमेश्वर है (पद 19)।

परमेश्वर ने यहेजकेल को 20-26 पद में एक चित्र दिया। यहां वह फिरौन की बांह तोड़ने की बात करता है। फिरौन की बांह का तोड़ना उसके कमज़ोर हो जाने का प्रतीक है। एक हाथ टूटने पर फिरौन उतना सामर्थी न रहा जितना कभी को था। यह बाबुल के प्रथम आक्रमण से संबंधित है जिससे मिस्री इतनी कमज़ोर दशा में हो गये कि वे नुकसान की भरपाई न कर सके या ज़ख्मों पर पट्टी न बांध सके। जबकि मिस्र टूटे हाथ की पीड़ा सह रहा था, परमेश्वर फिर आक्रमण करेगा और उस समय दूसरा हाथ भी तोड़ा जायेगा और मिस्र पूर्णतया सामर्थहीन हो जायेगा। उसकी तलवार उसके हाथ से छूट जायेगी (इस्राएल के परमेश्वर के सामने उसकी एक भी रक्षा नीति न चलेगी)। एक जाति के रूप में उनको समस्त जातियों में बिखेर दिया जायेगा। अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये, परमेश्वर बाबुल के राजा के हाथ को मज़बूत करेगा। इस दुष्ट राजा के द्वारा, परमेश्वर मिस्र को उसके पाप के लिये दण्ड देगा।

वह जाति कितनी प्रभावशाली व शक्तिशाली क्यों न रही हो, मिस्र का पतन हो गया। उस का पतन हुआ क्योंकि वे अहंकारी लोग बन गये। उस का पतन हुआ ताकि परमेश्वर उसको दिखा सके कि वही परमेश्वर है। उसके राजा ईश्वर होने का दावा करते थे। सिद्ध हो गया कि वे केवल मनुष्य थे। इस कहानी का दुखद पहलू यह है कि बहुत सी जातियां मिस्र के फन्दे में फंस गईखवे फिरौन पर तथा उसकी शक्ति व प्रभाव पर विश्वास करते थे। उनको उस पर भरोसा था, पर अन्त में उनका नाश हुआ। हम कितनी बार परमेश्वर के नहीं, लोगों के अनुयायी बन जाते हैं? हम लोगों पर भरोसा नहीं कर सकते। केवल परमेश्वर ही हमारे पूर्ण भरोसे के योग्य है। कितने लोगों को मिस्र के जीवन ने स्पर्श किया? कितने लोगों पर उसकी शक्ति के धन का नशा था? मैं हैरान होता हूं कि कितने लोग मेरे नकारात्मक व्यवहारों व कार्यों से प्रभावित हुए होंगे। काश परमेश्वर हमें अनुग्रह दे कि अपने चारों ओर के लोगों को प्रभावित कर सकें, भलाई के लिये, न कि बुराई के लिये।

### *विचार करने के लिये:*

- यह अध्याय हमें संसार के सामने मसीह की साक्षी देने के महत्व के विषय क्या सिखाता है?
- आप अपने चारों ओर के लोगों के लिये कैसी साक्षी दे रहे हैं?

- क्या कभी आपने स्वयं को विशिष्ट व्यक्तियों की ओर व उनकी शिक्षाओं की ओर आकर्षित होते पाया है? लोगों पर भरोसा करना क्यों खतरनाक है?

***प्रार्थना करने के लिये:***

- परमेश्वर से उनकी अन्ततः नियति के लिये समझ मांगें, जो प्रभु को नहीं जानते।
- परमेश्वर से सहायता मांगें कि आप उनके लिये सत्य व विश्वासयोग्य साक्षी हो सकें जिनके सम्पर्क में आप निरन्तर आधार पर आते हैं।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि केवल वही हमारे पूर्ण भरोसे के योग्य है।
- क्या आप ऐसे व्यक्तियों को जानते हैं जो लोगों के अनुयायी बन गये हों न कि परमेश्वर के? प्रार्थना करें कि परमेश्वर उनकी आंखों को खोले।

32

# अश्शूर का उदाहरण

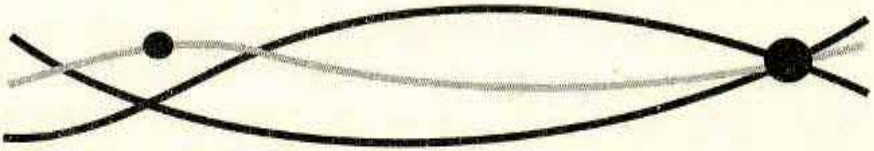

*पढ़ें यहेजकेल 31*

ऐसा माना जाता है कि त्रासदी किसी और के साथ होती है। नहीं लगता कि वह कभी हमारे साथ भी होगी। कम से कम ऐसा ही हम सोचते हैं जब तक हमारे किसी निकट के व्यक्ति को त्रासदी न भुगतनी पड़े। तब हमें विवश होकर सत्य में जाना होता है कि वह हमारे साथ भी हो सकती है। मिस्र बड़ा व सामर्थी था और उसे विश्वास था कि उसको कुछ नहीं हो सकता था। परमेश्वर उसकी इस झूठी आशा को जानता था जिसमें वह लिप्त था और उसको एक महान जाति का उदाहरण दिया जो इसी प्रकार सोचती थी। परमेश्वर ने मिस्र को यह उदाहरण दिया ताकि उसे आभास हो कि दण्ड उन पर भी पड़ सकता था।

पद 2 में ध्यान दें कि प्रभु ने फिरौन से प्रश्न पूछा, 'अपनी महानता में तू किसके समान है?' यह प्रश्न हमें दिखाता है कि मिस्र अपने विषय क्या सोचता था। वह एक महान राष्ट्र था। परन्तु उसे लगता था कि उसकी महानता उसे बचा लेगी। परमेश्वर इतिहास की एक महान् शिक्षा उसको देने जा रहा था, जो सिद्ध करेगी कि महानता दण्ड से छुटकारे की गारंटी नहीं है।

परमेश्वर ने अश्शूर जाति के उदाहरण का प्रयोग किया। पद में उसने अश्शूर की तुलना लबानोन के एक ऊंचे देवदार से की। ध्यान दें इस ऊंचे

देवदार के विषय में उसने क्या कहा। उसकी सुन्दर डालियां थीं जो जंगल में छाया करती थीं। बहुत लोग उसकी छाया में सुरक्षा पाते थे। वह एक अति ऊंचा वृक्ष था और जंगल के वृक्षों से भिन्न था। इतिहास में एक अवसर पर अश्शूर पृथ्वी की सबसे सामर्थी जातियों में से एक थी।

अश्शूर का देवदार अच्छी तरह सींचा गया था। जाति के रूप में उसने अधिकाई से परमेश्वर की आशीषों को पाया था। बहुत लोगों को अश्शूर की स्मृद्धि से लाभ हुआ था। उसने चारों ओर के जंगल के वृक्षों तक पहुंच की (पद 4)। अश्शूर जाति को 'जंगल के सभी वृक्षों' से ऊंचा किया गया (पद 5)। उसके समय में कोई भी जाति ऐसी न थी जिसकी तुलना उससे की जाती। उसकी डालियां लम्बी हो गईं, जब कि उसने अपनी सीमाओं को बढ़ाया। उसकी डालियां बहुत होंगी जब कि उसने अधिक और अधिक जातियों को जीत लिया और उनको अपने आधीन होने को विवश किया (पद 5)। बहुत सी जातियों ने डालियों के आश्रय में अपने घर बना लिये, वे अश्शूर के आधीन थे और कर भी देते थे। यहां तक कि आकाश के पक्षी अपना बसेरा उसकी डालियों में बनाते थे। हरेक इस महान व स्मृद्ध जाति अश्शूर का ऋणी था। दूसरे देवदार वृक्ष, चीड़ के वृक्ष या सीधे साधे वृक्ष उसकी सुन्दरता व शक्ति की तुलना में कुछ न थे (पद 8)। अश्शूर पर परमेश्वर की ऐसी आशीष थी। वह वाटिका के शेष सब वृक्षों के लिये ईर्ष्या का कारण था (पद 9)।

परन्तु, ध्यान दें कि इस महान व सुन्दर देवदार वृक्ष के साथ क्या हुआ। पद 6 हमें बताता है कि वह अति अहंकारी हो गई। शिखर पर पहुंचना सदा सरल नहीं होता। लगता है शैतान उनको निशाना बनाता है जो स्मृद्ध व सफल होते हैं। कितने लोग शिखर तक पहुंच गये, परन्तु दूसरी ओर गिरने के लिये, अहंकार के कारण? जब सब कुछ ठीक चलता है, तो शत्रु के आक्रमण से सावधान रहें। यही अश्शूर के साथ हुआ। अपने धन व स्मृद्धि में, वह परमेश्वर से फिर गये। यही कहानी परमेश्वर के लोगों की है। जब लगता था कि उनके लिये सब ठीक चल रहा है, तो शीघ्र उन्होंने परमेश्वर से मुंह मोड़ लिया। परमेश्वर ने उनके घमण्ड के कारण अश्शूर को दण्ड दिया। उनको उनकी दुष्टता, अहंकार व ढीठपन के कारण उनके देश से निकाल दिया गया। सबसे भयंकर जातियों ने अपनों को ही काटा और उनकी डालियों को काट डाला। वह परमेश्वर की महान आशीष की नदी के किनारे

टूटा पड़ा था। उस आशीष को पाने के बदले, धन्यवाद की अपेक्षा, उन्होंने अहंकारी व ढीठ होना चुना। इसके परिणाम में उनका पतन हुआ। जिन जातियों ने उन्हें सराहा था वे उसके पास से हट कर कहीं और चली गईं। अपनी मृत्यु में वह अकेला था। पद 14 हमें बताता है कि वह जातियां जिन्होंने उसकी पराजय को देखा, कभी अपनी स्मृद्धि का बखान न करेंगी। वे उस शिक्षा को लेंगी जो परमेश्वर अहंकार व ढीठता के विरुद्ध, अश्शूर के द्वारा उन्हें सिखाना चाह रहा था।

यदि ये बातें महान् जाति अश्शूर के साथ हुईं, तो क्या वे मिस्र के साथ नहीं हो सकतीं? जातियां मिस्र के पतन के कारण कापेंगीं। उसके दण्ड के दिन, परमेश्वर नदी को रोक देगा ताकि वह आगे को मिस्र के लिये आशीष का कारण न हो। मिस्र राष्ट्र कब्र तक या नरक तक पहुंचाया जायेगा। मिस्र गड़हे में दूसरी पतित जातियों के साथ जायेगा। अदन व लबानोन उसी गड़हे में थे। यद्यपि मिस्र के समान सामर्थी न थे, मृत्यु के समान थे। जैसा महान वह कभी को था, मिस्र, जल्दी ही निर्जन व बंजर पड़ा होगा। महान फिरौन दीन किया जायेगा और उसके देश की नीचा किया जायेगा।

अपनी स्मृद्धि व सफलता के समय बड़े बोल बोलना कितना सरल है। अन्ततः हम किस बात के विषय बड़ा बोल बोलें? हमारी समस्त महानता क्षण भर में जा सकती है। जो हमारे पास है वह सब परमेश्वर के कारण है। मेरे इस पृथ्वी पर संक्षिप्त वर्षा के समय में मैंने बड़ी कलीसियाओं को देखा है जो मुक्केबाज़ी के घेरे के समान हो गईं, जहां विश्वासी एक दूसरे को मुक्के मारते हैं। मैंने बीमारी या बुढ़ापे के द्वारा लोगों की शक्ति को शून्य होते देखा है। मैंने मित्रों को देखा है जिनके सुरक्षित आर्थिक भविष्य थे और जिनका सब जाता रहा और जीवन के अन्तिम भाग में उन्हें आरम्भ करना पड़ा। मैं ने युवकों की जवानी के समय मृत्यु को देखा है। मेरा इस पृथ्वी पर सीमित अनुभव मुझे बताता है कि मैं किसी बात के विषय बड़ा बोल नहीं बोल सकता, क्योंकि कल तक सब कुछ जाता रह सकता है। यह कितना ढीठपन है कि अपनी सुरक्षा या शक्ति के विषय बोलूं। काश परमेश्वर हमें वह सबक सिखा सके जो मिस्र को सीखना होगा, इससे पहले कि देर हो जाये।

### *विचार करने के लिये:*

- इस जीवन में किन वस्तुओं के बारे में आप सोचते हैं कि यह तो होना ही था? कितनी जल्दी ये वस्तुएं आप से ली जा सकती हैं? इस जीवन में कुछ भी पाने की हमारी गारंटी क्या है?
- हमारा बड़ा बोल दरअसल क्या दिखाता है कि हम किसको समझते हैं कि नियंत्रण किसका है?
- आप क्यों सोचते हैं कि परमेश्वर अहंकार को इतनी गम्भीरता से लेता है?

### *प्रार्थना के लिये:*

- परमेश्वर का उन बहुत सी आशीषों के लिये धन्यवाद करें जो आपके जीवन में उसने की हैं।
- इन आशीषों को उसके हाथ में दें। परमेश्वर से कहें कि वह जो चाहे उनके साथ करे।
- परमेश्वर से उन समयों के लिये क्षमा मांगें जब आपने सोचा कि ये आशीषें तो आपको मिलनी ही चाहिये थीं।
- उसको धन्यवाद करें कि केवल वह ही हमारे विश्वास के योग्य है। उसकी स्तुति करें कि केवल उसमें ही हम सुरक्षित हैं।

33

# मिस्र तथा उसके मित्र

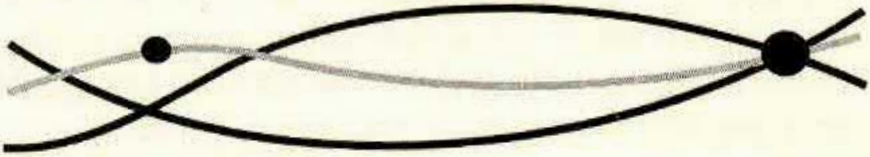

*पढ़ें यहेजकेल 32*

यहां मिस्र की तुलना एक जवान सिंह से की गई है, जातियों के मध्य शक्ति से परिपूर्ण तथा जीवन्त (पद 2)। वह जवानी के समय में था। उसकी तुलना एक दैत्य से भी की गई जो नील नदी के जल को उछाल कर गंदला कर रहा था। वह अपने विषय इतना निश्चित था। वह शक्तिशाली व बलवन्त था तथा जातियों के लिये विस्मय व भय का कारण था। उसका पतन किस कारण से हुआ।

यहेजकेल ने उसको बताया कि परमेश्वर अपना जाल उस पर डालेगा (पद 3)। बहुत से लोगों का समूह उसके विरुद्ध आयेगा और उसको नील नदी से निकाला जायेगा। जनसमूह, जिसका प्रयोग परमेश्वर करेगा वे बाबुलवासी होंगे। महाजल दैत्य सूखी भूमि व खुले मैदान में छोड़ दिया जायेगा। चाहे वह (मिस्र) कितना भी शक्तिशाली था अब वह आकाश के पक्षियों का आहार है (पद 4)। उसका मांस पर्वतों व घाटियों में फैला दिया जायेगा (पद 5)। उसके लहू से भूमि सींची जायेगी। पर्वत व नदियां उसके लहू से भर जायेंगे (पद 6)। परमेश्वर के उस भयानक दिन में देश व आकाश अंधेरा हो जायेगा (पद 7-8)। यह प्रथम बार नहीं कि मिस्र में इस प्रकार की बातें हुईं। मूसा के दिनों में देश समुद्र के प्राणियों के सड़े हुए शवों

से भरा था। उनकी नदियां लहू से भरी थीं और देश में अंधेरा था। उनका इतिहास उसी प्रकार के दण्ड की बात करता है। यह हमारे पास उस देश का चित्रण है जो बर्बादी से भरा है। मिस्र अपनी जवानी में गिरेगा। उसकी महानता उस पर परमेश्वर के दण्ड को रोक नहीं सकती। वह चाहे कितना भी बड़ा हो, इस्राएल के परमेश्वर से उसकी कोई तुलना नहीं।

उसके पतन पर चारों ओर की जातियों की प्रतिक्रिया देखें। परमेश्वर शेष जगत के लिये मिस्र को एक उदाहरण बना देगा। उसके पतन से जातियों के हृदय अशांत होंगे। वे जातियां भी जिनको वह नहीं जानता था वे भी उसे कोसेंगी (पद 9)। मिस्र के पतन का जगत पर ऐसा प्रभाव होगा कि जातियों को भय के कारण उन्हें उनके घुटनों पर लाया जायेगा, इस विस्मय में कि अगली बारी हमारी तो नहीं। उस पर दण्ड संसार से बात करेगा।

एक जाति के रूप में, मिस्र अपने ऊपर परमेश्वर के हाथ के भय का अनुभव करेगा। बाबुल राष्ट्र के रूप में एक आतंक होगा (पद 11)। वह जाति सब से भयंकर जाति मानी जाती थी (पद 12)। बाबलु मिस्र के ध न को लूट लेगा और उसकी भीड़ को नाश करेगा (पद 12)। मिस्र का पतन महान होगा कि देश से पशु भी नाश किये जायेंगे (पद 13)। आगे को उनके पैरों से नील का पानी गंदला न होगा। कभी को एक समृद्ध जाति नीची हो जायेगी। वह अनाथ व बंजर होगी। जब यह होगा, तब संसार इस्राएल के परमेश्वर की सामर्थ व पवित्रता को जानेगा (पद 15)।

जैसा कि उसने अध्याय में किया, परमेश्वर ने मिस्र को उन जातियों के विषय याद दिलाया जिनका पतन इसी प्रकार उससे पहले हुआ। पद 18-32 इनमें से कुछ जातियों के विषय बताते हैं। पद 18 स्पष्ट करता है कि उनको 'गड्हे' में डाला जायेगा। गड्हे से अर्थ कम से कम कब्र तो है, यदि नरक नहीं। यह वह स्थान है जहां से कोई लौटता नहीं। मिस्र की नियति खतनारहित अन्यजातियों के साथ है जिनका पतन उनसे पहले हुआ। मिस्र दूसरी जातियों के साथ नरक के गड्हे में जायेगा और वहीं रहेगा (पद 21)।

अश्शूर पहले ही उस गड्हे में है (पद 22)। पद 22 व 23 अश्शूर की बर्बादी व अंधेरे का चित्रण करते है। वह ऐसी जाति थी जिसका 'आतंक समस्त जीवितों के संसार पर था।' अश्शूर नरक के गड्हे में कब्रिस्तान के समान हो गया। ईलाम जाति भी वहां कब्र में है। उसने भी जीवितों के देश

में आतंक फैलाया था। इसलिये उसने वैसी ही शर्म उठाई जो अनन्त नाश के गड्हे में ले जाती है (पद 24)। मेशेक व तूबल भी वहीं गिरे। वे अपने क्रूर युद्ध शस्त्रों के साथ नरक में गये (पद 27)। क्योंकि जीवितों की भूमि पर उन्होंने आतंक फैलाया था तो अपनी मृत्यु के द्वारा उन्हें मूल्य चुकाना होगा। एदोम अपनी सैनिक शक्ति के होते, अपने राजाओं सहित टूट गया और अब खतनारहित परमेश्वर के निन्दकों के साथ होगा। सिदोनवासी संसार की सबसे दुष्ट जातियों के साथ पाये गये। इन जातियों को अपने कामों की शर्म उठानी होगी जो जीवितों की पृथ्वी पर उसने किये। उस गड्हे में पृथ्वी की सबसे महान व शक्तिशाली जातियां थीं। उन्होंने परमेश्वर व उसके वचन का अपमान किया और अपने मार्गों पर चले। तब उन्हें परमेश्वर के प्रकोप के रूप में मूल्य चुकाना पड़ा। अब फिरौन की बारी थी कि अपने दुष्ट साथियों से मिल जाये (पद 32)।

इस अध्याय में हमें स्वयं नरक के गड्हे की एक झलक मिलती है। उस समूह में प्रतिदिन और अधिक लोग जुड़ते जाते हैं। एक एक करके उनका समूह जो परमेश्वर से फिर गये हैं इस जीवन में बढ़ता जाता है। मिस्र की मृत्यु की कहानी यहां हमारी शिक्षा के लिये है। परमेश्वर इसी समय उसके साथ ठीक संबंध बनाने के महत्व को हमें बताना चाह रहा है। वह दिन आ रहा है जब हमें भी न्याय के लिये उसी परमेश्वर के सामने खड़ा होना पड़ेगा। क्या आप उस दिन के लिये तैयार होंगे? क्या हमारा राष्ट्र उस दिन परमेश्वर का सामना करने को तैयार होगा? अपने न्याय के दिन हमें क्या उत्तर देना होगा?

चाहे वह कितना भी महान था, उसका पतन होगा। मिस्र परमेश्वर के प्रकोप से न बचेगा। अपने कामों के लिये उसको लेखा देना होगा। वह इस प्रकार रहता था मानो वह दिन कभी न आयेगा। परमेश्वर ने उसको याद दिलाया कि वह दिन अवश्य आयेगा।

आपके विषय क्या है? आपके लिये भी लेखा देने का एक दिन है। आप नहीं जानते वह कब होगा, परन्तु हम में से अधिकतर के लिये वह दूर नहीं। श्रेष्ठ बात यह हो सकती है कि इस पृथ्वी पर हम कुछ वर्ष और हैं। तब हमें सृष्टिकर्त्ता के सामने बुलाया जायेगा कि न्याय किया जाये। निश्चय जानें कि वह दिन आ रहा है। मिस्र के समान, आप उससे बचेंगे नहीं। क्या आप तैयार हैं?

### *विचार करने के लिये:*

- हमारे दिनों में क्या चीज़ हमें सुरक्षा का आभास देती है? हमारी सच्ची सुरक्षा कहां से आती है?
- आनेवाले न्याय के प्रति हमारे राष्ट्र को जागने के लिये आपके विचार से क्या आवश्यक है?
- न्याय के दिन आप को किस बात का उत्तर देना है?
- प्रभु परमेश्वर के न्याय के विषय हम यहां क्या सीखते हैं?
- क्या आप प्रभु के आगमन के लिये तैयार हैं?

### *प्रार्थना के लिये:*

- परमेश्वर से कहें कि आपकी प्राथमिकताओं को ठीक करे। उससे मांगें कि यह समझने में आपकी सहायता करे कि जीवन कितना अस्थायी है।
- परमेश्वर से विनती करें कि आप पर प्रकट करे कि आपके जीवन के किस क्षेत्र को ठीक करने की आवश्यकता है। उससे विनती करें कि आपको उन पापों से क्षमा और चंगा करे।
- परमेश्वर से मांगें कि आनेवाले दण्ड का संदेश सुनाने का आपको अधिक हियाव दे, उनको जिन्हें सुनने की आवश्यकता है।

34

# पहरुए की सुनें

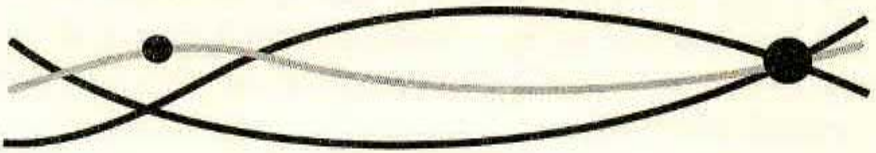

*पढ़ें यहेजकेल 33*

क्या आपको कभी यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है किसी को वह बताने का जिसका वे विश्वास न कर सकें? संभवत: वह महत्वपूर्ण या आवश्यक था, परन्तु उन्होंने सोचा आप मज़ाक कर रहे हैं। यह एक निराशापूर्ण अनुभव हो सकता है। यदि आपने कभी ऐसा अनुभव किया है, तो थोड़ा सा आभास आपको हो सकता है कि यहेजकेल को कैसा लगा होगा जब उसने लोगों को परमेश्वर द्वारा दण्ड दिए जाने की बात की और अविश्वास के साथ उन्होंने अपना मुंह फेर लिया।

इस अध्याय से हम देख सकते हैं कि भविष्यवक्ता यहेजकेल को इस्राएल के घराने के लिये पहरुआ होने के लिये बुलाया गया था। परमेश्वर ने बताया कि यहेजकेल का उत्तरदायित्व एक आत्मिक पहरुए के रूप में था। उसको सदा सावधान रहना था। जब उसने परमेश्वर द्वारा दण्ड की तलवार को देखा जो इस्राएल देश पर आ रही थी, तो उसे एकदम नगर के लोगों को सावधान करना था। यदि उन्हें चिताये और वे न सुनें, तो वे अपने पाप में मरेंगे और फिर जो होगा उसके लिये पहरुआ उत्तरदायी न होगा, उनके लिये जिन्होंने सुनने से इंकार किया। परन्तु यदि उसने खतरे को आते

देखा और लोगों को सावधान नहीं किया, तो उनकी मृत्यु के लिये वह उत्तरदायी होगा। उनका लहू उसके हाथों पर होगा।

पहरुए का काम न्याय करना नहीं है। वह स्वयं से नहीं कह सकता, 'ये लोग इस आने वाले दण्ड के योग्य हैं, इसलिये मैं उन्हें सावधान न करूंगा।' वह परमेश्वर की वाणी सुनने की उनकी योग्यता व अयोग्यता के लिए कोई नहीं होता। उसका काम केवल उन्हें सावधान करना है। सब को पाप व दण्ड के विषय बताना है। सब लोगों के पास यह चयन हो कि संदेश को सुनें व अपने पापों से फिरें या पहरुए के वचन की अनदेखी करें। परमेश्वर हमें केवल उनके पास नहीं भेजता जिनको वह जानता है कि बुद्धि की बात को मानेंगे, वह हमें उनके पास भी भेजता है जिनको वह जानता है कि कभी आज्ञाकारी होना न चाहेंगे।

भविष्यवक्ता होने के नाते उसको प्रभु द्वारा उसे दिये गये वचन बोलने थे (देखें पद 7)। उसको वे वचन परमेश्वर के लोगों तक प्रसारित करने थे। परमेश्वर ने सदा अपने लोगों से बात करने के लिये अपने दासों का प्रयोग किया है। परमेश्वर अपने लोगों को विशिष्ट सेवकाइयों के वरदान व योग्यता देता है। हममें से हरेक की एक भूमिका है। यहेजकेल की भूमिका थी - परमेश्वर की सुनना और परमेश्वर का वचन लोगों तक पहुंचाना। आपकी भूमिका क्या है?

पद 10 में देखें लोग क्या कह रहे थे, 'निश्चय हमारे अपराध और हमारे पाप हमारे ऊपर हैं और हम उन्हीं में सड़ते जाते हैं। अब हम कैसे जीवित रहेंगे।' इस्राएलियों ने परमेश्वर के दण्ड को आते देखा और तर्क दिया कि उनकी दशा निराशाजनक थी। उनके पाप उनको रौंद रहे थे और निराशा को बढ़ा रहे थे। वे अपने जीवनों के विषय भयभीत थे। उनके प्रश्न उस जेलर के समान न थे जिसने पौलुस से पूछा था कि उद्धार पाने के लिये वह क्या करे (प्रेरि. 16:30)। आज हमारे समाज में हम इस बात तक कैसे पहुंचें।? हम लोगों की पुकार को कैसे सुनें? 'पाप के बोझ से दबकर हम कैसे जीवित रह सकते हैं। केवल जब हम अपनी आवश्यकता को समझते हैं तो परमेश्वर के उत्तर को देख सकते हैं जो उस ज़रूरत के लिये वह देता है।

जिन्होंने अपने पाप के कारण निराशा में पुकारा परमेश्वर ने उनको याद दिलाया कि उसे दुष्ट को नाश करने से आनन्द नहीं मिलता (पद)। उसे

बेहतर लगता है कि दुष्ट अपनी दुष्टता से फिरे और जीये। जिन्होंने अपने पाप पर दुख प्रगट किया और उसके पास लौटना चाहते थे उस ने उनसे विनती, 'तुम क्यों मरोगे?' उसने पूछा। नाश होने के लिये कोई कारण नहीं। उनके लिये छुटकारे का मार्ग खुला था। पश्चात्ताप के द्वारा वे परमेश्वर की क्षमा का अनुभव पा सकते थे। यदि तभी वे अपनी दुष्टता से फिरते तो क्षण भर में वह उन्हें क्षमा करता। उनको दण्ड देने में उसे आनन्द नहीं आता। उन्हें दुष्टता से फिरना व क्षमा पाना था। उनको अपने पापों में मरने की आवश्यकता न थी। यहां पुराने नियम में हम परमेश्वर को पापी को अपने पास बुलाते देखते हैं। पश्चात्ताप के द्वारा वे क्षमा पा सकते थे तथा जीवन भी। पुराने नियम के पृष्ठों में नये नियम के समान परमेश्वर का अनुग्रह सत्य था। यह परमेश्वर कभी नहीं बदला। यदि आपने कभी ऐसा नहीं किया तो उसकी ओर अभी फिर जायें। वह क्षमा करना चाहता है। आपको नाश होने की आवश्यकता नहीं।

पद 12-20 में परमेश्वर ने एक उचित धारणा के विषय बताया जो यहेजकेल के समय के लोग उद्धार के विषय में रखते थे। उनको विश्वास था कि हर भला काम जो वे करते थे एक प्रकार के स्वर्गीय खाते में जमा हो जाता था। उनका विश्वास था कि परमेश्वर उनको क्षमा करता रहेगा। परमेश्वर की सहमति उनके साथ होगी। आज भी बहुत लोग इसी समान सोचते हैं। इन पदों में परमेश्वर ने इस शिक्षा के विषय क्या कहा?

पद 12-16 में प्रभु ने उन्हें बताया कि धर्मी की धार्मिकता उनको उस दिन से नहीं बचायेगी जब वे पाप में गिरेंगे; और दुष्ट की दुष्टता उनके विरुद्ध गिनी नहीं जायेगी जब वे मन फिरायेंगे (पद 12)। यहां परमेश्वर क्या कह रहा था? वह उनको बता रहा था कि स्वर्ग के बैंक में जमा करने या निकालने के खाते नहीं हैं। जब धर्मी इस्राएली परमेश्वर से फिर कर बुराई करते थे तो वे उस दण्ड से मरेंगे जो परमेश्वर उनके देश पर लायेगा (पद 13)। परमेश्वर उनकी दुष्टता की अनदेखी केवल इसलिये नहीं करेगा क्योंकि बीते समय में उन्होंने धर्मी जीवन जीया। यदि वे परमेश्वर के सम्मुख दोषी थे तो अपने व्यवहार के लिये उन्हें परमेश्वर को उत्तर देना होगा। दूसरी ओर, बुरे से बुरा पापी दुष्टता से फिर जाने का फैसला ले सकता है ताकि धर्मी जीवन जी सके। परमेश्वर ऐसी आशा करता है (देखें पद 11)। यहां, इस दशा में परमेश्वर देश पर दण्ड लाते समय उनको छोड़ देगा।

पद 17-20 में ध्यान में दें कि यहेजकेल के समय के लोगों को यह शिक्षा कठिन ज्ञात पड़ी। वे कहते थे 'परमेश्वर का तरीका उचित नहीं है' (पद 17)। अपने देश पर परमेश्वर के दण्ड का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेने से इंकार करते हैं, वे समस्त मृत्यु व नाश के लिये केवल परमेश्वर को दोषी ठहराते हैं। उनके दोषपूर्ण विचार कुछ इस प्रकार थे, 'क्या तुम मुझे बताना चाहते हो कि वे सब भले काम जो मैंने किये बुरे कामों को नहीं काटेंगे? यह तो ठीक नहीं। क्या मेरे भले कामों का कोई महत्व नहीं?' यहां इस भाग में परमेश्वर स्पष्ट करता है कि वह सब भलाई जो उन्होंने की 'शून्य' होगी, यदि परमेश्वर के साथ उनका संबंध पश्चात्ताप द्वारा ठीक नहीं है कि अपने पापों से फिर कर क्षमा मांगें। कितना महत्वपूर्ण है कि यह संदेश हमें मिलें। परमेश्वर इस बात में रुचि नहीं रखता कि आपने कितने भले काम किये हैं। वह तो रुचि रखता है कि आप को क्षमा किया गया है या नहीं और आप धर्मी जीवनजी रहे हैं या नहीं। आप अपने भले कामों के भरोसे नहीं रह सकते। आपकी एकमात्र आशा उस क्षमा में मिलेगी जो परमेश्वर उन सब को निःशुल्क देता है जो मन फिरायेंगे और उसके पास आयेंगे। आप अपने प्रयत्नों पर निर्भर नहीं रह सकते। आप स्वयं को पूर्णतया प्रभु पर डालें और उस क्षमा पर, जो वह आपको मुफ्त भी देता है।

पद 21 में एक दूत यहेजकेल के पास यरूशलेम नगर की बंधुवाई के विषय बताने आया। पद 22 हमें बताता है कि दूत के आने के पहले वाली रात्रि को परमेश्वर का हाथ भविष्यवक्ता पर था। हमें यह नहीं बताया गया कि परमेश्वर का हाथ उस पर किस प्रकार था, परन्तु स्वाभाविक रीति से वह जानता था कि कुछ होने वाला था। जब यहेजकेल ने सुना कि यरूशलेम नगर ले लिया गया तो उसका मुंह परमेश्वर के लोगों से बात करने के लिये खुला। पद 22 हमें बताता है कि वह अब चुप न रहा। स्वाभाविक है परमेश्वर ने उसको अपने लोगों से बात करने से रोका था जब तक कि दण्ड उन पर न आ जाये। यह परमेश्वर के वचन का यहेजकेल 24:26-27 में प्रत्यक्ष रूप से पूरा होना था, 'उस दिन जो बच निकलेगा वह तेरे पास आकर समाचार सुनायेगा। उस दिन बच निकलने वाले के लिये तेरा मुंह खुल जायेगा और तू बोलेगा और फिर गूंगा न रहेगा। इस प्रकार तू उनके लिये चिन्ह ठहरेगा, तब वे जान जायेंगे कि मैं यहोवा हूं।'

पद 23 हमारा ध्यान उन लोगों की ओर ले जाता है जो इस्राएल के खण्डहरों में रहते थे। लगता है ये वे लोग थे जो यरूशलेम के पतन के समय

बच गये थे और बाबुलवासियों के द्वारा बंधुवे न बनाये गये थे। वे अधिकतर दरिद्र और कुशलताहीन थे। वे पीछे रह गये थे क्योंकि बाबुल के राजा के लिये व्यावहारिक रूप से योग्य नहीं थे। ध्यान दें कि अपने अहंकार में उन्होंने दावा किया कि देश उनको उत्तराधिकार में मिला जहां से उनके भाइयों को निष्कासित किया गया। क्या उनका विश्वास था कि क्योंकि उन्हें निर्वासन में नहीं ले जाया गया तो वे अपने भाइयों से श्रेष्ठ थे? परमेश्वर इन पदों से बातों को सीधा करना चाहता था। वह उनके पाप भी उनको याद दिलाना चाहता था। उसने उन्हें याद दिलाया कि किस प्रकार वे पशु का लहू पीते थे और अपने अपने पड़ोसी की पत्नी को भ्रष्ट कर रहे थे। उनका भी तलवार से नाश होगा। जिस देश पर वे दावा कर रहे थे वह उनको उत्तराधिकार में दिया गया था, परन्तु अब वह जंगली पशुओं को दिया जायेगा (पद 27)। जो तलवार से बच जायेंगे वे महामारी से मारे जायेंगे। पूरा देश उनके पाप के कारण निर्जन होगा।

दोष लगाना कितना सरल होता है! कई बार हम दूसरों से घृणा करते हैं और अपने पाप को नहीं देखते। अपने दिनों में वे इस पाप के दोषी थे। क्या आपने कभी इसी प्रकार स्वयं को दूसरों से घृणा करते हुए पाया है? ध्यान दें कि यद्यपि यहेजकेल के समय के लोग धर्मी थे, वे दरअसल इस बात में रुचि नहीं लेते थे कि वह उनसे क्या कहना चाहता है। वे अपने हृदय से प्रभु के खोजी न थे। पद 0 में हम देखते हैं कि ये लोग जानते थे कि यहेजकेल परमेश्वर का नबी था। वे अपने भाई बहनों को भी बुलाते थे कि आओ और उसकी सुनो। वे आकर उसके साथ बैठते थे ताकि सुने वह क्या कहता है। वे यहेजकेल की सुनते थे, मानो वह एक निपुण संगीतकार हो। वे सुनते थे और संभवतः उन शब्दों को स्वयं भी दोहराते थे। भविष्यवक्ता से सुने गये संदेश को वे दोहराते थे, परन्तु जो वह कहता थे करते नहीं था, वे। उनका मनोरंजन होता था, परन्तु सुने गये वचनों को व्यवहार में लाने के विषय उनकी इच्छा न थी। आज हमारे दिनों में कितनी कलीसियाएं इस प्रकार की हैं? लोग वचन सुनने आते हैं और गीत गाते हैं, परन्तु अपने पापों से पश्चात्ताप करने की कोई इच्छा नहीं रखते।

जब रविवार प्रातः आप उपदेश सुनते हैं तो क्या आप अपने पड़ोसी को झांकते हैं कि वह सुन रहा है या नहीं कि प्रचारक क्या कह रहा है परन्तु अपने जीवन में उसकी व्यावहारिकता को देखने में असफल रहते हैं? जब

आप अपनी पसन्द का गाना गाते हैं तो जो वचन आप बोलते हैं क्या उसको सुनते हैं और उस आवश्यकता को महसूस करते हैं कि परमेश्वर के साथ संबंध सुधारें? क्या आप उन शब्दों के विषय जागरुक होते हैं जो आप गा रहे हैं? परमेश्वर कई बार अपने पहरुए को हमारे पास भेजता है। परन्तु कितनी बार उसकी चेतावनियों पर ध्यान देते हैं? हम वचनों को सुनते हम हैं। वे सुन्दर गीत के समान होते हैं। जो भावनाएं वे हमें देते हैं, उनके विषय हम आनन्दित होते हैं, परन्तु इस स्तर से आगे कुछ नहीं होता।

जब आप इस टिप्पणी को पढ़ रहे हैं तो आप यहेजकेल के विषय और जानकारी का आनन्द उठा सकते हैं, परन्तु क्या आप पहरुए के वचन सुन रहे हैं? वह आपको आने वाले खतरे से सावधान कर रहा है। वह कह रहा है अपने पापों से फिरो और जियो। क्या आप उसकी सुनते हैं? क्या आप उसके वचनों को गम्भीरता से लेंगे? क्या आप इस्राएलियों के समान होंगे जिन्होंने नबी की गम्भीरता से नहीं सुनी? क्या आप पहरुए का ध्यान करेंगे और जियेंगे?

### *विचार करने के लिये:*

- क्या आज परमेश्वर ने आपको पहरुआ होने के लिये बुलाया है? आपकी विशिष्ट भूमिका क्या है?

### *प्रार्थना के लिये:*

- परमेश्वर से सहायता मांगें कि आप उसकी अगुवाई को सुनें व जानें।
- उससे कहें कि प्रतिदिन अवसरों को देखने के लिये आपकी आंखों को खोले ताकि प्रेम को बांट सकें।
- क्या आपकी दृष्टि में कोई ऐसा है जिसे आने वाले दण्ड से चिताना है? प्रभु के सामने इस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करने में क्षण भर लें।
- परमेश्वर से उन समयों के लिये क्षमा मांगें, जब आपने उसको व उसके वचन को गम्भीरतापूर्वक नहीं लिया।

35

# चरवाहे व भेड़ें

*पढ़ें यहेजकेल 34*

क्या आपको कभी किसी आत्मिक अगुवे से निराशा हुई है? क्या किसी और विश्वासी से आपको चोट लगी है? आज के हमारे समय में ये समस्याएं सामान्य हैं। इस्राएली राष्ट्र के साथ एक मुख्य समस्या थी कि उनके अगुवे लोगों की चिन्ता करने के प्रति वचन बद्ध न थे। उनमें ऐसे लोग भी थे जो एकता नहीं चाहते थे। परमेश्वर ने जाति के अगुवों की तुलना चरवाहों से तथा लोगों की तुलना भेड़ों से की। आइये देखें, देश में क्या हो रहा था।

चरवाहे केवल अपनी चिन्ता में लगे थे (पद 2)। 'वे भेड़ों से लाभ उठाते थे। वे उनके दुध से बनी दही खाते, उनके ऊन से बने कपड़े पहनते और अपने भोजन के लिए अपनी इच्छानुसार उनमें से किसी एक का चुनाव करते (पद 3)। वे झुण्ड की देखभाल नहीं करते। उन्होंने कमज़ोरों को बल नहीं दिया। उन्होंने बीमारों को चंगा नहीं किया। वे अपने भोजन की चिन्ता करते थे। उन्होंने ज़ख्मी की देखभाल नहीं की। वे भटके हुए को लौटाते नहीं थे। खोये हुए को वापस नहीं लाते थे। उन पर कठोरता से राज्य करते थे। स्वाभाविक था, उनकी चिन्ता भेड़ों के प्रति नहीं बल्कि अपने लिये थी।

चिन्ता करने की इस कमी का परिणाम था कि भेड़ें भटक गई थीं। वे बाड़े से निकल गईं और कोई उनके बचाव के लिये नहीं आया। वे खतरनाक तरीके से दूर चली गईं और जंगली पशुओं का सरल शिकार बन गई थीं। चरवाहों ने उन्हें झुण्ड में लाने के लिये कोई प्रयत्न न किया कि उनको उनके शत्रुओं से बचाते। क्या आज हमारे देश की कलीसियाओं में भी ऐसा हो रहा है? क्या ऐसे पास्टर और आत्मिक अगुवे हमारी कलीसियाओं में आज हैं जो केवल उसके लिये ही सेवा करते हैं जो वे अपने लिये पा सकते हैं? हम क्या समझें जब पास्टर पदों से इंकार करते हैं क्योंकि पैसा व लाभ उतना नहीं जितना वे चाहते हैं? ऐसा क्या है कि बड़ी व सम्मानीय कलीसियाएं पूरे समय के कार्यकर्त्ताओं को खोज लेती हैं, जब कि कम वेतन वाले, देहाती चर्च संघर्षरत् रहते हैं इस खोज में कि कोई उनकी सहायता के लिये आये? क्या हमारे सम्पूर्ण देश में कलीसियाएं ऐसे लोगों से नहीं भरीं जो वर्षों से आत्मिक रीति से उन्नत नहीं हो पायं? बहुत से ऐसे हैं जो प्रभु को नहीं जानते परन्तु पुलपिट पर खड़े होकर प्रचार करते हैं। वे टूटे हुए को यीशु में उद्धार के संदेश से कैसे बांध सकते हैं जब कि स्वयं उन्होंने कभी संदेश को स्वीकार नहीं किया? समस्त संसार में चर्च जानेवाले उस मार्ग पर हैं जो सीधे अनन्तकाल के लिये वहां जा रहे हैं जहां यीशु नहीं है। उनके आत्मिक अगुवे उनको सावधान करने के लिये कुछ नहीं करते। वे इस बात से संतुष्ट रहते हैं कि कलीसिया व समाज में अपना आदर बनाये रखें। वे नाव को हिलने डुलने देना नहीं चाहते। परिणाम - भूखी, भटकी भेड़ें। यहां यहेजकेल इन चरवाहों के विषय जो कह रहा है वह आज हमारी कलीसियाओं पर भी उतना ही लागू है। काश परमेश्वर हमारी सहायता करे कि ध्यानपूर्वक उसकी चेतावनी को सुनें।

परमेश्वर इन चरवाहों से क्रोधित था। पद 10 में परमेश्वर उनसे स्पष्ट कहता है कि वह 'चरवाहों के विरुद्ध' है। परमेश्वर उनसे उनके कामों का लेखा लेगा। वह उनको चरवाहों की भूमिका में जारी न रहने देगा। वह अपनी भेड़ों की इतनी चिन्ता करता है कि चरवाहों द्वारा उन्हें नाश न होने देगा। इस पद को हम हल्केपन से नहीं ले सकते। परमेश्वर इन चरवाहों के विरुद्ध था। एक बड़ा उत्तरदायित्व है, जो परमेश्वर के लोगों के चरवाहा होने पर आता है। यदि आपकी पास्तरीय अगुवाई के आधीन भेड़े उन्नत नहीं हो रहीं, तो यह आपका उत्तरदायित्व है कि आप देखें कि ऐसा हो। अपने उत्तरदायित्व

की अनदेखी करना या पास्टर की अपनी भूमिका को केवल स्वार्थी उद्देश्यों के लिये करना परमेश्वर के प्रकोप को आमंत्रित करना है। जिनसे परमेश्वर प्रेम करता है उनका पोषण करना आपके हाथ में है। इतने बड़े कार्य की हम अनदेखी नहीं कर सकते। यहेजकेल में परमेश्वर के लोगों के आत्मिक व राजनैतिक अगुवे परमेश्वर की दृष्टि में दोषी पाये गये, भेड़ों की अनदेखी करते हुए।

इस समस्या का समाधान क्या था? परमेश्वर स्वयं अपनी भेड़ों की चिन्ता करेगा। वह अपनी भेड़ों को उनके हाथ से ले लेगा जो उनकी अनदेखी या गलत अगुवाई कर रहे हैं। वह उनको खोजेगा जिनको भटका दिया गया और उन्हें झुण्ड में वापस लायेगा (पद 11-12)। वह उनको बचायेगा और उनको उनके स्वदेश लौटा ले आयेगा (पद 12-13)। एक बार फिर वे हरी चरागाहों में चरेंगी (पद 14)। बीमार चंगी होंगी। कमज़ोर बलवन्त की जाएंगी (पद 16)। यह कितनी बड़ी प्रतिज्ञा है।

हमारे देश की भिन्न कलीसियाओं और उनसे जो नाम की मसीहत तथा रीतिरिवाज़ों से संतुष्ट हैं, वे भी हैं जो प्रभु की हैं। यद्यपि वे उसकी हैं, वे आत्मिक रूप से भूखी मर रही हैं। अपनी कलीसियाओं में उन्हें सुसमाचार संदेश नहीं मिलता। उनको विश्वास का कदम उठाने के लिये उत्साहित नहीं किया जाता। कुछ को तो यह भी ज्ञात नहीं कि उस विश्वास से जिसे वे मानते हैं उससे कहीं अधिक है जिसका अनुभव वे वर्तमान में पा रहे हैं। मैंने ऐसे बहुत से लोगों को देखा है। गत कुछ वर्षो में मुझे उनमें से कुछ की सेवा करने का अवसर मिला है। मैंने वचन के स्पष्ट शिकार के आधीन उन्हें फिर जीवन्त होते पाया है। मैंने उन्हें फलते फुलते देखा है। परमेश्वर ने उन्हें नहीं छोड़ा। उसने उनकी खोज की, क्योंकि वह उनसे प्रेम करता है। यही इस संदर्भ में बताया गया है।

यहां यह ध्यान दिया जाये कि यह भविष्यवाणी एकदम पूरी होगी जब परमेश्वर के लोग निर्वासन से अपने देश लौटेंगे। उनके आत्मिक अगुवों ने सत्य के मार्ग में उनकी अगुवाई नहीं की। उन्होंने उनको मूर्ति पूजा व अन्यजातियों की रीतियों में फंसाया। परमेश्वर के लोग समस्त संसार में अपने पापों के कारण बिखर गये। परमेश्वर उनको न छोड़ेगा। वह उनको उनके देश लौटा लायेगा।

पद 17-22 में हम पाते हैं कि वे केवल चरवाहे न थे जो परमेश्वर के लोगो के लिये समस्याएं पैदा कर रहे थे। झुण्ड में भेड़ें भी थीं जो चरागाहों को रौंदती तथा स्वच्छ पानी को गंदला करती थीं ताकि दूसरी भेड़ें वह खायें (पद 19)। इन भेड़ों ने सब बीमार भेड़ों को पांजर और कन्धे से ढकेला तथा अपने सींगों से मारा (पद 21)। उनके कारण कमज़ोर भेड़ें भटक गईं।

ऐसी भेड़ों को देखने आपको बहुत दूर जाने की आवश्यकता नहीं। लगता है कि हर कलीसिया में कुछ बुरी भेड़ें होती हैं। वे अहंकारी लोग हैं। वे अपनी मर्ज़ी करना चाहते हैं। उनमें कुछ बहुत असहमति रखते हैं। वे लोगों से गलत संबंध बनाते हैं। वे ऐसी बातें कहते हैं जो झुण्ड में गड़बड़ी फैलाती हैं। उनकी उपस्थिति से झुण्ड अशान्त व क्रोधित होता है। कुछ लोग पहचान चाहते हैं। वे चाहते हैं कि लोग उनकी ओर देखें। वे कड़वाहट व अधिकार से भरे होना चाहते हैं। परमेश्वर झुण्ड में इस प्रकार के लोगों की उपस्थिति से परिचित हैं वह दिन आ रहा जब उनको दण्ड मिलेगा।

परमेश्वर के लोगों के लिय बातें सरल नहीं होतीं। उनके चरवाहों ने उनका साथ नहीं दिया। साथी विश्वासियों ने उनके साथ दुर्व्यवहार किया। उनको तोड़ा व रौंदा गया। परमेश्वर उनको नहीं त्यागेगा। वह अपने दास दाऊद को उनकी चरावाही के लिये खड़ा करेगा (पद 23)। यह सेवक कौन है? क्या यह प्रभु यीशु स्वयं नहीं है, दाऊद की संतान? प्रभु यीशु, अच्छा चरवाहा, अपनी भेड़ों की रक्षा करेगा (पद 25)। उनके चरवाहे के रूप में, वह उनके साथ शांति से रहेगा (पद 2)। उसकी अगुवाई में वे अति आशीषित होंगे। वर्षा समय पर होगी (पद 26)। उनके वृक्ष बहुत फल देंगे (पद 27)। लोग सुरक्षित रहेंगे (पद 27)। आगे को जातियां उनको लूट न सकेंगी। कोई उनको न डरायेगा क्योंकि परमेश्वर स्वयं उनका चरवाहा होगा (पद 28)।

ऐसी अद्‌भुत प्रतिज्ञा! आपके भाई बहनों ने शायद आपके साथ दुर्व्यवहार किया हो। आपके आत्मिक अगुवों ने शायद आपकी आत्मिक आवश्यकता के समय की अनदेखी की हो। यीशु आपको कभी गिरने न देगा। वह सदा आपके लिये वहां होगा। आप पूर्णतया उस पर भरोसा कर सकते हैं। जब सबने आपको निराश किया हो, वह आपको उठायेगा। वह आपसे इतना प्रेम करता है कि आपको न त्यागेगा। क्या आप उसे अनुमति देंगे कि वह आपका पोषण करे? क्या आप उसको अपना अगुवा बनायेंगे? क्या आप उसकी

सुनेंगे और उसकी अगुवाई में चलेंगे? वह आपकी चिन्ता करेगा। हम में से कितनों ने स्वयं को प्रभु को समर्पित किया है व उसके प्रभुत्व की आशीषों को अपने जीवन में जानते हैं? उसमें हम बलवन्त हैं। उसमें कोई शत्रु हमें नाश नहीं कर सकता। हम उसके अनुग्रह में सुरक्षित हैं। उसकी चिन्ता सिद्ध है। कोई ज़ख्म ऐसा नहीं जिसे वह चंगा न कर सके। कोई पीड़ा ऐसी नहीं जिसे वह शांति न दे सके। उसमें हम सच्ची आशीष पाते हैं। सचमुच वह अच्छा चरवाहा है।

परमेश्वर ने इस्राएल के अगुवों को दोषी पाया क्योंकि वे भेड़ों की देखभाल नहीं करते। झुण्ड की बुरी भेड़ों को दोषी पाया क्योंकि वे झुण्ड में अशांति फैलाती हैं तथा कमज़ोर भेड़ों को तित्तर बित्तर करती हैं। संभवत: आप यहेजकेल के वचनों को यहां समझ सकते हैं। शायद अपनी कलीसिया में आपने आत्मिक अधिकारियों की अनदेखी व कुप्रयोग का अनुभव पाया है। शायद आपको एक दुष्ट भेड़ ने सींग मारा हो। जब तक हम लोगों को देखेंगे, हम निराश होंगे। क्या मैं आपका ध्यान महान् चरवाहे की ओर खींचूं? आपके भाई बहनों के असमान, वह आपको कभी गिरने न देगा। उसमें सदा आपको प्रेम व सुरक्षा मिलेगी। प्रभु यीशु स्वयं परमेश्वर है। भेड़ों का महान चरवाहा! अपनी परेशानियों में उस पर दृष्टि करें। आप निराश नहीं होंगे।

### *विचार करने के लिये:*

- आप क्यों ऐसा सोचते हैं कि आज ऐसे चरवाहे हैं जो भेड़ों की चरवाही नहीं करते हैं? सेवकाई में उनका उद्देश्य क्या है?
- अपनी कलीसिया में क्या आप ऐसे लोगों से मिले हैं जो सामंजस्य को तोड़ते हैं? इस संदर्भ में परमेश्वर की उनको क्या चेतावनी है?
- यह संदर्भ हमें प्रभु परमेश्वर की अपनी भेड़ों के प्रति प्रेम व चिन्ता के विषय क्या सिखाता है?
- यहां हम उस महान उत्तरदायित्व के प्रति क्या सीखते हैं जो आत्मिक अगुवों के कंधों पर रखा गया है कि परमेश्वर की भेड़ों की देखभाल करें? क्या आप एक आत्मिक अगुवे हैं? यह संदर्भ आपके लिये क्या चुनौती लाता है?

- कलीसियाओं में विश्वासियों को क्या चीज़ रोकती है कि सुसमाचार प्रचार नहीं किया जाता?

***प्रार्थना के लिये:***

- अपने पास्टर के लिये प्रार्थना करें कि उसकी सेवकाई पर आशीष हो। परमेश्वर से मांगें कि सेवकाई के लिये, एक सत्य व शुद्ध हृदय के लिये वह सहायता दे।
- क्या आप ऐसे विश्वासियों को जानते हैं जो वर्षों से किसी कलीसिया के सदस्य रहे हैं परन्तु कभी उन्नत नहीं हुए? क्षण भर के लिये प्रार्थना में उनको प्रभु के सामने लायें।
- अपने समाज के उन चरवाहों के लिये प्रार्थना करें जो भेड़ों की चरवाही नहीं करते। परमेश्वर से उनकी सहायता करने को कहें कि वे उसे जाने और अपने उत्तरदायित्व को गम्भीरतापूर्वक लें।

36

# पुराने मनमुटाव

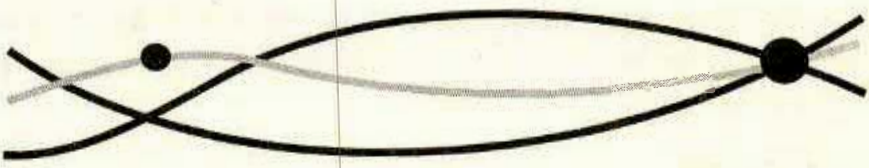

*पढ़ें यहेजकेल 35*

क्या कभी आपने कोई मनमुटाव रखा है? शायद बहुत वर्ष पहले किसी ने आपको चोट पहुंचाई और आप उस व्यक्ति को कभी क्षमा न कर सके। यहेजकेल के इस अध्याय में यही हुआ है। परमेश्वर यहां सेईर पर्वत के लोगों से बोलता है। देखें व्यवस्थाविवरण 2:2 जो बताता है कि इस क्षेत्र के लोग एसाव के वंशज थे, 'होरी सेईर में रहते थे, परन्तु एसाव के वंशजों ने उन्हें निकाल दिया। उन्होंने होरियों को अपने मध्य से नाश कर दिया और उनके देश में बस गये, जैसे इस्राएली उस देश में जो प्रभु ने उनकी सम्पत्ति होने के लिये उन्हें दिया था।' एसाव के वंशज एदोमी भी कहलाते थे। उत्पत्ति 6 बताता है, 'यह एसाव (अर्थात् एदोम) का वृत्तान्त है।'

हमारा अनुच्छेद हमें बताता है कि परमेश्वर एदोमियों से क्रोधित था। वह उनके देश को उजाड़ कर देगा और उनके नगर नाश होंगे (पद 4)। परमेश्वर एदोमियों से क्यों क्रोधित था? बाइबल हमें बताती है कि एदोमी एक पुराना मनमुटाव रखते थे (पद 5)। उनके मनों में निरन्तर एक घृणा थी। संदर्भ हमें बताता है कि यह घृणा इस्राएल के लिये थी। इस्राएलियों और एदोमियों के मध्य यह निरन्तर मनमुटाव क्यों था? उत्पत्ति 27:41 हमें उत्तर देता है: 'इसलिये एसाव ने याकूब से उस आशीर्वाद के कारण जो उसके

पिता ने उसे दिया था, बैर रखा। एसाव ने अपने मन में कहा, 'मेरे पिता की मृत्यु के दिन निकट हैं, उसके बाद में अपने भाई याकूब का घात करूंगा।'

याकूब ने एसाव का जन्म अधिकार छीन लिया था। उसके बाद याकूब भाग गया और दोनों भाई बिछुड़ गये, क्योंकि एसाव को याकूब से घृणा हो गई थी। यह कड़वाहट वर्षों तक जारी रही। सैंकड़ों वर्ष इस घटना को बीत गये, और अब भी दोनों जातियों ने अपने झगड़े न सुलझाये। एदोम ने अपने मन में याकूब व एसाव के मध्य शत्रुता को निरन्तर बनाये रखा।

इस 'प्राचीन शत्रुता' का क्या परिणाम हुआ? क्या होता है जब हम अपने प्राण में दूसरे के लिये बुराई को बनाये रखते हैं? आइये इस कड़वाहट के परिणाम को देखें।

*दण्ड व बर्बादी*

पहले, ध्यान दें कि एदोम स्वयं परमेश्वर के दण्ड को अपने व अपने देश के ऊपर लाया। उनका देश बंजर व निर्जन हो जायेगा (पद 7)। उनके पर्वत मृतकों से भरे होंगे (पद 8)। उनके नगरों में बसने वाला कोई न होगा (पद 9)। यहां इस टूटेपन व निराशा का चित्रण है। परमेश्वर ने एदोम के साथ जो प्रतिज्ञा की वह उस किसी के साथ होगा जो एदोम की गलती को दोहराता है। जब हम अपने भाई या बहन के प्रति मनमुटाव रखते हैं, तो अपने प्राणों पर नाश लाते हैं। हमारी संगति परमेश्वर के लोगों व स्वयं परमेश्वर से कट जाती है। उसका स्वाभाविक परिणाम हमारे आत्मिक व भावनात्मक जीवन में बंजरपन होता है।

*भाइयों बहनों के साथ टूटी संगति*

दूसरे, इस अनुच्छेद में हम देखते हैं कि कड़वाहट ने एदोम व इस्राएल के मध्य संबंध को नाश कर दिया। यहां एदोम यरूशलेम के नाश पर आनन्दित हुआ (पद)। उसे इस्राएल की पीड़ा की कोई चिन्ता न थी, न ही उसके दुख की। उसकी आत्मा की कड़वाहट ने अपने भाई बहनों के प्रति करुणा को हटा दिया था। वह उसके बारे में नहीं सोच सकते थे। जब शत्रु ने इस्राएल पर आक्रमण किया, तो वे एक ओर खड़े होकर आनन्द प्रकट करते रहे। सुनें भजनकार भजन 7:7 में क्या कहता है, "प्रभु याद कर यरूशलेम के पतन के दिन एदोम ने क्या किया। वे चिल्लाये, 'इसको फाड़, इसको इसकी नेंव तक फाड़ डाल।"

हम यहेजकेल से समझते हैं कि एदोम के मन में परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध दुष्टता के अतिरिक्त कुछ न था, "तब तुम जान लोगे कि मुझ यहोवा ने तुम्हारी सब निन्दा को सुना है जो तुमने इस्राएल के पर्वत के विषय में की है। वे उजड़ गये और हमारा भोजन बन जाने के लिये हमें दिये गये हैं' (पद 12)।

एदोम ने दावा किया कि इस्राएल व यहूदा के देश अधिकारिक रूप से उसके थे (पद 8)। यह कह कर वह अपने लूटे गये जन्म के अधिकार व आशीष को याद कर रहा था। एदोमी महसूस करते थे कि देश के सही अधिकारी वे ही थे, जो परमेश्वर ने इस्राइल को दिया। क्योंकि आशीषों व जन्म के अधिकार के वारिस वही थे जो याकूब ने अपने जुड़वां भाई एसाव से चुरा लिये थे। इस्राएल की स्मृद्धि इन आशीषों की चोरी की निरन्तर याद दिलाती थी।

एदोम के हृदय की ईर्ष्या व घृणा उसे इस्राएल पर आक्रामक बनाती है जिसने इन दो जातियों के मध्य संबंधों की संभावनाओं को सदा के लिये नाश कर दिया। हमारे भाई बहनों के साथ पुराने मनमुटाव केवल संबंधों के सुधारने में रुकावट होते हैं। यदि हम कड़वाहट को बनाये न रखें तो संबंध पुनःस्थापित हो सकते हैं।

*परमेश्वर के साथ टूटे संबंध*

तीसरे, ध्यान दें कि मनमुटाव को बनाये रखना परमेश्वर के साथ हमारे संबंधों को नाश करता है। परमेश्वर उसकी 'निरन्तर घृणा' के कारण एदोम के विरुद्ध था। पद 6 बताता है कि परमेश्वर उसे रक्तपात के आधीन कर देगा। एदोम ने एक गलत व्यवहार का विकास किया, न केवल इस्राएलियों के प्रति बल्कि परमेश्वर के भी जिसने उसे इतनी आशीष दी थी। वे इस सत्य को पसन्द नहीं करते थे कि परमेश्वर ने इस प्राचीन शत्रुता में इस्राएल का पक्ष लिया। उसने खुलकर अपनी असहमति को प्रगट किया। पद हमें बताता है कि एदोम बिना नियंत्रण के परमेश्वर के विरुद्ध बड़े बोल बोलता है।

परमेश्वर व उसके लोगों के मध्य निकट संबंध हैं। परमेश्वर की संतान को चोट पहुंचाना स्वयं परमेश्वर को चोट पहुंचाता है। मत्ती 25:40 इसको इस प्रकार कहता है, "राजा उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूं कि जो कुछ तुमने इन छोटे से छोटों के साथ किया, वह मेरे साथ किया'।" दूसरों के साथ आपके संबंध और अपने स्वर्गीय पिता के साथ संबंध को आप अलग नहीं

कर सकते। जब आप परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध एक बुरे व्यवहार को उपजाते हैं तो वही व्यवहार परमेश्वर के विरुद्ध उपजता है। जो हम उसकी छोटी से छोटी संतान के साथ करते हैं, वह समझता है कि हम उसके साथ कर रहे हैं। इससे परमेश्वर के साथ हमारे संबंध नाश हो जाते हैं। आप परमेश्वर से उतने निकट हो सकते हैं जितना उसकी संतान के। आप परमेश्वर से प्रेम नहीं कर सकते यदि आप उसकी संतान से प्रेम नहीं करते। परमेश्वर की संतान के प्रति एदोम समान कड़वाहट परमेश्वर के साथ संबध को तोड़ देती है।

क्या आज आप इस परिस्थिति में हैं? क्या आप मसीह में किसी भाई या बहन के साथ मनमुटाव रखते हैं? अन्ततः किसी से मनमुटाव रखकर हम स्वयं को ही चोट पहुंचाते हैं। केवल क्षमादान व मेल मिलाप के द्वारा हम आत्मिक शांति व स्मृद्धि को अपने जीवन में पा सकते हैं।

### *विचार करने के लिये:*

- क्या कभी अपने साथी मानव के लिये आपने अपने मन में मनमुटाव रखा है? इसका आपके जीवन पर आत्मिक या भावनात्मक रीति से क्या प्रभाव रहा?
- मेल मिलाप करना इतना कठिन क्यों होता है? मेल मिलाप करने से हमें क्या चीज़ रोकती है?
- क्या किसी को क्षमा करने में आपको कुछ परेशानी होती है? यह कौन है।

### *प्रार्थना के लिये:*

- परमेश्वर से कहें कि आप पर उस किसी व्यक्तिगत कड़वाहट को प्रगट करे जो अपने हृदय में आप किसी भाई या बहन के प्रति रखते हैं।
- परमेश्वर से मांगें कि आपको आपके जीवन में इस कड़वाहट से चंगाई दे।
- उससे मांगें कि आप के हृदय को उनके प्रति क्षमा से भर दे जिन्होंने आपको दुख पहुंचाया।

37

# आने वाली जागृति

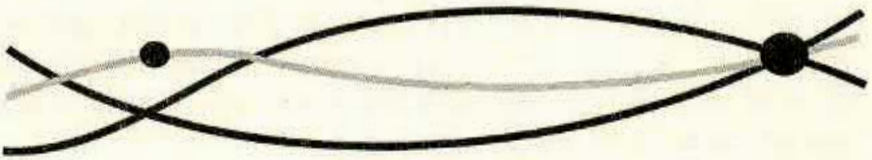

*पढ़ें यहेजकेल 36*

हममें से प्रत्येक को ऐसा अनुभव हुआ होगा कि एक बड़ी गड़बड़ी को ठीक करे। कबाड़ का स्वभाव होता है कि वर्षों में बड़ा ढेर जमा हो जाता है। घर भर जाते हैं और हमारी आवश्यक वस्तुओं के लिये उतना स्थान नहीं रहता। समय समय पर हमें आवश्यकता का आभास होता है कि अच्छी तरह से सफाई होनी चाहिये। जब घर का कबाड़ ठीक हो जाता है तो एक आनन्द सा मिलता है। समय समय पर परमेश्वर के लोगों के जीवनों में भी कबाड़ ठीक हो जाता है। परमेश्वर को विवश होकर उसके विषय कुछ करना पड़ता है।

इस अध्याय में ध्यान का केन्द्र इस्राएल के पर्वत हैं। ये पर्वत निर्जन हो गये (पद 3)। वे बंजर हो गये क्योंकि परमेश्वर के लोगों से देश छूट गया था। शत्रुओं ने उनके देश को खाली छोड़ा। वे खुलेआम कहते थे कि वे पर्वत अब उनके थे (पद 2)। इस्राएल के शत्रु खुले आम उसकी निन्दा करते थे (पद 3)।

परमेश्वर की प्रतिक्रिया पर ध्यान दें, जब उसने शत्रुओं को अपने लोगों के पतन पर आनन्द करते हुए देखा (पद 7)। ये उसके बच्चे थे जिनका वे ठट्ठा कर रहे थे। उसको उनके लिये जलन थी (पद 6)। एक अच्छे पिता के समान वह व्यर्थ नहीं बैठेगा जब कि उसके बच्चों की निन्दा हो रही है। वह अपनी संतान के शत्रुओं की ओर अपना हाथ उठायेगा (पद 7)।

परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि इस्राएल के वे बंजर मैदान, फिर से फलदार होंगे (पद 8)। वह फिर अपने लोगों को आशीष देगा।

यह सत्य है कि परमेश्वर के लोगों को उनके पापों का दण्ड मिल रहा था, परन्तु वे उसकी संतान थे। वह अब भी उनसे प्रेम करता था। उनके लिये उसने एक उज्जवल भविष्य रखा था। एक बार फिर इस्राएल के निर्जन पड़े खेतों में हल चलेगा व बीज बोया जायेगा (पद 9)। उनके नगर पहले के समान बसाये जायेंगे (पद 10)। वे फिर से संख्या में अनगिनत हो जायेंगे (पद 11)। इस्राएल को फिर अपना भूतपूर्व गौरव व स्मृद्धि मिलेगी, उससे भी अधिक जो पहले थी (पद 11)। फिर कभी पर्वतों पर रहने वालों की कमी न होगी (पद 12)। लोग कहते थे कि इस्राएल के पर्वत अपने ही लोगों को निगल गये (पद 12)।, आगे को वे ऐसा न कह पायेंगे। इस्राएल के शत्रु आगे को उसका ठट्ठा न कर पायेंगे (पद 15)।

यहां यह बताना महत्वपूर्ण है कि इस्राएल को इसलिये नहीं यह अधिकार था कि उन्हें वे आशीषें मिलें जो परमेश्वर उनका पक्ष लेकर उनको देना चाहता था। वह उस स्त्री के समान थे जो मासिक धर्म से हो (पद 17)। वह अशुद्ध थी। उसकी अशुद्धता के कारण परमेश्वर ने उन्हें जातियों में बिखेर दिया (पद 19)। उसको अपने पाप के कारण निर्वासन में जाना पड़ा। इस्राएल ने अपने बुरे कार्यों के द्वारा परमेश्वर के नाम को बदनाम किया (पद 20)। परमेश्वर की उनके द्वारा अनाज्ञाकारिता जातियों में बहुत बातें करने का कारण थी (पद 20)।

उसको इसलिये आशीषें नहीं मिली थीं कि उसमें कुछ गुण थे। यह तो इसलिये कि परमेश्वर का नाम बदनाम हो रहा था कि परमेश्वर उनको अपनी ओर खींचेगा (पद 22)। क्योंकि इस्राएल निर्वासन में था, जातियां इस परिणाम पर पहुंचीं कि इस्राएल का परमेश्वर इतना सामर्थी नहीं था कि उनको उनके देश में रख पाता। अपने महान नाम की खातिर, वह अपने लोगों के भविष्य के लिये कार्य करेगा।

वह कार्य क्या था जो परमेश्वर करने वाला था? वह उनको उनके निर्वासन से जमा करेगा और पाप से साफ करने के लिये उन पर स्वच्छ जल उण्डेलेगा। (पद 25) वह उनको एक नया हृदय देगा और उनमें एक नई आत्मा डालेगा (पद 25)। वह पत्थर के पुराने हृदय, विद्रोह पूर्ण हृदय को हटायेगा (पद 26)। वह उनको अपना आत्म देगा। उसका आत्मा उनको आज्ञाकारिता में लायेगा (पद 27)। वे सचमुच परमेश्वर के लोग होंगे, केवल

नाम के लिये नहीं परन्तु कर्मों से भी (पद 28)। उनको उनकी अशुद्धता से शुद्ध किया जायेगा (पद 29)। एक बार फिर उन्हें आशीषित किया जायेगा (पद 30)। उन दिनों में वे अपनी दुष्टता को याद करेंगे और इतना नीचे गिरने पर शर्मिन्दा होंगे (पद 31)। यहां ध्यान दें कि वह उनके लिये नहीं बल्कि अपने पवित्र नाम की खातिर करेगा (पद 32)।

देश में इस जागृति का क्या परिणाम होगा? इस अनुच्छेद में चार वस्तुओं पर ध्यान दें। प्रथम, उनका निर्जन देश अदन की वाटिका बन जायेगा (पद 35)। परमेश्वर की आशीषें देश पर उण्डेली जायेंगी। उसकी उपस्थिति स्वाभाविक होगी। जब जागृति में परमेश्वर आयेगा, बंजरपन जाता रहेगा। आज हमें विवश हो अपने संसार पर दृष्टि डालनी होगी तथा देखना होगा उस आत्मिक निर्जनता व बंजरपन को, जिसकी अधिकाई है। जब परमेश्वर जागृति में अपने आत्मा को उण्डेलेगा, निर्जन प्रदेश में जल बहाया जायेगा और वह फल लाना आरम्भ करेगा। परमेश्वर के वचन का फिर आदर होगा और परमेश्वर के नाम को सम्मान मिलेगा।

इस जागृति का दूसरा परिणाम होगा कि जातियां जानेंगी कि इस्राएल का परमेश्वर ही सत्य परमेश्वर है (पद 36)। जब परमेश्वर उनको एक नया हृदय और एक नया आत्मा देगा, तो जातियां लोगों के जीवनों में अन्तर को देखेंगी। जब पिन्तेकुस्त के दिन परमेश्वर ने कलीसिया पर अपना आत्मा उण्डेला, तो हो नहीं सकता था कि संसार उस अन्तर को न देख पाता। जब मसीही परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ में जीते हैं, तो दूसरे लोग परमेश्वर के सामने घुटने टेकने लगते हैं।

तीसरे, पद 37 में देखें कि परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि वह इस्राएल के घराने को 'एक झुण्ड' के रूप में बढ़ायेगा। इस कलीसियाई पतन के युग में जब कि आत्मिक बातों में रुचि कम हो रही है, हमें आज परमेश्वर के आत्मा के मण्डराने की कितनी आवश्यकता है। चौथे, ध्यान दें कि इस्राएल अपने घुटने परमेश्वर के सामने टेकेगा (पद 38)। वे उसके सामर्थी कार्य को अपने जीवन में देखेंगे तथा आदर व सम्मान के साथ परमेश्वर को दण्डवत् करेंगे। अपने लोगों में उसको महिमा मिलेगी। वे उसको अपना परमेश्वर जानेंगे। यद्यपि वे अपने परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य रहे, वह सामर्थ से कार्य करेगा तथा उनके साथ संबंधों को सही बनायेगा।

हमारे आधुनिक युग में इस प्रकार की जागृति की आवश्यकता है जैसी इस्राएल के घराने से प्रतिज्ञा की गई है। हम अपने लिये जागृति नहीं चाहते।

हम चाहते हैं कि परमेश्वर के पवित्र नाम को महिमा मिले। हमारी कार्यशालाओं में परमेश्वर के नाम की निन्दा की जाती है। जब कि लोग उसके नाम को बे-फायदा लेते हैं। उसके नाम को हमारे देश में अशुद्ध किया जाता है, जब नीतियां बनती हैं जो सीधे परमेश्वर के वचन के विरोध में होती हैं। उसका नाम हमारे स्कूलों में बदनाम होता है जब हमारे युवा अनैतिकता में जीते हैं तथा नशे आदि के शिकार होते हैं। उसका नाम हमारे टेलीविज़न और हमारे संगीत में अशुद्ध किया जाता है। हमारे व्यापार जगत में उसका नाम बदनाम किया जाता है जब कि अपनी बढ़ती के लिये लोग दूसरे की हानि करते हैं। उसका नाम हमारी कलीसियाओं में बदनाम हो रहा है जब विश्वासी आराधना के लिये जमा होते हैं उस पाप को ठीक न करके जो हमें एक दूसरे से अलग करता है। हमारी पुलपिटों से उसका नाम बदनाम होता है जबकि प्रचारक वह वचन सुनाते हैं जो प्रभु की ओर से नहीं होता। उसका नाम हमारे अपने जीवनों से बदनाम होता है जबकि हम पूर्णतया उसके अनुसार नहीं जीते। परमेश्वर अपने पवित्र नाम की महिमा के लिये हमें पुकारता है उस प्रकार की जागृति के लिये जिस की इस्राएल से प्रतिज्ञा की गई है। क्या हम हाथ पर हाथ रखे बैठ सकते हैं जबकि हमारे समाज में परमेश्वर के नाम की निन्दा होती है? क्या आज आप प्रभु को नहीं पुकारेंगे कि परमेश्वर पुराने पत्थर के हृदयों को हटाकर हमें मांस के हृदय दे?

### *विचार करने के लिये:*

- आज हमारे आधुनिक समाज में क्या प्रमाण है कि हमें आवश्यकता है उस प्रकार की जागृति के अनुभव की जिसका वर्णन इस अध्याय में किया ग़या है?
- आप ऐसी बड़ी जागृति के द्वारा अपने मध्य में किस परिवर्तन को देखने की आशा करते हैं?
- क्या आपके व्यक्तिगत जीवन में जागृति की आवश्यकता का कोई प्रमाण है? विशिष्ट रूप से बतायें।
- यहेजकेल के अनुसार यहां जागृति का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?

### *प्रार्थना के लिये:*

- परमेश्वर से मांगें कि हमारे समाज में इस प्रकार की जागृति लाये।
- उससे मांगें कि व्यक्तिगत रूप से जागृति के लिये ऐसा हृदय आपके अपने जीवन में दे।

38

# सूखी हड्डियों का ढेर

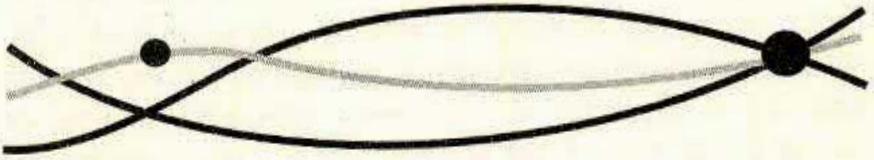

*पढ़ें यहेजकेल 37*

दृश्य एक घाटी का है। यहेजकेल को वहां परमेश्वर द्वारा एक दर्शन में ले जाया गया। उस दर्शन में परमेश्वर उसको उस घाटी में से लेकर गया। भूमि पर हड्डियां पड़ी थीं। ये बहुत सी सूखी हड्डियां थीं। स्वाभाविक था कि वे वहां बहुत समय से पड़ी थीं। ऐसा लगता था मानो वहां कोई बड़ा युद्ध लड़ा गया हो। यहेजकेल उनकी हड्डियां देख रहा था, जो उस युद्ध में मारे गए होंगे।

जब यह दृश्य यहेजकेल के सामने था, तो उसने प्रभु को यह पूछते सुना कि क्या ये हड्डियां फिर जी सकती हैं। यहेजकेल ने परमेश्वर से कहा कि वही बता सकता है कि वे हड्डियां फिर जी सकती हैं या नहीं। मानवीय रूप से यह संभव नहीं था, परन्तु परमेश्वर के साथ सब कुछ संभव है।

तब परमेश्वर ने भविष्यवक्ता से कहा, हड्डियों से भविष्यवाणी कर। यहेजकेल ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और भविष्यवाणी की। हमें नहीं बताया गया कि उसने कैसे किया या क्या कहा। परमेश्वर ने ज़रूर उसको वे शब्द दिये होंगे जो उसने बोले। जब उसने बोलना समाप्त किया तो उसने एक वाणी सुनी जो घाटी के तल से आ रही थी। वह खड़खड़ाने की ध्वनि थी। जब उसने अपने चारों ओर देखा तो उसने हड्डियों में गति देखी। लगा,

मानो कोई कुशल कारीगर, जो मानवीय आंखों से दिखाई नहीं दे रहा था, इन हड्डियों को एक साथ जोड़ रहा था। एक एक टुकड़ा जुड़ रहा था। जब प्रत्येक हड्डी को अपना सही स्थान मिल गया तो यहेजकेल ने देखा ढांचों पर मांस व नसें चढ़ने लगीं। जल्दी ही वे शव त्वचा से ढक गये। शव भूमि पर खामोश पड़े थे। जबकि उनके शव पुन:स्थापित हो रहे थे, अभी उनमें प्राण न था। हमारे समय की बहुत सी कलीसियाओं के समान उनका एक बाह्य रूप था, परन्तु उनमें जीवन न था।

फिर प्रभु ने यहेजकेल से कहा कि 'श्वास' से बात करे और कहे, 'श्वास, चारों दिशाओं से आ और इन मृतकों में प्रवेश कर ताकि वे जीवित हों' (पद 9)। यहेजकेल ने आज्ञापालन किया। उसने घाटी में हवा को चलते देखा। वायु के साथ जीवन आया और मृतक जीवित होकर अपने पैरों पर खड़े हो गये। यहेजकेल ने चारों ओर देखा और एक अति प्रभावशाली सेना को देखा। यह दर्शन किस बारे में था? परमेश्वर ने भविष्यवक्ता को समझाया कि हड्डियां उसकी प्रजा इस्राएल थी। उनको काट डाला गया था। वे निराश थे। परमेश्वर उनको पुन:स्थापित करेगा। वह उनको उनका देश लौटायेगा। वह उनको निर्वासन से लौटा लायेगा और वे उस देश का आनन्द लेंगे जिसकी प्रतिज्ञा उनके पूर्वजों से की गई थी। परमेश्वर उनको न केवल उनका देश लौटायेगा, परन्तु यह वायु उन्हें आत्मिक जीवन देगी (पद)। उसका आत्मा उन पर ताज़गी पूर्ण जागृति की सामर्थ के साथ आयेगा। जब सब कुछ खोता हुआ दिखाई दे रहा था, परमेश्वर ने गतिशील होकर आशा को फिर दिया।

परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि वह उनकी कब्रों को खोल देगा व जीवन को फेर देगा। आज हमें इसको देखना कितना आवश्यक है। एक बार फिर आत्मिक रूप से मृत विश्वासियों की कब्रों को खुला देखें कि ये व्यक्ति मसीह में नया जीवन पायें। एक बार फिर हमें नवजीवन में अपने समय की कलीसियाओं के ऊपर से नवीनीकरण को देखना होगा ताकि वे अपनी आत्मिक सुस्ती व अनदेखी से निकलें और अपने प्रभु व उद्धारकर्त्ता की सेवा व महिमा करें।

इसके बाद परमेश्वर ने यहेजकेल को आज्ञा दी कि दो लाठियां लेकर उन पर लिखे (पद 6)। पहली लाठी पर उसको लिखना था, 'यहूदा व उसके साथी इस्राएल की संतान के लिये।' दसूरी लाठी पर ये शब्द लिखने

थे, 'यूसुफ के लिये, एप्रैम की लाठी और उनके साथी समस्त इस्राएल के घराने के लिये।' इसका हम क्या अर्थ निकालें? इससे बहुत वर्ष पहले, परमेश्वर के लोग दो राष्ट्रों में बंट गये थे: इस्राएल व यहूदा। ये लाठियां इन राष्ट्रों का प्रतीक थीं। यहेजकेल को दोनों लाठियों को अपने हाथ में इकट्ठे लेना था, इस सत्य के प्रतीक के रूप में कि एक बार पुनः वे एक राष्ट्र होंगे। आगे को वे विभाजित न रहेंगे। उनके निर्वासन से लौटने पर ऐसा हुआ। वे एक जाति के रूप में लौटे तथा पुराने झगड़े समाप्त हुए।

इन मृतक हड्डियों को न केवल नया जीवन दिया गया, परन्तु वे एकता में एक साथ रहेंगे भी। जब वे लौटे तो एक राजा के आधीन इकट्ठे होंगे (पद 22)। उनके पापों से उन्हें शुद्ध किया जायेगा और फिर वे स्वयं को मूर्तियों से अशुद्ध न करेंगे (पद 23)। वह राजा जो उन पर राज्य करेगा उसको यहां 'मेरा सेवक दाऊद' कहा गया है। यह राजा कौन है? निस्सन्देह दाऊद राजा नहीं, जो बहुत वर्षों पहले मर गया था। परन्तु राजा दाऊद के वंश से होगा। प्रभु यीशु मसीह दाऊद के वंश से है। वह उसका स्वयं नया राजा होगा। पद 24 के अनुसार वह अपने लोगों की अगुवाई प्रभु की आज्ञाओं के पालन में करेगा। वह उनके साथ एक नई वाचा की स्थापना करेगा। वह सदा के लिये उनका राजा होगा। सिवाय यीशु के कोई और राजा इस भविष्यवाणी को पूरा नहीं कर सकता था। केवल वही अनन्तकाल तक अपनी प्रजा पर राज्य कर सकता है। उनकी आशा कितनी उज्जवल थी जब कि वे महान राजा के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो उन पर राज्य करेगा।

इस भविष्यवाणी का एकदम पूरा होना हुआ जब परमेश्वर के लोग निर्वासन से लौटे और अपने देश में फिर स्थापित हो गये। वहां उन्हें नवजीवन मिला। वे एक राष्ट्र में जुड़ गये, जैसा परमेश्वर ने यहेजकेल द्वारा भविष्यवाणी की थी। परन्तु समस्या तब उठती है जब हम नये राजा प्रभु यीशु के प्रति यहूदियों की प्रतिक्रिया को देखते हैं। हमारा अनुच्छेद हमें बताता है कि वे ध्यानपूर्वक उसके नियमों का पालन करेंगे। परन्तु हम ऐसा नहीं देखते, तब भी जब प्रभु यीशु इस संसार में आया। यहूदियों ने अपने राजा के रूप में उसे अस्वीकृत कर दिया। इसलिये लगता है कि परमेश्वर को अपने लोगों के जीवन में अभी भी एक बड़ा कार्य करना है। क्या वह यहूदियों में एक बड़ी जागृति लायेगा? क्या वे एक जाति के रूप में प्रभु यीशु की ओर फिरेंगे और उसे अपना मसीह मानेंगे? हम अन्ततः इसके पूरा होने की प्रतीक्षा में हैं।

यहां हमें यह समझना है कि यद्यपि, सामान्यता, यहूदियों ने प्रभु यीशु को अपना मसीह मानने से इंकार किया, परन्तु नये नियम की कलीसिया उन्हीं में से उत्पन्न हुई। हम भूल नहीं सकते कि हमारे प्रभु यीशु के शिष्य यहूदी थे। ये लोग यीशु के संदेश को संसार भर में लेकर गये। यह परमेश्वर की इच्छा थी कि अपने लोगों के द्वारा जगत के छोर तक पहुंचे: 'तब सब जातियां जानेंगी कि मैंने इस्राएल को पवित्र किया है जब मेरा पवित्रस्थान सदाकाल के लिये उनके मध्य होगा' (पद 28)।

परमेश्वर यहां प्रतिज्ञा करता है कि अपने पवित्रस्थान को वह जातियों में स्थापित करेगा। पुराने नियम के संदर्भ में, यह शब्द उस स्थान को बताता था जहां परमेश्वर की उपस्थिति वास करती थी (भजन. 102:19; लैव्य. 4:6)। जब परमेश्वर ने यहेजकेल को बताया कि उसका पवित्र स्थान सदा तक उसकी प्रजा के मध्य होगा, परमेश्वर उसको बता रहा था कि उसकी उपस्थिति उनके मध्य होगी। जागृति एक तीसरे उद्देश्य की पूर्ति करेगी, न केवल वह परमेश्वर की प्रजा के लिये नवजीवन लायेगी और एक प्रभु के आधीन उन्हें जोड़ेगी, बल्कि उनको सेवकाई के लिये पृथ्वी की छोर तक के लिये निकालेगी।

जब पिन्तेकुस्त के दिन इन यहूदी शिष्यों पर पवित्रात्मा उण्डेला गया, तीन हज़ार स्त्री व पुरुष एक ही दिन में कलीसिया में जुड़ गये। उसके बाद के दिनों में, जब पवित्रात्मा उतरा, प्रतिदिन लोग कलीसिया में जुड़ रहे थे। जब प्रभु की उपस्थिति अपने लोगों में वास कर रही थी, जातियां प्रभावित हुईं। यहूदी विश्वासियों के छोटे समूह से, जो यरूशलेम में जमा थे, एक अन्तर्सष्ट्रीय कलीसिया का जन्म हुआ। इन सूखी यहूदी हड्डियों से, परमेश्वर ने एक सामर्थी सेना की रचना की। वह सेना समस्त पृथ्वी पर सुसमाचार के संदेश के साथ फैल गई। आज भी वह फलती फूलती जाती है।

हमें प्रभु की कितनी स्तुति करनी चाहिये कि आज वह पृथ्वी पर एक सामर्थी कार्य कर रहा है। इस्राएल व यहूदा जैसी विद्रोही जाति में से एक विश्वासियों की सेना जन्मी। आज यह सामर्थी सेना समस्त संसार में फैल रही है। कलीसिया के इतिहास में हमने कभी सुसमाचार का इतना फैलाव नहीं देखा। मसीह के सुसमाचार का संदेश हर देश तक पहुंच गया है। हर जाति के लोगों ने अपने हृदय व जीवन यीशु मसीह के प्रभुत्व के आधीन किये हैं। उन सूखी हड्डियों में से सचमुच परमेश्वर ने एक बड़ी सामर्थी

सेना को तैयार किया है। वह आपका भी प्रयोग कर सकता है। वह जीवन देने वाला परमेश्वर है। आप शायद स्वयं को अयोग्य या मजबूर समझते हों, परन्तु यह संदेश हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर के लिये सब कुछ संभव है। क्या आप उस पर भरोसा करेंगे और विश्वास में कदम बढ़ायेंगे?

***विचार करने के लिये:***

- इस अध्याय में कलीसिया के भविष्य के लिये आप क्या आशा पाते हैं?
- इस जागृति का फल क्या होगा जो परमेश्वर इस्राएल में लायेगा? उनके जीवनो में? उनके चारों ओर के लोगों के जीवनों में?
- रूप रखना परन्तु जीवन्त न होना इस संभावना के विषय यह अनुच्छेद हमें क्या सिखाता है? वह जीवन क्या है?
- परमेश्वर के आत्मा ने आपके जीवन में क्या परिवर्तन किया है?

***प्रार्थना के लिये:***

- क्या आप कुछ ऐसे लोगों को जानते हैं जो जीवन के आत्मिक मुद्दों के प्रति 'मृतक' हैं? क्षण भर को परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह उनकी मृत हड्डियों में प्राण डाले।
- परमेश्वर से मांगें कि इस नवीनीकरण को आपके व आपकी कलीसिया के जीवन में लाये।
- ध्यान दें कि इस नवीनीकरण में जो परमेश्वर लाएगा, संबंधों की मरम्मत की जायेगी। क्या कोई है जिससे प्रेम करने में आपको समस्या होती है? परमेश्वर से मांगें कि इस संबंध में आपके लिये चंगाई लाये।

39

# गोग का नाश

*पढ़ें यहेजकेल 38*

मसीही जीवन की बड़ी आशीषों में से एक है यह ज्ञान कि यीशु मसीह में हम जयवन्त से भी बढ़कर हैं। कोई शत्रु हम पर जय नहीं पा सकता। कोई परीक्षा हमारे लिये इतनी शक्तिशाली नहीं कि हम पर प्रभुत्व करे। इसका अर्थ यह नहीं कि अपने जीवन में हमें रुकावटों का सामना नहीं करना होगा। यद्यपि हमारे जीवन में जांच व परीक्षाएं होंगी। हमें मसीह में निश्चय है कि हम जयवन्त से भी बढ़कर हैं।

अध्याय 38 व 39 में यहेजकेल को गोग के विरुद्ध भविष्यवाणी करने के लिये कहा गया था। गोग कौन है? यहेजकेल 38:2 में हम समझते हैं कि गोग मागोग, मेशेक व तूबल प्रदेशों का प्रधान था। ये क्षेत्र आधुनिक तुर्किस्तान के क्षेत्र में थे। उत्पत्ति: 0:2 से हम पढ़ते हैं कि मागोग, मेशेक व तूबल यापेत के पुत्र वह नूह के पौत्र थे।

पद 6 से हम पाते हैं कि गोग अपने दिनों में एक शक्तिशाली व प्रभावशाली नेता था। उसकी महान सेना का वर्णन किया गया है। उसकी सेना में बहुत से घोड़े व घुड़सवार थे जो तलवारों व ढालों से लैस थे। यह सत्य गोग को और भी प्रभावशाली बनाता है कि वह देशों के एक बड़े गुट

का नेता था। उसकी सेना के साथ फारस, कूश, पूत, गोमेर व बेत तोगर्मा की सेनाएं थी। कौन ऐसे शत्रु के सामने खड़े होने का साहस कर सकता था?

समय आ रहा था, यहेजकेल ने भविष्यवाणी की, जब गोग व उसकी साथी जातियां उस देश पर आक्रमण करेंगी जो 'युद्ध से संभला' था (पद 8)। जिन लोगों पर वे आक्रमण करेंगे, वे लोग होंगे जिनको चारों ओर की जातियों से इकट्ठा किया गया व इस्राएल के पर्वतों पर चढ़ाकर लाया गया। यह जाति कोई और न थी, बल्कि इस्राएल थी। तूफान के समान गोग व उसके साथी परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध बढ़ेंगे (पद 9)। यहां ध्यान दें कि इस देश के वासी बिना चारदीवारी के गांवों में रहते थे (पद 11)। जैसे कोई बलवान बच्चों से मिठाई छीने, गोग व उसकी बड़ी सेना रक्षाहीन इस्राएल को लूटेगी। वह आक्रमण करेगी, लूटेगी तथा इस्राएल के पुनःस्थापित खण्डहरों को लूटेगी (पद 2)।

उत्तर से गोग व उसके साथी परमेश्वर की प्रजा के विरुद्ध उठेंगे, एक बड़े बादल के समान वे देश को ढक लेंगे (पद 15-16)। हमें बताया गया है कि यह लड़ाई तब तक नहीं होगी जब तक अन्त समय न आये, जब परमेश्वर की प्रजा फिर अपने देश में स्थापित होगी (पद 16)। जबकि उसकी प्रतीक्षा करने के लिये यह उज्जवल भविष्य न था। परमेश्वर ने एक उत्साहवर्धक वचन अपने लोगों को दिया। जब गोग इस्राएल पर आक्रमण करेगा तो परमेश्वर का प्रकोप भड़केगा। जब परमेश्वर धर्मी प्रकोप में उठेगा पृथ्वी कांपेगी (पद 19)। सारी सृष्टि - समुद्र की मछलियों से लेकर आकाश के पक्षियों तक परमेश्वर के पवित्र क्रोध के कारण कांपेंगी। उन दिनों पर पृथ्वी पर रहनेवाली समस्त जातियां इस अद्‌भुत परमेश्वर की महान उपस्थिति के सामने कांपेगी। उसके प्रकोप के दिन पर्वत उलट जायेंगे। पहाड़ियां समतल हो जायेंगी। नगरों की दीवारें भूमि पर गिर जायेंगी, और लोग सुरक्षाहीन होंगे। उस दिन परमेश्वर गोग के विरुद्ध तलवार चलायेगा (पद 21)। गोग नाश करने आयेगा, परन्तु स्वयं नाश होगा। परमेश्वर के प्रकोप का दिन महामारी व खून बहाने का दिन होगा। परमेश्वर स्वर्ग की खिड़कियां खोल कर गोग पर जलप्रलय, ओले, आग व गंधक बरसायेगा तथा उसको दण्ड देगा (पद 22)।

इस भविष्यवाणी को हम कैसे समझें? प्रका. वा. 20:7-10 में ऐसी ही घटना की भविष्यवाणी प्रेरित यूहन्ना करता है। इस अनुच्छेद में शैतान को

बंधुवाई से छोड़ा जायेगा। वह जातियों को भरमाने के लिये निकलेगा। वह गोग व मागोग को इकट्ठा करेगा और परमेश्वर की प्रजा के विरुद्ध आयेगा। यह उसी वर्णन के समान है जो यहेजकेल ने किया। शैतान सफल न होगा। प्रका. वा. 20:9 हमें बताता है कि स्वर्ग से गोग व मागोग पर अग्नि वर्षा होगी। यहेजकेल ने ऐसी ही एक और बात का ज़िक्र किया जब उसने लिखा कि परमेश्वर 'तेज वर्षा, ओले तथा आग और गंधक' गोग व उसकी सेना पर उण्डेलेगा। क्या ये विवरण एक ही घटना के हैं?

क्या यह भविष्यवाणी अभी पूरी होने वाली है? क्या परमेश्वर के लोगों को सताव का सामना करना होगा? यह महान सेना क्या है जो परमेश्वर की प्रजा पर आक्रमण करेगी? यह सब कब होगा? जब कि इन प्रश्नों के स्पष्ट उत्तर नहीं हैं, हमें निश्चय है कि शैतानन ने अभी हार नहीं मानी है। बाइबल हमें बताती है कि अन्त के दिनों में वह पृथ्वी पर चोट करेगा। जब उसको छोड़ा जाएगा तो परमेश्वर की प्रजा के विरुद्ध उसकी लड़ाई क्रूर होगी। हम नहीं जानते यह कब व कैसे होगा। हमारे लिये यही चेतावनी है कि ऐसा होगा। इस अध्याय में हमारे समझने के लिये यह आवश्यक है कि मसीह में पूर्ण जय है। परमेश्वर के कार्य को नष्ट करने को शैतान पूर्ण प्रयत्न करेगा। वह हम पर आक्रमण करेगा और अपने साथियों को हम पर चढ़ायेगा। हमें दुख उठाना होगा। हमें इस सत्य का सामना करना होगा कि हम एक आत्मिक युद्ध से सम्बद्ध हैं। यह देखकर हमें विस्मय नहीं होना चाहिये कि शत्रु हम पर आक्रमण करेगा। उसके विरुद्ध इस लड़ाई में हम में से कुछ पर शैतान के मारक शस्त्र प्रभावी होंगे। मसीही जीवन एक अनुशासन व कठिनाई का जीवन है। ऐसे समय होंगे जब शत्रु, इतनी बड़ी संख्या में हम पर चढ़ाई करेगा तो हम पर निराश होने तथा दिल टूटने की परीक्षा डालेगा। यहेजकेल 8 हमें धीरज धरने को कहता है। जय हमारी है।

हम जयवन्त हो सकते हैं। परमेश्वर हमारी पराजय नहीं होने देगा। संसार एक दिन उसके पैरों पर झुकेगा और पहचानेगा कि वह सब का प्रभु है। स्तुति परमेश्वर की हो, जो प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जय देता है (1कुरि. 15:87)। हम विजयी होंगे। यहेजकेल ने गोग व उसकी विशाल सेना पर जय की प्रतिज्ञा की। शैतान हारा हुआ शत्रु है। काश, जय हमें हियाव दे कि हमारे सामने जो लड़ाई है उसका सामना कर सकें।

### *विचार करने के लिये:*

- इस अध्याय विशेष में आपको क्या उत्साह प्राप्त होता है?
- आप क्यों सोचते हैं कि परमेश्वर इस विशाल सेना को अपने लोगों के विरुद्ध आने देगा? क्या परीक्षाओं व कठिनाइयों का कोई उद्देश्य है, जिन में से होकर हमें गुज़रना है?

### *प्रार्थना के लिये:*

- कुछ समय परमेश्वर का धन्यवाद करने में दें कि वह उस किसी से महान है जो शत्रु हम पर फैंक सकता है।
- क्या आप अपने जीवन के उन क्षणों को याद कर सकते हैं जब आपको भी शत्रु का सामना करना पड़ा हो, जो आपसे कहीं बड़ा था? कुछ समय परमेश्वर की स्तुति व धन्यवाद में लगायें उस जय के लिये जो जीवन के उस समय आपको दी।

40

# परमेश्वर परीक्षाएं क्यों भेजता है?

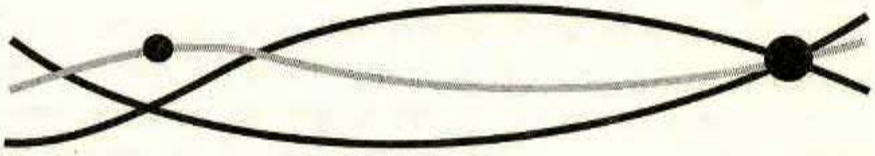

*पढ़ें यहेजकेल 39*

हमने देखा कि गोग इस्राएल देश पर आक्रमण करेगा तथा इस प्रक्रिया में नाश होगा। इस अध्याय में यहेजकेल गोग व उसके लोगों के विरुद्ध भविष्यवाणी जारी रखता है। पद हमें बताता है कि परमेश्वर गोग के विरुद्ध था। उसने शांति के समय परमेश्वर की प्रजा पर आक्रमण किया। यहां पद 2 में ध्यान दें स्वयं परमेश्वर इस शत्रु की अगुवाई कर उसे इस्राएल जाति के विरुद्ध ले गया। हमें स्पष्ट विचार दिया गया है कि परमेश्वर इस्राएल पर आक्रमण कराने के लिये गोग को ला रहा था। परमेश्वर क्यों अनुमति देगा कि उसके लोगों पर आक्रमण किया जाये? निम्न पद इस प्रश्न पर कुछ प्रकाश डालते हैं। यह आज हमारे समाज में पीड़ा व दुष्टता की समस्या पर भी कुछ प्रकाश डालते हैं। आइये देखें क्यों परमेश्वर ने गोग को अनुमति दी कि उसकी प्रजा पर आक्रमण करे।

पहले पद में देखें कि जबकि परमेश्वर ने गोग की अगुवाई की कि उसकी प्रजा के विरुद्ध चढ़ाई करे, उसने तलवार को भी उसके हाथ से गिरा दिया। गोग व उसकी सारी सेना इस्राएल के पर्वत पर पराजित होगी। आकाश के पक्षी उनके शवों को खायेंगे (पद 4)। जब कि वे मृतक खुले मैदान में पड़े होंगे, परमेश्वर उनके देशों में आग भेजेगा और उन्हें पूर्णतया नाश करेगा

(पद 6)। परमेश्वर के लोग अपने विश्वास में विस्तार पायेंगे। उनको उस पर भरोसा करना पड़ेगा, जब शत्रु आयेगा। परमेश्वर इस्राएल को नाश के कगार पर लायेगा और फिर जय दिलायेगा। सारा नियंत्रण परमेश्वर का होगा।

यद्यपि आपके चारों ओर परिस्थितियां टूटती दिखती हैं और आपको लगता है कि शत्रु आपकी गर्दन तक पहुंच गया, कभी परमेश्वर के नियंत्रण पर शक न करें। वह जानता है वह क्या कर रहा है। वह जानता है आप कितना कर सकते हैं और उन सबसे जय की प्रतिज्ञा करता है जो उस पर भरोसा करते हैं। ध्यान दें, इस पीड़ा का प्रभाव क्या होगा। पद 6 में यहेजकेल बताता है कि जब ये बातें होंगी, परमेश्वर के लोग जानेंगे कि वह (पराक्रमी) प्रभु है। यदि हमारे सामने कभी समस्याएं न आयें, हम कैसे अपनी समस्याओं पर जय पाने के लिये परमेश्वर की सामर्थ का अनुभव करेंगे? परमेश्वर हमें दिखाता है कि वह कितना महान है, इन समस्याओं को हमारे रास्ते में आने देने और फिर उन पर हमें जय दिलाने के द्वारा ।

पद 7 हमें हमारी कठिनाइयों के विषय: एक और बात बताता है उनके द्वारा परमेश्वर अपने पवित्र नाम को महिमा देता है। जब हम पाप व पीड़ा पर परमेश्वर की विजय को देखते हैं, तो हमारी प्रतिक्रिया स्तुति व धन्यवाद की होती है। जब हम देखते हैं कि परमेश्वर किस प्रकार बुराई व विद्रोह को ठीक करता है, तो हम आज्ञाकारिता व विश्वासयोग्यता में आते हैं। कई बार परमेश्वर हमारे साथ बुराई होने की अनुमति देता है ताकि उसके द्वारा वह अपनी महान पवित्रता को पाप से घृणा के प्रति प्रदर्शित करे। परमेश्वर ने गोग को अनुमति दी कि उसकी प्रजा पर आक्रमण करे। उसने अपने लोगों को गोग के द्वारा पाप के भयंकर स्वभाव को दिखाया। तब उसने पाप के महादण्ड को उन्हें दिखाया। अन्ततः परिणाम यह हुआ कि परमेश्वर के लोगों में पाप के प्रति घृणा तथा उसके पवित्र चरित्र के प्रति एक गहरी सराहना हुई।

पद 9-16 गोग की पराजय का चित्रण करता है। अपने सामने हम देखते हैं कि गोग की सेना के शव देश भर में बिखरे पड़े हैं। उनके शस्त्र उनके चारों ओर पड़े हैं। शस्त्रों की संख्या जो वे परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध प्रयोग करने के लिये आये थे इतनी अधिक थी कि अब उन्हें सात वर्ष तक जलाने की लकड़ी की खोज की आवश्यकता न होगी। वे केवल शत्रु के युद्ध के यंत्रों को जलायेंगे (पद 9-10)। इस्राएलियों को उन सैनिकों को दफन करने

में सात महीने लगेंगे जिनका उस महायुद्ध में नाश होगा (पद 12)। लोगों को रखा जायेगा कि देश भर में उन शवों की खोज करें जो मैदानों में पड़े होंगे। जब कोई शव मिलेगा, तो वहां एक चिन्ह लगायेंगे (पद 15)। दूसरे लोग उनके पीछे आकर शव को दफन करेंगे (पद 14)। पद 17-20 में आकाश के पक्षी तथा जंगली पशु बुलाये जायेंगे कि इस बड़े सफाई अभियान में हाथ बंटायें। वे इस्राएल के शत्रुओं का मांस तब तक खायेंगे जब तक कि खाने की और आवश्यकता न हो। वे तब तक खून पीते रहेंगे जब तक नाश न हो जायें। इस प्रकार उन्हें अशुद्धता से शुद्ध किया जायेगा।

क्या हो आज परमेश्वर कलीसियाओं में यदि ऐसी ही खोज करने लगे? क्या वह ऐसे पाप व विद्रोह में मृतकों के शव पायेगा? आप के अपने जीवन का क्या हाल है? यदि आपके गुप्त भेदों को पाने के लिये स्वर्गदूतों को भेजा जाये, तो क्या मिलेगा? भजनकार ने परमेश्वर को पुकारा कि उसको जांचे (भजन. 139:23-24)। कितनी आवश्यकता है कि हमारा व्यवहार ऐसा हो।

प्रभु, आ, और मेरे हृदय को जांच। उन क्षमा न किये गये दर्द व चोट को ढूंढें। उन स्वीकार न किये गये पापों को उघाड़ें। मुझ पर मेरे बुरे व्यवहार व उद्देश्य प्रकट कर। मुझे वे बातें दिखा जो मुझे तेरे अधिक अनुभव को पाने से रोकती हैं। आ और मुझे शुद्ध कर। आ और मुझे नया कर, चाहे वह कितना भी पीड़ादायक क्यों न हो।

पद 22-24 में हम पीड़ा व परीक्षा का एक और कारण देखते हैं। परमेश्वर उनका प्रयोग हमें अनुशासित करने के लिये करता है ताकि हमें अपनी ओर खींच ले। पद 23 से भी हम सीखते हैं कि प्रभु ने अपने लोगों को निर्वासन में भेजा था और उनकी अविश्वासयोग्यता के कारण पीड़ा व परीक्षा से उनको भर दिया। उसने उनसे अपना मुख छिपाया और उन्हें शत्रु के हाथ में दे दिया। उसने उनके साथ उनकी दुष्टता के अनुसार व्यवहार किया (पद 24)। जब कि हमें सदा यह नहीं सोचना चाहिये कि हम किसी गुप्त पाप के कारण दुख उठाते हैं, परन्तु परमेश्वर द्वारा अनुशासन एक सत्य है।

ऐसे सत्य होते हैं जब परमेश्वर पीड़ा व परीक्षा को हम पर प्रभावी होने देता है ताकि अपने विद्रोह की सत्यता को जान सकें। परन्तु ध्यान दें कि यह अनुशासन सदा तक नहीं रहता। जब वे शर्म उठा चुकते हैं और शिक्षा पा लेते हैं, परमेश्वर फिर उनके पास आता है। एक बार फिर वे सुरक्षा में

वास करते हैं। उनके शत्रुओं को रोक दिया जाता है। फिर परमेश्वर अपना मुख उन पर प्रकट करता है, ताकि फिर कभी न छिपाये (पद 29)। वह अपना आत्मा उन पर उण्डेलता है (पद 29)। परमेश्वर का नाम अपने लोगों में ऊंचा किया जाता है और बहुत सी जातियां उसकी महिमा को देखती हैं (पद 27)। उन पर कठोरता का समय थोड़ी देर का था। उनकी पीड़ा के द्वारा, परमेश्वर ने उनको अपनी ओर खींचा। उसके अनुशासन की आग में उनको लाया जाता है। इस सब का उद्देश्य होता है कि अपने प्रियों को अपनी निकटता में लाये।

### *विचार करने के लिये:*

- इस अध्याय में पीड़ा के किन तीन कारणों पर गौर किया गया है? क्या अपने जीवन में आप इसका कोई व्यावहारिक उदाहरण पाते हैं?
- हमने देखा कि यद्यपि परमेश्वर पीड़ा को आने देता है तौभी वह उस पीड़ा को अपने नियंत्रण में रखता है। इससे आपको क्या तसल्ली मिलती है? क्या आप इस सत्य को उस किसी परिस्थिति पर लागू कर सकते हैं जिसमें से आप इस समय अपने जीवन में गुज़र रहे हैं?
- आपकी पीड़ा व परीक्षा ने आपको प्रभु यीशु के कितने निकट किया है?

### *प्रार्थना के लिये:*

- प्रभु से विनती करें कि आपके हृदय को जांचे। उससे मांगें कि हर उस किसी बात को उघाड़े, जिसका अंगीकार कर सुधार करना हो।
- उससे उस शक्ति के लिये विनती करें कि आप आगे कदम बढ़ा कर बातों को ठीक करें।
- उस परीक्षा के लिये धन्यवाद करें जिसमें से आप इस समय गुज़र रहे हैं। उसकी स्तुति करें कि न केवल यह पीड़ा उसके नियंत्रण में है बल्कि वह उसका प्रयोग अपने नाम को महिमा देने के लिये कर रहा है।

41

# यहेजकेल का मन्दिर

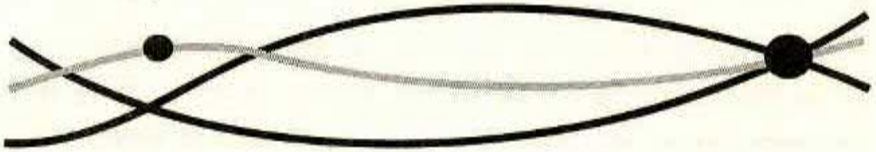

*पढ़ें यहेजकेल 40:1-43:12*

परीक्षा के समय, अन्तिम बात जिस पर हम सोचते हैं वह है, वे सब आशीषें जो प्रभु ने हमें दी हैं। परन्तु इन क्षणों में हमें अपनी आत्माओं को उठाना है और परमेश्वर की महान प्रतिज्ञाओं को याद करना है। इससे अधिक हमारे उत्साह का नवीनीकरण कुछ नहीं कर सकता, उन वस्तुओं की तुलना में जो आनेवाली वस्तुओं की उज्जवल आशा है। जब हमें आभास होता है कि हमारे दुख केवल कुछ समय के लिये हैं, हम धीरज धरने में अपने प्रयत्नों को पुनःस्थापित करते हैं।

इस विभाग में भविष्यवक्ता यहेजकेल को दर्शन में इस्राएल में ले जाया गया। यह दर्शन बाबुल के दासत्व के पच्चीसवें वर्ष में मिला, नगर के बंधुवाई में जाने के चौदह वर्ष बाद। यह हमें दिखाता है कि यहेजकेल पहले दासत्व में स्वदेश से बाबुल लाया गया था। इस्राएली निर्वासन में कई चरणों में गये थे। कई वर्षों तक शत्रु परमेश्वर के लोगों को बंधुवाई में लेता रहा। दर्शन में यहेजकेल को पर्वत के शिखर पर ले जाया गया। वहां से जब उसने दक्षिण की ओर देखा, तो उसे कुछ एक महानगर के समान दिखा। उसे उधर ले जाया गया जहां वह एक व्यक्ति से मिला जो तांबे (पद 3) या पीतल का सा था। यह उसकी शायद चमक के विषय था। यह व्यक्ति फाटक पर

खड़ा था और उसके हाथ में सूत और नापने की लाठी थी (पद 3)। यहेजकेल को आज्ञा दी गई कि उस सब की ध्यानपूर्वक जांच करे जो वह व्यक्ति उसे दिखाने पर था। जो उसने देखा वह उसे इस्राएल को बताना है (पद 4)।

यहेजकेल ने नगर में एक बड़ा मन्दिर देखा। मन्दिर के चारों ओर एक दीवार थी। वह व्यक्ति जिसके पास मापने की लाठी थी उसने उससे दीवार को नापा। वह चौड़ाई व मोटाई में एक लाठी के बराबर था (अर्थात् 3 मी. या 9 फीट ऊंचाई या चौड़ाई)। संभवतः यह दीवार बड़ी मज़बूत थी।

इस मन्दिर के विवरण को सरल करने के लिये, मैंने एक चित्र बनाया है। यह चित्र उसका सिद्ध नमूना तो नहीं है, परन्तु मन्दिर के विषय कुछ बता पायेगा जिसका वर्णन हमारे लिये अगले कुछ अध्यायों में किया गया है। आइये इस मन्दिर पर गौर करें।

**चित्र 41:1**

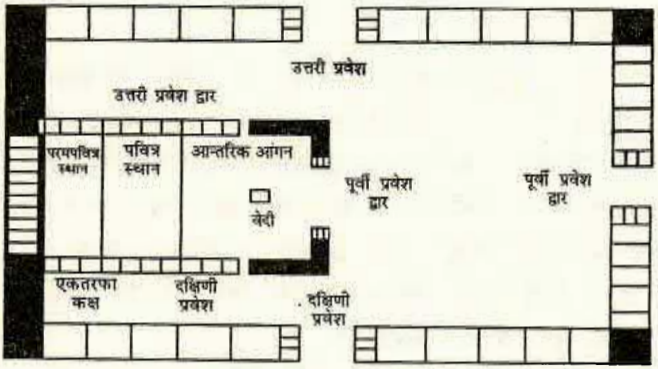


जैसा हमने पहले ही कहा, एक बड़ी दीवार मन्दिर के चारों ओर थी (पद 5-6)। जब वह व्यक्ति लाठी लेकर पूर्वी प्रवेश से डेवढ़ी को नापने चला यहेजकेल देख रहा था। वह एक लाठी के बराबर था (मीटर या 9 फीट)। कोई भी इन तीन प्रवेश द्वारों में से एक के द्वारा मन्दिर क्षेत्र के आंगन में प्रवेश कर सकता था। पूर्वी प्रवेश, पद 6; उत्तरी प्रवेश, पद 20; दक्षिणी प्रवेश, पद 24। इन प्रवेशों तक सात सीढ़ियां थीं (पद 22, 26)। प्रत्येक प्रवेश द्वार पर 'रक्षकों के लिये तीन चौकी' थीं, प्रत्येक दिशा में (पद 7,10, 21)। एक चौकी एक बांस जितनी थी। (एक वर्ग मीटर या 9 वर्ग फुट, पद 6) यहेजकेल ने देखा कि चारों ओर खिड़कियां थीं।

यहेजकेल व उसका अगुवा मन्दिर के बाह्य आंगन में गये (पद 17)। यहेजकेल ने उन कमरों को देखा जो बाह्य आंगन की दीवारों में बने थे। दीवार के साथ साथ 30 कमरे थे (पद 17)। इस कक्षों का प्रयोग चीज़ें जमा करने के लिये किया जाता था। यह स्पष्ट करेगा तीन मीटर मोटी दीवार के कारण का, क्योंकि दीवार में कमरे बने थे। यहेजकेल को पूर्वी द्वार से ले जाया गया (पद 6) उत्तरी फाटक तक (पद 25) और अन्ततः दक्षिणी फाटक तक (पद 24)। जब वे एक फाटक से दूसरे फाटक तक जा रहे थे, यहेजकेल ने सब बातों पर ध्यान दिया, जबकि वह व्यक्ति बांस से नाप रहा था।

बाह्य आंगन की जांच करने के बाद दोनों व्यक्ति मन्दिर के आन्तरिक आंगन (पद 28) की ओर गये (पद 28)। आन्तरिक आंगन सौ हाथ लम्बा व सौ हाथ चौड़ा था (लगभग 46 मीटर या 150 फुट)। इस आंगन के तीन फाटक थे (दक्षिण, पद 28; पूर्व, पद 32; उत्तर, पद 35)। ये आन्तरिक मार्ग बाह्य आंगन की पंक्ति में थे। आठ सीढ़ियां आन्तरिक आंगन में जाती थीं, जो उसको बाह्य आंगन से ऊंचा बनाता था (पद 31)। यहेजकेल व उसका अगुवा आन्तरिक आंगन से दक्षिण की ओर गये (पद 28), पूर्व की ओर (पद 32) और अन्ततः उत्तर की ओर (पद 35)। यहां फिर मापा गया और यहेजकेल ने सब बातें विस्तार से लिखीं। यहेजकेल ने कक्षों पर ध्यान दिया जहां होमबलि को धोया जाता था (पद 38)। उसने वे मेज़ें देखीं जिन पर पशुओं को मारने के लिये रखा जाता था ताकि बलि के लिये तैयार करें (पद 39-43)। आन्तरिक आंगन की दीवारों के अन्दर बहुत से कमरे बने हुए थे। ये कक्ष गायकों व याजकों द्वारा प्रयोग होते थे जो आराधना से संबंधित थे (पद 44-46)। आन्तरिक आंगन में एक वेदी भी थी (पद 47)।

अध्याय में यहेजकेल तथा वह व्यक्ति जिसके पास बांस था, मन्दिर के पवित्रस्थान में गए। मन्दिर के भीतरी आंगन से वे सीढ़ियों पर चढ़े ताकि 'पवित्र स्थान' तब पहुंच सकें (40:49)। पवित्र स्थान को दो भागों में बांटा गया था (पद 1-4)। हमारे चार्ट में बाह्य कक्ष को पवित्र स्थान का नाम दिया गया है। सबसे भीतरी कक्ष को यहेजकेल का अगुवा 'परम पवित्र स्थान' कह रहा था जैसा हमारे चार्ट पर लिखा है 'परमपवित्र स्थान'। भीतरी कक्ष में परमेश्वर की उपस्थिति का वास था। पवित्र स्थान के चारों ओर कक्षों की एक शृंखला थी जो बाह्य दीवारों में थे (पद 6-7)। कक्षों की तीन

मंज़िल थीं तथा प्रत्येक तल पर तीस कमरे थे, कुल 90 कमरे थे (पद 6)। कमरे चार हाथ चौड़े थे (2 मीटर या 6 फुट)। यहेजकेल के लिये विशेष रुचि की बात वे करूब व खजूर के वृक्ष थे जो पवित्र स्थान की दीवार पर खुदे थे (पद 8-20)।

अध्याय 42 में, मन्दिर को देखने के बाद, वह व्यक्ति जिस के पास बांस था, यहेजकेल को भीतरी आंगन के पूर्वी फाटक पर ले गया (पद 1)। यहां फिर यहेजकेल ने कक्षों के तीन तलों को विस्तार से देखा। जब वह इन कमरों की जांच कर रहा था, उस व्यक्ति ने जिस के पास बांस था स्पष्ट किया कि उनमें से कुछ कक्ष याजकों के लिये वे स्थान थे जहां वे पवित्र भेंटों को खा सकते थे (पद 13)। दूसरे स्थान अन्न व दूसरी पवित्र भेंटे रखने के लिये थे (पद 13)।

अध्याय 43 में यहेजकेल का अगुवा उसे मन्दिर के पूर्वी फाटक पर लाया (पद 1)। यहां यहेजकेल ने तेज़ जल के प्रवाह की सी आवाज़ सुनी और देखा कि पृथ्वी प्रभु की महिमा से तेजोमय हो गई (पद 2)। यहेजकेल परमेश्वर के तेज को देखकर मुंह के बल गिरा (पद 3)। यह प्रथम बार नहीं था कि भविष्यवक्ता को यह अनुभव हुआ। पद में वह हमें याद दिलाता है कि जो दर्शन उसने देखा वह उस एक के समान था जिसमें उसने कबार नदी को देखा था। परमेश्वर के आत्मा ने यहेजकेल को उठाया और भीतरी आंगन में लाया। भीतरी आंगन परमेश्वर के तेज से भरा था। इस अति तेजोमय के मध्य, यहेजकेल ने परमेश्वर की वाणी को अपने से बात करते सुना। परमेश्वर ने उससे कहा कि वह अपने लोगों की उपस्थिति में मन्दिर में वास करेगा(पद 7)। उसने प्रतिज्ञा की कि आगे को इस्राएल उसके पवित्र नाम को अशुद्ध न करेगा। इस वाणी ने यहेजकेल को उन भयानक घृणित कामों के विषय याद दिलाया जो उसके लोगों ने किया। यह जानते हुए कि यहेजकेल क्या सोच रहा था, परमेश्वर ने उसे बताया कि अब समय है कि परमेश्वर के लोगों का विद्रोह समाप्त हो ताकि वे उसके पास लौट सकें। तब परमेश्वर ने यहेजकेल को आज्ञा दी कि मन्दिर के विषय बातों को लोगों को बताये ताकि वे शर्मिन्दा हों और उसके पास लौटें (पद 10)।

इस सब का क्या अर्थ है? इसका आज हमसे क्या तात्पर्य है? क्या यह संभव है कि भविष्यवाणी का कुछ भाग पूरा हुआ और तब परमेश्वर के लोग निर्वासन से लौटे और यरूशलेम में मन्दिर को बनाया गया। परमेश्वर

ने उनको हियाव देने के लिये मन्दिर का नमूना दिया ताकि निर्वासन में उन्हें आशा मिले। इस चित्र ने लोगों को दिखाया कि उसने उन्हें त्यागा नहीं था। वह दिन आयेगा जब फिर वे उसकी आराधना करेंगे। यहां यह ध्यान देना आवश्यक है कि यहेजकेल 38-47 में प्रका. वा. 20-22 जैसी कई समानताएं हैं। निम्न समान्यताओं पर विचार करें:

- यहां गोग व मागोग का वर्णन है (यहेज. 38, 39; प्रका. वा. 20:7-10)
- गोग और मागोग के नाश के बाद नये नगर का दर्शन है (यहेज. 40-43; प्रका. वा. 21)
- दोनो संदर्भों में नगर को बांस से मापा गया है (यहेज. 4.:5; प्रका. वा. 21:15)
- सिंहासन से एक नदी बह रही है (यहेज. 47:1; प्रका. वा. 22:1)
- सिंहासन से बहती हुई नदी फलदार वृक्षों को जीवन देती है कि हर माह फल दें। इन वृक्षों की पत्तियां व फल चंगाई की शक्ति रखते हैं (यहेज. 47:12; प्रका. वा. 22:2)

पुराने नियम का क्या यहेजकेल का यह संदर्भ प्रका. वा. 20-22 के समान है? क्या यहेजकेल की भविष्यवाणी का पूरा होना अभी बाकी है? यदि यूहन्ना उसी मन्दिर की बात कर रहा है, तो स्वाभाविक है कि यहेजकेल की भविष्यवाणी तब तक पूरी नहीं हुई थी, जब यूहन्ना ने लिखा।

यद्यपि इस मन्दिर के गुप्त अर्थ के विषय इन अध्यायों में हमारे लिये काफ़ी कल्पनाएं हैं, बहुत सी व्यावहारिक शिक्षा है। इस अध्याय में, परमेश्वर अपने लोगों के लिये क्या कर रहा है? उसके लोग निर्वासन में थे। उनके मन उन समस्याओं से भरे थें जो उनके सामने निर्वासन के कारण दैनिक आधार पर आती थीं। अपनी कठिनाइयों में वे निराश हो जाते थे। परमेश्वर उन तक पहुंच रहा था। उसने उनके सामने मन्दिर का विस्तृत नमूना रखा। यह नमूना उसके लोगों के लिये अति उत्साहवर्धक था। परमेश्वर ने उनसे प्रतिज्ञा की कि वह दिन आने वाला था जब उनको सताव से छुटकारा मिलेगा। परमेश्वर ने उनको चुनौती दी कि अपने मनों को कठिनाइयों से हटायें और उसकी प्रतिज्ञाओं पर केन्द्रित हों।

क्या यह कठिन परिस्थितियों में नहीं होता कि हमें याद दिलाया जाये कि परमेश्वर के पास हमारे लिये क्या है? कुछ और इससे अधिक हमारी

आत्माओं को प्रोत्साहित नहीं कर सकता कि उसकी महिमा की याद, जो हमारी प्रतीक्षा में है। जब हम याद करते हैं कि परमेश्वर उनसे क्या प्रतिज्ञा करता है जो उससे प्रेम करते हैं, तब हमारे भारी हृदय हल्के हो जाते हैं। हमारा निरुत्साह होना पिघल जाता है। हमारे भय शांत हो जाते हैं। आशा पुनःस्थापित होती है। हमारी आत्माएं आराधना तथा महिमा करती हैं। जब बातें उस प्रकार नहीं होतीं जैसा हम चाहते हैं और निराश होने की संभावना होती है, तो मन्दिर की योजना को देखें व निश्चय पायें। काश कि प्रभु की प्रतिज्ञाएं आपके हृदय का नवीनीकरण करें और आपकी आत्मा को निराशा से निकाल कर आराधना व महिमा करने में लगाये।

### *विचार करने के लिये:*

- परमेश्वर के लोग आपकी दृष्टि में यहेजकेल के इस दर्शन से क्या उत्साह प्राप्त करते?
- क्या आप इस समय कठिन परीक्षा से गुज़र रहे हैं? वचन के इस भाग से आप क्या व्यक्तिगत व्यावहारिकता पाते हैं?
- वचन में प्रतिज्ञा की कुछ महिमाओं की सूची बनायें। परीक्षाओं में दृष्टिकोण बनाने में यह कैसे सहायक होती है?

### *प्रार्थना के लिये:*

- आज अपने वचन में जो महिमापूर्ण प्रतिज्ञाएं वह देता है उसके लिये परमेश्वर का धन्यवाद करें।
- उनमें से एक प्रतिज्ञा को लें और परमेश्वर से सहायता मांगें कि आप अपनी समस्या को इस निश्चय के साथ देख सकें कि वह अपने वचन के प्रति सच्चा रहेगा।
- परमेश्वर से मांगें कि वह आपके हृदय को अपनी प्रतिज्ञाओं पर लगाये।

42

# उसके लिये अलग किये गये

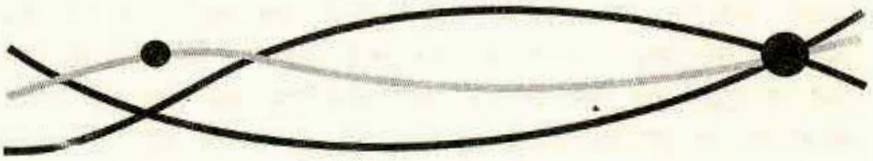

*पढ़ें यहेजकेल 43:13-44:31*

परमेश्वर की सेवा व आराधना में हमारे हृदय की दशा का ठीक होना कितना महत्वपूर्ण है? क्या हम उसके काम के होने की अनुमति ऐसे स्त्री व पुरुषों के द्वारा देंगे जो परमेश्वर के साथ अपनी व्यक्तिगत गति में गम्भीर नहीं? क्या हम कह सकते हैं कि हमने सचमुच परमेश्वर की आराधना की, यदि हमने अपने पापों को दूर किये बिना ऐसा किया? पुराने नियम में परमेश्वर ने आराधना को बड़ी गम्भीरतापूर्वक लिया। उसका कार्य उनके द्वारा किया जाता था जिनको उसने विशेष रूप से चुना था। इन लोगों को उसके साथ सही संबंध में होना था। वे अपने कार्य को हल्के तौर पर नहीं ले सकते थे। कोई भी कार्य लापरवाही के साथ नहीं किया जा सकता था। याजक व आराधना की वस्तुएं दोनों को ही, विशिष्ट रूप से प्रभु के प्रयोग के लिये अलग किया जाना था। यहेजकेल के अध्यायों में भविष्यवक्ता पवित्र मन्दिर में सेवा व आराधना के संबंध में परमेश्वर की व्यवस्था का वर्णन करता था।

*वेदी (43:13-27)* सबसे पहले हम पाते हैं कि आराधना की वस्तुओं को प्रभु के विशिष्ट प्रयोग के लिये अलग करना होता था। यहेजकेल 43:13-27 में वेदी के अभिषेक के विषय परमेश्वर की व्यवस्था का एक विवरण है। आइये संक्षेप में देखें कि परमेश्वर क्या चाहता है।

इससे पहले कि वेदी का प्रयोग हो सकता, उसको प्रभु के लिये समर्पित करना होता था। वेदी के समर्पण में सात दिन लगते थे (पद 25)। पहले दिन एक युवा बैल को बलि चढ़ाया जाता था (पद 19)। वेदी को शुद्ध करने के लिये लहू को वेदी के सींगों पर तथा उसके घेर पर रखना होता था (पद20)। युवा बैल को तब पवित्र स्थान के बाहर जलाया जाता था (पद22)। वेदी के समर्पण के दूसरे दिन एक बकरा पाप बलि के लिये चढ़ाया जाता। उसके लोहू को वेदी पर छिड़का जाता था (पद 22)। साथ ही उस दिन एक युवा बैल व मेढ़े को नमक के साथ होमबलि के रूप में चढ़ाया जाता था (पद 22)। शेष सात दिनों में, एक बकरा, एक युवा बैल, और एक मेढ़ा प्रभु के सामने बलिदान किये जाते थे (पद 25)। सात दिन वेदी के शुद्ध किये जाने के बाद, इस प्रकार प्रभु उस बलि को स्वीकार करता था जो उस पर चढ़ाई गई हो। वेदी के समर्पण की यह प्रक्रिया परमेश्वर की आराधना के लिए विशिष्ट थी।

*पवित्र स्थान (44:1-3)*

परमेश्वर येहेजकेल को पवित्र स्थान के बाहरी फाटक पर ले गया। इस फाटक को बन्द रहना था (पद 2)। इसका जो कारण बताया गया वह था, 'क्योंकि यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर ने इसके द्वारा प्रवेश किया है।' पुराने नियम के संदर्भ में, प्रभु की उपस्थिति मन्दिर के पवित्र स्थान में विशेष रूप से प्रगट होती थी। साधारण इस्राएली को वहां जाने की अनुमति न थी जहां परमेश्वर वास करता था। केवल याजक प्रभु की सेवकाई के लिये वहां जा सकते थे।

पद में हम पढ़ते हैं कि प्रधान को पवित्र स्थान के फाटक या डेवढ़ी तक आने की अनुमति दी गई जहां उसे प्रभु की आराधना करनी थी। यहेजकेल 46:1-2 इस पर और प्रकाश डालता है। यहां प्रधान को लोगों के लिये भेंट लेकर आना था। यह भेंट उसे फाटक तक लानी थी जहां वह याजकों को दी जायेगी। प्रधान डेवढ़ी पर आराधना कर सकता था, परन्तु उसे पवित्र स्थान में जाने की अनुमति न थी।

पवित्र स्थान की पवित्रता को निश्चय देने के लिये, परमेश्वर यहेजकेल को मन्दिर के सामने बाहरी आंगन में लाया। जब यहेजकैल ने मुड़कर मन्दिर को देखा, उसने देखा वह परमेश्वर के तेज से भर रहा था (पद 7) । जब उसने देखा तो मुंह के बल गिरकर दण्डवत् किया। यह एक अद्‌भुत दृश्य

था। उसके मन को मन्दिर की पवित्रता व शुद्धता के प्रति निश्चय मिला।

*मन्दिर सेवकाइयां (44:6-9)*

यहेजकेल 44:6-9 में परमेश्वर ने लोगों की घृणित रीतियों में से एक को बताया। लगता है कि वे मन्दिर में 'खतनारहित' हृदयों के साथ आते थे। और उनको मन्दिर में सेवकाई की अनुमति मिलती थी (पद 8-9)। गिनती 18:4 में परमेश्वर ने आज्ञा दी कि मन्दिर के कार्य केवल लेवियों व याजकों द्वारा किये जायें। क्या ऐसा हो सकता है कि इन याजको को लगता था कि वे इन छोटे कार्यों के योग्य नहीं? परमेश्वर ने उनको याद दिलाया कि छोटे से छोटा काम भी योग्यता प्राप्त व्यक्तियों के द्वारा किया जायेगा। वे इन कार्यों को विदेशियों को देकर उसके नाम का तिरस्कार करते थे। क्या आज भी अपनी कलीसियाओं में हम इन बातों के दोषी नहीं? आज भिन्न कलीसियाओं की सेवकाई में क्या है? क्या आपके वृन्दगान समूह व संडे स्कूल में ऐसे लोग हैं जो पाप में जीते हैं? क्या स्वागत करने वाले प्रभु यीशु को अपने व्यक्तिगत प्रभु व उद्धारकर्त्ता के रूप में जानते हैं? क्या वे जो आपकी कलीसिया में विशेष गीत गाते हैं प्रभु के साथ चलते हैं? यहां परमेश्वर हमसे कहता है यह अति महत्वपूर्ण है कि जो सार्वजनिक सेवकाई में काम करते हैं उसके साथ सही संबंध में हों। ऐसा तो नहीं कि परमेश्वर की आशीष हमारी सेवकाइयों से हटा ली जाती है क्योंकि वे जो इन सेवकाइयों को करते हैं, परमेश्वर के साथ ठीक नहीं हैं।

*याजक (44:10-31)*

फिर परमेश्वर ने याजकों के संबंध में बताया। इन लोगों को भी आवश्यकता थी कि प्रभु के लिये अलग किये जायें। लगता है कि कुछ लेवी प्रभु से भटक गये थे और मूर्ति पूजा करते थे (पद 10)। जबकि वे मूर्ति पूजा करते थे तो मन्दिर में भी सेवा करते थे (पद 11)। परमेश्वर ने उनके पाखण्ड को देखा। वह उनके हृदयों को जानता था। वह उनसे प्रसन्न न था। हाल के वर्षों में हमने भयानक कहानियां सुनी हैं कि हमारी कलीसियाओंके बन्द दरवाज़ों के पीछे क्या होता है। परमेश्वर के दास को पाखण्ड रहित होना चाहिये। उसको शुद्ध हाथों से तथा शुद्ध हृदय के साथ सेवा करनी है। परमेश्वर इन अगुवों के विरुद्ध था, जो झूठा जीवन जीते हैं। उनको सेवकाई के लिये समीप भी नहीं आना चाहिये। उनको अपने दुष्ट कार्यों का दोष व शर्म झेलनी होगी (पद 13)। इसके बदले उन्हें मन्दिर के दूसरे कामों से

अलग होने को कहा गया(पद 14)। उनको परमेश्वर की आराधना में पवित्र पात्र नहीं छूने। उनको प्रभु के पास याजक रूप में आना वर्जित है। उनको प्रभु की सेवकाई के अयोग्य पाया गया। केवल वही जो प्रभु के विश्वासयोग्य थे, मन्दिर में प्रवेश कर सकते थे (पद 6)। परमेश्वर हमें दिखाता है कि सेवा के योग्य केवल वे हैं जिन्होंने पाप से अपना मुख मोड़ लिया। परमेश्वर के सेवकों को उसके लिये अलग होना है। उनको शुद्ध जीवन जीना है।

*याजकीय वस्त्र (44:16-19)*

याजकों के वस्त्रों से सबंधित, उनके लिये विशेष रूप से तैयार करने थे। याजक ऐसा कुछ नहीं पहन सकता था जिससे उसको पसीना आये, क्योंकि इससे उसकी भेंट अशुद्ध हो जायेगी (पद 18)। जब वह अपना काम पूरा कर चुके तो उसको अपने याजकीय वस्त्र उतारने और मन्दिर में छोड़ने होते थे। ये वस्त्र मन्दिर के बाहर नहीं जा सकते थे। याजक के वस्त्र भी परमेश्वर के लिये अलग किये जाते थे। उनको शुद्ध व स्वच्छ रखना था, केवल प्रभु की आराधना के लिये।

*याजक की जीवन शैली (44:20-27)*

याजकों को परमेश्वर के लिये विशेष अलगाव का जीवन जीना था। उनको न तो सिर मुण्डाना था, न बाल लम्बे करने थे। उनके बाल हर समय सही दशा में रहते थे (पद 20)। जब वे मन्दिर के भीतरी आंगन में प्रवेश करें उनका शराब पीना वर्जित था (पद 21)। याजक केवल कुंवारी से या किसी और याजक की विधवा से विवाह कर सकते थे। वे तलाकशुदा स्त्री से विवाह नहीं कर सकते थे (पद 22)। उनको ध्यानपूर्वक इस्राएल को शुद्ध व अशुद्ध वस्तुओं के मध्य अन्तर को सिखाना था। उनको इस्राएल को पवित्र व साधारण के मध्य के ऊन्तर की समझाना था (पद 23) उनको परमेश्वर के पवित्र वचन के अनुसार फैसले सुनाने थे (पद 24)। याजक शव को उनको परमेश्वर छूकर स्वयं को अशुद्ध नहीं कर सकता था, यदि वह निकट संबंधी का न हो (पद 25)। यदि उसने शव छुआ तो उसको सात दिन की शुद्धिकरण की प्रक्रिया से गुज़रना होता था। उस अन्तराल में, उसको पाप बलि प्रभु को देनी होती थी, इससे पहले कि याजक के कर्त्तव्यों को पूरा करने लौटे (पद 26-27)। उनके पास कोई भूमि नही होती थी, परन्तु उनको सर्वश्रेष्ठ भोजन मिलता था (पद 28-31)। वे क्या खाते हैं उसके विषय उन्हें सावधान रहना होता था। वे ऐसा कुछ नहीं खा सकते थे जो उनको अशुद्ध करे (पद 31)।

यह सब हमें क्या सिखाता है? क्या यह हमें यह नहीं सिखाता कि परमेश्वर के सेवक उसके लिये अलग लिये जायें? परमेश्वर के दास पवित्र लोग हों। हमारे पाप हमारी सेवा को अशुद्ध करते हैं। परमेश्वर केवल काम कराने की चिन्ता नहीं करता; उसको चिन्ता होती है इस बात की भी कि काम कैसे किया जा रहा है। यदि हम प्रभु की सेवा करना चाहते हैं, हमारे हृदय व जीवन शुद्ध हों। क्या यह संदर्भ हमें बुलाहट नहीं देता कि अपने जीवनों की ध्यानपूर्वक जांच करें? क्या हम उन स्तरों तक जी रहे हैं जो परमेश्वर ने हमारे लिये नियुक्त किये हैं? क्या हम ऐसे लोग हैं जो विश्वासयोग्य हैं? क्या हम वही करते हैं जो हम प्रचार करते हैं?

क्या आप एक सण्डे स्कूल शिक्षक हैं? क्या आपका जीवन आपके बच्चों के लिये एक आदर्श है? क्या आप स्थानीय कलीसिया में एक प्राचीन या डीकन हैं? क्या आप उस स्तर पर जीते हैं जो आप प्रचार करते हैं? हमारे समय में, हमें ऐसे स्त्री पुरुषों की आवश्यकता है जो पूर्णतया परमश्वेर के लिये पवित्र हों। हमारे समाज ने हमें प्रचार करते सुना है परन्तु क्या उन्होंने हमें वह संदेश जीते देखा है? हमारे युग ने कई प्रचारकों व मसीही कर्मियों के पतन को देखा है। लोगों ने उस पाखण्ड को देखां है जो पर्दे के पीछे होता है। इस संदर्भ में परमेश्वर हमें बुला रहा है कि वचन के प्रकाश में अपनी जांच पुनः करें। वे लोग कहां हैं जिनको परमेश्वर की महिमा के लिये पूर्णतया अलग किया गया है? हमारे समय के स्त्री पुरुष कहां हैं जो आधुनिक युग के भ्रष्ट करने वाले प्रभाव से पूर्णतया फिर गये और स्वयं को पूर्णतया परमेश्वर के लिये शुद्ध करते हैं? परमेश्वर आशा करता है कि हम, उसके सेवक, उसके लिये पूर्णतया अलग किये जायें।

### *विचार करने के लिये:*

- क्या इस अध्याय में बताई इस्राएल की गलतियों के दोषी हम भी हैं? हमने किन बातों में अपने को परमेश्वर से अलग नहीं किया?
- क्या आप के जीवन में कुछ क्षेत्र हैं जो आपको प्रभु की सेवा से रोकते हैं?
- यह हमारे लिए क्यों इतना लुभावना है कि अपनी सेवकाइयों व कलीसियाओं को अविश्वासी तथा अनाज्ञाकारी मसीहियों से भरते हैं?

- क्या अपनी कलीसिया में अविश्वासियों को रखना गलत है? खोये हुओं में प्रचार करने तथा खोये हुओं को मसीह के नाम में प्रयोग करने में क्या अन्तर है?

**प्रार्थना के लिये:**

- परमेश्वर से विनती करें कि आपके हृदय को खोजे कि ऐसी कोई चीज़ तो नहीं जिसका आप को अंगीकार करना है, उसके नाम की सेवा करने जाने से पहले।
- परमेश्वर से विनती करें कि देखे कि क्या किसी प्रकार आपने उसके कार्य का अपने कार्य या व्यवहार से अनादर तो नहीं किया।
- परमेश्वर का धन्यवाद करें कि वह एक पवित्र परमेश्वर है परन्तु तौभी हम पापियों तक पहुंचने के लिये तैयार है।

43

# इस्राएल का प्रधान

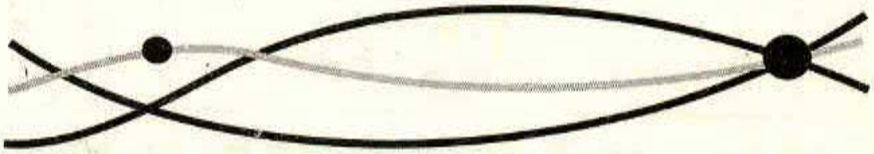

*पढ़ें यहेजकेल 45-46*

यहेजकेल में परमेश्वर ने एक नये मन्दिर की प्रतिज्ञा की। यहेजकेल ने इस नये मन्दिर में आराधना व याजकों की बात की। अध्याय 45 व 46 इस्राएल के प्रधान की राजनैतिक नेता की ज़िम्मेदारियों को बताता है। अध्याय हमें यह बताते हुए आरम्भ होता है कि जब परमेश्वर के लोग 'पर्ची डालकर देश को उत्तराधिकार में बांट लेंगे' (पद 1), तो भूमि का एक भाग प्रभु के लिये पवित्र कर नये मन्दिर के लिये रखेंगे। मैंने एक चित्र बनाया है ताकि हम पद 1-8 को समझ सकें।

यह पवित्र क्षेत्र (लगभग 8 मील) चार मुख्य भागों में बांटा जायेगा। भूमि का प्रथम भाग मन्दिर के लिये तथा उन याजकों के लिये होगा जो मन्दिर में प्रभु की सेवा करेंगे। भूमि के इस भाग पर याजक अपने भवन बना सकेंगे (पद 2-4), इस प्रकार वे उसके कार्य के निकट रहेंगे। दूसरा भूमि का भाग दूसरे लेवियों को दिया गया (पद 5)। इस भाग पर वे बस्तियों का निवास के लिए निर्माण कर सकेंगे।

चित्र 43:1

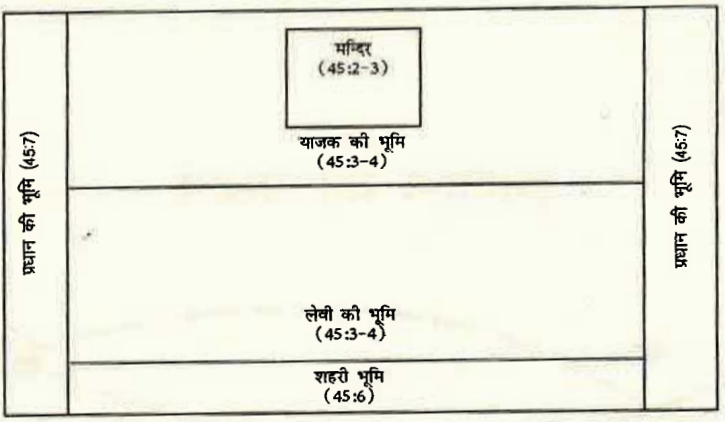


भूमि का क्षेत्र उतना ही था जितना याजकों को दिया गया। भूमि का तीसरा भाग दूसरों से छोटा था और साधारण भूमि के रूप में यरूशलेम नगर को दिया गया। वह सामान्य लोगों के प्रयोग के लिये था (पद 6)। इस भूमि को घरों व चरागाहों के लिये प्रयोग किया जा सकता था (48:15)। इन तीन भूमि के टुकड़ों के साथ साथ वे भाग थे जो इस्राएल देश के प्रधान के लिये थे (पद 7)। यह सामान्य भूमि का दिया जाना था, भूमि के पवित्र क्षेत्र के साथ साथ जिसे प्रभु के लिये मन्दिर के चारों ओर अलग छोड़ना था।

अपने लोगों को भूमि विभाजन समझाने के बाद, परमेश्वर ने फिर अपना ध्यान देश के प्रधानों व राजनैतिक नेताओं की ओर लगाया। उन लोगों को देश के मामलों को देखना था। अपने लोगों के शासकों से परमेश्वर को महत्वपूर्ण बातें करनी थीं।

*उसको मिली भूमि से संतुष्ट होना था*

प्रथम, प्रधान को उस भूमि से सहमत होना था जो प्रभु ने उसको व उसके परिवार को दी (45:8)। उसे लोगों को इस कारण नहीं सताना था क्योंकि उसकी आवश्यकताओं के लिये उसे लगता है कि भूमि पर्याप्त नहीं। यद्यपि प्रधान के लिये संभव था कि भूमि का कुछ भाग अपने सेवकों को दे सके, भूमि जुबली वर्ष में स्वत: प्रधान की हो जायेगी (46:16-17)। दूसरे शब्दों में, भूमि को सदा के लिये नहीं दिया जा सकता था। यह आनेवाले प्रधानों को उस भूमि को लेने का साहस नहीं देगा जो उनकी नहीं। परमेश्वर ने प्रधान को याद दिलाया कि वह अपने सेवकों के उत्तराधिकार पर कब्ज़ा

न करे (16:18)। दूसरों के बूते पर अपने भाग से अधिक भूमि की वे चाह न करें। प्रधान के पास पहले ही उसकी आवश्यकता के लिये भूमि है। उसे अनुमति न थी कि लोभ में अधिक भूमि जमा करे, उस तुलना में जो प्रभु ने उसे दी थी। प्रधान को लोगों का सेवक होना था। उसको अपनी शक्ति का प्रयोग अपने धन व स्मृद्धि को बढ़ाने के लिये नहीं करना था। वह हिंसा का प्रयोग नहीं कर सकता था कि अपने लोगों को लूटे (पद 9)। उसको वह भूमि नहीं लेनी थी जो परमेश्वर ने अपने लोगों को दी थी, उन्हें बेदखल करके (पद 9)। परमेश्वर जानता था कि शक्ति व धन का लोभ अति सत्य है। वही परीक्षा आज भी है।

*प्रधान को एक निष्ठावान व्यक्ति होना था (45:9-16)*

दूसरे, प्रधान को निष्ठावान व्यक्ति होना था। पद 9-12 में प्रभु ने इस्राएल में प्रयोग किये जाने वाले मापों का पुनः अवलोकन किया। उनके तराजू सही होते थे। उसको लोगों के साथ ईमानदारी का व्यवहार करना था। उसको उससे अधिक नहीं लेना था जिस का उसे अधिकार था। परमेश्वर ने अपने लोगों को बताया कि वे प्रधान को क्या दें (पद 13-16)। लोगों को 1/60 अपने अन्न का और अपने तेल का एक प्रतिशत अलग करना था। हर 200 भेड़ों में से एक प्रधान की थी (पद 15)। यह विशिष्ट रूप से बता कर कि उसकी लोगों से क्या अपेक्षा थी, परमेश्वर ने प्रधान को ईमानदारी के व्यवहार के प्रति उत्साहित किया।

*प्रधान को उदार होना था*

तीसरे, प्रधान को लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करना था। उन साधनों में से जो उसे मिलें। उसको लोगों के लिये अन्न बलि, होमबलि तथा लोगों के लिये पेय बलि देना था (45:17)। परमेश्वर ने भेंट व बलिदानों के विषय प्रधान के उत्तरदायित्व बनाये जो प्रभु को चढ़ाने थे। प्रथम महीने के पहले दिन (नव वर्ष) प्रधान को एक जवान बैल जो निर्दोष हो, पवित्रस्थान में मन्दिर के वार्षिक शुद्धिकरण के लिये लाना था (45:18)। इस बैल का लहू चौखटों, वेदी, भीतरी आंगन के फाटकों पर लगाना था। पहले महीने के चौदहवें दिन (फसह) प्रधान को यह करना था- सात दिन तक प्रतिदिन सात बैल, सात मेढ़े और एक बकरी बलिदान के लिये देनी थी। नियुक्त मात्रा में अन्न व तेल भी दैनिक बलिदान के लिये देना था (45:24)। प्रति सब्त लोगों के प्रधान को प्रभु के मन्दिर में आना था। उसको

अपने साथ छः नये मेम्ने, एक मेढ़ा तथा नियुक्त मात्रा में अन्न व तेल बलिदान के लिये लाना था (45:4-5)। नये चांद के विशेष पर्व पर, प्रधान साप्ताहिक सब्त भेंट के साथ एक जवान बैल चढ़ा दे (46:6-7)। प्रतिदिन प्रधान को 'प्रभु' को एक वर्ष का मेम्ना तथा नियुक्त मात्रा में अन्न व तेल भेंट में देना था (46:11-12)। इन भेंटों को हल्केपन से नहीं लेना था। इस्राएल के प्रधान को परमेश्वर का विश्वासयोग्य होना था कि प्रतिदिन भेंट मन्दिर में लोंगो के लिये लाये। इस सब में उसको अपने साधनों का प्रयोग करना था ताकि इस्राएल के परमेश्वर की आराधना में सुविधा हो।

*प्रधान को प्रभु परमेश्वर की आराधना करनी थी*

चौथे, प्रधान को आराधना में लोगों के साथ होना था (46:10)। सभा में परमेश्वर की उसे आराधना के लिये लोगों के साथ अपने उत्तरदायित्व से पीछे नहीं हटना था। परमेश्वर की आराधना में उसको लोगों के लिये आदर्श बनना था। यदि उसे परमेश्वर के लोगों की अगुवाई करनी है तो स्वयं उसे परमेश्वर के साथ सही संबंध में होना था।

अध्याय 46 के शेष पदों में, वह व्यक्ति जो यहेजकेल को मन्दिर दिखा रहा था, उसे बता रहा था कि इन भेंटों को कहां तैयार करना था। बाहरी आंगन के कोनों में पत्थर के नीचे चूल्हे बने थे। इन क्षेत्रों में भेंट व बलिदान तैयार करने थे, जिन्हें प्रधान मन्दिर में लायेगा (देखें 46:19-21)।

हम देख चुके हैं कि परमेश्वर चाहता था कि उसके लोग व वस्तुएं, जिनका प्रयोग आराधना में हो, पूर्णतया उसके लिये अलग किये जायें। यह नगर (यरूशलेम) जहां मन्दिर था, परमेश्वर चाहता था कि प्रधान वे पुरुष हों जो उससे जो उनके पास था संतुष्ट हों (उन्हें लाभ का लोभी नहीं होना था)। वे लोगों के साथ ईमानदार रहें। उनको वही लेना था जिसकी आवश्यकता हो। उनको उदार होना था कि परमेश्वर की आराधना में आदर्श बन अगुवाई करें। हमारा देश कैसा होगा यदि अपने जीवनों में राजनैतिक नेता इन गुणों को प्रकट करें? हमारा देश कितना भिन्न स्थान होगा यदि हमारे राजनेता यहेजकेल 46 की बातों को गम्भीरतापूर्वक लें। हमें अपने समय से इस प्रकार के स्त्री पुरुषों को अगुवाई के पदों पर देखना है जो उससे जो उनके पास है संतुष्ट हों; अपने कामों में उदार व ईमानदार हों, और जो नम्रतापूर्वक अपने घुटने परमेश्वर के सामने झुकाते हों। काश परमेश्वर हमारी सरकार में हमें ऐसे पुरुष व स्त्री दे।

### *विचार करने के लिये:*

- हमारे समय के नेता किस प्रकार परमेश्वर द्वारा निर्धारित स्तरों तक जो इस अध्याय में प्रधानों के लिये दिये गये हैं, आते हैं?
- यह अध्याय हमें उन परीक्षाओं के विषय क्या दिखाता है जो आज के नेताओं के सामने हैं?

### *प्रार्थना के लिये:*

- कुछ समय अपने राजनेताओं के लिये प्रार्थना करें। परमेश्वर से विनती करें वे ऐसे लोग बनें जैसे परमेश्वर उन्हें चाहता है।

44

# जीवन की नदी तथा नया यरूशलेम

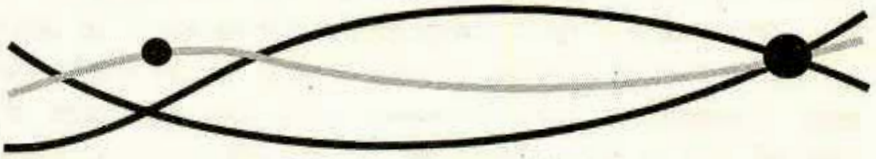

*पढ़ें यहेजकेल 47-48*

जब उसका मन्दिर व नये नगर में घूमना पूरा हो गया, तो यहेजकेल को मन्दिर के प्रवेश द्वार पर लाया गया। वहां उसने एक नदी देखी जो पूर्वी ड्योढ़ी से निकल रही थी (पद 1)। यह असामान्य न था। मन्दिर में पशुओं के बलिदान के लहू को बहाने के लिये जल का प्रयोग किया जाता था।

यहां से भविष्यवक्ता को पूरब की ओर मुख्य द्वार के बाहर ले जाया गया। यहेजकेल व उसका अगुवा नदी के साथ साथ चलते रहे जब कि वह पूरब की ओर मुड़ गई। यहेजकेल के अगुवे ने 1000 हाथ गिना (1500 फुट या 450 मीटर)। और भविष्यवक्ता ने ध्यान दिया कि जल का स्तर टखनों तक बढ़ गया (पद 3)। 1000 हाथ और नापा गया, और जल का स्तर घुटनों तक हो गया (पद 4)। जब वे 1000 हाथ आगे और चले गये, तो वह नाला एक महानदी बन गया, जिसको पार नहीं किया जा सकता था (पद 5)।

तब यहेजकेल का अगुवा उसे नदी के तट पर लाया। नदी के दोनों ओर, भविष्यवक्ता बहुत से वृक्ष देख सकता था (पद 7)। उनका पोषण पवित्रस्थान से निकली नदी से होता था। उनमें हर माह फल लगते थे। उनका फल पोषण व चंगाई के लिये होता था (पद 12)। यहां यह महत्वपूर्ण है कि जो यहेजकेल ने देखा हम उसकी तुलना करते हैं उसके साथ जो यूहन्ना ने

प्रकाशितवाक्य के अपने दर्शन में देखा। प्रेरित यूहन्ना ने प्रका. वा. 22 में ऐसी ही नदी देखी। वह भी परमेश्वर के सिंहासन से निकल रही थी। नदी के दोनों ओर जीवन का वृक्ष था जो वर्ष में बारह बार फल देता था। इस वृक्ष की पत्तियों का प्रयोग जाति जाति की चंगाई के लिये किया जाता था (प्रका. वा. 22:1-2)। क्या इन दोनों का दर्शन समान था?

जब नदी पूरब की ओर वह रही थी, तो वह एक घाटी से गुज़री (पद8)। जहां कहीं वह जाती थी, स्मृद्धि व नवजीवन लाती थी (पद 9)। जब वह नदी समुद्र में खाली हुई तो उसने समुद्र को उसकी अशुद्धताओं से स्वच्छ किया (पद 8)। यहां उस समुद्र का चित्रण है जो खारा है जो जीवन को नहीं चला सकता। परन्तु जब नदी समुद्र में मिली, तब वह शुद्ध हो गया ताकि जीवनदायक बन सके। परिणामस्वरूप ऐसा समुद्र हुआ जिसमें हर प्रकार की बहुत सी मछलियां उत्पन्न हुईं (पद 9)। यहां मछुवारों का चित्रण है जो समुद्र तटों पर खड़े बहुत प्रकार की मछलियों को जाल से पकड़ रहे थे (पद 10)। पद से हम सीखते हैं वहाँ बहुत सी घास फूस थी जिसको चंगाई नहीं मिली परन्तु उनको नमक के हवाले कर दिया गया।

इस सब का क्या अर्थ है? लगता है कि परमेश्वर यहेजकेल को बता रहा है कि परमेश्वर के मन्दिर से संसार के लिये बहुत सी आशीषें प्रवाहित होंगी। परमेश्वर की नदी की आशीषें घाटियों, मरुस्थलों से होकर गुज़रती हुई आशीष व चंगाई लायेगी। जहां भी वह जायेगी पाप व दुष्टता के झुण्डों में जाकर भी नवजीवन व उत्साह को लाएगी। इस नदी के बारे में अद्‌भुत बात यह है कि वह जाति को प्राप्त कर रही है और जैसे जैसे बह रही थी बड़ी व गहरी होती जा रही थी। अधिक और अधिक लोग परमेश्वर की आशीषों की नदी में पकड़े जा रहे थे।

परन्तु ध्यान दें कि यह नदी सब जगह चंगाई नहीं दे रही थी। कुछ घास पतवार के क्षेत्र शेष थे, जिनको स्पर्श नहीं किया जा रहा था (पद 11)। ऐसे तो सदा ही होंगे जो परमेश्वर के आत्मा की गति का सामना करते हैं। यहां ध्यान दिया जाना चाहिये कि मरुस्थल के असमान, घास फूस जीवन को उत्पन्न करता है। इन क्षेत्रों में जल व भोजन होता है। इस प्रकार की बहुत सी कलीसियाए व सेवकाइयां हैं। उनमें कुछ जीवन होता है। वे लोगों को अपने सिद्धान्तों व मित्रतापूर्ण वातावरण से आकर्षित करते हैं तथापि परमेश्वर की आत्मा के महान कार्य के वे प्रति रोधक होते हैं। जागृति के इतिहास में,

हमेशा ऐसे लोग भी रहे हैं जिन्होंने परमेश्वर को ग्रहण करने से अस्वीकार किया है। यहां ध्यान दें कि ये घास फूस अन्ततः नमक के हवाले कर दि जाती है (पद 11)। जो जीवन उनमें था उनसे ले लिया जायेगा और वे नाश हो जायेंगे।

पद 12-13 में परमेश्वर ने भविष्यवक्ता को उस भूमि की स्पष्ट सीमाएं समझाईं, जो उसके लोगों को दिया जायेगा। भूमि गोत्र के अनुसार सब लोगों में बांटी जायेगी। यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि परदेसी जो उनके साथ रहता हो, उसे भी प्रवासी इस्राएली माना जायेगा (पद 22)। जिस भी गोत्र में वे रहते हों उनको उस गोत्र का भाग समझा जायेगा और शेष इस्राएलियों के समान उत्तराधिकार मिलेगा। परमेश्वर ने सदा अपने लोगों से कहा कि उन्हें परदेसियों का आदर करना है? जो उनके मध्य हैं, 'जो परदेसी तुम्हारे मध्य रहते हों वह तुम में ही जन्मे समझे जायें। उनको अपने समान प्रेम करो, क्योंकि तुम भी मिस्र में परदेसी बन कर रहते थे। मैं तुम्हारा प्रभु परमेश्वर हूँ' (लैव्य. 19:34)। 'मूल निवासी व परदेसी दोनो के लिये समान व्यवस्था हों, मैं तुम्हारा प्रभु परमेश्वर हूं' (लैव्य. 24:22)।

यह सत्य कि ये परदेसी शेष इस्राएलियों के समान उत्तराधिकार पर रहे थे, दिखाता है परदेसियों के लिये द्वार खुला था कि वह भी परमेश्वर की संतान हों। परमेश्वर की आशीषों की यह महानदी जो मन्दिर से बहती है, संसार को घेरेगी और अन्यजातियों को आकर्षित करेगी। जो आज प्रभु में विश्वास करेगा उसको परमेश्वर के परिवार में ले लिया जायेगा।

यहेजकेल 48 में, पद 1-7 व 24-29 इस्राएल के 12 गोत्रों में भूमि के विभाजन को बताया गया है। पद 9-28 पुनः भूमि के उस अंश पर केन्द्रित है जो प्रभु की ओर से मिलेगा। इस पवित्र क्षेत्र का वर्णन अन्तिम अध्याय में किया जा चुका है।

पद 9-12 भूमि के उस भाग पर केन्द्रित है जो याजकों को दिया गया गत अध्याय के चित्र को देखें। मन्दिर को भूमि के इस भाग के मध्य होना चाहिये। वे याजक जो प्रभु के विश्वासयोग्य होंगे और जिन्होंने मूर्तियों के सामने सिर नहीं झुकाया, उनको इस भूमि पर रहना व काम करना था (पद11)। भूमि के विस्तृत माप जो दूसरे याजकों को दिये गये पद 13-15 में मिलते हैं। यहां ये याजक सम्पत्ति को बेच या खरीद सकते हैं (पद 14)।

नगर भूमि के तीसरे भाग पर बसेगा। इस भूमि के भाग को पद 15-19 में समझाया गया है। प्रधान की भूमि इस भूमि के दोनों ओर थी, जो याजकों व नगर के लिये दी गई थी। इस भूमि का विवरण पद 21 में दिया गया है। पद 22-29 में इस्राएल के भिन्न गोत्रों के बांटे जाने का वर्णन है।

यह अध्याय इस संक्षिप्त विवरण के साथ समाप्त होता है जो नगर की चारदीवारी के बारे में है। नगर की चारदीवारी के 12 फाटक होंगे। प्रत्येक फाटक इस्राएल के एक गोत्र पर होगा। उत्तर के तीन फाटकों का नाम रूबेन, यहूदा व लेवी होगा (पद 31)। पूरब के तीन फाटकों का नाम यूसुफ (एप्रैम व मनश्शे, देखें उत. 48:5,6, 22) व बिन्यामीन तथा दान पर होगा (पद 32)। शमौन, इस्साकार व जबुलून नाम नगर दक्षिणी फाटकों को दिये जायेंगे (पद 33)। शेष तीन फाटक गाद, आशेर व नप्ताली पश्चिम में थे (पद 34)। यहेजकेल के दर्शन पर यूहन्ना प्रेरित के दर्शन की तुलना में, यह ध्यान देना आवश्यक है कि वह नगर जिसे यूहन्ना ने देखा उसमें भी 12 फाटक थे जिन्हें इस्राएल के गोत्रों पर नाम दिये गये थे; 'उसमें एक ऊंची व बड़ी दीवार थी जिसके बारह फाटक थे और उन फाटकों पर बारह स्वर्गदूत थे। फाटकों पर इस्राएल के बारह गोत्रों के नाम लिखे थे। तीन फाटक पूरब में, तीन उत्तर में और तीन दक्षिण तथा तीन पश्चिम में थे (प्रका. वा. 21:22-23)।

इतिहास ने अभी यहेजकेल की भविष्यवाणी को पूरा होते नहीं देखा है। वह नगर व मन्दिर जो उसने देखा अभी प्रगट होने बाकी हैं। जबकि यूहन्ना व यहेजकेल को समान दर्शन मिले, कुछ महत्वपूर्ण अन्तर भी हैं। यहेजकेल ने अपने दर्शन के नगर में मन्दिर को देखा। दूसरी ओर यूहन्ना प्रका. वा. 21:22 में बताता है कि नये यरूशलेम में कोई मन्दिर न होगा, क्योंकि मेम्ना स्वयं उसका मन्दिर होगा। यहेजकेल के मन्दिर के दर्शन में, लोगों के पाप के लिये याजक प्रभु को भेंट चढ़ाते हैं (देखें यहेज. 6:19-24)। नये यरूशलेम में इन बलिदानों की फिर आवश्यकता न होगी। प्रभु यीशु की मृत्यु ने पुराने नियम के बलिदानों को पूरा कर दिया। क्योंकि इतिहास ने इस मन्दिर को नहीं दिखाया तथा न ही नगर को, तो हमें दो में एक का चयन करना है। या तो हम यहेजकेल के दर्शन की व्याख्या प्रतीकात्मक करें या शाब्दिक। मुझे लगता है कि यदि हम यूहन्ना के नये यरूशलेम के दर्शन को शाब्दिक लें तो उसी प्रकार यहेजकेल को भी लें। यहूदी बलिदान रीति का

वर्णन हमें यह विश्वास देता है कि यहेजकेल यहां यहूदी जाति का वर्णन करता है। वचन हमें बताता है कि वह दिन आ रहा है जब परमेश्वर फिर अपने लोगों को अपने पास लेगा (देखें रोम. 11:25-26)। पौलुस रोमियों. 11:12 में अपने पाठकों से पूछता है कि यदि यहूदियों द्वारा मसीह को अस्वीकार करने का अर्थ असंख्य अन्यजातियों का उद्धार है तो उनके द्वारा स्वीकार किया जाना क्या लायेगा? यहेजकेल के मन्दिर से परमेश्वर की आशीषें प्रवाहित हुईं। हमें उस अद्‌भुत कार्य पर विस्मय होगा जो परमेश्वर आनेवाले दिनों में यहूदी जाति के द्वारा करेगा।

आज हमारी आशा कैसी हो यदि हम प्रभु यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता मान लें। वह दिन आ रहा है जब मैं और आप उस नगर में प्रभु की उपस्थिति में रहने के लिये जायेंगे। मैं आपको याद दिलाऊं कि हर किसी को उस महान नगर में प्रवेश न मिलेगा। प्रका. वा. 21:27 हमें बताता है, 'कोई अशुद्ध वस्तु उसमें प्रवेश न करेगी, न ही वह जो शर्मिन्दगी या धोखे के कार्य करता है, परन्तु केवल वे जिनके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।' हां केवल वे, जिनके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे हैं उनको प्रवेश मिलेगा। क्या आप निश्चय रखते हैं कि जब आप नगर के फाटक पर पहुंचेंगे और वे आपके नाम को मेम्ने की जीवन की पुस्तक में ढूंढेंगे तो आपका नाम वहां होगा? यदि आपको निश्चय नहीं, तो आज ही का दिन प्रभु की दोहाई देने का है। केवल वही आपके नाम को उस रजिस्टर में लिख सकता है। क्या अभी आप नहीं पुकारेंगे?

यहेजकेल के मन्दिर से एक महानदी प्रवाहित होगी। नदी पृथ्वी को घेर लेगी तथा जहां कहीं जायेगी आशीष, नवीनीकरण व चंगाई लायेगी। वे जिन्होंने जीवन की नदी का स्वाद चखा है, नये नगर में वास करेंगे। क्या आपने इस नदी की आशीषों के अनुभव को पाया है।

### *विचार करने के लिये:*

- आज यहेजकेल की नदी की आशीषों के क्या प्रमाण हैं?
- परमेश्वर के आत्मा की सेवकाई के प्रति समर्पित होने के लिये आज लोगों को क्या चीज़ रोकती है?
- क्या आप यहेजकेल की नदी द्वारा चंगाई व नवीनीकरण पाये हैं?

*प्रार्थना के लिये:*

- परमेश्वर से विनती करें कि आज नदी की आशीषें आप पर उंण्डेले।
- उससे विनती करें कि जो भी रुकावटें इस मार्ग में आती हैं कि उसकी अधिकाई की आशीषें आपके व कलीसिया के जीवन में आए तो वह प्रगट करे।

# अन्तिम टिप्पणियां

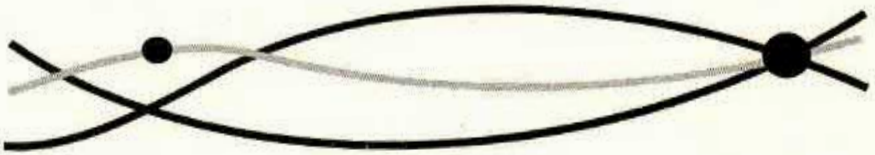

**अध्याय 29**

1. कुछ टीकाएं बताती हैं कि कुछ विश्वासियों की संभव व्याख्या यह है कि पद 12-19 शैतान के विषय बताते हैं, वह आलौकिक दुष्ट शक्ति जो सोर के राजा के पीछे थी। देखें मैथ्यू हेनरी, '*मैथ्यू हेन्रीज़ कमेंट्री ऑन दि होल बाइबल* (पीबॉडी, एम. ए., हेंडड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1992), पृष्ठ 721-722 साथ ही देखें एडम क्लार्क, 'जोब-मलाकी' *क्लार्क की कमेन्ट्री* में (नेशविले: एबिंगडन, कोई तिथि नहीं), पृष्ठ 500, पद 15 पर टिप्पणी

**अध्याय 41**

1. एक विशेष शाब्दिक विचार कुछ विश्वासियों का है कि यहेजकेल 40-48 उस स्थिति को बताता है जब मसीह पृथ्वी पर 100 वर्ष के राज्य के लिये आयेगा। इस विभाग में सहस्राब्दी का मन्दिर भी है (40:1-43:12), सहस्राब्दी आराधना (43:13-46:24) तथा सहस्राब्दी में भूमि का बंटवारा (47:48:35)। देखें जे.डी. डगलस तथा मेरिल सी. टीनी 'टैम्पल' नई *इंटरनेशनल डिक्शनरी ऑफ दि बाइबल* में (ग्रेंड रेपिड्स: ज़ोंडरवन, 1987), पृष्ठ 993 देखें जौन मैकार्थर भी, *दि मैकआर्थर स्टडी बाइबल* (नेशविले: वर्ड, 1997 पृष्ठ 1290, यहेजकेल 40:1 पर टिप्पणी

**अध्याय 44**

1. अन्तिम टिप्पणी 1 अध्याय 41 पर देखें